Ninety seven

[illegible] 33

[illegible]

।।ॐ श्री।। श्रीगुरुभ्यो नमः।। [illegible]
हृदयनाथविघ्नहरो।। नारायणं नमस्कृत्य
नरंश्चैवनरोत्तमं।। देवीसरस्वतीव्यासं
ततोजयमुदीरयेत्।। जयतिपराशर
रगीपात्रिवतीहृदयनंदनो गोपालडिंभ
कृष्णतंगगालिता मुक्तमयमानसहंसपु
निवनि।।२।। वीरबोरनंबोदरगायत्र
तिगैं त्रिमालफलिसयानिमलपुं
बोलो।। ।।चौपई।। गोरीनंदनगनेसकर
नांई त्रिमैकथाकहतसुखपाई।। नारद
देसीबानिकरलीयौ।। आसनप्रगह
करिकीयो।।१।। चारट्व [illegible]
गा।। अष्टादसपुरांनसब [illegible]
रचि गुरुकरौपरनामो।। पाठ [illegible]
बिस्रांम।।२।। गुरुसहोभक [illegible]
तो।। सवैक्रमपसबकेपितमाता।। संवत

गोरासेतुमागा।। रात्रिअंकंबरसोहितुव
[illegible]पछिश्रुतिसौबातातात
तेबुधवारसुभसंजोगा।। तिहिकियाके[illegible]
[illegible]जनमप्र[illegible]सोलकियो।।
प्रणवमयामांबंदौ।। सिरनाउं इष्ट आपनै
सदानवाउं।। करनआदिसोअंतरजामी
तोनगाइसोअंतरस्वामी।।२।। मंगलस
[illegible]।।३।। बंदनप्रसन्नबुधिजुक्त
[illegible]सुंदरस्यामसबभगतदलनलोचनक
[illegible]नगातमेंमोचन।।४।। मेरे
श्रीरघ[illegible]।। प्रभुरूपअनुमतेसब
हो[illegible]।। सकलबुधिबलनतेहोइगस
वनतिसरनितुम्हारीसोइ।।[illegible]।। तो
[illegible]निकोशसा[illegible]कपावाहि
बुधिप्रकासा।। तुम्हरे[illegible]लायके
[illegible]मलबुधिहिरदेमेधरो।।[illegible]।। सोप

६६

[illegible]जनमलगीतागंथोकटनाम।।
[illegible]ककेमरंहरिकथासंबोधनाबो
[illegible]।। लोकियजनस्वद है रहरहयेपी
[illegible]मदान्या। प्रार नायक जकलिम
नधसिनश्रयम।।१०।। चौपई।। ब्यासबच
नमयेकमलबधानामेंगीता।। अधिकसु
[illegible]।। केमेश्रीरघरमनश्रमध्यानकथा
[illegible]केसरसरिनान।।११।। तहां
[illegible]मैबहुसाधानारसमगनमतेश्र
[illegible]।। कोमलनवमनमारथलि[illegible]
कलिमलकथतसुनत[illegible]।।१२।।
[illegible]प्रकारकरतेहैनाराइनकी
[illegible]नाराइनमहाभरुइसेतबिश्रा
[illegible]दिवराहसेनबिश्रामी।। श्रादिबराह
[illegible]
जोगिबिधधारी।। प्रथमनी[illegible]

री ॥ १२ ॥ उसन ग्रंथ मोहत है ऐसो ॥ म
नि कैलन के दीपित है जैसो ॥ उग्र रूप नर
पंच धुनुकारी ॥ बुद्ध समान न थापितु उर
धारी ॥ १३ ॥ ना मैं आदि मध्य अवसानं ॥
धरमन क्यो लन्को निर्गत मानं ॥ सिव विरंचि
मुनि सेवत आई ॥ तुम्ह हीं सब रूपमय सम
माई ॥ १४ ॥ [illegible] नीचि ॥ बंदौ व्या
स चरन नग वानी ॥ अर्थ गोचर संपूर्ण
ग्यानं ॥ व्यास रूप नारायन नयो ॥ बेद उ
दानं सबै निरमयो ॥ १५ ॥ तौ न व्यास नारा
यन होइ ॥ भारथ और न वरनै कोइ ॥ व्या
स बुधि की रई वई ॥ बेद समुद्र मथ्यो
चितलई ॥ १६ ॥ ता मैं भारथ उपज्यो सार ॥
[illegible] विस्व कै परउपगार ॥ औरन [illegible]
पनो स्वार्थ [illegible] पर उपगार व्यास मन
रह्यो ॥ १७ ॥ सिंधन [illegible] ॥ स

सकल अर्थ दिखायौ ॥ तासो भाषा ग्रंथ
धरम सब चाहै ॥ अब न निकथा भारथ
और गाहै ॥ १८ ॥ ग्यान धर्म सब तामैं जानु ॥
याते उत्तम और न ग्यानं ॥ जो न कथा भा
रथ की कही ॥ कोइ दिन नाहिं मन में सही ॥ १९ ॥
जे आप की उक्ति व्यास बदि यरे ॥ ता सम को
गि मुक्ति परहरे ॥ कोम क्रोध वरनमे वै
राव ॥ है जीव को सहज सुभाव ॥ २० ॥
कोमी कोमसु नावे कोइ ॥ सुने कैतातौ
फल होइ ॥ रघुपति गिरत गहै रडारयो ॥
रघु तमां [illegible] थकी मारियो ॥ २१ ॥ तातै
व्यास कृपा मन धरी ॥ [illegible] होम क
था विस्तरी ॥ सब न [illegible] मैं कोठी [illegible]
कल विस्व के पर उपगार ॥ २२ ॥ [illegible]
धि सार मन कर्यो ॥ सब जीवनि कौ आ
हित करो ॥ गाउ सत [illegible] ॥

जसनाम॥ विधि सों विप्र नदी जे दांनि।
॥२७॥ द्रत गो[illegible] फल सोइ भारण
[illegible] कीयो तौ होइ ज्ञौ नेगा उसहस क
दी जे दाति। पुंनि कैरम की [illegible]
॥२८॥ विप्र वेदवत्र स्त्र दांन जु देतो। सु भ
रम स्तुति फल हु केते तौ॥ इतने दीयो हो
इ फल जो इ। भार्थ कथा कीयां जो होइ
॥२९॥ व्यास वचन अनंत अनुसार हि।
परम पुंनीत सुंनत अघ भार हि॥ रत न
गर नारद उद्ध सो॥ ता मधि कथा क
ही बतीसों॥ ३०॥ बतीस कथा के नाम॥
प्रथम सो [illegible] गौतमी जांनि। मुहि[illegible]
[illegible] गंगा सुमांनि॥ सतवासे रथ
[illegible] नयो॥ कथा। [illegible] सुंदर सनकथा॥
[illegible]॥ सिद्धि सुरगा मकै बोहारा कथा
कपोत [illegible] की मार॥ [illegible] हि गातंन

नर सु जाय॥ पुंनि सत रिषि तिन की कथा।
॥२९॥ पुंनि तातें सुनि [illegible] क अमृण्या [illegible]
तौ श्री रकथा उपमान॥ ३०॥ [illegible]
तौ श्री रु[illegible] उधारा मकी बोध प्रसंगा
२ सौ यंड अनि का सिव रस कृत्या॥ पत
पुत्र वैराग दिढायो॥ ३१॥ सुसंव [illegible]
गोदांन। अनदांन गंगा सनांन नधू
क ही जो बचन चित कथा। हत्या ब्रह्म
दोष जुं न जाय॥ ३२॥ [illegible] निषाध [illegible]
[illegible] की कथा। प्रस्न लेइ जो [illegible]
बड़ लाधे नि सुद्धत साध पुं[illegible]
रद संबाद॥ ३३॥ पुंनि [illegible] संसार [illegible]
[illegible] बैडे लाग॥ व्यास [illegible]
ले धरियो सीस। ये सुनि नाम कथा [illegible]
स॥ ३४॥ [illegible]॥ जन [illegible]
बीते कर जोरि। ते [illegible]

पांचोबीरकल्सकेसंग।। जबसनानक
रनगये गंगा।।१५।। तिलत्रंजुली देखि
नषस[illegible]र। करतसो गंगाकी तीर।
बहु[illegible]कहांचलीनहांबातांकरमीड
हियडैपीछितात।।१६।। [illegible]सपाजनीवा
च।। [illegible]सहितपांचोबलबीर।करत
सो गंगाकी तीर।। राजाले इउचेउसा
सा।जो नेस्थिपत्रौअबमवेत्रा[illegible]।।१७।। [illegible]
तबचनकासूसमझायो। तिहिठांसस
कलरिषिसुरआये।।रिषिनदेषिमन
आनंदलयो। संसोसोगसबदेषिटिग
यो।।१८।। रिषीसबरनकीनामम।।नारदकरखु
ध्यासधौमसुरगुर। चित्रमिबसिष्टिड
बीयामगुरु।।लोमसचआग्यासीसहस्रअरि
षा। ओरअनतरिषिनकेसिष्य।।१९।।
सुनिरउबाल।। सकलरिषिनकोब्र

ह्मीबातांबैठेतबहिअतिअकुला
तो।।अरतसोमागकरिमैगोहीयो।मैत्र
पराधसबनिकोकीयो।।२०।। मित्रपुत्र
मयागुरमारे।डरयोदेषिदेषिमिनता
रे। जानीषमकांबैठेसंगा।।बानन
घाइकीयेतिअंगा।।२१।। कृष्णबोलिड
ग्गामैंमारे। जेठबंधकरनसंघारा।केहो
न[illegible]हारेहमसारे। डरपोदोषदे
षिअतिमारो।।२२।। सजनमित्रबालक
संघारे।जैहैकोनहजुनकेमझारे।अ
वहंप्रानसोकाकरिमरो। याप्रिथीको
राजनकरो।।२३।। सनिबचनरिषिकै
सेबिचारी।राजिकोनगतिहोइहमारी
।।राजासोगमगनभयो जहां।बासम
धिरिषिआयेतहां।।२४।। [illegible]
पुरषप्रासिधनराजाअहि[illegible]

धौंसै चक्र हि॥ सो गात्र गानि तेकै रोग
री रा॥ ताते मोकन करई धीर॥४५॥ सो
चे बस्त न आवे हाथ। जो कछु हूं न हार
से नाथ॥ सुष पाये न्हलै न ही ग्यानी॥
दुष पाये नही आपदा मानी॥४६॥ तु
म सो ग संताप जे करैं तो सब सास्त्र
श्रमिथ्या चिमरैं॥ तुम से सो ग मगन हो
इ जाइ। तो न्त्र रिष न पुरे धौं कहा करा
इ॥४७॥ मूरिष सोग सदा तो करे। दिन
दिन अहंकार मन धरे॥ पंडित अपनें
के रिनहि मानें। हष्टिप सार कूठौ सब
जानें॥४८॥ जो उपजे सो बिनसे आप
जूवी कौन करे संताप॥ जो कछु हूं न
हार है जहां। कर्म तनों फल या बिल मां
॥४९॥ ताको सोग साध नहीं करे। संप
ति बिपति ग्यांन मन धरे॥ कोटि उपा

इ करै सो कोई ह। उव सुष ह न हार सो
होइ॥५०॥ ताते मानि लेत संतोग ता
सबही सो यरे बिजोग॥ अस्त्री जित
संपति उपटै रै। ताइ बकौ धीर उ न न
धारे॥५१॥ बिद्या बलीरा जउ ह्वाहि।
जे रैप्रे रे महा मनि ताहि॥ रूपसील
जे ते गुण आहि। पिक सोग ते सब मिटि
जाइ॥५२॥ बील कौ बंधत कुन है ते
मति बसि ग्यांन कूं सब तेन॥ हृग्यप्र
ग की है नहि कोउ। बरत मान बरत
तन्यो उ॥५३॥ सुनि दृ तत्त्व सम कहै चि
तला इ। बिरनै यथा सेनि समजाइ
॥ राजा सो क पुत्र को कह्यो। ग्यान दत्त
संमझाव न नयो॥५४॥ [illegible]
चा। कूठै सोग का कौ तु करै। श्रीपनै
सोग आपनु व्र जो हं सनु म और राजा

है जितेकौ न प्रीति बसि जानकी ति
तो ॥५५॥ नारी सो परम प्रवित जो निये।
ता सो जीवन जात नां निये॥ मातापि
ता पुत्रन हितेरे। रूठो सो गाव है मैं मे
रो॥५६॥ जो उपजै सब ही को नासा। का
हू सु नहीं ये कत बास॥ जाते उपज्यो
तुम्हारो देह। सो पुनि भयो और को ग्रे
ह॥५७॥ आपहि ते और को कहायो।
और ग्रयम और को आयो॥ वह ह्वा
को वह ह्वा को रोवे। तुम पुनि रूठो मे
गनि गोवे॥५८॥ रूठो तन को सोग क
रांही। निज आत्मान सोचे तांही॥ कर
त सोग ताको अस नेहा। यह लोक हांउ
नी यह देहा॥५९॥ अब हि प्रोधि प्रग
ट यह भई। बक रूठ्यो अंतन सम होइ
गई। ताते यह रूठो संताप। मनि क

रि मं निरन्नी ये रो आय॥६०॥ तो को तु
पिता सोक तहं गयो॥ और कहां पित
म है भयो॥ जानो हि देषत मित नाइ।
तैं पुनि उन की सुधि बिसराई॥६१॥ त्यैं
सैं और सब ये कुजान। छांडो सोग हि
रदै धरि ग्यान॥ का हूं सो की ने नहि मे
९ हा। नि ह्वे सब हिन मे परे बिछोहा॥६२॥
तुचै अधिक परि गिरि सो दा। संचित त
हां नास फुनि होइ। [illegible] संजो गनि
ग अपार। तहां उपजै तहां मन आगा
र॥६३॥ जीवन जोबन सुंदर रूप। अर
थ द्रब तें मिले अनूप॥ तेउ नं तित
देषि बिचारी। जैसें यं छ्या सुष कारी
॥६४॥ पंडित ऋषि निरखन बत्ती। धं नि
र धन को पं कै गाली॥ [illegible] सब बन
नो। राई। [illegible] न बस

॥६५॥ जब ही यिक द्वै करै घनेरौ । कूर गे ज
ग सब कहै तु मेरौ ॥ सब कौ संचित सु
ष टारै । ऊदि मनुष्य प्रवृत्ति सब वहै रै ॥
॥६६॥ भूत सावधांन सब कौं कहै । सोव
धांन भूति सिर पर रहै ॥ संगति बिना
मनोरथ तेते । सब कौ भूति बिना से जेते ॥
॥६७॥ द्वै सैं यथिक रूछ बिश्रांमा । ऐसैं
सब कुटंब तन धांमा ॥ घर संजोग जो
बिछोहे ऐसे । मिलन प्रवाह की गजल जै
सें ॥६८॥ ऐसैं मिलि बिछुरत सब प्रांनी ।
मूना स्वंत सरीर सुष जांनी ॥ जहां सं
पदा आपदा तहां । सुपिने की संपति
सुष कहां ॥६९॥ सुष के चित यै दुष आति
बढै । तब कौ मोह कूप ते काढै । ये कौ
बढै बस्त की हांनि । पंडित सोग न क
रई जांनि ॥७०॥ गये मनोरथ करै न तै सै

दुर्लभ गंभीर रहौ मन ऐसैं । बुधि तंत
जांने सब गांन ॥ हिरदै नांहि न राखै श्रो
ना ॥७१॥ ब्यास वाचा । ज्यां न चूत होइ
ज्यांन सुनायौ । सद्व सो निश्चित सो जग
मायौ ॥ पुत्र सोग छोड्यौ तब बीरा । सा
ध कपात करि मन धीर ॥७२॥ तुम तनु सं
त बुधि हिरदै धरौ । छाडि सोग निश्चि
त मन करौ ॥ सुपिनौ सब ऐसो यह
राज । कौन कांम कौ माया साज ॥७३॥
॥७४॥ द्वैपायन ऐसौ वाचा । बहु भांत प्रकार
सोग सो कीयौ । बहु विध सो गयौ तब
लियौ ॥ बोलत बचन अचंभो लयौ ।
मधुर बचन कोकिल सुख कीयौ ॥
॥७५॥ सुधिष्ठिर वाच । ऐसे बचन सुन
त रिषि राइ । मेरे मन को सोग न जा
इ । भैतौ बहुत अधरम कीयौ । ता

तैसोगमोहमनदीयो॥७५॥राजालोक
करिराजामारे।मंत्रपुत्रमयाजुमंघ
रघरघरसोगकरैसबकोई।मोकौं
कहूंनंनरकगतिहोई॥७६॥अस्त्रीपुत्र
पित्रनकरिहौं।जहांतहांरूदनकरै
सबदीन।रोवततातिंनहिदेषिआतिदु
षी।मोपैरह्यौंजाहकहूसुषी॥७७॥दै
प्यपाइनोवाच॥राजासोगवंतहोइ
रह्यौ।बहुरूयांव्यासकृपाकरिकह्यौ
॥नानामांतिग्यानउपजायो।मनबं
छौसोगसहजैआयौ॥७८॥व्यासउ
वाच॥अबतुमग्यानबुधिमनधरौ।
भयेगयेकोसोगनकरौ।सुपिनेकी
निधिकोजैसौ।मनमनसाजथामनो
थमतकरौ॥७९॥जैसंसातविषैतेनं
ही।हरिपदमारसबैमिटिजांही॥

नरवरपवनपत्रवसिआही।मूरति
बहुरिफेरिनहीवाही॥८०॥मांतैंन
वैअंजनिमारे।नातैंऔरकाहूनमं
घारे।आपनेकर्महतेसबराई।तुमको
हैनेमारतहोंनाहीं॥८१॥जीवकोप्रे
यअप्रीयहैसोई।येसबकालकर्म
करिहोई।जैसेप्रथमकरमनरकरै
ऐसेअबिहितमरनुसबधरै॥८२॥बु
धिवंतकछूवेमनिनधरै।प्रेमोवन
कछूफिरिकरै।वहकरताआदि
गतिन्यारी।सुनिआतिबुधिकरमन
तिसारी॥८३॥नाजतजीवआवतमे
सार।अंधनरकैआवैजुअपार।कै
रतादेवकुलालकहयौ।कोलतज
निआंनिपचविवि॥८४॥पितावीजम

ता॥ सूमित हां। करम मेघ वर्षा भई जहां
॥ षांणी अनंत येति हि ठांव। गीता लषौं
अपनैं आप सुजाण॥ ८५॥ तातैं सोग कौं
न कीजे। सोग कीयैं बुधि तन छी
जै॥ सोग करै सो मत्ति कौ हीन। बुधि हो
त दिन हीं दिन छीन॥ ८६॥ श्रीभगवांनो
वाच॥ ये सर्वगि ब्यास भगवांन। तुम्ह
स नेह कह्यौ यह ग्यांन॥ छाडि सोग अपा
न मन दीजै। तातै सोग कौन कौं कीजै
॥ ८७॥ बुधि ग्यांन मूरख सौं सुनावै। बु
धिवंत समझै समझावै। बुधि बलतैं
संसार तिराइ। बुधि तैं संसौ सोग गमा
इ॥ ८८॥ वैशंपायनो वाच॥ सुनि जनमे
जय गंगा की तीरा। कृष्ण सहित पंचौ ब
लबीरा। कृष्ण महूरत कबहूं न हीं जां

१

न्यौं। वह ज्यूं थो त्यूं बांनि कबांन्यौं॥ ८९॥
ब्यास सहित सब कै मनि आंनंद मैं
म पिता देषि ये जाण॥ ग्यान सहित स
लत आनंद॥ ग्रहन्मि मधि सो है मांनो
चंद्र॥ ९०॥ पंडो सकल बुधि मन भई।
सब आये भीषम पैं सही॥ प्रथम कथा
बरनौं इतन हां म। कृष्ण चरन बलि तु
लादास॥ ९१॥ इति श्री महाभारथे इति
हास सार संग्रह ये प्रथमो ध्याय॥ १॥
जनमेजयो वाच॥ सब ही मिलि भीषम
पै गये। राजा कहौ करत तहां भये॥ प
रम बुधि राइ कौ गात। भीषम सौं पूछे
तहै बात॥ वैशंपायनो वाच॥ कृष्ण
सहित ब्यास आदिक कै लै। तब ति हि
न सब बिनिये न लयौ। तद पितिकौ भन बांनी
बोलियौ। सोग करत भीषम जो गयौ।

बङ्कत सांति ब्यास सम भजायौ। तौ उनम
न को संदेह मिटायो॥ ग्यान बिय होल की
नांई। तुम्हारो नास कीयो मै मांही॥३॥
अब कहूं सुषमन होइ हमारे। देष तरु
थिर प्रवाह तुम्हारे॥ बांन प्रवाह अंग
अति धाई। तुम हि देषि मन अति अ
कुलाई॥६॥ तुम हि देषि के से सुष
लेहों। जानों नहीं कौन गति लहों॥ अ
ब मेरो कलिजुग मैं बासा। कौन भांति क
रि होइ निकासा॥७॥ भीषमो बाच॥ सु
षि मग लि कर मकौ अघारा। होत जांत
न हि लागे बारा॥ रची जु बस्त कर्म करि
सोई। मन पहलै लै सीदी होई॥८॥ मन
बच क्रम भक्ति मैं कों धावै। जो कछु क्रम तै
सी मति आवै॥ माटी हूं नु हार सो होइ।
को टि बार अनि घान रहि कोइ॥९॥ दिन

दिन चिंत॥ बिचैल न छीजै। ताते अत्रि
तप न चैयी जै॥ सुं निद्र तहा सकथा
चित धारि। पंनिग बधिक गौत्मी नारि
॥८॥ तप गौत्मी करै बहु तेरो। बालक
एक पुत्र ताकेरो॥ सो बालक मैं न्हौ ब
न मांही। उहां तहां बैठे बृछ की छांही
॥९॥ बैठत तहां अय सो पायो। अय हि
बधिक बांधि लै आयौ॥ बधिक अयनै
आगे डारयौ। तेरो पुत्र आज डिसिमा
रयौ॥१०॥ बालक घात अहि कीयौ अ
भागे। मारो इहि तुम्हारे आगे॥ छाडि
नहीं करो कोटि उपाइ। बालक हत्या
लागे धाइ॥११॥ गौतमी उवाच। पंनिग
छाडो कहे हं मारे। पुत्र न जीवे अय के
मारे॥ बिन काल और यपर धरे। अय ही
मीच सबै को मरे॥१२॥ एक डीव आ

निमेंज़रै। इकल रोग ब्याधि पचि मरै॥
एक षुध्या करि प्रांन गंमावै। एक सत्र
डरा इतिनी पावै॥१३॥ एक स्पंत्र गात वे
बनि पैरै। एक आप विषपान करि मरै
जाकौ जो निमत्त है भाई। तिहि तैसें प्रका
र म्रतिपाई॥१४॥ पापीकहूंनें मन धरै॥ पाप
अपनें पाप वहे जरि मरै। अपनें पाप ज
रे है जारै। अपनें सुकृत आप हि हारै
॥१५॥ पापी मारें पाप न होइ। ऐसी बात क
है सब कोइ। बालक घात कीयो जु अ
कोज। याही न जीवत छो डै आज॥१६॥
गोनमी उवाच॥ औगुन कौं औगुन मन
धरै। गुंनकौं गुन सबको करै। अपने
स्वार्थ लागे रहै। भली बुरी सब कोय
है॥१७॥ दोष पराये सो नही ग्रहै। जाकौ
जु मन जगत न मरि रहै। नियट बूरे कौ

भलो जु होई। महा साधु के संमिहै दोई
॥१८॥ तिनकरि प्रथी सोहै। ऐसें। अहम
पुन्न करि दीसे नेसैं। और जीव कौं ओड
षदी जै। ते सब दुष आप कौं कीजै॥१९॥
जो कोउ दुष तै डरथै भाई। तो दुष औरन
दीजे जाई। जदपि बहुत भांति कोउ क
है। तदपि कुमति साधन हीं बहै॥२०॥ के
सें दुस्यातापन बेरै। जनन सुबुधि रांम
मन धरै। ताकौ पुंनि सदा न रहै क
वहूं न होइ अपजस कहै॥२१॥ अरे है
पाप साधन हि करे वहै अपनो सुभाव
मन धरै। पापी को समझावै कोइ। को
लाघ सेन उज्जल होइ॥२२॥ जनम अ
नेक बुधि है जैसें। जीव प्रगट लै आवे
तैसें। पहिले जनम बासना होइ। अब
सुनि प्रगट जानियो सोइ॥२३॥ अपनें म

तिन्हो अंकूर हि आदि तिते अब हिसि
माते ताहि ॥ अपजांनि जीवन की आसा ॥
नर भाषा बोलै सो अपपासा ॥ २४ ॥ पंगु
उवाच ॥ अब सुनि अधिक नही बस मेरे ।
हूं पुनि पराधीन मृत्यु केरो ॥ नही उब
र काल के घेरे । हूं पुनि डसत मृत्यु बा
सि केरे ॥ २५ ॥ भीषम उवाच ॥ सरप बच
न सुनि के मृत्यु आइ । तासौं कथा कही
संमझाइ ॥ थावर जंगम जीव कछु आहि ।
काल बसि सब जांनौं ताहि ॥ २६ ॥ ती
नि लोक उदर मैं जाके । आदि अंति क
छु नही ताके ॥ धर्म धाम सुष सब फल
ह रही । जथा वृष फल पकि गिरि पर
ही ॥ २७ ॥ राषै रहै मैं कहुं उबारा काल
बसि यह सब संसार ॥ तीनिंकी लपा लिलो
है हाथ । जनम बिनाहार मृतिका साथ

॥ २८ ॥ तीन्हूं भासि अपरबल नारी ॥ काहू
पै जांहि न ही निवारी ॥ प्रापति सहां तै
सी ही ताहि । जनम बिनाहार मृतु जो
आहि ॥ २९ ॥ मेघ अकास बाइ बसि जैसै
ऐसे पद जीव बसत है ऐसे ॥ प्रति बिंब स्यूं
दीसै चंद । सब मैं व्यापै कथ्यूं गोविंद ॥ ३
॥ भीषम उवाच इतनी कहत काल
तहां आयो । तिन हूं सो यह बचन सुना
यो ॥ मो तें जन मन हि गति मांनौं ना
प्रधांन सब ही परिजांनौं ॥ ३० ॥ हूं न हूं
कर्म पासि मैं आवत । कर्म हि तें डर ल
भव पावत ॥ ३१ ॥ आयो जीव जनम जैं
ही । पाछै बस्त लिषी होइ तब ही ॥ औ
ल बिद्या धंन कर्म । और पापन मैं को
मर्म ॥ ३२ ॥ ज्यूं कुलाल माटी कर धरै सो

कछ्कवारयोंचाहेसोकरै। षाषरसंगम
जीवसबजाति। जैसेंक्रमतेंमीउतपाति
॥३५॥ प्रथमहीप्रगटपुरातनमूल। जैपु
नेरुतिपाइवृछफलफूल॥ प्रथमकर्म
कीयेहैजैसें। तुक्तैबनैअबनैसबते
सें॥३६॥ ऐसोहेसमर्थकोबली। रोके
चलतक्रमकीगली॥ घेनिसहस्रके
मिलितहांजाहि। बछमातकोलेई
ढुंढाहि॥३७॥ देसुवदेसकछुकिनजा
इ। करताहीकर्मलेइतहांइ। कबहुक
मैनछोडेअंग। सोवतसोवैजागतसंग
॥३८॥ न्यारोनहीकर्महीमांहि। जैसेंचल
तदेषियेछांहि॥ लाखहांनिसुषदुषस
बलांनि। सबहीमांहिक्रमप्रधांनि॥३९॥
ज्योगगनमांहिरछिकनहिकोइ। साबै

क्रमरहेपुंनिसोइ॥ उलटैक्रमबसेदु
षसहे। घरमेंबसतनरधीरहै॥४१॥ कर्म
बिनानदेहनिरवहै। ज्यूंबिनतेलनदीवो
नहीरहै॥ पनगमृतुकालकोमरमा। बि
नाकालकाहकोभ्रम॥४२॥ दुषदरिद्र
आपहीपावै। जैसेंअगनिकाठउपजा
वै॥ याहीमांहिउपजैग्यान। याहीमांहि
कर्मप्रधांन॥४३॥ मीघमोवाच॥ धीरत
नही सहतबुधिसोडोली। तबगोतमीबचि
कसेबोली॥ जोनिमतसो होइहै आर
बिनानिमतनहीऔरउपाइ॥४४॥ गोत
मीउवाच॥ कालमृत्युमतिनहीको
इ। अपनेमलोककर्मकहहोइ॥४५॥ सो
कर्मअसेंदीकही। मेंहूबचनकह्योम
तिसही॥४६॥ ताहिबुधिकक्रोधतबग
यो। उरआदितआनंदतिभयो। रजा

अतहृदै पिबिचारि। हौं नित्त सोगगो
मीनारि॥ ६४॥ सकल क्रम बसिजानो
ये हा मिथ्या लोक छाडि सब देहा नो
तुम डरजो धम कछ कीयो। कर्म रूप
कारण उपजीयो॥ ६५॥ वैसंपायन उवा
च। सुने बचन श्री धर्म के जब ही। रा
जा सुस्थ चित्त भयो तबही॥ पूरब संस
कार मति श्रेसी। सुनि सब सुधि भैं नि
ये जैसी॥ ६६॥ पंडित सूरि षसुनि इत
हास। कथा बिचारी लाला दास॥ या
को अरथ है या ही मांहि। बुधिवंत तासो
सेमझि समाहि॥ ६७॥ इति श्री महाभा
ये इतहास सारसमुचये तृतियो ध्याय
॥३॥ ॥ वैसंपायनोवाच॥ श्री जो सोग
ग्यांन मन दीयो॥ राजा तहां ब्यास पूछि
यो॥ कोमल बचन बोल्यो बानी॥ बिधि

मांन सो मन की जांनी॥ १॥ जुधिष्ठिरो वाच
तप अरु दांन जो दे उआहि। दोऊ मैं कु
हो अधिक फल काहि॥ सो तुम कहो सु
हिरदै धारो। तुम तजि और कछु भ्रम बि
चारो॥ २॥ व्यासोवाच॥ तपतै ग्यांन अधि
क है सही॥ सुधरम सहित बात मैं कही
॥ चित बतचं चलइव मन आगे॥ आति
प्रीय प्रांन कुटव सब त्यागे॥ ३॥ वंन पर
बत समुद्र मैं बदै। धन के काजि इदै
दुष सहै। किरषि उपाइ उदिम बहु
करै। नि सदिन इव त्रास मन धरे॥ ४॥
मन मैं धन की यं छ्या करै॥ ता धन ल
गि प्रांन पर हरै॥ बहुत जतन करि ध
न संचीयो॥ औसो द्रविजा [illegible]
यो॥ ५॥ जा के काजै कीजै सब प्रान
जी व [illegible] तै प्यारो इव। अकित [illegible]

तकोरिउपजावै। सोधनदीयोकौन
पैश्रावै॥६॥ श्रौसोइबदेतरुचिंता
हि। सोदाता त्रिभुवन के माहि। सब
ते श्रधा अधिक बिचार। सरधासोंकी
जै सो सार॥७॥ सरधा श्रोरन पूजे क्र
म। सरधा प्रगट होइ निजधर्म॥ जो ध
नराखि बहुत तर्क दीजै। सुधर्म धर्म श्रौ
र नहीं सूझै॥८॥ सुधरम सहित तणो गो
क्रकरैपता तैं कोटि गुनो होइ परै
बहुत दांन सरधा बिन श्रैसो। ऊसर
बरसै होइन जैसो॥९॥ कथपुरांत
नेक कहु सुनाई। मुदगल नांम ब्रह्मरि
षिराई। उछ ब्रत्ति त्रिया पुत्र समेत
परम सु घरम रहे कुरषेत॥१०॥ ओर
तदिन पइहज्जबजांहि। तादिन अती
तपुजि करिषांछि कुटंब सहित तन

कौबनवासा। अतीत देषि मन भयो
उल्हासा॥११॥ अतीन सुत हांडबी
सा आयो। अपनो अतीत परतेज दु
रायो। उनमद रूप दिगबर रहै। ब
चन श्रोर कौ श्रोरै कहै॥१२॥ अनमा
गि ठाढो होइ रह्यो। मुदगल बचन
बहुरितब कह्यो। उत्तिम बचन बो
लियो बांनी। ज्यूं तुम कहीं श्रैसं मसां
नी॥१३॥ मुदिगलो बाच मेरो परम
भागि घरि आयो। आजि मनोरथ मन
कौ भायो। अतीत देषि मन आनंद
करी। धनि सुफल आजि की घरी
॥१४॥ देखत सुफल नैंन भये मेरे। स्र
वन बचन रूप सुनि तेरे। अगन्न
गबा छौ आनंदा। मानो भे परमानं

दो॥१५॥ चौ॥ स उर्वासा तुम्हें से प्रजि अंन
तब दीयो॥ तब डुर्बासा ने तन की यो
क्रोध तन रूठे डोले अंबरिष यो॥ अंग ग
हे सो लै चलिये॥१६॥ ऐसे सब को
आवत तब चाव॥ मुदिगल के मनि
हुलसे भाव॥ ना ही निदा मई कछु जं
के॥ न ही क्रोध कृपनता ताके॥१७॥ म
लै जांनि साध यं कहै॥ डुर्बासा प्रस
न तब भयो॥ प्रसन्न होत कारिज सिध भ
यो॥ जनम जनम के पाति गगये॥१८॥
॥ डुर्बासोवाच॥ तो सौ दातानम लोन
होइ॥ तुम्हारै जनम बोलै सब को इ
॥ धीरज सहित बिबेक बिचार॥ त्रि
भोहु धा जीति गयो पार॥१९॥
काम क्रोध मद तजि अहंकार॥ छांडि

कृपनता भयो उदास॥ सम दृष्टि तन
ज्ञांन संजोई॥ अब हि परम गति तु
म को होइ॥२०॥ मुदिगल उवाच॥ तुम
से साध कृपा जो करै॥ हम से जीव क्यूं न
निसतरै॥ धनि हौ जु तुम सरनें आये॥
साध समागम सब फल पाये॥२१॥ व्या
सोवाच॥ यह सुनि डुर्बासा मनि भाये॥
देवदूत बिवांन लै आये॥ रतन जरत
प्रकास मय सोई॥ किंकिनि जाल स
बद धुन्य होई॥२२॥ तिहि चढि चलो
ब्रह्म रिषि राइ॥ देवलोक सब करै ब
डाई॥ बहु सनमांन देत है ता को॥ कौन
बिसेष अब दीजै या को॥२३॥ मुदिग
लोवाच॥ मो रग चलत भलो जो कोई
सात पैंड प्रेम्य न छु होई॥ ता तैं उमको
बूझो भेव॥ सुरगा के हा गुन सो संसर

ऊरघादिकडूनो।वाच।तुम रिषिसर्बबुधि
जीवतामता।नदीपि हंम हिय छिपहिचां
नत।सुरसादिक सुष बननंदना।पुर
वैवछसबै कांमना॥२५॥दिब्यबिवान
अयछरासुहां।सकलकांमभोगादि
कतहां॥कैकैसोसिधर्मनहिंजांहिं।
जेपरधनमाया हरषांहिं॥२६॥क्रोधी
कृतघनीनंदकपापी।अदत्तीअस
चोरसंतापी।अहंकार दंभादिनिस
संस।डरदैलै हिंयरायो।अंस॥२७॥
सतिस्वर्ग इतननिकोनां हीवे पुंनि
वता तितेही जांहीं।येइ सबकोई सर्गजं
नांहीं।जुरामरन छुधा पिपासगि
नांहीं॥२८॥सीत उस्न सबला नछुर्व
नि।येक हियेस्वर्गलोक येकु जांनि।
औरवकृत गुनकहौं बषांनि।राजा

मुंनिरोचितदेकांनि[illegible]॥सुनौ औरा
[illegible] सौंबषांनि।गुन है जेति
ते।तुमसौंबिप्रकहत हौंतितै।राजा
बिमलचितमनधरौ।जांतेधर्मसदा
निसतरौ॥३०॥नाकृपाइवकृतधनसं
डार।कीजैसातिधर्मउपगार॥धर्मजां
नमनोसदानिदांन।ग्यांनसाधिपावे
फलप्रवांन॥३१॥मुदिगलकणासुने
फलहोइ।व्यासकृपातेपावैसोई।ब
काबिसलोकमोतहै।श्रोतासुनंत
पापनहिंरहै॥३२॥मुदिगलकणाप्री
तिसौंगावै।श्रोतासकलधरमफल
पावै।सबतजिहस्वरननचित
दयो।सुर्गसुषतोनिसप्रेहमयो।
साधंबचनकहैलालादास।मत्य

अनुसार कौ घोर इतिहास ॥ ब्यासबच
न भाषा करिलई । सुदि गसल कण्हा त
सरी भई ॥ ३२ ॥ इति श्री महाभारथे इत
हास सार समुच्चये त्रितियो ध्याय ॥ ३
ब्यासोवाच ॥ राजा कर जोरै सिर नावै ।
जीव रखा की बात चलावै ॥ लोमचरि
षि कौं पूछौं मरम । सरनागत रख्या
कौ धर्म ॥ १ ॥ लोमचोवाच । सकल देव
तान कै मानि आइ । बकुत सो धरम कौं
न है भाइ ॥ धर्म समेत तुला करि धारी
दुष्यत जीव की रख्या भारी ॥ २ ॥ सकल
जोगिंद्र छिना समेत । कासीय हर्न दांन
कुरषेत ॥ ना हिन धर्म और कछू ऐसै ।
दुषी जीव रख्या कौ जैसौ ॥ ३ ॥ कथा सु
रातन कहो सुनाई । अगनि ईद्र राजा

सिवराइ ॥ राजा सकतिन गिड़ रिषये
ति हिंग आइये कअचं भौ नये ॥ ॥ ईद्र
सिचांन रूप तहां कीयौ । अगनि कपो
त होइ तन जीयौ ॥ डरप्यौ भागि राजा सर
ना । लाग्यौ धर्म की रख्या करना ॥ ५ ॥ तब
सिचांन आगैं होइ जाई । राजा सौं बोलै
अकुलाई ॥ अब हू सरन तुम्हारे आये ॥
काल रूप सिचांन सु आये ॥ ६ ॥ सिचां
नोवाच ॥ धरमात्मा नलो तू राजा ॥ कर
हिन धर्म बिरोधे अकाजा ॥ राजा तू सब
धर्म सयानौं । छुध्या अगनि धन हु आकु
लानौं ॥ ७ ॥ डरप्यौ बिहंग लयो सरनाई ।
राजा लीयौ कंठि लगाई ॥ सरना रषि
जो त्यागै कोइ । हत्या ब्रह्म दोष ता कौं हो
इ ॥ ८ ॥ लोलन दोष भै जे परिहरै । ता कौं पा

पि आपज़रि मरै॥ छाटे मिटाये सबकौं
दोष। मरनां इत मांगे नहि मोछ॥ [१९]॥
जैसें कोउ षत्र और नितें आय। तातें सरन
बड़ो है जाय॥ ज्यूं डरप्यु डरपि आप दुष
होइ। त्यूं डरि डरपि जांनि सब कोइ॥ [२०]॥
[२१]॥ जैसें कष्ट नैं राषै प्रांन। सो इक बुधि वं
त मन लै सुष पांन॥ ज्ञेय नम मृति मैं जन
[illegible] रासै। नातहां जीव मांनैं त्रासै॥ [२२]॥
[२३]॥ सो ग त्रास मं कष्ट तें डरै। तातें साध
दया मनि धरै॥ डबी जीव की रक्ष्या कौ
जो। अपनी सक्ति सब ही सुष दीजे॥ [२४]॥
जैसें भरत करै डुष पाय। ऐसो और रह
कौ संपताय॥ जैसें आप हि जीयो भा
वै। त्यूं जीवन और ह आवै॥ [२५]॥ जैसें आ
य अपनौ मानौ। ऐसो और सबै जीव
जांनैं॥ काटि मरन तें देवन तो हियइ

जैनी तर ह्यो गाहि मोहि॥ [२६]॥ मेरे इह देष
मे कुमराता॥ अब तुम कहा करो गोजा
ता॥ या हि काढि जे देवो तो हि। तो अपरा
ध लागि है मोहि॥ [२७]॥ सिंचानो वाच॥ आ
हार तें जीवन सब प्रांनी। आहार तें व्याधि
जाहि सब जांनी॥ आहार तें बड़ क तसु [illegible]
है। बिन आहार धरयो सब रहै॥ [illegible]
आहार देहु जो नाही। तो अब प्रांन हमें
रहै नांही। मेरे मुये बड कुतहु मराई। कुटं
ब दारा सुत सब मरि जाई॥ [२८]॥ ये कौ जी
व की रक्ष्या करै। तातें लगि जीव बड़ कत से
हरै॥ जा करम तें धर्म न हिरदै। तासौं
धर्म पंडितन कहद्यौ॥ [२९]॥ सुष मंगति धं
मि की कहावे। धर्म करत अधरम हो आ
वै। बडकुतक लयना धर्म धन रै। आपरा
छि राजा गुन तेरो॥ [३०]॥ तुम जानो जानि

तसबगैर। ऐसे दांन ते दांनन और रा
मैं जीवदया फल ऐसौ। और धर्म कछू
वै नहीं जैसो॥२०॥ दुखी जीव रख्या जो क
रै। ता दिन मैं सेंकर दुख परै। और दां
नांनैं सब कौ द्रा। ऐसे दांन दुर्लभ है सो
द्रा॥२१॥ और दांन फल नाहीं रहै। ऐसे दां
न अछे फल है। दांन जगत पतीथै
सेवा। और अनेक धर्म सुनि देखा॥२२॥
अन्नेदांनकौ ऐसो जु फल। पूजै नहीं
सो लही कल्या॥ ताकौ पंडो सुनौ कछु बि
चाराय। धर्म तै और न मारा॥२३॥ प्रथी
समुद्र सहित दे दातारी। तातै अन्न दांन
देत अति भारी॥ राज सरीर जाडु सब ला
गोय। दिन तजै तुम देखि बिचारी॥२
४॥ जनम अनेक पुनि मैं कीये। धर्म स्व
रहि अरपि मैं दीये॥ ता पुनि को इहै फ
ल पाये। दुखी जीव को दुख गमाये॥२५॥

कहै बचनन बोलौ आंन। जो मो कूं प
रसन न लगावांन॥ तो हिसांन जो बुधि बि
चारा। देह अनेक भांति अहारा॥२६॥ सि
चांनोवाच॥ सिचांन कपोत प्राये जीवै
देम कौ नछिविधाता दीवे। और कहां
के हिबी बकु बात। उतर समझि देहु
मोतात॥२७॥ राजोवाच॥ साचौ बचन ह
मारौ जांनौ। ऐसे दांन दांन नि प्रधांनौ
॥ सास्त्र बेद की मे निरधारा। सब मैं जी
वदया इक सारा॥२८॥ सकल जगत तीर्थ
तप करै। सो नल है जीवदया मन धरै
॥ चित चलत चलत दया मन धरै। सो प्रा
नी कोहे न हित रै॥२९॥ अजे जीवदया
नहीं जांनी। सोई पसु मूरख अग्यांनी॥
आपनी सक्ति न मेटहि डाढा। सो फूरै
आपनन के ही जाढ्र॥३०॥ जो चाहै सो

कछु देवौ। आज्ञा या कयो तक उछा
ह हुं को दूत। जीव दया के बहुत न दियासु
। सुनि देव परि बोलन हारू। ३१। सिवि
न उवाच। शरणौ नहिं हमारो येह। अ
पनो मास याहि न रिदेहु। अपनो बित्त
प्रान ले दीजे। जो उपगार और को की
जे। ३२। राजा उवाच। कीरति रूप बच
न [illegible] मेरो। सुनत प्रसन भयो मन मेरो
तो कौ देह याहि न रिदेवौ। झूठो करि सा
चो ज सले वे। ३३। झूठे तन तें लेव बडा
ई। या तें और कहा अधिकाई। पर उप
गार जो आवै येह। तो कत न वृथा संवारे
देह। ३४। यह तन थिर न हिं निरषि संसा
र। वृथा कि रमत न होइ बिकार। अपनो
स्वारथ झूठो मा से। वृथा देह अधर्म
करि राखे। ३५ मातापित नारि कुपथ

वे। जो तन पर उपगार न आवै। पर उपगा
र सर न हीं लागे। दया छांडि अब कादे
कहां लागे। ३६। सिवि उवाच। अप
नो मास जो तुला चढाई। याहि बराबरि
करि दे राई। मो हिं और अधिका सो नां
ही काजा। सात समुद्र आहि तू राजा
३७। राजा उवाच। जा नैं यह उबरि सो क
रो। तुला कपोत चढाइ के धरो। अपनो
मास काटि धरे राजा। तुछ सहै सा अप
राये काजा। ३८। गरवौ पल्ला कपोत।
कीयो। राजा और अंग काटियो। तउ
बराबरि होइन जबही। आपन राजा
बैठो तब ही। ३९। निरषि देव दुंद भि
बजावे। राजा धनि धनि जस गावे। धीर
ज देषि यं दृ प्रगटियो। तब निज रूप अ
पनो कीयो। ४०। यंद्र उवाच आगनि

कंपोता हूं सुर राव। देषो सतगुरु म्हारो
भाव॥ ऐसें कारेन करि है कोइ राजा
सतगुरु म्हारो होइ॥ ६१॥ जे दपि क्रम ब
सिसब जीव जंत। तुम उपगारी धीर
ज वंत॥ श्रापो कीयें परकाज। मिघ
व छ ओर तुम से राज॥ ६२॥ दिइ आप
न पीरा ष्योपर दान। दोइ परम गति प
द निर्बान॥ देत आपन पोल गीन ही ब
राजीवन साचो पर उपगार॥ ६३॥ अ
पनें स्वार्थि जीवन ऐसो। द्दिन उठि बा
देब है पुनि जैसो॥ अर्थ पराये जीवन
सार। अचिर जु कहा धर्म उपगार॥ ६४॥
अपना धर्म को उपगार। जैसें बंन सब
ही मैं सार। सुषु [illegible] ससी [illegible] ज्ञान सा
ई। सुषफल सदा सीतल सुष दाई॥ ६५॥
राजा अधिक धर्म तैनें कीयो। तीनि लो

क मैं तैं जस लीयो॥ डर्लैं अपदई सह
जै सो पाई। तो दरसन तैं ड षबिसराई
॥६६॥ लोभ बोवाच॥ यं इ आपनें लोक
हि गयो॥ सिवरि कौ जस सुफल हि
ति लयो॥ अगनि सिरानो सी ऊँ का जा
त बमन मैं आनंद लयो। राजा॥ ६७॥ सिव
रि चरित जो सुनैं सुनावै। ना सै पाप स
कल सुष पावै॥ साध कृपा जैसी मति
रही। मति अनुसार कथा जो कही॥ ६८॥
जै सैं पंगु परबत नहि नाषै। लालादा
स कथा यूं भाषै॥ भाषे कथा होइ आनं
द। निहकल सगुति हि होइ गोविंद॥ ६९॥
इति श्री [illegible]
चरित्रे चतुर्थोध्याय॥ ४॥ वैसंपायन वा
च॥ दरसन लीषम को प्रीय जहां। सक
ल रुषी स्वर आये तहां। सरस ज्ञान नि

मध्वित्रांमां। अबसुनिप्रगटरिषिनके
नामां॥१॥ न्यगुवसिष्ठियारासुरव्यास
चिवनिअत्रयअंगिराप्रकास॥ अगि
स्तिनारदपर्बतनामाग्रंमदगनिदुर्बे
सारांम॥२॥ राद्रब्बीसमतभारद्वाज्जु
सुरगुरसुक्रब्रह्मरिषिराज्जु॥ धर्मक
र्मभारकंडेव। बिसवामित्रसंतनेद
देव॥३॥ बिधिसोसबपूजेसुषदायो।
राज्जानमसकारतबकीयो॥ नमसका
रप्रदछिनदीनों। अतिआनंदमांनिम
नलीनों॥४॥ युधिष्ठिरवाचः॥ परवतन
दीदेसमसबमोन। कहोप्रसापविशेन
अतिकौण॥ मुभिषुनीतिकहोसम
जोकिजाद्दैषतसबपापनसाइ॥५॥ मी
षमोवाच॥ कण्वपुरातमसुनोइतहास
नहीजोविप्रसिधमुनिपास॥ बिप्रये

केअतितपअपार। रहेसुधरमीब्र
तिब्योहार॥६॥ आयोसिधबिप्रकेधां
मां॥ इहेकण्वपूछीबिसरांमा॥ ब्रन्नी
सिंधबिप्रसोअसी। कण्वापुनीतिक
हैअबतैसी॥७॥ सिधोवाच। देसपुन
तिमगटनहांगंगा॥ परमतपापनरहे
अंगा॥ जोअनेकतपकीयेफलहोइ
गंगा॥ दरसनपायेसोइ॥८॥ करैअनेक
जगिफलदांना॥ नहीपूजैगंगासमाना॥
॥ किचिंतअगनिरुईसमीतजरहि
पायगंगाजलपीवत॥९॥ बरसचौ
सचंद्रानब्रतकरै। औरत्रीयाबकत
जीवधरै। गंगोद्विकअचवैइकबार।
तजहिदोषतादेहअपार॥१०॥ बानंस
हनिमलहोइरहै। बर्षसहस्त्रदसबिस
सुफलहै। गंगानिकटिरहैजोकोइ॥

वानैवाहिबहुतफलहोइ॥११॥कोइद्रह
येकोबरषतपकरै।अरधसीसउरध
पाइधरै॥मासयेकगंगाजोरहै।वाने
वहबहुअछेफलल्हैहो॥१२॥गंगामृत्तु
कामाथेधरै।सोरजरूपपायंतेहरै॥
औरनदीकीयेजुसनान।सोफलगंगा
दरसनजांन॥१३॥गंगाकोध्यानमनधरै
गंगाबिलनामउचरै।गंगातारैदोऊबंस
।गंगावारतपापबिध्वंस॥१४॥गंगाअंधअ
समर्थजुहोइ।गंगामनधरिधावैकोई।जो
गंगाकोमनधरिधावै।होइपवित्रपरमंग
तिपावै॥१५॥जिनिप्याइनगंगानहीजाई।
तिपंगुलेजांनियोराइ॥जिनिअबगंगादे
षीनांहि।तेअंधरेजांनो।जनमतमांहि
॥१६॥जिनिपलनिअंगाहीगंगा।तेअपि
वित्रप्रानसबअंगा।जिनतनथयरमक

छेनदीकीये।सोकतगरलमेजनमि
यो॥१७॥मृत्युकेभयेजोगंगाआवै।तोअनेक
अगसुषपावै॥जितेदिवसअस्थिरजोर
है।इतनेवरषसुरगसुषलहै॥१८॥गंगा
रहतेदेवमुनिसाध।गंगामुकतिपणआरा
धा।भागीरथभयोवंसउजियारो।गंगासा
गरपुत्रनिस्तारो॥१९॥बिस्नचरनमिश्रत
फललहै।गंगाकीमहिमाकोकहै।गं
गाकीमहिमांअतिभारी।सेवतसिधसा
धमुनिधारी॥२०॥राजावचनकमारोमां
नो।गंगाकीमहिमांअतिजांनो॥सुनेंम
हात्मगंगातनो।पावैसर्बतीर्थफलघनो।
॥२१॥अरुजोयाकथासुनैचितलाई।ता
कौसर्बपापछयजाई॥सुनैपुरानलाल
जोकहै।गंगाकीमहिमाकोलहै॥२२॥
इतिश्रीमहाभार्थइतहाससमसारसमुच्चये
पंचमोध्यायः॥५॥जनमेयोवाच।जगिरा

जसी भयो प्रमांन।। बहु विधि विप्रन दी
यो दांन।। विप्र असीस बेद बिधि करै जे
जै सबद सबै उचरै।। सुन्यो येक अचिर
ज सो भाई। जहां तहां विप्र रहे अरगोदि यो
स्यायेक जगि मैं आयो।। सब सो हरिषे क
वचन सुनायो।।२।। सबही तहां जगि जस
गायो।। जे जे कार करत मन भायो।। सब मि
लि बैठे मगन गावन। आनंद भयो रिषिन
के आवन।।३।। ऊहां मैं अचिरज देख्यो कछु
अमो।। सत वासेर जगि भयो जैसो।। सत वा
सर जगि अधिकाई। ताहि देखि हं आयो
भाई।।४।। रुषिस्वर वाच।। कहि कहि मोरा
जगि की बात। कौनि ग सुनत सबही कू
गात। विप्र से रस तव कारिण्ययो।। अब स
जगि कौन बिधि भयो।।५।। न्यारा छेवाच।।
देषत दिव्य मांन फलं लह्यो।। सोई अब क
णा तुम सों कह्यो। विप्र येक है मांनी चारि।

असत्री पुरुष पुत्र पुत्र की नारि।।६।। बीन
त अंन बहुत दिन मांहि। तब सो अती
तप जि करि षांहि। असैं ही दिन बहुत मैं ज
इ। प्रीति सहत बीनें चित लाइ।।७।। चिकु
न बीन सेर भरि कीयो।। विप्रि सौं अगनि
जि पीसियो।। तब तिनि रुचि सों सतवा की
यो। तब तिनि पंच भाग करि लीयो।। चा
अब आवे अतीत मन भायो।। त्रषो अतीत
एक तब आयो।। सबही के सरधा मन आ
ई। अति आदर सो लीयो बुलाई।।८।। चर
न पषारे अति हित कीयो।। भाग पंच सो त
कौं दीयो।। जेंवत षुध्यावंत ऊभ रह्यो।। आ
मो अस बिमल देयो।।१०।। तस्य बचन यह
करि के सेवा।। अर जो है त्रिय तिन ही तम दे
वा। अतीत बिचारि न कही बहुरि तब य
ह निबोलि कर जोरि।।११।। अस्तनी उवाच।।

मेरौ भाग गुसांई लीजे। आज अतीत की पू
जा कीजे। जो कीजे अतीत संतोषायौ तें
और नहीं गति मोष॥ २॥ अस्त्री उवाच
अस्त्री कौ पिय छै संसार। अस्त्री कौ भरतार।
आधार॥ ताते तो सौं कहि यो नज्ञा॥ ३॥ हे स्वामी
हम कौं रस्यौ अंग॥ ३॥ स्त्रिय पतनी उ
वाच। हे सब धर्म संग आचरौ। तुम छिछा
डि कहूं भोजन न करौ॥ पति परमेसर मेरे
जांन। त्रिया कौ और न स्यिय ति है समांन
॥ ४॥ पतिदेवता परम गति मानौं। पतिप्र
सन सब सुष जानौं॥ जो मो पर कृपाल
हो सांई। दे हो भाग खेद हु गुसांई॥ ५॥ सो
अतीत जीयत बरस्यो। तब उषि पुत्र पि
तासौं कस्यौ॥ तुम्हारौ अंस पिता हो सही
इह बीन ती मानौं कही॥ ६॥ पुत्र उवाच॥
तुम तैं मैं विद्या तन पायौ। धरम देव गुर

[illegible]

पिता कहायौ॥ जो तुम पिता करौ सनेह
मेरौ भाग अतीत कौ देहु॥ ७॥ अपनौ भा
ग दीजै जब ही॥ वमधुरे पुत्र बधू बोलियौ
तब ही॥ अब यह अंस यासि लै दीजे॥
मोह कौ पात्र अतिकीजे॥ ८॥ पुत्रबधू उ
वाच॥ हम तुम्हारे सेवग अति गामी। तुम्ह
हमारे स्वामी के सांमी॥ देव देव देवनि गुर
देवा॥ हम तैं और कहा है इस सेवा॥ ९॥ अ
स्वामी वाच॥ पुत्र प्रजा या है सब लोक। मे
रे तुम प्रतिपालन जोग॥ दिन प्रतिपालन तु
म्हारौ कीजै। तुम्हारौ भाग काहे [illegible] कौ
लीजै॥ १०॥ पुत्र वाच॥ अपनौ लोरसु जांनि
बात। धर्म सही अब कीजै तात॥ पुत्रबधू
[illegible] सरसैं सौं कहै। तुम सो अतीत धर्म जो रहै
॥ ११॥ चक्रनि अन प्रीति सौ दयौ। अतीत
जै इस षरनन्नयौ॥ अतीत परम आनन्द

कीजांनी। धर्म मरथ प्रस्तन भयौ तब आंनी॥ २
२॥ तीनि लोक ज्ञ सब दयौ अपार। कोठिन
पुण्य जीती संसार। जैसें रीति देव सि
र विस्तरी। तुम्हारी ऐसे प्रसिध मत धरी
॥२३॥ बाहुर गनि मै लोयौ जन बही। सोव
न अंग अरध भयौ जब ही॥ ताल गपाफि
रयौ सकल संसारा। ढठेब कृत यज्ञ आचा
रा॥२४॥ तीरथ यज्ञ सब ही जे गये। कहं
न अंग कनक को भये। मेरो सुनो बचन
चित लाइ। गति धर्म की जांनी न जाइ
॥२५॥ कोरत सुधर्म गर्ब मनि आवै। या को
फल गरब ही मभावै॥ कोजै धर्म छाटि
अभिमांन। जातै सब फल होइ प्रमांन
॥२६॥ सुनि इतिहास बुधि जो लही। ता
ला हास कथा सो कही॥ जो या कथा सु
नैं अरु बाहि। कीनौ सकल यज्ञ फल ताहि

॥२७॥ कथा छठी न्यौरा की गावै। परम पु
नीति सदा सुख पावै॥ आनंद बढै सदा
सुख होइ। परम गति को पावैं सोइ॥२८॥
इति श्री महाभारथे इतिहास सार समुच्चये
अष्टमोध्याय॥ ८॥ युधिष्ठिर उवाच॥ राति दि
स डंजा रहि बीते। घर मैं मृत्यु कौन बिधि
जीते॥ कहो पितामह यह कु बिचारा। तुम्ह
रे बचन सब ही मैं सारा॥१॥ भीषम उवाच
इक्ष्वाकु वंस जु जौ धन आई। कथा पुरात
न अति सुखदाई॥ ताके घर नर बहु ना
री। ताको पुत्र अग निरुच्यकारी॥२॥ ता
को पुत्र सुदरसन भयौ। तिहि दिनि जनम
अतीत व्रत लयौ॥ उह छाव तिथ रथिया
समेत। धरम आत्मा रहै कुरखेत॥३॥ अती
तधरम ता कै मन रहयौ। तब द्विज बचन
यौ सौ कहयौ। जौ सब छाडि अतीत व्र
त लीजै। अैसे मृत्यु जीति करि लीजै

॥६॥ आइ बिमुष अतीत घर आई। ता
कों सकल पुंनि लेइ जाइ॥ ता कों सुकि
त लेइ सब आप। ताहि देत ले आपनौं
पाप॥७॥ जा कौ भाग अतीत घरि आवै
बचन तोर बिश्राम न पावै। ता कौ धर्म
छण सुनि कहौ। ज्यूं फूटे घट जल नहीं
रहौ॥८॥ जौ कछू घर मैं होइ न और। पां
नी बचन देइ सुष ठौर॥ सो ग्रहस्थ दा
ता मति पूरौ। नातन धन सो कूप अंधूरौ
॥९॥ पर उपगार हि नाही करै। अपनैं
स्वार्थ पसू पचि मरै॥ कर कर कूप घर
जांनौ तासा। जहां अतीत न फेरि जाइ नि
रास॥१०॥ धृग त्रिया जो पुरुष हि न भावै।
धृग तन जो पर उपगार न आवै॥ धृग त
न जा तें धर्म न होई। धृग कुल काज न आ
वै सोई॥११॥ अतीत बिन धृग सो है ग्रेह।
जहां अतीत समोंनां ही ग्रेह। जहां अती

त बिमुष होइ जाई। तहां न परहिं साध
के पाई॥१२॥ जहां न बिप्र साध बिश्रां
मां। धृग सो ग्रिह अभिष्या धांमां। धृग
त्रिया सन तन मन गयौ। अतीत धर्म मैं ता
सौं कहौ॥१३॥ बार बार कूटौ मम काई
सुनिं त्रिया अतीत बिमुष न जाई। बोली
नारि भाग बडे मेरे। स्वांमी बचन न मे
टौ तेरे॥१४॥ देवैं आपन पो देवें अरु धन।
राषौ कंत तुम्हारो पन॥ ऐसे बचन त्रि
या जब कहे। कहत सुनत सब के मनि
रहे॥१५॥ पालि तंत धर्म बहुत दिन गये।
आपन धर्म अतीत कैं अये। अतीत धर्म
प्रतिपाल्यो ये कू। तौ हंम हि आज्ञा आप
नौ देकू॥१६॥ पति को बचन न मेट्यो जाई।
अतीत बचन सुनि रही लजाई। घर तैं
बिमुष जाइ क्यूं करौ। हूं पतिबरता दे

घतेडरैो॥१५॥ यहकहिताकोआदरकी
यो॥ तंमधनप्रांनप्रीतिसूदीयो॥ बारि
सुंदरसनबोल्यो आंनि॥ उनरत्रिया
नहीनौंजांनि॥१६॥ नीतरिसयोअती
तबोलियो॥ वहसंतोषहे मागैकोमो
सुनतबेंनमनक्रोधनभयो॥ समझ्योम
नप्रसन्नकरिलयो॥१७॥ हारेमृत्युजीनी
यो आंनि॥ जोसतटरैतौतोरोकांनि॥
आपनौधर्मरह्यो दृढजहां॥ घरतैंमृ
त्युगईफिरितहां॥१८॥ धर्मप्रगटिमी
तरितबआयो॥ तापरिसुरनिपकृप
बरसायो॥ कीरतिधर्मकरीताघनी॥
यहपतिबरतासाधसंतोषनी॥१९॥
सरधासहितविप्रसौंप्रीति॥ घरमैंमृ
त्युलहयंजीति॥ मृत्युजीतीसोअसैं
करैनहितरजनमविषयामरै॥२०॥

जोयाकथासुनैंचितलाइ॥ ताकीमृत्यु
दुखसैजाइ॥२२॥ हरिचरितसुंदरसनचावसे
जांनियोसातईध्याव॥२१॥ इतिश्रीमहा
भारथेइतहाससारसमुचयेसप्तमोध्या
यः॥७॥ युधिष्ठरोवाच॥ कौनअकर्मनर
पाउपसहै॥ कौनसुकर्मसुर्गफललहै
है॥ यहमेरमनिबरतीआई॥ भीषम
पितौकहौसमझाई॥१॥ भीषमोवाच
बिप्रलो॥ मनतेछाडैधर्म॥ इहैनर्ककोरिबे
कौकर्म॥ अहंकारदुष्टमतिहोईस
मझायेमनमांनैनहीसोई॥२॥ बचनक
ठोरमतिअगपांनी॥ तातेनरककायचीलानि
मांनी॥ नर्कहूतेउगतनधरै॥ अंधकूप
मेंसोनरपरै॥३॥ कूडोबोलिजनपदधनहरै
दुखीजीवकीपीरनकरै॥ जातनबु
सोपरायो॥ करै॥ असैंबोगिनर्कमैंपरै॥

मेरै कूआ बावरी ताल। रोपै पैडै कंडक जा
ल। दे वे बिप्र बेसन वसंतावै। ऐसे जीवन
रक गति पावै॥५॥ पर भेस्व रहि सजेंहि नहि
जेते। नर्क रूप सब जानं न कृते ते। जे ते अन
दोष हि दो षलगावै। जे बिसासघात कौं
घावै॥६॥ अरु जे बिम्न प्रगत यों हासी॥
ते निज सदा नर्क मैं बासी॥ जो रितु बिनां
त्रिया संग जांही। सु रामास बिक्रिये क
रांही॥७॥ अरु जो रिपर त्रिय संग करै। ऐ
से जीव नर्क मैं परै। उन मद्दबी रजस बठ
इ डारै। ते नर सदा नर्क मैं धारै॥८॥ छोड
उल्ल सर खुरमैं करै। जो सालामैं पावके
धरै। दे वाल तुल सी बन राद्दाक रैउ चिष्ट
नर्क मैं सो इ॥९॥ साध हि सत्र जिन हि त्रि
तिधा राष्ट्र उरा छुरी बेचा हि हथिया रा। नि
ति गीत हरि बिन सुंब गांवहि। ऐसे जीव

नर्क गति यावंहि॥१०॥ पर न्यदा जो दिन उ
ठि करै। ते नर जीवन नर्क मह्हि परै। ऐसे
जीव सुरग कहूं जांहि। राजा या मैं संसो न
हि॥११॥ क्रिपा जीव अनाथ जु होई। दीन
दुखि व्यापै न हि कोई। ऐसे नंद्धि क्रिपा
जो करै। ते सब जीव सरग पग धरै॥१२॥
सीतल सहित बचन प्रिय दांन। होम जग्य
जप तप सनान॥ श्री जदुनाथ कथा कहै
जिते। प्रगट सुरग फल पावै तिते॥१३॥
बिस्न जगत गाइत्री देवा। सरधा मात पि
ता गुर सेवा। सास्त्र सुरति कौ कैहि कै रा
ह्यौ। ऐसे लोक सुर्ग कौ जांही॥१४॥ दिन
रि कथा बिचारे गाता। और जु कहै धर्म वा
बात॥ गंगा पद्म कूप माल जो करै। ऐसे जी
व सुर्ग निस्तरै॥१५॥ न डै अविद्या क्वहू
न करै। सो नर सदा धर्म बिस्तरै। पर दारा
धंन हैत न करै। सब को भाव मनो मन ध

रै॥ ४६ क्रोध दंभ मन कपट न करै। ऐसो
पुरुष सुगम पग धरै॥ अपनी अस्तुति आप
न करै। पर उपवाद न हिय में चरै॥ ४७॥ राषै
बचन परयो मांन। तिन कौं आदर सु गंधि
थांन॥ कथा आवई ज्ञांनी सही। सुरगनि की
मारग गति कही॥ ४८॥ यो या कथा सुनै चि
त लाइ। तौ संसार नर्क डर जाइ॥ भौ संसा
रति ना करि देषै। जीवन जन्म सुफल के
रि लेषै॥ ४९॥ इति श्री महाभारथे इतिहास
सार समुचये अष्टमो ध्याय॥ ८॥ युधिष्ठि
र वाच॥ भीषम पिता कहो फिरि मर्म। क
हा सरन रष्या को धर्म॥ अपने आश्रम आ
वै कोई। तासु प्रदीये कहा फल होई॥ १॥
भीषम उवाच॥ धर्म सरन रष्या को ऐसौ।
राजा रंकि देव सिरि जैसे। सुनि इतिहास
पुरातन बात। कथा बधिक कपोतनी की नि
ता॥ २॥ दिन प्रति बधिक करै पिक रिजारा।

हतै अनेक जीव आहारा॥ येक द्यौस उ
ठि चल्यो अहेरै। बन मैं बधिक कर्म कै
फेरै॥ ३॥ फिरत फिरत बन ते बन आयो।
ता दिन जीव कहुं न हियायो॥ बधिक हि
न टकत भई अवारा। अफल उदिम सु घो
अपारा॥ ४॥ माघ मास उतरगा लियो। अ
ति आवर्त जीव न जियो। बरषै मेघ हु मन्दै
काला। तरि गये सबे पाल परवाला॥ ५॥ पं
थ न सूझै चल्यो न जाइ। सीत भै नीत कंपै
अकुलाइ॥ ऐसें [illegible] बधिक चलि गयो।
जहां जल मैं नीत कपोती तहां॥ ६॥ देषि
दायि पकरि ताहि लई। आपन पकरि मा
र मै दई। दुष कपोती के मनि आयो। पर
सन पुरुष आतुन हि आयो॥ ७॥ बारबा
र कपोती कहै। कंत अकेलो कहूं बनि र
है॥ ऐसें बधिक आइयो तहां। तहां कपोत
को आश्रम जहां॥ ८॥ सघन वृक्ष तहां दे

थो आई। मांनों मंदिर रच्यो बनाई॥ ऊदिम
फुरे मन कछु न समाई। ता लिन बधिक रह्यो सु
रझाई॥९॥ अगनी त्रिबि हुवलत न भयो॥
छुधा अपार सीत तन बाध्यो॥ तापें कछु
न जाई कह्यो। अंग सकोरि काठ कैरस्यो।
॥१०॥ तहां ब्रक्ष कपोत घर रि आई। त्रिया पंथ
देषे अकुलाई॥ मोते घर आवती अगार।
आज कहा तें करी अवार॥११॥ त्रिया बि
छोह बिधाता दयो। आज अकेलो घर मैं
भयो॥ जब यह सिष बिधाता करी। त्रिय
रूप भाय बिस्तरी॥१२॥ जा दिन त्रिया परै
छिछोह। ता दिन मिथ्या घर सौं मोह॥ घर
सो ता घर नी सनेह। कोउ सुष सहै आलय
ह ग्रेह॥१३॥ इत तद विधि कपोता करी। त्रिय
देषी जार मे परी॥ आचिरज देषि सु [illegible]
करि रह्यो। तब सो बचन कपोती कह्यो
॥१४॥ मेरो धनि नाग मैं सही। जो स्वांमी मन

तुम्हरे रही॥ त्रिया को बडो भाग अधिका
ता पति हित कहा ही क्रम की बात॥१५॥ इ [illegible]
प त्रिय जहां संसार। छांडि मोह करि धरम
बिचार॥ अब तुम कहा सोच तहो नाथ॥
बिछुर न मिलन करम कै हाथ॥१६॥ धीरज
धरम संभारो। अंत आयो अतीत तुम्हारो।
कंत परे आपदा धर्म जु करै। ताको जस
जगत बिस्तरै॥१७॥ धनि सु ग्रेह अतीत की
सारा धनि सुत न धनि पर उपगार। नारी
धनि पुरुष हि नावै। पुरुष धनि धर्म हि मै
न लावै॥१८॥ सीरकुषी सीत ते भीत। ऐसै
आयो ग्रह अतीत॥ जो कछु होइ आवै उ
पगार। ता तें औ रधर्म मन हि सार॥१९॥ ल
तैं यह तुम्हारे आश्रमा। तुम्ह सो हो इके
रो सो धर्मा॥ ऐसौं बचन कपोती कह्यो।
सुनि कपोता के मन निर ह्यो॥२०॥ सुनि मन
भयो धर्म संताप। तब कपोत निरनासे अ

आनि चेचसकोलि कैपात॥ बारि आग्नि पंछीया घात
पाप मैं करौ सबल गय हद देहा॥ धर्म न छोडौ
बहुत सनेहा॥ ४१॥ कपोतो वाच॥ हो पंथी उ
तम आराम॥ मो तें कहा होइ उपगार॥ हो चु
गि उड़ि आपनो तरौ॥ कौन जाति अतीत ध
र्म करौ॥ ४२॥ तब दिन [illegible] रि उगि चल्यो॥ बिसू
रि देषि त्रिया निबरतार हि हूरि पकरि
चेच षर तैं निकरौ॥ आगनि बधिक [illegible] री
[illegible]॥ आगै आगा निप्र जारी हां॥ आपन
कउ छित्ता प्योत हां॥ ४३॥ दूधो सीत क्षुध्या
आकुलानां॥ बहुरि कपोत देषि पछिता
नां॥ धृग ग्रह पंछी हम पसु जाति॥ आपनै
पेट लरै दिन राति॥ ४४॥ एक सहस जनैं
देषाहु॥ हम नहि पेट आपनैं की बाहु॥ बा
र बार [illegible] स्मरै आपा॥ क्यूं करि हरौ कुघसं
ताप॥ ४५॥ धर्म पाछि लो पर्यो डो निवाके
मनि दह उपजी आंनि॥ अपनी देह धांन
पर हरौ॥ तो जनम आनि अतीत को करौ

॥ ४६॥ यह कहि अगनि मधि सो परयौ॥ बधिक
देषि मनि अचिरज करयौ॥ धर्म अर्थि उठि
छाडौ प्रांन॥ देषि बधिक के उपज्यौ ग्यांन
॥ ४७॥ बधिकोवाच॥ हो मां विषका है कौन
गो॥ सब दिन पाप करत मो गयो॥ मैं मन विष
हो इक करे अकर्म॥ देवीया पंछी कौ धर्म॥ ४८॥
मैं सब ही कौ दीनौ संताप॥ कीयो अनेक जी
व कौ घात॥ हो निडर सर्ब पाप कौ मौन॥ मो
हि नरक तें राषै कौन॥ ४९॥ जिहि हिंसा [illegible] तपती
छिन [illegible] कीयो॥ जिहि मन पर उपगार न ली
यो॥ सीतन याय रूप मैं कीयो॥ बहुत [illegible]
र जीवन दुष दीयो॥ ५०॥ बहु पसु पंछी कै
नाही धर्म॥ सोई धनि सुर्वरै सुकर्म॥ यह
अब लकरी डारी तोरि॥ जिहि हिंसा करी जोरि
व मारे कोरि॥ ५१॥ फारि जारि बिहंगा परख
री॥ दिष्ट करि कै बधिक दया मनि धरी॥

बिगासि कपोती कीयौ बिचार। पुरुष बि
ना सूनौं संसार॥४२॥ जैसैं वृथा धर्म बिन ये
हा। ऐसैं वृथा धर्म बिन देहा। ऐसैं वृथा खेत
बिन बारि। जैसैं वृथा पुरुष बिन नारि॥
ज्यूं त्री गेह दुव बिन छीन। ज्यूं पांनी बिन
सरवर मीन॥ ऐसैं उविरफल कर हीन।
ऐसैं त्रिया पुरुष बिन दीन॥४३॥ माता पि
ता भ्राता संजोग। तनया बंधु कुटंब सब
लोक॥ सुख संजन सम थी धन धांम पति
बिन ऐसैं सब कौं किहि कांम॥४४॥ यह कहि
अगनि मथि सो परी। साची सतवंती ब
तें सो वरी। जैसैं देव लोक सब दमायौ। दे
व बिवांन सुरग तें आयौ॥४५॥ तिहि चढि
पुरुष सहित सो चली। आगैं प्रगट धर्म
भयौ बली॥ कोरि अठ्ठ बर्ष सुख लही
ऐसैं सति लोक मैं रही॥४६॥ अथ गारुडू

अपतन चाहि। मंत्र सहित गाहि ल्यावै त
हि। तौ त्रिया पति नरक तें काढै। दिव वि
वांन सहित सुख बाढै॥४७॥ कैसौं पाप पुरि
ष किन करै। कहै पुरांन सती लै तरै। रो
ग वंत दुखी होई। दुखी सुखी जांनै सब को
इ॥४८॥ क्रोधी कृपन पतित है रह्यौ। ऐ
स्त्री कौ भरता गति कह्यौ। पतिब्रता जो
इहै नारी। सो इ पति कौं लेइ उबारी॥४९॥
भीषमो वाच॥ साध संग कौं यह फल भाई
परम सुबुधि विबेक कै आई। निरविकार
परम मन नह्यौ। विरक्त सुमरि उतर दिसि
गयौ॥५०॥ सीत उस्न सुख दुख सम भयौ
अस्थिर मत गुप्त होइ रह्यौ। ता गति में
न बैराग उचाट। चलत न जांनै उबट बा
ट॥५१॥ सब घट अगनि उठी बन मांहि
जरि सब देह भसम भई तांहि॥ गांधारी पाप

हरिसनमुखभायो॥ परमबैराग्यबधिककै
आयो॥५२॥लाया कथासुनैंअरुकहै।
ताकैपापदो मनहिरहो॥यहहदतहास
मोहिमतिथोरी॥लालादासकहैकरजो
री॥५३॥कथाबधिककहीतकैलांनि॥नौ
मीध्यायकहीपरवांनि॥कहैकथासुनि
उपज्योग्यांन॥तीनलोकसोभयोपरवां
न॥५४॥इतिश्रीमहाभारथेइतहाससार
समुचयेनवमोध्याय॥९॥युधिष्टरो
वाच॥कहूंसंसारदुरगतेतरै।कहूंआप
दाकलेसमनहरै॥तेसैंजसबो।तेसूब
कोई॥किहिबिधिप्रीतिसबसोंहोइ॥१॥
भीषमोवाच॥तसिबचनबोलेमतिला
व॥हरिसोंप्रीतिधर्मसूंचाव॥परदाराप
रधनपरहरै।सरधासोंहरिसुमिरनक
रै॥२॥सबहीबिधेआत्माजांनैंउरेपरै

येकहीमतिमांनैं॥संतोषीयंद्रीजितपू
रै॥परमदांनिग्यांनमतिसूरै॥३॥सरधा
सोंहरिसुमिरनकरै।सोसंसारदुरगाते
तरै॥परमसुद्धिसबकौउपगारी॥बो
लैमीठेबचनबिचारी॥४॥अतिसुधोम
निगांरहनरहै।हरिदेओरसुषओरनद
है॥परउपगारीधर्ममतिहोइ।ताकोउ
मबोलैसबकोइ॥५॥घरमायातेरहैउ
दास॥औरअतिउग्रग्यांनप्रकास॥बिस्न
भगतसंतमतिहोई।तासोंप्रीतिकरैस
बकोई॥६॥उ॥आनिनकेहरिचरनामन
लावै।रातिदिवसहरिकेगुनगावै॥स
बतजिरांमनांमब्रतधरै।सोसंसारदुरग
तेतरै॥७॥मातापितातीर्थगुरदेवा॥तुल
सीगऊबिप्रकीसेवा॥८॥ब्रतअसनान
दयामनधरै।सोसंसारदुरगतेतरै॥हरि
गुनजसगोतपुरांन॥भारथकथासु

नैं देकोंन ॥ ९ ॥ हरिभक्तनकौं संग जो करै ।
सो संसार दुरगति तरै ॥ सुनि अपराध और
कौं हरै । अपनौं धरम आप उच्चरै ॥ १० ॥
काम क्रोध लोभ मद छोडरै । सो संसार दुरग
ति तरै ॥ अस्त्री धर्म जो अपहि चांनैं । पुरषहि
नारायन करि जांनै ॥ ११ ॥ दिन प्रति पुरुष
बचन मनि धरै । सो संसार दुरगति तरै ।
ब्रष्या और आराधै देव । त्रिय के परम धर्म
पति सेव ॥ १२ ॥ अतीत बिप्र साध गुर सेव ।
जग्य दान तप तीरथ देव । जब के द्रुध मन
जाइ कीयौ । तब निकस्यौ सकथा मन दी
यौ ॥ १३ ॥ कथा दुर्गति नरक की कही । दस
बैधा पाय जांनि यौ सही ॥ जो या कथा सुनैं नि
बाहि । तीर्थ कौ दस गुंन फल आहि ॥ १४ ॥
इति श्री महाभारथे इतिहास संसार समुच्चये द
समोध्याय ॥ १० ॥ युधिष्ठिर उवाच । विप्र लेन
समन न संकन न करै । कैसी नांति पतिग्रहह

रौ । कथा पतिग्रह कौ ब्यौहारा । अब हिं पि
तामह कहो बिचार ॥ १ ॥ भीषमोवाच ॥ सुनि
नृप येक कथा इतिहास । जब हिं सप्तरि
षि भये उदास ॥ बिरषादब राजा एक अ
ष्या । अब सुनि सप्तरिषिन की कथ्या ॥ २ ॥
का सिब गौतम नारद हा या । अत्रि यज्ञ मिषि
ब्रह्मरिषि राजा ॥ बिस्वामित्र जमदगनि
जांमा । ये सुनि सप्तरिषिनि के नांम ॥ ३ ॥
त्रिया रुधती अंधा दासी ॥ प्रसु पसु देव ग
चरन निवासी ॥ बहु कृत घोस तप कीनों जं
हां । पस्यौ अकाल मेघ बिन तहां ॥ ४ ॥ सो
आश्रम तजि के रषेसा । आये बिरषादब
के देसा ॥ लागी छुधा गये सब तहां । बा
लक मृत्यु पस्यौ है जहां ॥ ५ ॥ राज्यु निकस्यौ
तहां अहेरै । आयो तहां कर्म के फेरै । मृ
त्यु क छुधा पाक तहां कीयौ । राजा देषि
बचन बोलियौ ॥ ६ ॥ मृत्यु कपि साच कौ

वंस्कौ नाई। तुम तपरूप ब्रह्मरिषिराई
॥ मेरे कहे छाडियह देहा। चाहौ अनद
बसौ लिहा॥ ७॥ सप्तरिषिउवाच॥ राज्ञा प
तियह है मन हि करे। राज्ञ सघोर मैं पाप
मैं परै। बरु यह हम लो मृत्यु। १ को पाप॥ ९॥ अ
तिनिष्ट राज्ञा कौ दोन॥ चाह्मीकउ॥ दस स्वां
न सम्मो चक्री। दस चक्री समो धुजा॥ दस
धुजा सम्मो बेस्या। दस बेस्यां समो न्टप॥ ९॥
यह सुनि मन बिलषांनो राइ। उलटि रा
व घर कीयो उपाइ॥ राज्ञा येक मतौ म
नि कीयो। गूलर आनि सन सुष मेल्ही
यो॥ १०॥ राषे कलकरि तिहि बिधि तहां।
बन न्ह छे आये रिषि जहां॥ तब मृत्यु
क चले छिटका इ। आगे गूलर दीषे ज्ञा
इ॥ ११॥ तब तिनि छीनि हाथ मेल्ये। धौवै
मन गूलर कंद लये॥ गूलर दोकिं औरे ला
इ। ये मो पे फल्ल के है न जाइ॥ १२॥ अत्रिरो

वाच॥ ये फल्ल हाथ न छीवहि आज्ञ॥ ब्रह्म
तेज बिन होइ अकाज्ञ॥ १३॥ है न आपनौ स
र्व धर्म। कश्यप बिचारि जकी जै कर्म॥ १४॥
बासिष्ठोवाच॥ संचित सदा धर्म कौ कीजै।
अर्थ हि काबहि मन न हि दीजै॥ संचै अर्थ
धर्म बहुल्ल है। अर्थ गये धन धर्म न रहै॥
१५॥ गौतमोवाच॥ जैलौ सदा सम भक्ति कैजा
है। तातै ब्रह्मतेज तप रहै॥ अर्थ लोभ तौ
पजै दोष। तातैं रिषि छुटु मूल्लो संतोष॥ १६॥
कास्यपोवाच॥ जो पै अर्थ दरब संग्रहै।
तौ कबहु ब्रह्मतेज तप रहै॥ निरासी जो
कि चिंत मुनि जेते। ब्रह्मलोक पद पावैं ते
ते॥ १७॥ नारदोवाच॥ सर्ब बस्त जो रहु
होइ जाइ। त्रिस्ना तरुनी दिन आधिकाई
जपां न बिनां जैसें मन सोच। कीजै त्रिस्ना
कौ संकोच॥ १८॥ विस्वामित्रोवाच॥ हो
म कांम जैसें हि बढावै। तैसें मन संतोष

नआवै॥बाढैलोभकोमनांबारै।जैसैंअ
गनिबरैघृतपरै॥१८॥अमदगानोवाच।ज
हांतहांविप्रपतिग्रहकरै।आपनैंब्रह्मत
जतपहरै।तादिनकरैपतिग्रहमांनि।
तादिनब्रह्मतेजकीहांनि॥१९॥अरुंधती
उवाच।जैसेंकमलनालकोतंतु।त्रिश्ना
हियोबहावैजंतु॥२०॥त्रिश्नाबटैबटैपर
बाह।तातैंत्रिश्नाकरैनसाध॥२१॥पंस
पंसीउवाच॥ताहिपढ्योगुन्योंसबज्ञां
नं।जिहिआसाकोकह्योनमांन्यों।ता
हिकोपढिबोसतिसार।जिहिआसाको
कीयोबिचार॥२२॥जाआसाकोवारन
पार।जिहिआसाबांध्योसंसार।जाआसा
कोसबजगदास।आसाहिब्रसकरैनि
रास॥२३॥होइनिरासआसापरहरै।ता
कोआदरब्रह्मकरै।जिनिपायोआसा
कोपार।ताकोहिरदोपरमउदार॥२४॥

चंडोवाच॥जोकछुकरैसाधमनगांन
सोकीजैमेरेमनमांनी॥पंडितसाधच
रैकर्ममेरैमतसोइपैधर्म॥२५॥इहवह
मूलरक्षाडैंतहां॥आगेंचलेसरोवर [illegible]
हां॥आयेनिकटसरोवरजहां।सुर [illegible]
मिल्योजतीदोऊतहां॥२६॥चक्रदिसि [illegible]
छसुहायेछांहि।निर्मलजलदेष्यो [illegible]
मांहि।तामहिंअमलकमलरहेछा [illegible]
दीषेतेमनप्रअसुषदाई॥२७॥कोकिल [illegible]
रसुहाहेमोर।चकवाहंसचकोर
।ताहिदेषिसबकौमनमान्यो।तीर्थ [illegible]
सरोवरजान्यो॥२८॥कोतिसमैडेरो [illegible]
धरे।फुनिसनानसबहीमिलिकै [illegible]
कीनीधर्मपरक्ष्याजांनि।छलकरि [illegible]
इच्छुरायेआंनि॥२९॥करिसुमिरनमु [illegible]
आयेतहां।देषैनहींचसडैतहां। [illegible]हां

ninety eight

DMV II. 33

ctd p103

नआवै॥ बाढैलोभकांमनांबारै।जैसैंअ
गनिबरैघृतपरै॥१८॥ अमद्यानोवाच॥ ज
हांतहांबिप्रपतिग्रहकरै।आपनैंब्रह्मतै
जतपहरै॥ ज्यांदिनकरैपतिग्रह्यांनि
तांदिनब्रह्मतेजकीहांनि॥१९॥ अकथनी
उवाच॥ जैसैंकमलनालकौतंतु। त्रिष्णा
हियोबहावैजंतु॥२०॥ त्रिष्णाबटैबटैपर
बाइ। तातैंत्रिष्णाकरैनसाधू॥२१॥ पंच
पंचीउवाच॥ ताहिपढ्योगुन्योंसबजां
न्यो।जिहिंआसाकौकह्योनमांन्यो॥ ता
हिकौपढिबोसतिसार।जिहिंआसाको
कीयोबिचार॥२२॥ ज्यांआसाकौवारन
पार।जिहिंआसाबांध्योसंसार॥ ज्यांआसा
कौसबजगदास।आसाहिदासकरैनि
रास॥२३॥ होइनिरासआसापरहरै। ता
कौआदरब्रह्मकरै॥ जिनिपायोआसा
कौपार। ताकौहिरदोपरमउदार॥२४॥

चंडीवाच॥ जोकछुकरैसाधमनग्यांनी॥
सोकीजैमेरैमनमांनी॥ पंडितसाधआच
रैकर्म।मेरैमतसोइपैधर्म॥२५॥ इहकहि
ऊठलरछाडेतहां॥ आगैंचलेसरोवरजा
हां॥ आयेनिकटिसरोवरजहां।सुरपति
मिल्योजतीकौतहां॥२६॥ चहुंदिसिवृ
छसुहायेछांहि।निर्मलजलदेष्योतां
मांहि॥ तामहिंअमलकमलरहेछाई
देषतेमनप्रसन्नसुषदाई॥२७॥ कोकिलकी
रसुहाहेमोर।चकवातहांहंसचकोर
॥ ताहिदेषिसबकौमनमान्यौ।तीर्थरूप
सरोवरजान्यौ॥२८॥ कांठिनसौडेआगैं
धरे।फूंनिसनानसबहीमिलिकरे।
कीनीधर्मपरख्यांजांनि।छलकरियं
इचुरायेआंनि॥२९॥ करिसुमिरनमुनि
आयेतहां।देषैंनहींजसौंडेजहांतहां

तौ हम्मपैयेही आहि। चोरी औरनगाकै
हि ३०। आपसमैं बिभ्रम नये तहां॥ त्यागे
सो हदैंन सबजहां॥ आपसमैं बिभ्रमन
ये तही। अपनौं धर्म संन्यासे तौम ही॥ ३१॥
अत्रिउवाच॥ अहल्या विसरू ड जे आप ऊ
तनने नेरकरै कौ पाप। जातिद्वेष गुरनिंद्या।
करै। सुंनि विपरीति बुधि मन धरै॥ ३२॥
ता कौ पाप होत नि जांनि। जिनि ये हरे म
सौं डै आंनि॥ डिम का जधर्म जो करै। नीच
जांति संगति मन धरै॥ ३३॥ ता कौ पाप द
ष होइ॥ निजांनि॥ जिनि ये हरे म सौं डै
आंनि॥ सुरापांन आ मषते पाप॥ जिनि ये हरे
मसौं डै आप॥ ३४॥ बिन गुरु धर्म नेम अ
रु जाप। ता कौ दोष महासंताप॥ अग्यां
नी तौ सुमिरन करै। ता कौ कछू न का
रिज सरै ३५॥ कासिबोवाच॥ जो उप
हासि परांई करै। बिप्र सौं हठ्ठी जो

मरै॥ रांम भगति सौं करै बिरोध। कुवच
चन माता सौं क्रोध॥ ३६॥ आत्मग्यांन बिमु
ष जो होई। सरधा धर्म न मांनै कोई। ता कै
सिरि ऐसैन कौ पाप। जिनि ये हरे म सौं डै
आप॥ ३७॥ वेद धर्म मारग नहि गहै। बी
च हि अप मारग संग्र है॥ धर्म बेद गुरनिं
द्या करै। साधनि कौ जो दोष मन धरै॥ ३८॥
ता कौ होइ है ऐसो पाप। जिनि ये हरे म सौं
डै आप॥ आपकां म स्त्री बसि होई। मात
पिता मांनैं नहि कोई॥ ३९॥ जा के सिरि ऐ
सेन कौ पाप। जिनि ये म सौं डै आप॥ बहु
त कही अब मांनौं मेरी। मो कौ सो हत्या
ती कलि केरी॥ ४०॥ बसिष्टोवाच॥ निक
टि हि परमेस्वर रघुबर हरै॥ आन देव की
सेवा करै। कबही कथा सुनैं न इत हा
स॥ अरु औरहै दुष्ट कै पाप॥ ४१॥ आर स
मस्त सुनै जो कथा॥ औरनु बकि बकि
कहै अकथा॥ परै ताहि ऐसैन कौ पाप

जिनियेहरेरससौडेआप॥४३॥ हरिगुनसाहि
तप्रीतिनहिहरै। औरतुछकथामनधरै
बिनुरितुदिनमैंपुनसुषमानै।यौसपबे
ललकछुनजानै॥४३॥ बिनुकाजपिताही
सूरोसा।अरुदषाकोजालगावैदोस।पु
रेताहिअैसेनकोंआप।जिनियेहरेरससौ
डेआप॥४४॥ नारदउवाच॥ सुनिकेंक
छूधर्मनहिंगहो।अपनैंपुनिआपसुषक
है॥ भीतीवस्तत्रियातुरिषाई।पुरुषहि
बचनरहेअगोई॥४५॥ केरकसबचन
पतिहिदुषदेई।अतिप्रचंडआगैतेलेई
॥ निसंकप्रचंडकलंकीषांनि।राषैनही
पुरुषकीकांनि॥४६॥ तासिरिअैसीत्रिय
निकोपाप।जिनियेहरेरससौंडेआप॥बा
टकुमारेचोरीकरै।औरनैंपाईदेसव्योह
रै॥४७॥ हंसपादोषकपटमनधरै।कुबधीक
पत्ताइतनहरै।ताहिहैअैसेनकोंपाप
जिनियेहरेरससौंडेआप॥४८॥ विस्वामित्रो

वाच॥ तीर्थजाइकरैजोपाप।संतसाधजु
बिरोधैआप।देवबेदगुरनिंदाकरै।पर
उपवादकरैमनधरै॥४९॥ औगुनताग्रहै
हिसतिजांनि।लोहरेहिबडहिममांनै
कांनि।परैताहिअैसेनकोपाप।जिनिये
हररससौडेआप॥५०॥ गौतमोवाच॥ जोकै
अतीतबिमुषहोइआइ।पांनीपीवतबि
डारैगाइ॥ पंगतिमेंदसभामैकरै।सुर
मासीकीबित्रींधरै॥५१॥ सुद्रअंनविप्रजो
षाइ।करैविस्वासघातघरआइ।पर
धनपरदारासूंप्रीति।जोभरषिषेक
अनीति॥५२॥ कपटबचनभक्तनसूं
कहै।मनकौभावअनतहिरहै।परैत
हिअैसेनकौंपाप।जिनियेहरेरससौडे
आप॥५३॥ जमदग्नोवाच॥ बुराजानिपुरु
षहिपरत्यागै।आपनेस्वार्थिऔरहितला
गै।परैताहिअैसेनकौपाप।जिनियेहरे
रससौडेआप॥५४॥ नरताहीनदैदादीरो

गी। छाडै ताहि देषि मनि सोगी ॥ ताहि
होइ अैसेन कौ पाप। जिनि येह हरेन सौं डे
आप ॥५५॥ चंद्रोवाच ॥ तांमसी जो निअ
रूपाय घनेरो। सो चित के घर होइ जो चे
रो॥ सो चित क्रम कछु आचरै। झूठी सो ह
आप जौ करै ॥५६॥ मिथ्या बोलि करै पन
ता की। संत संगति मनसा नही ताकी। ता
हि होइ अैसेन कौ पाप। जिनि येह हरेन सौं
डे आप ॥५७॥ पसुपंछीउवाच॥ जो मुषते नि
कसै सो ईकहै। ब्रह्म दोष कौ डरन हिग
है। ताहि होइ है अैसेन कौ पाप। जिनि येह
रेन सौं डे आप ॥५८॥ व्यासउवाच॥ ब्रह्म जो अ
तीत छि द्धुनि पढै। हरि हित ब्रत ते जो दिन
रटै॥ ता पुंनि कौ क्यत नो फल जासा। जिनि
येह हरेन सौं डे तास ॥५९॥ जगि नेम ब्रत प
जाकरै। द्वव्रतपर स्वै स्वर मन धरै। ब्र
ह्म ग्यांन फल उपजै ताहि। जिनि येह हरेन
सो डे आहि ॥६०॥ साधअतीत गुरसेवा

करै। छाडि विकार हरि भ्रम न धरै॥ परउप गार तनौ फल ताहि। जिनि ये हरे त सौंडे आहि॥ ६१॥ अध्यात्म बिद्या बड भाग। बिषै निरंतर तिहै अरु बैराग॥ उभ सुष सदन सील है अरु रहै। सब रूप नाराइन कहै॥ ६२॥ आग्या कारी गुर की सेवा। जिनि त्याग तन को पायो भेवा॥ सरधा अब धर्म फल ताहि। जिनि ये हरे न सौंडे आहि॥ ६३॥ रषी स्वरो वाच। स्वामी सोंह तुम्हारी नीकी। जानत सबै परायजीव की। तुम्ह ही साध चोर सन्यासी। तुम्हारो सोंह हंमारी हासी॥ ६४॥ तुम को आहि कहौं सति भाव। कवन अरथ यह कीयो उपाव। हम मारो न हि डा लो भेव॥ तुम अपनौ आप परकासौं देव॥ ६५॥ ये इ वाच॥ ताते मैं कीनौ छल कर्म। चाहौ सुन्यौं तुम्हारो मर्म। देष्यो सत तुम्हारो मा रा। हो रिषि सुनैं धर्म रिषि राव॥ ६६॥ च ढिये आप दिव्य बिवान। सुरग सब देव

जैनी सांग। सुरग पवित्र तुम्ह तें हो इ। तुम्ह समान और न ही को इ॥ ६७॥ भीषमो वाच॥ तब रिषि संग यंद्र के गये। लोक बिराज मांन सो भये॥ जो या कथा सुनैं चित लाइ। ताको सकल पाप कुष जाइ॥ ६८॥ गुर की क्रिपा कह्यो इत दासा चरन कमल व लिलाल दास। ये को दस कहे इतहास सप्त रिषिन की कथा सुतास॥ ६९॥ इति श्री महाभार्थे इतहास सार समुचये एक दस मोध्याय॥ ११॥ युधिष्ठिरो वाच॥ पाप कहां तें उपजे तात। मो सौं निज कहिये यह बात॥ काहे तें उपजे यह दोष। कारं करि आवे मन संतोष॥ १॥ भीषमो वाच॥ उपो रस उपजे सब व्याधि। ज्यूं सल्लव मास बकी आदि लो ही ते उपजे सब षा पाता तें हो इ दोष सं तापा॥ २॥ अंध रवा का म करि अध त्रिय तत जि और न मानि बंधा॥ ताके त्रिश्ना बढी अपार। पायें डल्पत्रि

त्तिसंसारा॥३॥ ज्यूं छाडिये पाप अरु दोषा॥ सोम
नतैं धरिये संतोषा॥ लोभ तें सब दोष संताप॥
उपज्यो मनही सारै पाप॥४॥ कांम क्रोध त्रिस्ना
न बुझाई॥ कै पाप लोभ दुष त्राई॥ कैरै सद
साधन कों संग॥ पावै त्रिस्न नक्ति को अंग॥
॥५॥ त्रिस्ना नक्ति मनिधरि संतोषा॥ नासै अ
घ पाप अरु दोषा॥ सुनैं पुरांन बिचारै सार॥
अैसैं लोभ न छाडै ज्यूं नार॥६॥ कांम बसि ज
ग गहि रे पर्यो॥ ज्यूं पतंग देषत जरि मर्यो॥
ब्यूं सी मीन गहै ज्यूं धाई॥ त्यूं लोभ तें नर के
सी दुख पाई॥७॥ साधन की संगति अनुसरै
॥ दिन दिन लोभ न पछि मनैं करै॥ ज्यूं चिंता
बलपै परिषदरै॥ त्यूं अग्यांन नरकलै परै॥
८॥ सब दिन संत को दृढ ज्यूं दहै॥ त्यूं लोभ
तें धर्म नहि रहै॥ तातैं सुन कूं सतिय कबी
त॥ ज्यूं ज्यूं लोभ छाडिये तात॥९॥ राजा च
मबुधि परहरो॥ छाडि लोभ मन निश्चल
करो॥ कांम क्रोध मद लोभ गमावै॥ सो बै

कुंठ परम पद पावै॥१०॥ जो या कथा सुनैं
चित लाइ॥ ताकौ सकल पाप छिपे जाइ॥
हरिजन धर्म कथा मन रहै॥ जो या कथा
सुनैं अरु कहै॥११॥ पाप लोभ की आदि ब
षांनी॥ ध्याइ बार ही लीज्यो ज्ञांनी॥ कथा त
णीं जु कह्यो इतहास॥ बुधिवंत जन पावहि
तास॥१२॥ इति श्री महाभारथे इतहास सार
समुच्चये द्वादसमोध्याय॥१२॥ युधिस्टरो
वाच॥ तुम्ह कौं देव करौ प्रनांम॥ तुम्हारे वच
न सुनत बिश्रांम॥ बचन तुम्हारे बेद प्रमां
न॥ तप बडौ की संम्रिता ग्यांन॥१॥ सकल रि
कै षिनैं कीयो बिचार॥ तप तैं संम्रिता अधिक
अपार॥ सब साधनि मिलि कह्यो बिचारी॥
जप तप तैं संम्रिता अति भारी॥२॥ भीषमो
वाच॥ अब सुनि तप संम्रिता की बात॥ कथा
पुरांतन बरनौं तात॥ तप फल अरु संम्रिता
फल जु था॥ जाजुलि तुलाधार की कथा॥
॥३॥ आसन तट समुद्र की तीर॥ सुनि जा

जुलितपगंभीर॥ अधिकउअतपकीनौंजा
नि। पंषियुडटा नमैंब्याईआंनि॥ ४॥ सेव
कोरतपंषीउडिगयो। तबप्रसिधिज्ञा जुलि
आनिन्नयो। पंषीदेषिगरबमनकस्यो॥
तबबांनीआकासउचस्यो॥ ५॥ जाजुलिग्र
बबहुतमनधस्यो। तुलाधारसमितोउनहि
कस्यो। ऐसेंमैंगरबमनिआंनियो। बानारसी
बसैबांनियो॥ ६॥ यहसुनिमनिअचिरज
आनियो। देषौतुलाधारबांनियो। सोबांनी
आकाससुनाई। तुलाधारकीबहुतबडाई
॥ ७॥ तबरिषिचलेतहांमनराई। बांनार
सीपहुंतेजाई। ताकेनिकटिजुआयोतब
ही। तुलाधारउठिबोल्यौजबही॥ ८॥ आव
७ हुजाजलितुमबडनामी। धनिहंमारोभागसु
निसांमी॥ सुनिबांनीउपज्योमनरागा। दरस
नधनिहंमारोभागा॥ ९॥ सेवाकरीबहुत
मनुहारी। बोल्योमीठेबचनबिचारी। तुम्ह
आयेमनमैंधरियेह। काहाकरौंसोआग्यादे

हा॥ १०॥ जाजुलिउवाच॥ ऐकैब्रहसमकाल
संसार। ज्ञांनहूबहुतग्यांनब्योहार। औ
रअचंभौजा। जुलिकहै। धर्मकहारसबि
कीरहै॥ ११॥ सोसमझाइकहौएबात। अ
चिरजबहुतहमारेगात। तातेंहमआये
तुम्हपासा। तुलाधारमेटोयहसासा॥ १२॥
तुलाधारोवाच। जातैंयहज्ञांनतहौकहौ।
समिताग्यांनअबसुफलहो। पूर्बसंस्कार
मतिसार। यातेउपज्यौंबुधबिचार॥ १३॥
नांमैंपढ्यौनअतितपकीयो। नांउपास
नाब्रतमनदीयो॥ जोकछुदेष्योग्यांनप्रक
सा। सोमेरेपूर्बअ[illegible]तास॥ १४॥ डूषीदेषिड
षटारोसही। सोनिजधर्मबातयहकही
॥ काहूकौंनदोषहूंकरौ। ऐसौधर्मसदा
आचरौ॥ १५॥ बिप्रउपदेसकरौंसबकाज।
हरिसंगतिहरिमदरिसाज॥ बिप्रधेनिगु
रकौपहिचांनै। सबहीमैंनारायनजांनै।
१६॥ छाडौपाषंडीनिकौसंग। सदा [illegible] करौ

साधनकौंसंग॥तुम्हापकरिघाटिनदेही॥अं
सपरायेबाढिनलैही॥१७॥स्लोका॥करोतिब
हुअंधानां॥बनिककर्मानंबचनां॥सजांति
नर्कंघोरे॥धनतंस्पायीहीयते॥१८॥इष्टीदा
लिद्रीसूरिषमांनि॥इहहैदुषकौइडहकैअं
नि॥निजकरिअंधनरकसोपरै॥बकुरिद
द्रहोइऔतरै॥१९॥मनबिनसर्बबिक्रीक
रै॥हांनिलाभकछुमननिनहीधरै॥भयेग
येकौनहीसंदेहा॥संमिताग्यांनहंमारेएहा
॥२०॥इष्टउदैज्ञानकाहौदैव॥औगुनतजि
सबकेगुंनलेव॥अस्तुतिनहीनिंद्याकरौ
सबहीबिषैभावमनधरै॥२१॥अंधकुब
धीबहिरौजोहोइ॥इड्डीबिनबिषैअन्धहै
सोई॥सुधभावसबसौसमिरहौं॥कासौं
सत्रमित्रअबकहौ॥२२॥भलौबुरौछिनअ
सुभनमानौं॥निजआत्मासबहीमैंजानौं
सरवरनदीसमुद्रसमांनौं॥तीर्थमठपर
बतसबथांनौं॥२३॥आश्रमबराबरिस

बहीजुमेरौ॥सबहीमैंपरमेस्वररहेरौ॥मो
चिरदिनसबकौसुधर्म॥ममसमिताबिनं
आचरैसुकर्म॥२४॥लोभमोहसबछाडै
करौं॥कबहूंकौधनमनमैंधरूं॥मैयहक
थाकहीकुमराता॥जाजुलिसमझियह
बाता॥२५॥जाजुलितुलाधारहौजहां॥तिप
बीउडिआयेतहां॥तुम्हारेजटामधिअस
थांनां॥जाजुलिवेपंषीयेज्ञाना॥२६॥पंषी
उवाच॥स्लोका॥चीरवासीजटावापि॥त्रिडं
डीमुडंयेवच॥त्रष्णासर्बकलेसस्य॥जत्र
सांतनमांनसं॥२७॥असप्रथातुम्हछाडौ
स्वांमी॥समिताउपकारेहोनिहकांमी॥ड
षकरितपकीडैअधिकाई॥सोतपटरैय
बतैनाई॥२८॥छाडौमोहदंभतपहौनि॥
ध्यांनजोगसमितापहिचांनि॥भसमसु
चीरजटायामनधरौ॥होइमुडितत्रिडंडीके
रधरौ॥२९॥त्रष्णाकलेसमरैपचिसोइ॥जा
केमनसांअंतनहोइ॥सुषकारिग्यानबचन

पहिचांनौं।अस्थिर निहचै तन ही आंनौं
।३०।। मन बच काय रहनि न रहै।। मिथ्या
चार सबै सो लहै।। यंडी हाथ आपनैं नही
तौ कत बृथा बसै बन मही।।३१।। यंडी जी
ति घर ही कि न रहै। सो नर परम ग्यांन पद ल
है।। बिन ग्यांन तप जप आचरै। सो सब क
लेस कहै कौ करै।।३२।। काहे कौ देह बृथा
श्रम सहै। सो समिता घरि बसि करि कहै
।। अग्यांनी करै कोटि उपाइ। ग्यांन बिना सं
सो न हि जाइ।।३३।। भीषमोवाच यं षी बचन
सुनत सुष लयो। रिषि तब परम ग्यांन पद
लयो।। साध संगति कौ यहु फल भाई। जा
हु लिकै समिता तब आई।।३४।। अहंकार म
मता मन नि ग्राई। परम ग्यांन ग्यांन मति लई।
समिता लई ग्यांन पहिचांन्यौं। सर्ब रूप परमे
स्वर जांन्यौं।।३५।। सब ही मैं रांम यह ज्ञांन म
सब उपमा श्रेष्ठ म तल ग्यांन। जोग्य कथ य टै
अरु कहै। ता कै ग्यांन धर्म नितं रहै।।३६।।

लाला हरिदास निकौ दासु। गुर की कृपा क
रौ इतहास।। तुलाधार यूं जम जोई। कथा ते
रही जांनौं सोई।।३७।। इति श्री महाभारथे इत
हास सार समुच्चये त्रियोदसमोध्याय।।१३।।
युधिष्ठरोवाच।। अर्थ धर्म दो ऊ फल न है सु
नौं पितामेरो मन रहै। अर्थ धर्म दोउ और मा हि
दोउ मैं अधिक भलौ को आहि।।१।। भीषमोवा
च। धन इछ्या मन बिषै को बल है। धन तें धर
म भलौ रिषि कहै। कथा पुरातन सुनि इत
हास। बिप्र ये कधन का जउदास।।२।। धन का
जै आराधै देवा। करि देषी सब ही की सेवा
करी सेवा जब धन ना लयो। बहु क्रत मां ति उद
म जिनि ठयौ।।३।। सब तजि उद्दिम कीनौं से
जा जे कांम धांम धन होई। कुंडधार की सेवा
ठांनी। धन न पावन कीय हग ति जांनी।।४।। अ
सनतप कीउ दिम कीयो। सेवा बिश्रसर त
म न दीयो।। कुंडधार प्रसन्न बसयो। धन दे
न कौ उदिम कीयो।।५।। कृत मेटै कृतघन

जो होइ। सुष सुसंमान जानिये सोइ॥ यह
कहि कुंडधार गयौ न हां। सनिधान देवन
की जहां॥६॥ जा इच्छ रनग हि बीन वी सेवा॥
जो मो परपर सन हो देवा॥ देव कृपा जो मोप
रि कीजै। जो कछु हं चाहूं सो दीजै॥७॥ मनि
भद्रो वाच॥ कुंडधार तुम्ह चाहो जोइ। हंम
प्रसन्न है दै है सोइ॥ चाहे धन मनि षजो कोइ॥
धर्म बिना धन कबहूं न होइ॥८॥ जौ दिढ धर्म
बसे मन मांहि। राज रूप पावे यन आहि॥ ध
र्म ते बिद्या तन होइ रूप। धर्म ही ते सुष राज
अनूंप॥९॥ धर्म ही ते मन सब संतोष। धर्म
ही ते नर पावै मोष। धर्म अकुलीन कुलीन
कहावै॥ धर्म ही ते स्वर्ग मोक्षि फल पावै॥१०॥
कीरति सुजस ऊंच पद सोई। सो कछु सब
धर्म ते होइ॥ अर्थ लोल सम मिता छिडकाई।
मन राषिये धरम ही लाई॥११॥ जतन अनेक
धर्म तस्सि करै। धरि सम मे टिन्ह पाप चित्त मरै
॥ धर्म बासना जो मन आवे। दान दीप रिसु

रगा हि पावै॥१२॥ जो धन अछित धर्म न हि क
रै। देषत नरक कूप महि परै॥ कुंडधार स
मझि यह गात। यह मन मेंइक ही निज बा
त॥१३॥ ना ही और जतन सो काज। धर्म हि कै
फल सुष सो राज॥ कहि मन मेंइ बस्त्रति
निदीयौ। बिप्र बांधि माथे सो लीयो॥१४॥ ब्र
ह्मणो वाच॥ मैं अग्यां मन जांनौ भेवा। अब
ई कृपा तुम्हारी देवा। आसा सहित लो मम
न धर्यो। त्रिस्ना जानि बहुत दिन जर्यो॥१५॥
यह त्रिस्ना आसा पापनी। रोम रोम मे रमन
तनी। सब सुष त्याडि करौ सुष बासा। औ
रस बही ते होइ निरासा॥१६॥ धर्म छाडि
न उदिम करै। ते पसु सबे ही व्रषा पचि म
रै। धर्म समुद्र निकटि बिसरायौ। त्रिगत्रिष्ना
जल अनंत पायौ॥१७॥ सुष दुष धंन दार्दी
होइ। पूर्ब जनम कौ फल है सोइ॥ ता ते चि
तां कलेस न करिये। पूर्ब कीयौ सुफल म

निधरियै॥१८॥सकलपुरांनबेदयहकही।
पूरबकीयौपाडहैसही।होइप्रसंनक्रोकरम
जोकरै।बारिहीकृष्णापरिश्रमधरै॥१९॥
यौरिषिकृष्णामागबिनजागै।कछूनफुरै
क्रमकैआगै।जोकछहैसविकैहाथ।त
बतेरिषिमुनिभयेसुनाथ॥२०॥सीषमोवा
च।यहकहिबिप्रतयौबनगयौ।सुषेत्रत
हांआइब्रतलीयौ।तषेजुबाईउग्रतपक
रै।कुंडधाप्रसादमनधरै॥२१॥बनमेबि
प्रकरैतपतहां।कुंडधारषकंनिआयेतहां
गईब्रासनात्रिमलबांनी।तबतिनिदरस
नकीन्होआंनी॥२२॥देषिबिप्रमनपूजाक
री।मोपरिकृपाबहुतमनधरी।जोधनसौ
मेरौमननमान्यौ।सो...धननर्करूपमैजा
न्यौ॥२३॥दिब्यचक्षुमेरेउरनये।तुम्हारी
कृपासकलदुषगये।ग्यांनदीपमेरेकर
दयौ।संसोसोगसबैमिटिगयौ॥२४॥कुंड

धारोवाच।साधकृपातेउपज्योंग्यांनासु
फलऔरधर्मतेजांन।क्रोधलोभमनच्छ
नागयौ।तुम्हारीकृपातेसबसुषभयौ
॥२५॥सीषमोवाच।गुरकौनमस्कारति
हिकीयौ।केवलध्यांनधर्ममनदीयौ।कृ
पातुम्हारीजांनीसही।कौडीचाहनमैम
निलही॥२६॥मैंतौअर्थलोभमनदयौ।तु
म्हारीकृपाकृतार्थकीयौ।न्यूंनिसना
सैप्रगटैग्यांन।तुमतेप्रगटभयौमोग्यां
न॥२७॥तुम्हारीकृपाप्रगटबैराग।ब्रह्म
भावसमिताबडभाग।औगुन...
ध्याननिगई।सुषडुषमेटिसीतलमति
भई॥२८॥रागदोषकूठौसोसहौ।तबनि
जबिप्रपरमपदलह्यौ।व्याससबचनन्रिम
लमतिजथ्य॥उपज्योधर्मसुनतयहकथ्य।
॥२९॥सुत्रजग्यांनपरायनहोई।सुधिसहत
गावेजेकोई।कुंडधारबिप्रहिमतिदई।
लालकथ्याचौदहीकही॥३०॥इतिश्रीम

हानार्थ इतिहास सार समुच्चये चतुर्दश मैं धा
ये ॥१७॥ युधिष्ठिरोवाच ॥ जो त्रिया करि अकु
लाइ ॥ ताकी उर रनि कौंन बिधि जाइ ॥ कौंन
कर्म नासै सब दोष ॥ किहि बिधि उपजै
मन संतोष ॥१॥ तुम्हारे बचन सुनत अघ
जाइ ॥ कहौ पितामह सब समझाइ ॥ बीन
ती सुनै कैसू नांही करौ ॥ तुम्हारे बचन हि
रदै मैं धरौ ॥२॥ भीष्मोवाच ॥ भावी हूं न
हारसो होइ ॥ यह जो न मत उर सो जु कोइ ॥ इहै
ज्ञांनिधि मैं हिम न धरौ ॥ त्रिया उर रनि कब हूं म
ति जरौ ॥३॥ जाते त्रिया तप ति बुझाइ ॥ मकी
कथा कहौं समझाइ ॥ मकी उतन न ब्रत
विधि करै ॥ ता सिर अर्थ न हि उदिम फुरै ॥४॥
उदिम करै सु जो चित लाइ ॥ सर तो कल्हू
ह्र रम हि जाइ ॥ उदिम कीयौ पराये आंनि ॥
तब तिनि लीयौ बृषन दोउ आंनि ॥५॥ बृष
भनि का टन ना गौ उबही ॥ आडौ कासो आ
यौन बही ॥ जो रिवृष न सो उगये जतां ॥ म॥

तौ उटबै गै होत न हा ॥६॥ अरु स्यौ ऊँट श्रानु
रत्नयो ॥ वृषभ न कटौ रि कहूं लैगयो ॥ दईव
संजोग मिल्यौ यौ आइ ॥ यहै न ऊंका कत ति
कौ न्याइ ॥७॥ मकी उवाच ॥ सब दिन उदिम
न हांनि मन लायौ ॥ निफल सबै अर्थ न हि
पायौ ॥ रच्यौ जु सुष दुष सो कैसौ टरै ॥ दुष बु
वीन व्यथा श्रम करै ॥८॥ श्रौ रच्यौ तत्व तत्र श्रौ
र कछू न ई ॥ मोती चाहत मणि गिरि गई
जातन नही त्रिया परजरै ॥ कै धन जाइ कै
धनवंत मरै ॥९॥ अति उदिम कीजै मन
लाइ ॥ बिदिमान सो निफल जो काइ ॥ अ
धिक बिधि मन धावै ॥ भाजि बिना सो कब
हू न पावै ॥१०॥ अंध बधिर रोगी समरथ ॥ नि
नही उदिम होइ न को अर्थ ॥ बकृत कां म
नां कतत न भावै ॥ पुनि ही तेन रस बसु षपा
वै ॥११॥ बुधि बल मंत्र हीन सब होइ ॥ पोरि
ष को टिकरे कि न कोइ ॥ अलसि तान
होइ छिन माही ॥ ता मनकौं सो चित दिन

जांही॥१२॥ धर्मसहित जो उद्दिम करै। ऊषी
न है इछि जो मन धरै॥ कांम क्रोध त्रिस्ना ज
ब डरै। ब्रह्म ग्यांन होइ तां मस तब मरै॥१३॥
ब्रह्म ग्यांन आसिथ्रित मति होई। आनंद रू
प सदा निज सोई। ऐसो म कीस म जो ज
ब ही। मन सुषरूप न ये सुष तब ही॥१४॥
जैसे मधि लोक सब लोका। सब लोक अ
सोक मब धि दोषा॥ उद्दिम करित ब्रह्म ज
गायो। तहां मकी ग्यांन प्रगट भयो जहां॥
१५॥ कीनौं सकल बिषै कौ त्यागा। पब्रह्म
क्रम ति बंडभा गा। परम उदार ग्यांन म
ति भई। भ्रम संसार तुछ मति गई॥१६॥
जे या कथा सुनै चित लाई। ताकी सब चि
ता दुष जाई। अरु निज सुषकि बिश्राम सो ल
है। पारंगति सो प्रांनी रहै॥१७॥ इति श्री म
हाभारथे इतिहास समुचये पूंछ दस मो
ध्याय॥१५॥ युधिष्ठिरो वाच॥ धर्मादि कुध
र्म तयं तान। [illegible] तास [illegible] ग्यान नाबी

धक तहांन घुषक ह्यो। कहो पिता मेरो म
न रह्यो॥१॥ भीषमोवाच॥ इह इतहास पु
रांन कथा। बोधक ह्यो नघुष सो जथा॥ अप
न मैं यह अरथ बिचार। बोधक नघुषक
था सो सार॥२॥ यूं ही जिनिछा औ ग्रह रू
प। यूं होइ रहै सदा सुषरूप। पद म षंड
सरव रब उआहि। परे गिरे भवरा संचा
हि॥३॥ नघुषोवाच॥ सुकि इछि ग्यांन उ
छाही। और निहचल सब ही ते आही॥
यूं नघुष अगनि कौ सार। मो सौं स्वांमी
कहो बिचार॥४॥ बोधकोवाच॥ पिंगुला
दिस स्युरक है। औगुण तजि तिनि के
गुण लहै। प्रीति आस जो लग्यान निधरी
तौ लग पतरनि पिंगुला करी॥५॥ जब दा
रन दुष आसा गई। सब सुषरूप पिंगुला
भई॥ कुररमास लेउ डो औ अकास। पंबि
म घेरिलीयो चहुं पास॥६॥ घेर तमां स
छाडि यूं दीयो। यूं संग्रह छाडि सबडरग

ये।। अह आगन्न बहुत दुष आदि पर घर रहै
अपडर्यू चाहि।।७।। ज्यूं सरकर सरमांहि स
मांनी। आगे राजा ज्ञात नज्ञांनी।। औसें हो
इ सरत न धरे। और सकल चिंता परहरै
।।८।। ज्यूं कंकन जु कुंवारी हाथ। औसें कं
लह बटै बहु साथ।। तातें छोडीयें सब सं
ग।। निज्जनि [illegible] बैठ तिग्यांन को अंग।।९।। नी
षमोवाच। यह कहि महापुरुष घरि गये
। राजा हिरदै ग्यांन हिरदैमैं भयो।। सकल अ
ग्यांनौं सोई। सषि तागयांन ब्रह्म मति हो
ई।।१०।। सार कथा सो तो सूं कही। तन बस्त
सो मैं संग्रही।। सत्रुगुर न की कथा बषां
नी। ध्याय सो तन ही लीन्हो पौं ज्ञांन्ही।।११।। इ
ति श्री महाभारथे इतहास सार समुचये
षोडसमो ध्याय।। १६।। युधिष्टरोवाच।।
नी षम सरज्यां होइ जहां। कृष्ण सहित स
ब रिषि मुनि तहां।। कहे हो महपार सुर तो
न। औरन्या लस बज्ञां नूं कों न।।१।। नीषमोवा

च।। अग्यांन मिरसब ही ता हनी। कूठे सकल
मनोरथ गनी।। जब संसारि सकल सुष जां
हि। तब बैराग होइ मन मांहि।।१।। पूरब
भाग उदै भयो जब ही। अग्यांन होइ
मन तब ही।। अग्यांन ग्यांन तबै मन जागे।।
दुष संसार सुष मन ते जागे।।२।। ज्यूं प्रहिल
द नाव परवांन्ह। मुक्ती कै भयो औसो ग्यांन
।। कथा पुरांन कहैं बषांनी। बै सयेक मं
न मद अति मांनी।।३।। रथ चढि चल्यो ग्र
ब मन धस्यो।। ताकै धके विप्र गिर पस्यो।
हों अब दुषी कहा जीव करों।। अब हि प्रां
ण त्यागि कर मरों।।४।। कासिब कोउ षज
इन कह्यो। ये दुसि रकाल रूप है कह्यो।
अब यह की यौ बचन निरधारा।। कासिब
काल भयो जु संहारा।।५।। कालोवाच
तुम्ह त्रि नि विप्र सोगा जीव आनो। पूरब की
यो सुष दुष परवांन्ह।। संपति बिपति स
बै सहिल्लीजे। काहूं औरै दोस न दीजे।।६।।

हंमपसरूपकरैकहाकमे।तुममानिषंस
बजांनसंधर्म॥सतिबातममजाऊंतोहि।तु
मनिजमोहमगानजिनिहोहि॥८॥निज
संतोषग्यांनेतनचाहि।देषौसबैदद्रीअ
हि।बिषैधंनइछ्या मनकरइ।ग्यांनबिहि
धनहीपरहरई॥९॥यहसंसारसुषमनर
है।सोसंसारस्वर्गफललहै।जरनिबड
तत्रिश्नाहैजहां।देषो हो भवनिसुष
कहां॥१०॥जोपृथीकौपावैराज।तौनत्रि
पतिनहोईकाज॥मूरषमैंमेरीमनरहै।
यहमेरौमेरौसबकहै॥११॥त्रियापुत्रमि
त्रादिकपाई।इनहिछांडिजमकेघरि
जाई॥धनअरुप्रेहजलौपारिहरै।धनतै
धनसबहीमनडरै॥१२॥प्रथमधनिकराजा
तैंडरै।कुटबबसकामनाधरै।चोरक
लसतैंडरपैजाई।पांनीअगनिटेषिअकु
लाई॥१३॥जैसैंआमिषपडैप्रथीमांहि।स्वांन
सियालसबैमिलिषांही॥जोआमिषआ

कासोजाई।पंछीबहुतलगैताघाई॥१४॥मछ
कंछपांनमिषंहि।त्यूंसुषकहंधनीकोनांहि
॥तातैंधनत्रिश्नाछांडीजै।निजसंतोषहिरदै
मांडीजै॥१५॥त्यूंतरगउपजैजलमांहि।ज्यूं
थिरनहीबृक्षकीछांहि।नदीसोजलबाढ
बहै।ज्यूंजलमीननहीथिररहै॥१६॥नहीस्र
धोचितवैधनराई।धंनउदमादकरैबुरियां
ई।इतनोदोषनव्यापैताहि।बुधिवंतग्यांनी
तेआहि॥१७॥ब्रह्मजनमउत्तिमजोहोवै।से
कहिइनकौनरषोवै।हंमतोधर्मयेकोनरई
सरै।तोउनहंमप्रांननिरहरै॥१८॥पंडित
ग्यांनप्रवीनसुजांन।तुमहकेचोंबिप्रतजोये
प्रांन॥मूरिसेमीडकअपत्रपार।जोनित्रिसु
गअोरनिसंसार॥१९॥बहिरेअंधपंगुनत्र
रूरोगी॥गूंगेजीवमत्तबिजोगी॥अपनेधर्म
रहैथिरजोई।तातैंपंडितऔरनकोई॥२०॥
जनकादिकराजाजेभये।राजकरततनिर
भैपदगये।इंद्रीबसघररहीबैराग॥विषै

दैनिक डायरी
कोई सम्पादित प्रश्न

भारती

नाममाला

गृह कार्य

त्याग सबही बड भाग ॥ २१ ॥ सब तजि बिश्वास
रनि क्रिनि न्याई । किंचित संसार डष अकुला
ई ॥ स बरूप नारायन भाव । निर्भै बिश्व चरन
चित लाव ॥ २२ ॥ ब्रह्मणोवाच । तुम्हो ब्रह्म बिश्व
गुरु राव । मेरे मनि ये क अचिरज भाव । धर्म
रूप प्रिय बचन तुम्हारो । सुनत सकल डष
गयो हमारो ॥ २३ ॥ श्रीकालीवाच ॥ सा चौप
र मेस्वर मन आनो । प्रग्या मन सब दीपक के
र जानो ॥ सकल साध गुर कौ प्रनांम । प्रग्या
लाभ बिप्रनि के कांम ॥ २४ ॥ परमेस्वर सति
ब्रह्म पराइन । तारक असो है नाराइन । क
ण्या सत्रह ही कही बषांनि । कहीयं इक्रा सि
व सौ आंनि ॥ २५ ॥ इति श्रीमहाभारथे इतिहा
स सार समुच्चये सत्रही ध्याय ॥ १७ ॥ ॥

॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ श्री रामाय नमः
॥ भारती नांम माला ॥ दोहा बंध लि
ख्यते ॥ प्रणमनि रंजन बंदिहों जग
बंदन सुषकंद । दिन छिन दा छिन छि
न जये । अनदिन होत अनंद ॥ १ ॥ अले
ष अगोचर अगम अगम्य । नैं कौन षौ न
जाइ । छीन छ्र दते छबि करी । आपुन र
ह्यो छ्याइ ॥ २ ॥ बिन मूरति मूरति सजि
तु । आवत यहै अचंभ । बिन कर ता क
रतार किं मार च्यौ रुचि र आरंभ ॥ ३ ॥
चित्रकार चित्रित सकल । कीनें बिब
धि चरित्र । चित्र चितेरा भी षजंतु । भ
यो अपुन पे चित्र ॥ ४ ॥ बरन बारु बक
बरन किया । बरनं कस्यौ न जाइ ॥ अस्तु

तिकै सैं करि सकौं। ग्रंन अस्तुति ज
गराइ॥५॥ कौंन प्रसंसा करि सकै॥
तुम प्रसंस अबजांन॥ जठर सनाप
लकी गादी। कैसैं करन बषांन॥६॥
अबहि कोय ग्रंथहि रचौं। गुरपांइ
नं धरि सीस॥ ता प्रसादि बर्नन करौं॥
ग्रंथ सकल गुन ईस॥७॥ साहिजहां
सबबिधि सरस। दीली पति पतिसा
हि॥ राज ताहि राजन अवंनि। करयौ
ग्रंथ गुन चाहि॥ चा आठो दिस अम
बु सकरी। फिरी पारदधि आंन॥ ज
हांगीर कै पाटनित। दीपत साहिजि
हांन॥८॥ बागर माधि गुंन आगरौ॥
सुबस फतेहपुर गांव॥ चक्रवर्त्ति

चक्कवांन ब्रिय। राज करत सुषि तिंह
ठांव॥१०॥ राज करत रजस्यो नस्यो॥
ज्यों जगती पति इंद। अलिफ षांन न
दन नवल। दौलति षांन नरिंद॥११॥ र
न क्रियांन सुजांन यंभ। सकल कला
संपूर॥ रचि बिरंचि ओ सो रच्यो। बच
न रचंन मति सूर॥१२॥ ता नंदन बंद
न जगत। गुन छंदन है निधांन। कैवि
पछी छाया रहैं। नरवर ताहर षांन॥
१३॥ अजा सिंघ नितिएक गा। धर्म री
ति आनंद॥ सकल लोक छाया रहै।
छिमैं राज हरिचंद॥१४॥ तहां सुलग
सो नासरस। बसे बर्न छतीस॥ तह
भीम जंम जांनिकै। यह मन अश्वजगी

सा॥ ग्यानाम माल गुन सहंसक्रिति ड्डु
गंमल षी जिय जांनि॥ यह उपजी अं
तुसी षजियारचौं ज्ञु नाषा आंनि॥१६॥
मथौं ग्रंथ गुनसार दी। बीनि सेउं नंग
सिंध॥ कछुक औरसुं नि आंनतै। र
चौं ज्ञु दोहा बंध॥१७ तिरहम ता प्रथम
पै। ग्यारह हुतिय करंत। तिरहग्यार
ह सा जिकै। दोहा नामधरंत॥१८॥स
रस सकल रससौं नरी। करी जीम ग्र
नु जांनि॥ धर्‍यो नांम तिह नारती। भा
ष्यो ग्रंथ प्रवांन॥१९॥ सोलह से पिच्या
सिए। संब तु रहे बिचार॥ सेतपछि
राका तिथ्यु। कवि दिन मासकुं वार॥
२०॥ जो अछिरअ वनवि सुन्यों। रस

नाक स्यो उचार॥ सब गुनि यंन सौं
बीनती। घटि बढि लेकुं संवार॥
२१॥ करतार के नाम॥ करता वि
धि: केवल्य: प्रभु। त्रिमल: स्यांम:
निकलंक:॥ अषै: बिसंभर: प्रांन
पति: दाता: नाह: निसंक॥२२॥ परं
जोति:॥ परब्रह्म: परा परआतम:
परमेस॥ चिदानंद:॥ गोचर परम:
निरंजनो: सरबेस॥२३॥ आरंभी:
आदी: दई: अधरंन: तारंन: एक॥
अबदापति: नरनाह: प्रिय: मंज्ञ
न: गढन अनेक॥२४॥ आदीसुर: नि
र्गुन: अजम। नागर: परम: पवित्र॥
कर्मी अभमी: संजमी:। गोबिंद: चारु
चरित्र॥२५॥ प्रधर: अमर: अरु

चित: अकर। अबिगति: अमिति: अ
पार॥ अबिनासी: निज: अगम गमि॥
निराधार: निरकार॥२६॥ सरसुती
नाम॥ सारद: बुधिदा: ब्राह्मी। गी:
भारति: सुरसुति॥ बागदेवि: हंसां
इंनी। बरदा ईनि: अजपुति २७॥ ग
निस नाम॥ परसुपानि: बिनाइकं:।
बिघ्नराज: गनेस। लंबोदर: द्वैमा
तुर: हेरंब: पुत्र महेस॥२८॥ एकरंद
न: गजमुख: रंगन: गनपति: गौरीनं
दं॥ मूषबाहनु: नरहस्तमल। सुंड
हल: सुभकंद॥२९॥ ब्रह्मा नाम:।
परजापति: ब्रह्मा। द्रुहिन। हिरन्यग
र्भ: सुरयिष्ट:॥ सुरजेष्टा: पितामं
हं। बिधि: बेधा: परमिष्ट॥३०॥ बिस्व

स्रिष्ट: स्रिष्टा: ध्रुवं। चतुरानन: लो
केस॥ बिरंचि: बिधाता: कंवलज॥
आतमभू: सरवेस॥३१॥ अबजजो
नि: अज: नाभिसो॥ सुयंभु: पतीम
राल॥ पदमनाभ: कंवलासनं। सेस
सि। जगत कुलाल॥३२॥ क्रिस्न केनो
म॥ माधव: केसव: श्रीपती॥ क्रिस्न
अचित: गोबिंद:॥ दांमोदर: हरि:
दैतरिपु। बिस्न: देवकीनंद॥३३॥ ना
रांयन: जनारदन। चक्रपानि: नंद
नंद॥ मधुसूदन: चतुरभुजा: स्यांम
उपिंद्र: मुकंद॥३४॥ वासुदेव: पुरषो
तमं। पुंडरीकाष्य: मुरारि। बिषक
सेंन: पीतंबरं॥ पदमनाभ: कंसारि
॥३५॥ सउत: बिसंभर: बिषाकपि:॥

ह्रिषीकेसः गिरधारि॥ श्रीवछस
ल· गरुरधुज॥ बैकुंठः कुंजबिहा
रि॥४६॥ इंद्रावरजः अधोषिज॥ ब
नमाली· बिस्वरूप॥ जगन्नपतिः ज
दुनाथः सुज्ञ॥ श्रीधरः स्यांमसरूप॥
४७॥ गोवर्धनधर· चक्रधर॥ गदाधा
र·द्विजचंद्र॥ सेषसाइः अधसाक्कु
नि॥ बलिप्रजितः जगबंद्य४८॥ बिष्ट
रश्रवाः गोपपति॥ गोपीप्रीयः त्रिभंग
॥ राधाबल्लभः पुरांनपुरुष॥ कान्हः ध
रंनसारंग॥४९॥ जलक्रिडः मधुबंन
मधुप॥ त्रैबिक्रमः पतिग्वाल॥ मुरति
मनोहरः॥ सर्बरति॥ मधुबंनसिंघः
गुपाल॥५०॥ कैइटभजतः नरकांत
क्रित॥ श्रीरः जसोदानंद॥ द्वारिके

सः बाहनगरुर॥ द्विजपतिः अनं
दकंद॥५१॥ महादेवनांम॥ महा
देवः श्रीकंठः सिवः संकरः महेसु
रः ईस॥ सिंभुः उग्रः त्रिडः गंगध
र॥ त्रिंबकः गिरसः गिरीस॥५२॥ रुद्र
त्रिलोचंनः षंड·हरः चंद्रसिषरः
ईसांनुः॥ प्रमथाधिपः त्रितुंजयो
॥ पसुपतिः बरदः सथांनु॥५३॥ क्रि
तवासः॥ कपालभ्रित॥ बामदेव
समरारिः॥ षंडगः पिनाकीः ब्रिष
बधुजः क्रितध्वंसीः त्रिपुरारि॥५
४॥ ब्योमकेसः ऊमापती॥ भूत
नाथः सर्वः भीवं॥ अष्टमूरतीः स
र्बग्यः नीलकंठः अहिग्रीव॥५५॥

बिड्डपाछिः पुरम्नितः लयसादिग्बा
साः उर्धलपंग॥ लोहितभालः संध्या
पती॥ श्रोरः गंजा उतमंग॥ ६६॥ त्रि
सांनुरेताः परमसुर। डमरूकरः अं
धकारि॥ श्रोरः कपरदीः बांमसुरः
कपरदोसः इपजारि॥ ६७॥ लोहित
नीलाब्रिषांतक्रितता॥ परंमध्यांनः इं
दमलि॥ धूरजटिलः बांहनब्रिषभ
षडपरसः सिवसूलि॥ ६८॥ लिछि
मीनामसुथीः कंवलाः इंदिराः रंमा॥ माः
पदमाः हरिबांम॥ लोकमातः कंव
लालया॥ सिंधसुताः लछिनांम॥ ६
९॥ नरहरिः लिछमीः पतिकरंम॥
हरिदासीः परिवाह॥ लागपवंतिः ५

ड्बकंदः फुनि॥ अरुः दधीयः हरि
नाह॥ प०॥ पार्बतनंपाबतीः गोरीः सि
वाः ऊमाः ईसुरीः ऊांन॥ दुगाः भवां
नीः अंबिका॥ सती॥ भूतपतिः मांन
॥ ५१॥ रुद्रावीः अवमंगलाः॥ चंडिका
यः चंडीय॥ कात्याइनिः ईसांनिः फुनि
गिरजाः अरुः देवीय॥ ५२॥ त्रिगंनि
कालीः सांकरी॥ श्रारद्याः हिवैमवत
धीय॥ सिंघबांहनीः भैनिका॥ सर
बांनीः हरुतीय॥ ५३॥ दाष्यांइनी
महेसुरी॥ तमजाः भैरविः जांन॥
श्रोरः अपरनाः चामुंडा॥ चचरंचा
इंमसांन॥ ५४॥ कामदेवना॥ समरः
मनोभवः रतिपती॥ कामः कांतुः स
रपेच॥ मंनमथः रिछियः मकर

ध्रुज। अनज: रमासुत: संच॥५५॥पु
फधन्वा: मनसिज: द्रपक। पुधुरष:
कंद्रप: मार॥ प्रदुम्न: विषमायुधं॥
मीनकेत: संबरारी॥५६॥ मर्दन: अनं
ग: पुहपेषु: कुन्नि। सकलपातमा:
सेंन। जुराधीर: कुसमायुधी। कम
न: सिंगारिक सैंन॥५७॥ आतमन्:
हरि: पंच ईषु। अंगगाथ: रतिमान
॥लालज: बीज: महेसअरि। अन:
मनोज: पंचबांन॥५८॥ तपुनासी:
ऊषापती॥ बीर्ज: मनोरथ: धात:
॥चपल: मनोहर: ब्रह्मसुव। बिष
केत: सितगात॥५९॥ कामकेपं
चबांनकेनाम॥ मोहंन: तापन:
बसिकरंन: उचाटन: उनमाद॥

आग्रिक: मोछी: बिथा। कितात्राक
रषनं: बिबाह॥६०॥ कामकेधनुष
नांम॥ लछिमंन: क्रां इन: मनहरन
॥छताकार: लछांम॥ अरु: बलमे
रूरिपु हपतर। गुनली: कोवंडकांम
॥६१॥ स्वामि कार्तिकनांम॥ कार्ति
केय: बकुलात्मजा। षांनमातुर: स
कंद॥ महासेन: सेनानि: गुह। कुमा
र: गिरजानंद॥६२॥ लकुत्रछ: बा
कुलि: क्रौंचरिपु। आस्नरो: षटमुष
॥ सिषीबाहनं: सायकं। दिटकछ:
ष दव: गुरुष॥६३॥ देवतानांम॥
बिबुध: समनस्ह: असुपरा। सुपर
बांन: सुर: देव॥ त्रिदसा: त्रिजा: दे
वता। अमर: रिभव: आदितेव॥६४॥

सुधाभुजंः दिवौकसः॥ त्रिदेव
जांन॥ दांनवारयः॥ बिंदारका॥
तभुजंः पहिचांन॥ ६५॥ आदि
दिविषदा॥ बर्हिमुखाः गिरबां
च्छंत्रितश्रानसः अनमिषा॥ दि
जियजांन॥ ६६॥ सुर्गनांम
षः गऊः उर्धलोकः दिव॥ सुर
कः सुहः जांन॥ [illegible] आलयः सु
कः फुनि॥ त्रिदिवः त्रिविष्टपः प
॥ ६७॥ इंद्रकेनांम॥ सहसनें
धवाः ब्रिषी॥ जंभ[illegible]रातः पुरिंद्र॥
सासनः सक्रंदन॥ सक्रः बिडौ
इंद्र॥ ६८॥ बासवः सुरपतिः ना
ति॥ सचीपतिः सुत्रांम॥ सुनास
पुरहूतः हरि॥ सतक्रितः दिवस

ninety nine

ΔΠV VI - 33

p (53)

सुधाभुजः दिवौकसा। त्रिदेव ईसाः
जांन ॥ दांनवारयः बिदारका। कर
तभुजः पहिचांन ॥ ६५ ॥ आदितेय
दिविषद। वन्हिमुषाः गिरबांन ॥
अंम्रितअंानसः अनमिषा। देवनांम
जियजांन ॥ ६६ ॥ सुर्गनांम ॥ तवि
षः गऊः उर्धलोकः दिव। सुरगः ना
कः सुहः जांन ॥ सुरआलयः सुरलो
कः फुनि। त्रिदिवः त्रिबिष्टपः प्यांन ॥
॥ ६७ ॥ इंद्रकेनांम ॥ सहसनैनः म
घवाः ब्रिषा। जंभारातः पुरिंद्र ॥ पाक
सासनः सक्रंदनं। सक्रः बिडौजाः
इंद्र ॥ ६८ ॥ बासवः सुरपतिः नाकप
ति। सचीपतिः सुत्रांम ॥ सुनासीरः
पुरहूतः हरि। सतक्रितः दिवसतिः ॥

॥ प्राचीनबर्हिः संतमन्य।
ः मरत्वांन ॥ उसवंनः ब
अवा। गऊसकः बलरतिः
॥ भ्रमवांहंनः पतिबासते
षाः दिवराज ॥ गोत्रभिदीः
रिभु ॥ हरिहयः जलदः सु
। परजापतिः फुनिः बा
आखंडलः गजध्याय उर्ध
टः अरुं। पुहमी पोषः क
॥ इंदकेरांनीनांम ॥ पु
रात्ननांम ॥ सचीः इंद्रां
ंजा। पुरअमरावतिथां
मांसेसिलयक्रित ॥ बद
जांन ॥ ७१ ॥ इंदकेपुत्र
नांम ॥ सारथीनांम ॥ धे

रानांम॥ जयंतपुत्र· प्रासादविहा॥
सभासुधर्मासंग॥ कुलिः मातलिसे
सारथी॥ उचईश्रवा तुरंग॥ ७४॥ इंद्र
केबंननांम॥ रिषीसुरनांम॥ पोरि
यानांम॥ रथनांम॥ प्रोक्षितनांम॥ बे
दनांम॥ नंदनबनः रिषिनारदा॥
देवनंदीप्रतिहार रथबिमांन·बि
मपतिबियरा॥ नेमजू अमुनिकुम
र॥ ७५॥ इंद्रकेहस्तीनांम॥ ऐरा
मापति: मातंग·फुनि॥ इंद्रहस्त·म
म·जांन॥ रोवन· और· बल[illegible]·बर
सुरपतिबांहन·मांन॥ ७६॥ बज्रन
मा॥ भिदुर·बज्रं·कुलिस·फुनि॥ स
तकोटिहिं·दंभोल॥ सोरिहिः सिमे
कादिनी॥ पवि·इंद्रायुध·बोल॥ ७७॥

कलपब्रिछिनाम॥ पारजाति·ह
रिचंदन॥ कलप·मंदार·संतांन॥
श्रवदाप्रकौ· द्रुमपती सुतर·अखे
निधि·जांन॥ ७८॥ गंधर्वगांइननां
म॥ अमरपरस·बिद्याधरा॥ हाहा·
हूहू·गांन आदितेय·किनरा॥ गं
ध्रव·सुरगांन·जांन॥ ७९॥ अपछ
रानांम॥ रंभ·घितांची·उर्बसी॥ पु
नि: तिलोतिमां·जांन॥ मंजुघोषा·
अरु: मैंनिका॥ अछिर·सुकेसी:
मांन॥ ८०॥ इंद्रपाटनांम॥ सर्गप
ट·जुगपाट·पुनि॥ इंद्रपाट·अम
रीर अचलः निकंट·सुरासंन॥
अर्जुनआसंन·धीर॥ ८१॥ बैकुंठ

वांम॥ मोष· मुकति· केवल्य: सि
ये· अपव्रग: अंम्रित· त्रिबांन॥ निरसें
से· सिध· महोदय॥ त्रिसे· सांति· थि
रथांन॥ ८२॥ बैकुंठ· सर्ग· अष्यात
सुभा सुषकरंन· दुषहर॥ परमधां
म· अरु· परमपद॥ अमरापद· स
प्र॥ ८३॥ सुंदरिसंन चक्र नांम॥
संघारन· कुंडरीक· फुनि॥ बज्र·
सुंदरिसंन· चक्र॥ परछिय· जार
न· सारिज॥ बिस्रंतर· अलि चक्र॥
॥ ८४॥ गरुरके नांम॥ गरुर· से
सअरि· व्यालरिप॥ अंम्रित· चरंन
· बलिवंत बिषहरंन· सकतीधरन॥
हरि बांहन· दिढवंत पंछीप

ति· नारषि· सुप्रन अरुनांनुज·
षगराज॥ बैनि ॥· कसिपात्म
जं॥ चपल· बास रराज॥ ८५॥
देवताकी जाति: म॥ बिद्याध
र· अपसरसहां र पस· गंध्रब·
जष्य॥ गुह्यक· सि ॥· किंनर॥ नि
त· पिसाचा· रष्य॥ ॥ कुबेरके ना
म॥ धनद· धनाधिप· अइल बिल
॥ राजराज· किंनरेस श्रीद· संब
सष· एकपिंग॥ कुह· पोलस्य· नि
धेस गुह्यके सुर· नरबांह
नं॥ मनुष्याधरम· कुबेर केलास
पति: बईस्रवंन॥ जष्यराज· जषि
चेर सक्रकोसषिष· कहें॥

क्रिंपुरषाधिप· मोइ॥ उतरापति·
अलकापती॥ पुन्यजनेसुरहोइ
॥५०॥ बरुनकेनांम॥ बरुन·बा
सप्रित·जलपती। परचेता: प्राच
प॥ अब्धिमंदिर· ज्यादपति। अस
नितनीरसमीप॥५१॥ जंमनांम॥
श्राधदेव· जंम: समबर्ती। रवि
सुत·काल·क्रितंत॥ प्रेतराट·।
चित्रपति·संमन। दंडभ्रित·अंत
क·अंत॥५२॥ जमुनाभ्रांता·द
छनां दिसापती· धंमराज॥ ब्रिम
नधुज·अरु·खितिकर: कीनासो·
जंमराज॥५३॥ दैत्यनांम॥ अ
सुर·दानवा·सुक्रसिषि। दितिसु

त·पूरबदेव॥ सुरद्वेषी·दइयत·
अनुज॥ ... इंद्र·अदेव॥५४॥
राछसनां॥ ... राछस·असुरा·जा
तधना.. नैरित: पुनिजन: जांना॥रा
छसउच· नि..चरा॥ तमचर·क
हतबषांन॥५५॥ बलिभद्रनांम
कांमपाल· हलधर· रवंना। नीलं
बर·बलिदेव॥ संकर्षन: अग्रा
निक। रांम· अग्रजहरि·सेव॥५
६॥ बिघ्नप्र.. बलिभद्र· चतुर।
बलि·हद्र·मुगध·प्रलबअबिरही
बीर·मुसलि·हलि। धनह रोहनी
अंब॥५७॥ जुधिष्टरनांम॥ धर्म
तनज· आजातसत्रा। एकसबद·

सतिकंद॥ सल्यर·ज्रुधिष्टरारी·
सचे·कालिदहन·धंर्मनंद॥९॥
अर्जुननांम॥ अर्जुन·धनंजे·इं
द्रसुत। फाल्गुन·कीटी·जिस्नु॥
कालमुंक· समरथ·पथ।सेता
स्व·मित किस्नु॥९॥ कपीध्वाय:
रियकेरवा॥सबि साची·देत्यारि
॥बेधीकर्न·अजीत·फुनि।सब्यबे
धि·धनुधारि॥१०॥ भीमंनांम॥
भीम·ब्रिकोदर·बाइसुत।दगी
धर·अरिसंज्ञ॥बलो·गदाधरि·
जलासिंध·येकबीर·बकगंत
॥११॥कीचकारि·फुनि·अंगमगंम
अकवानंद·बखांन॥सत्रअभा

न·सुवार·अरु·बकुभोज्ञी·ब
लवांन॥२॥द्रोपदीनाम॥पं
चाली·अरु·वेदिजा॥जग्यासे
नी·नांम॥फुनि·क्रिश्ना·सो·द्रो
पदी·जांनहु·पंडूबांम॥३॥राम
चंद्रनांम॥ रांमचंद्र·सीतापती॥
दासरथी·रघुनाथ॥रांवनरिपु·
काकुस्त·फुनि।भरतअज्ञ·क
पिसाथ॥४॥सीतानांम॥प्रिथ
वीसुता·सुजानुकी·वेदेही·
रघुबांम॥सीता·सीय·मइथुल
ली।सती·अंनकया·नांम॥५॥
हनवंतनाम॥ लछिमननांम
बज्रकटिक·हनुमांन·फुनि।म
रुति·अंजनीपुत्र॥बालजती·

लछिमंन·लछिन·रामअनुज·
सोमपत्र॥६॥रांवननाम॥रांवन·
पुलस्त्य·दैतपति।लंकापति·प
तिहमांन॥दसकंधर·दससीस·
फुनि।सीयहरन·तिंहमांन॥७॥
आकासनांम॥व्योम·बिसनपद
मारुतपथ।पुहकर·षं·अंतरी
ष॥अंबर·घंन·आश्रय·द्यउ·गै
न·बदत जनुभीष॥८॥गगन·बि
यत·सुरख्यातमक।ओर·बिहा
र·अनंत॥सुरबरता·व्यापत पु
नह।नभ·आकास·समंत॥९॥
सूरिजनाम॥आदित·सविता·
सूर·रवि।तपन·प्रभाकर·भांन
नमंनि·अरक·पतंग·हरि॥

उसनर संमि·बिवस्वान॥१०॥द
स्व·दिनेसुर·भासकर।प्रषा·अ
ईतनु·षेग॥तरुन·अहसकर·ग्र
हपती॥द्वादसीतमां·भंग॥११॥स
पता सव·पदमंनिपती।मारतुंड·
चित्रमांन॥मिहर·बिरोचन·बिक
रतनं।प्रद्योतंन·भास्वांन॥१२॥हं
स·जगति·चक्रबांधवं।द्युमनि·
जमुनांतात॥अरन·दिवाकर·
हेलि·वितु।ध्वांति·अजन्म·कहां
त॥१३॥दिनकर·तिमरति·तीप
ष्य·अंस॥कमसाषी·जगनैन।सत
रज·सुमाली·पदमबंध।अहप
ति·अरक·सुअेंन॥१४॥सहंसकि
रंनि·सीरष·अचत्ता·अरु·सर

कर· सुर्गद्वार।। सोमधात· अंगार
कं। बिस्तुकर्मा· तिमराश।। १५।। सू
र्ज किरंनि नांम।। किर्नि· अंतहपु
र· देवता।। अस्त्र बृष· संमअंस।।
म्रिगत्रिस्नां· ती छेम· तिगम। बर
यति· निष· डुतिहंस।। १६।। धूप
नाम।। रउद· घांम· परभा ससम।
जोनी। दाघ· उदोत।। मरची· धूप
मरीचि· द्रुति। छिमुद· प्रभा: रस·
जोत।। १७।। छांहनांम।। परत्र्यास
र· सीतर· सतम। छाया· जोबन·
छांहं।। अंतु दली· संतोषिया। डु
तिलक· छांडत नाह।। १८।। दिन
नांम।। द्यौस· प्रभाकर· दिव· दिनं।
अर्कि· बासुरं· बार। देवस· जांमी।

जोतिमै। अहि· जगरूप· बिचार
।। १९।। चंद्रमांनाम।। सोम· निसाक
र· चंद्रमां। अऊ· हिमांस· ससंक।।
ससी· सुधाकर· सीत अंस। बिधु:
द्विजराज· म्रिगंक।। २०।। औषधीस·
अपिधांनगुन। रोहंनिरंमनो· चं
द।। नछित्रेस· कुंमदंनिपती। हि
महित· उडपति· इंद।। २१।। अब
जराज· निसनाथ· द्रुति। कलान
थ· सुतसिंध।। परसराद· सारंग·
हरि। रतंन· इंदिराबंध।। २२।। कुमद
बंध· दरपंन जगत। मांबंध· हित
चकोर।। छीनमत्तिन· पांनिय· कं
वला। मयंक· सो उदै तोर।। २३।। कं
ला· छपाकर· धरनिधी· जैवात्रि

क·छपाकरांच॥जम·द्विजराज·सि
सीरः फुनि॥सुधरासी पिऊ·सांच
॥२४॥जोतिनांम॥ कौमोदी·अ
रु·चंद्रिका॥जोतिसनां·कुलिवं
त॥जोन्हि·जुधियं·चांद्रिनी॥पर
साद्दौ·प्रसनंत॥२५॥द्युति·दीपति·
छवि·भा·प्रभा॥अरचि·तेज·घ
न·अंस॥ महो बरच्च·ब्रसु·उग्र
रुचि·धुनि·गभस्त·हेमंसः॥२
६॥चंद्रकिरनिनाम॥ करपादो
दीधति·किरंनि॥मरिची·लांन·म
यूष जोत्या धांम·सुरस्म·फुनि॥
तामधिवसतपयूष॥२७॥लंछि
ननाम॥सोभानांम॥ लछिमंन·
लंछिन·लंछनं॥चिहन·कलंक·

अंक·जांन॥सोभ·सुषम·छवि·
कांति·द्युति॥दीपति·निहार·प्रवांन
॥२८॥राहनांम॥ राह·बिधुंत·तम
स्त·फुनि॥सिंघकेय·सुरजांन॥आ
र·औरु·उपरंगमो॥अतिबलिवं
त·बषांन॥२९॥ग्रहननांम॥पुह
पदंत·बोपर·सुपल॥ग्रहं·ग्रस्त·
उपहीत॥जोति दोच·हंदोच·फु
नि॥उतपातहं·ग्रहीत॥३०॥मंगल
नांम॥केतनांमो॥बुधनांम॥कुज·
आरिवक्र·अंगारकं॥मंगल·र
क्तो·सौम्य॥केत·सिषी·चाहीकः
फुनि॥चांद्र·गही·बुध·सौम्य॥३१॥
ब्रिसपतिनाम॥ ब्रिसपति·गुरु·क
वि·अंगिरा॥उसनः ग्रहपती·जी

य॥ धिषिणाः सुराचारिज· कहौंरे
वपूजि· सुरधीय॥ ३२॥ सुक्रनाम॥
सनीसरनांम॥ सुक्र· भारगवः
काव्य· कवि। उसना· दैत्याबंद॥
सनि· सौरी· छाया· असित। रवि
सु· सनीसर· मंद॥ ३३॥ तारानांम॥
तारा· जोति· लछित्र· रछास· धिश्नः
उभयत्र॥ बरुन· तारिका· उडग
नं॥ अगस्तिनौः भ्रम छत्र॥ ३४॥
॥ सताईसनछित्रनांम॥ कवि
ता॥ असुनिका· भरंनि· क्रितिगा·
रोहंनी· म्रिगा· पुनर्बस॥ पुष्यः
असलेषा· मघा· पूर्ब· उत्राफाल्गु
नि· जस॥ हस्त· चित्रः स्वांती· बि
साष· अनुराधा· जेसटा॥ मूल· पु

रब· उत्रषाढ· श्रवन· अरु· जांनि
धनेसटा॥ सतभिष· पूर्बा भाद्रप
दि· उत्रा भाद्रपदि· रेवतिय॥ स
ताईस नछित्र जतु· भी ग्रंथबि
धि प्रगट किय॥ १॥ ३५॥ अगस्ति
नांम॥ ध्रुनांम॥ कुंभज· अगस्ति
अछिब। सिंधसोष· द्धियांन॥
ध्रुव· उतांनपादज· ध्रुवं· अंसु
नीतिसुत· मांन॥ ३६॥ मेघनांम॥
मुदिर· मेघ· भ्राम· जलधर। अं
बुभरन· तरुदाह॥ अभ्र· बलाह
कः घनां घंनां। तडित्वांन· जलब
ह॥ ३७॥ धूंमजोनि· वारिद· सघ
न। धारधर· जलसेनि॥ वादसार
थी· मुंकजल। धुरवा· धूम्र· जे

लेनि॥५८॥ बरिषा नांम॥ गरह
छ्रिटि· बरिषा· उग्रह॥ अरु समे
द· चौमास॥ दत बिधान· अरु·
बोल्ह रंन॥ बारिद· बरित· निवा
स॥५९॥ मेघ गर्ज नांम॥ मेघग
र्ज· संपादि चं॥ रसत· मेघनी सांन
॥ मेघमाल निर्घोष· फुनि॥ अगय
घटा घहरांन॥६०॥ बीजुली नांम॥
बज्र· बीज· रुरि· मेद· छटा॥ मेघ
जोति· तंडीव॥ इंद्र अवद्यं निः
दांमनी॥ अस्थिर· बारिदहीय
॥६१॥ बीद· पंनउदै· कौपछिनाम
गंनछिछिन नजोति॥ बरिनांन
घन· महानल॥ नलनभ· छिछि·
उदोत॥६२॥ घंनजक्कु· बिक्कुति·

बिज्जुली॥ अरिकसिप· लवनीय
॥ संपा· चपला· चंचला॥ छीनप्र
भा· क्रिदनीय॥६३॥ आकलिका
एरावती॥ असंनि· कौंधः कौंधय
॥ तरित· बीदनै· बीज· फुनिाम
नमस्तस· इमगाय॥६४॥ इंद्र
धनुष नांम॥ इंद्रधनुह· धनस
क्रयौ॥ अस्तदेव· अतिरूप॥ बो
रो· बिलखंत· संप्रनै॥ रसरोहि
त· नभऊप॥६५॥ प्रभात नाम॥
कलय· अहरमुख· प्रतुषा॥ ऊष
· भोर· प्रभात॥ भोर· सकार· बि
हांनः फुनि॥ नंनसारो· संधि· प्रा
त॥६६॥ राति अंधारी नांम॥ त

मी·जांमिनी·राति·क्षनि।तमरैंनी·
बिनु चंद॥अंधियारी·कारी महा॥
रजनी·अरु·डुतिमंद॥४७॥अं
धकारके नांम॥तिमर·ध्वांत·सति
मर·तमस।तमसततः तम·अंधका
र।ध्वन्त छाया·रज·तामस·सतम·
मीन·तमंकार॥४८॥राति उज्या
रीनांम॥नियत·चंद्रका·अरु·सिं
नी।सोभाद्दिय·रथकोंम॥जोति
उज्यारी·चांदिनी।जुन्ह·सीतर
चषि·नांम॥४९॥अमावसनांम॥
अमावस·कुमावसहा।मावस:
संगरविंद॥संगमहा·दरिसकु
कुंहू।संनिसद्धिस्त्रि-नक्षिंद॥५०॥

पून्योंनाम॥पूरंनिमा·पून्योंनिसा
।पूरनवासी·चार॥कलासहित·
राका·कहैं।पूरनचंद·बिचार॥५
१॥रातिनांम॥रजनी·दोषा·जांम
नी।रात्रि·त्रिलांमां·रैंन निसा·
बिभावरि·सर्बरी।छिनदा·निसि
थिनि·अंन॥५२॥बरियांनांम॥
छिंन·पल·घटिका·जांम·कहैं॥
दिवस·मास·रितु·अंन संबत्स
र·जुग·कल्प·कौ।बरियां नाघत
बैंन॥५३॥षटरुतिनांम॥बरिषा
नांम॥ग्रीषम·बरिषा·सरदरि
ति।हिमरुति·सिसर·बसंत अ
बद·संबत्सर·सरदु·ब्रष।हायं·

न·ब्र·ग्रह·जंत॥८५॥ प्रलैनांम॥दि
सानांम॥ कलप·जुगंत·संहार·छ
य॥ प्रलै·सकुल·कलिपात॥ दिकु
ञ्जा सा·दिस·कासटा॥ हरत·क
कुभ·कोदात॥८६॥ दसदिसासष्य
नांम॥ प्राचि·इसांन·उदीचि यं॥ बा
ड्व·परतीचीय॥ नैरति·छिन·अग्न
ई॥ ब्राह्मी सु·नागा य॥८७॥ पंषीनां
म॥ षग·पषी·बिहगंम·बिहग॥ प
त्री·सकुनि·बिहंग॥ सकुंत·पतत्री
: सकुन·बिह॥ पतत·बिहाङ्ग पतंग॥ प
ग॥ अंडज·नगुका·पत्ररथ॥ नीड़ निल
य·द्विज·पंषि॥ बिधि·गोचर·षेचर·प
चर॥ नभचारी·तिनसंषि॥८८॥ पं

ष नांम॥ बाजू·चांच नांम॥ षग्य·
पततरं·छद·गरुत॥ पतरं·तनुरुह
सां·च॥ बाजू·बष्यतमूल·फुनि त्रो
ट·सपटिका·चांच॥८९॥ पपीहा
नांम॥ अंबुप·पपीहा·चातकं॥ सा
रंग·कंठव·स्तोक॥ याद्वसप्रिय·चत
पत्रकं॥ म्याग·अरु·नभकोक॥९०॥
मोरनांम॥ नीलकंठ·केकी·सिषि
॥ बरही·बरहिंन·मोर॥ सिषंडि·क
लापी·भुवंगभुक॥ जलमुक·सचि
त·मयोर॥९१॥ केकाधुनि·सहजरह·सि
षा॥ बिषनीयो·घननाद॥ बलहय·
उनमादी·सहज॥ सिषर·औरु·गिरबा
द॥९२॥ कोकिलानांम॥ कोकिल
कलकंठी·पिकी॥ तांम्राषी·बनप्री
त कोपित·कीटौ·करकरो॥ स्पांम·कु

हृ·पुरस्त्रीत ॥६३॥ चकवा चकई नां
म॥ चक्रवाक·चक्र·द्वंदचर।कोकं·
बिरहिया रैंन॥ रामसाप·जांमें निबि
धुक।रथांग·रबिहित अरैंन॥६४॥
चकोरनांम॥ चलचंच·गुड्डाल·फु
नि।ससिप्रिय·जीवंजीया।बिषस्रच
क·बिषघ्नी रकां।अरु·चकोर·बिधुप्री
या॥६५॥ कूकडा नांम॥ प्रभातग्य:
चरनायुधा।तांम्रचूड·ब्रितांख्य॥कुकु
ट·सिषंडिक·निसबिंदी।तमचर रात्रि
कदा·नाख्य॥६६॥ सूवा नांम॥ सु
वा·फलादन·रक्ततुंड·।अनुवादी
·सुक·कीर॥ कुटिलचुंच·पोपट·मि
षा।सुवटा·हरितसरीर॥६७॥ पंज
न नांम॥ नीलदास॥ पंजंन·ममोला·
षंजरिट।लोहछिछि·सारंग नीलचा

षो किकीदिवी।कंकअमुत्तसुरंग॥
॥६८॥ हंसनांम॥ राजहंसनाम॥
मांनस उकासित छद।हंस चक्रांगम
राल।धारछका दब।राजहंस।रासउ
कासुभचाल॥६९॥ भवरनांम॥ म
धुकर·मधुब्रत·मधुप·आलि।भंवर·द्व
रेफो·भृंग॥ छपद सिलीमष लीनम
धु।कवलहित·सारंग॥७०॥ सुल·कु
ठ·चंचरीक·फुनि।लोलब·चंचल·
भवंत॥ मसमि·इंदिंदिर·कुसमलिट॥
बसिसुबास·धावंत॥७१॥ कागनांम
बाइस·करवा·ध्वांक्ष·हरि।रिष्ठ·प्रम्ब्य
लि·काग।कालकंठ·कंकाल·चुक
·काक·संक्रितजो·भाग॥७२॥ पोमके
नाम॥ मारुत·मरुत·समीर नां।बाइसे
मीर·बयार गंधिब·नभस·प्रभंजनं॥

जगतप्रांण·अरु·बारा॥७३॥गंधबाह·
सिद्धसंन·अनिल॥अहिप्री·बात·पु
मांन॥अस्तुग·प्रकंपन·सपरसंन·भी
महत्त्रंपित·जोन॥७४॥संसारनांम
पतारनांम॥बिस्व·चरा·चर·लोकज
गा॥मंनुष्यलोक·संसार॥कोष्ठ·रसातल
:नागपुरा·अधभुवंनं·पातार॥७५॥भू
मिनांम॥भू·बसुधा·प्रिथवी·धरनि·
ख्रेम·धरा·जगती॥अवनी·धात्री·
छिति·मही॥बसुधरा·उरबीय॥७६॥षो
नी·अनंता·मेदनी॥औ·रथिरा·बसुम
ति॥अचला·अवनी·श्रवसहा॥रसा·
बिपुल·धरति॥७७॥गोत्रा·गो·अनार
तंन॥प्रिथी·अंबरा॥सिंध॥सिंधमेषल्ला·
ज्याक·धरा॥भूतधात्रि·धरबिंध॥७८॥
सबदभेदबिचारनांम॥भूधरगिर

भूपति॥त्रिपति॥भूरुह॥छिछि·पिछांन
॥भू·चरभू॥बिचरतजिते॥सबदभेदप
रवांन॥७९॥पर्बतनांम॥सिषर·सि
लोच्चित·सैल·गिर·प्रबत·पहार·सि
लोच॥गोत्र·अद्रि·भूधर·अचल॥सांन
मांन·नागांच॥८०॥सुमेरनांम॥र
तानासंन·देवालयो॥हेमसिषर·गिर
राज॥माद्रि·मेर·सुमेर·गिर॥कंच
नकर·सुरसाज॥८१॥पूर्बप्रबतन
म॥सजल·सथिर·धमनिर·उदय·अ
द्रि·कोटि:सिषरेच॥अस्तीकोट·अ
सस्त·फुंनि॥दोधय·पर्बगिरेस्व॥८२॥
पछिमपरबतनांम॥मादन·पारिज·
नीषधो॥हेमकोटि·हिमया॥सु॥बिध·
मसेछ॥गुनकहु॥देवनंक·मलया॥जु
॥८३॥पाथरनांम॥पांहन·पाथर
ग्राय·सिला॥असंम·पल्लास·पषांन॥

प्रस्तर·प्रसरो·बज्रलघु॥ अरु·डुपंन·ग्र
वाांन॥८४॥ बननांम॥ कांनन·आरं
नि·गहन·बन। सांड्·अटंवि·निकुंजा
कुंन·गांहन·आकन·बिपंन·बीऊ·म
हारंन·पुंज॥८५॥ ब्रिछिनांम॥ तरु·
साषी·पादप·बिटपु। साल·पलासी·द्रु
म कुट·अग·नग·अस्त्रिप·अगमा
ल्वन·अद्रु·रुहन्तुंम॥८६॥ बेलिनं
म॥ प्रतांनंनि·बल्ली·बिरुतालता·ब्र
तंती·बेलि॥ अस्थिर·पर·आसन·उ
कुंजरि·अलिकेलि॥८७॥ आंबनां
म॥ केलानाम॥ मांकदो·सहकार·
उता। आंम्रो·आंबारसाल्ठा॥ कदली
·मोचा·रंस·फुंनि। केला·अतिसुक
माल॥८८॥ चंदननांमा॥ गंधसार·
मलयज·कहैं॥ तेलपर्न·श्रीपंड ह
रिचंदन·चंदन·मले·गोसीरष·सीत

उ॥८९॥ काठनांमा॥ पुहपजातिनां
मा॥ काष्ट·मेघ·इंधम·कुहहा। कोट
रेनं·बिंद·दारा। केतकि·मालिका·जा
ति·चंप·काकद·बंधूक·चार॥९०॥
पांनीनांमा॥ पांनी·सलिलं·अंबु·अंन
।पयरुह·बारि·जल·तोय। अंबु·कुसं
संबर·बनं। पथ्य·सजीवंनि·सोद॥९१॥
पुहकर·आंब्रित·केकबंधा। घनरस·
उदकं·नीरा। अबतो मुषं आप·अप
।बाह·कंमल·बिय·षीर॥९२॥ सब
दभेद बिचारनांम॥ जलदकारते·
जलदहै। जलजकार जलजात
लधकारते जलधिहै। जलचर जल
बसान॥९३॥ सातसमुद्रनांम॥ ल
वन·षीर·दधि·आज्य·सुरा·इंष·स्वाद
:पसात कथी नीबजनु ग्रंथ बिधि॥

समसिंधकी बात ॥ १९४ ॥ समुद्रनांम ॥
सरितापति · सागर · अबधि ॥ सिंध · समु
द्र · उदधि ॥ बारिरासि · मकरालयं ॥ जा
दहपति · जलनिधि ॥ १९५ ॥ अकूपार ·
रतनाकरं ॥ अपरंपार · उदन्वान ॥ अ
र्णव · नदीसुर · नीरनिधि ॥ पारावार · अ
म्बोन ॥ १९६ ॥ नदीनांम ॥ सिंधतटनि
· धुनि · निम्नगा ॥ स्रोत · स्वनी · स्रवंति ॥
सैलवंनी · रुदनी · सरिता · करखुह ·
नदि · दियवंति ॥ १९७ ॥ रोधा · बक्रा · ज
लधिगा ॥ अबाधि बल्लभा · ज्ञांन ॥ कुल
कषम स्रोतोबहा ॥ त्रिघ्रानि · आपगा ·
मान ॥ १९८ ॥ अष्टमहानदीनाम ॥
गंगा · जमुना · देवहा ॥ नर्बदा · रेवा ·
सिंध ॥ स्रोनां · अरुण · धनबाहदा ॥ अष्ट
तरंग ॥ निबंध ॥ १९९ ॥ गंगानांम ॥ ज

ह्नवी · मंदाकिनी ॥ सुरसुरी · त्रिस्रो
त्र · गंगा ॥ भीषमसुर · भागीरथी ॥ बिष्णु
पदी · हरुसेरा ॥ २०० ॥ जमुनांनाम ॥
जमुनी · सउरी · जमुसुसी ॥ रवितनया ·
· कालिंदि ॥ स्यांमनदी · स्यांमासरित ॥
और · किसन आनंदि ॥ २०१ ॥ तरंगनाम ॥
औरी नांम ॥ उरमी · उतकलिका · बले
॥ लहरि · कलोल · तरंग ॥ उसनो · लो
हा · वीचि · भंग · चम · आवर्त · भवरंग
॥ २ ॥ तटनांम ॥ नालानाम ॥ पुलिन
· रोध · तट · तीर · फुनि ॥ ढिग · सइकत ·
कूल ॥ नदक · उदोघ · प्रवाह · [illegible]
लो · प्रोत · मचूल ॥ ३ ॥ नावनाम ॥
बेरा · नउका · भंगिनी ॥ द्रोनी · तरनी ॥
· नांव ॥ उरुप · तरंज · भेला · पवैलव ॥
डोलस · तरी · कहांव ॥ ४ ॥ जिहाजन

म॥ षेवट नांम॥ बहित्र·बोहिथ·
ज्यानपत्र॥ बोहन·पोत·जिहाज्ञु॥
निजांमक·षेवट·नविक॥ पोतबाह
·करियाज्ञु॥५॥ मछ नाम॥ प्रिथुरो
मा·संबर·अंडज्ञ॥ संषचारी·झष:
मीन॥ मछि·बिसारि·अनमिष·सफ
रि·तिमि·रोहित॥ या मीन॥६॥ मीं
डक नांम॥ मीडक·बरषाभू·पल
वा॥ सालुर·दादुर·मेक॥ कर छौले
·गड·चारुपद॥ बेग·हीनरसनेक
॥७॥ कछुवा नांम॥ कछप·कमठ
दउल·कुरंम॥ अंबुज·स्तुपल·आ
गारि॥ जलतिं·कछुहा·मोतिपह॥
डुल्पज·डुलहि·बिचारि॥८॥ कू
वा नांम॥ बाइ नांम॥ कुवा·कूप·ब्रे
हि·अंध·कुहरा॥ कुवटा·हरि·उदपा

नि॥ वापि·जला से·षानिका॥ पुहकंनि·
द्रिघिक·निपांनि॥ ९॥ तलाव नांम॥
बिसेन·सरसी·सरवरं॥ सर·साकार·त
लाव॥ अरु तडाक·पदमाकर संपलुल:
कहत लघु नाद॥ १०॥ कवल नांम॥
अंभोरुह·पुहकर·कवल॥ राजिव·न
लिन·सरोज॥ पत्र·कुसेसय·तामर
सा॥ अरिबिंद·कंज·जलोज॥ ११॥ पंकज
:अबज·महोतपल॥ सहस्रपत्र·अ
रोह॥ बारिज·सतपत्र·बिप्रसुन॥ स
रसीरुह·सरजोह॥ १२॥ सूर्यबंसी
कंवल नांम॥ कंवल नी नांम॥ मा
कु·सितांबुज·कोकनद॥ रकतोत
पल॥ पुंडरीक॥ नलिनि·बिसंनि·पद
मनि·कंजनि॥ नीजनि·पंकजनी
क॥ १३॥ चंदबंसी कवल नांम॥ उ
तपल·कुंवलय·कउरुष॥ कुमुद·

इंदीवर·सेत॥नीलोतुपल·कमोदनं।
॥निसविगासित·ससिहेत॥१४॥कव
लनालनांम॥फूलकेनांम॥कंवल
नाल·बिनाल·फुनि॥नाल·डंड·अ
रु·तंत॥कुसंम·पुहप·मकरिंद·रस॥
फूल·प्रसून·कहंत॥१५॥पांननांम॥कूं
परनांम॥पत्र·परन·दल·छद छदन
॥बिडू·पलास·पांन॥नव·प्रवाल·कि
सले·पलव॥कूंपल·कौंप·प्रवांन॥१६॥
डोरनांम॥पुहपरजनांम॥हरस्य·
स्यन·छीपह·अविरा॥छुपहं·साषाः
डार॥रजप्रसून·रजपुहप·फुनि॥
और·पराग·बिचार॥१७॥फूलबिग
सकेनांम॥फूलसंकुचितकेनांम।
प्रबुध·बिनिद्र·दलित·फुनि।बिगसि
त·बिहसतफूल॥सकुचित·निद्रन·

मुद्रितं॥मिलितं·मुचितं·मूल॥१८॥
अंम्रितकेनांम॥अंम्रित·सुधा·पयू
ष·मधु।सांति·मिष्ट·मकरिंद॥जोम
थीत·अंम्रितरस॥अमी·रतन·बंधु
चंद॥१९॥बिषकेनांम॥बिष·जंम
·टीरक·गरल·खिडा।दरद·अरस·
काकोल॥तीछन·परदिस्न·बस
नानें बिष·बितबी·बोल॥२०॥मोक
बिषकेनांम॥कुदिका·हलाहल
बुस सुव।कालकूट·त्रिंगीक।प्र
दीपन·सौराष्टक।ब्रह्मनाग·सक
तीक॥२१॥सायकेनांम॥श्रप·भु
जंगक·उरग·अहि।जिहवक·भुज
ग·भुजंग।भोगी·सरश्रिय·द्रवीकर
दीरघपिष्टि·पनंग॥२२॥पवंनासंन:

बिषधर·फुंनी।काकोदर·चषिकांन
।।नाग·दंदसुक·त्रिमुकता।द्वैरसनां·
हरि·धांन।।२३।।आसबिष·प्रिदाकु·
युत्तपद।काद्रवेय·श्री·व्याल।।श्रीफ
:मुकत·कंचुक·बिषप।कुंडलि·बिसे
सय·काल।।२४।। सेसकेनाम।।स
हंसबदंन·बासुकि·अनंत।।अपराज्ञः
कवि·सेस।ध्यान·बिध्यान·सहंसफ
ना।सुरहनंतु·नागेस।२५।सेसनागः
कोदर·गुंनहि।सुरहीष·हरुहार।।
छेन·कोनसी·बाहसुर।।संनिपति·प
तीपतार।।२६।।हिरनकेनाम।।रुर
बातायह·एन·म्रिग।।क्रिश्न·सार·सारं
ग।।सघर·न्याकरक·गोकरंन।रोहित
:तुरव·कुरंग।।२७।।सिंघकेनाम।।

नागेंद्र·सिंघ·केसरी।।कंठीरव·गजर
ति।हरयक्षः·हरि·नखआयुधं।पंचानन:
बनपति।।२८।।महानाद·पुंडरीक·पुं
नि।नाहर·सीह·म्रिगारि।।सारंग·केह
रि·मछ·मीरुछ·सुडर।।स्लिवृतः·बा
घ·बिचारि।।२९।। सारदूलनाम।।
चीताकेनाम।।सारदूल·अग्युत·छ
ल·सरभ·बाघ·अष्टपात·।चित्रकः
दीपा·राजम्रिग।चीता·चित्र·कहा
त।।३०।।हाथीनाम।।गज·हस्ती·प
द्विप·नाग·इभ।कुंजर·करी·करेभ
·दंती·दंतावलि·दुरिद।मत्तवेरम·
कुंभेन।।३१।।स्यांमजोनि·सिंधर·कर
टि।बारुन·पील·मतंग।महामिरग
·जै·नेकप।हरि·कर·दीप·मदंग।
।।३२।।घोरानांम।।तुरंग·तुरंगम:

बाजि·हय।सैंधव·गंध्रब·तुरंग।बा
ह·सपति·अरवा·कंबुजा।घोटक·अ
स्व·पवंग॥२३॥रथबहलिनाम॥
धुजापताकानाम॥सकट·अनड
गंत्री·सतंगा।रथ·स्यंदन·बयांन॥धु
ज·गति·केतन·केत·चिंन्ह।धुजा:
पताका·मान॥२४॥पालिकीनाम॥
सुषासननाम॥पालिकि·सविका:
जांप्यजंन।प्रेषा·डोला·पिछांन॥बां
हन·धोमैरन·जानपत्र।जुग्गि·सुषा
सन·मान॥२५॥पंथकेनाम॥राहे·
धुनि·पंथा·पद्वि।बरतम·पधति·
मग॥सरनि·अेन·रथ्या·पद्या॥बी
थी·चर·मारग॥२६॥बलधकेनाम॥
उक्ष·गऊ·साकर·ब्रिषभ।बरद·हल
ड·सुरभेय॥सकर·सारकर·कुकु

मंन।सिंधुरथ·धोरेय॥२७॥गऊके
नाम॥गऊ·सुरभि·तंग्या·तंबा॥रोहि
नि·धेन·महेइ॥गाइ·अर्जुनी·निलपि
की।अनडवाही·सुरभेइ॥२८॥ऊं
टनाम॥करभ·करह·दासेर·उंट॥
ऊस्ट·क्रमेल·बरार।लंबग्रीव·कंट
कासन·सीदक·गलफ·बिचार॥२
९॥सूकरनाम॥कूकरनाम॥कौ
ल·ब्राह·सूकर·सुवर।दंताली·घु
ट्घ्रांन।चक्र·भषन·मंडल·कुकुर
॥सारमि·किलिकिलि·स्वांन॥३०॥
गदहानाम॥भीदानाम॥गरदभ
रासिव·घर·गदहा।सीतवाह·प्रिय
छार।मेष·उरभ्रं·एडक।अबिहर
उरन·बिचार॥३१॥छेरीनाम॥भी
नरनाम॥छाग·छगल·छेरी·अजा॥

पसु·बस्त·स्तम·छांन॥ मकट·बनउ·
का·साषम्रिग॥कपि·बांनर·चपलां
न॥६२॥ गादरनांम॥ भेडहीवनांम
जंबुक·कोस्ट·फेरुवा॥गेमय·फेफ
रि·स्यार॥लारि·भेडहा·ब्रिग·कुकुर
·दीठबली·कुंडार॥६३॥ सूहानांम
हरि·उदर·चूहा·चुरुष॥चौंषर·मष
मंजार॥मूषक·लोमी·बकु·क्षुधीच
कल·बाहसुंडार॥६४॥ बिलाईनां
म॥भैसिनांम॥ कपटि·बिडारि·मं
जारि·मुरि॥निमुंहि·बाघमौसीका॥
भैंसि·ब्रिषस्ति·महषी·माहिंसा॥नदि
म·नांमदेहीका॥६५॥ अगनिनांम॥
अगनि·बहनि·धनंजे·दहनि॥जलं
नि·अनिल·चित्रभांन॥जातबेद·या
वेक·रंधित॥बैस्वंनरो·क्रिसांन॥६६॥

क्रिस्नबर्तमा·अस्तुसुषंनि॥अश्रया
सु·हबिवाह·॥ऊतवह·ऊतभुक·बि
भावसु॥क्रिनरेता·अबदाह॥६७॥सिषी
:ब्रिषाकपि·बाड्सष॥बरहि·सुषमं·
रु हितास॥बीतहोत्र·सपती॥दमुना
:जोतिक्रिपीट रचिह॥अनुनपात·
ऊतास॥६८॥मोचिकेस·स्वाहापती॥
दमुनां·जोतिक्रिपीट॥ज्वाला·स्फुलिं
ग·सुक्रसुचि॥जिन्ह·धूंमसिषी ट॥
॥६९॥धूंवांनांम॥अंगारनांम॥धूं
म·धुंमल·धूंवां·अभिलानलग·स्पांस
सिष ज्वार॥ऊतवि·मंक·अगहंनग
कुर॥षिषि·प्रिचकोर·अंगार॥७०॥
बडवा·अगनिनांम॥बडवानल·उ
डबस·बडव·॥संब्रत·बडवासुष॥

सिंधअगनि·दव·दवागनि॥ नीरअगंनि
ः जलसुष॥५५॥ सोनेंकेनाम॥ हरंप
नि·हेम·कंचन·कंनक। हाटक·भरं
म·कल्पांन॥ गांगेय·सुवरंन·रुकम:
॥ अष्टापद·बसु·जांन॥५६॥ जातरूप
ः का। रत्निसुर॥ करबुर·जंबूनंद॥ महा
रजत·कलधूत·कुंभि॥ चांमीकर·
सुरिचंद॥५७॥ पीतबर्न·सारंग·हरि
अमिट·सूर्यबल्लि·लोन॥ सतकुंत
भ·तपनीयं·अरु॥ भूतम·सोनां·सो
ना॥५८॥ रूपानाम॥ पारानाम॥ र
जत·रूपिं·षरजुरं॥ डुरबुन·रूपा·ता
र सूत·महिष·रस·पारदं॥ गा॥ चल
ःबीजस्यो·पार॥५९॥ रतननाम॥ म
रकतमंनि·बेडूरजं॥ मुक्तिक·बज्र·

रतंन॥ बसुमंनि·बिद्रुमे·नीलमंनि॥ बै
रांमनिक·बरंन॥६०॥ द्रबिनाम॥ द्र
बि·सुद्रबिन·बित·दमक॥ रविसवु·
धनं·अरथ॥ स्वापति·भूति·लछी·रि
पथ॥ त्रिष·बिभूति·बसु·गथ॥६१॥
नौनिधिनांम॥ महापदम·संषो·मक
र॥ कछप·कुंद·मुकंद॥ षर्ब·पदम:
अरु·नीलयो॥ नवैनिधि सुषकंद॥६
२॥ मांनसनांम॥ मांनव·मनुष·छित
यो॥ मांनस·नरो·पुमांन॥ पुरुष·पूरष·
भूसप्रिक॥ मनजं·मुनिष·जन·जांन॥
॥६३॥ स्त्रीनांम॥ नारी·बंनिता·कांम
नी॥ जोषा·इस्त्री·भांमा·ललिना·महि
ला·भांमिनी॥ रामा·रमनी·बांम॥ दष
अबला·अंगना·नितुंबिनी॥ मामंनि
तिय·जुवतीय॥ जोषिता·बनंनि·सि

मंतनी॥सुंदरि·बाल·तन्वीय॥६१॥बां
मलोचनां॥पुरिंध्री॥लीलावति·म्रिगनैं
नि॥भीरुह·बसा·क्रिसोदरी॥प्रमुदा
:मुगधा·अंगनि॥६२॥ब्याहनांम॥पां
निपीरनं·परिनय॥उपजांमयो·बि
वाह॥दारकरंम·पांनिग्रहन॥ब्याह
औरु·उदबाह॥६३॥भरतारनांम॥
भरता·बिबोढा·भोकता॥रंवन·नाथ
:धव·प्रीय॥बर·बरता·बलभ·दयत
॥प्रीतम·प्रांनपतीय॥६४॥प्रियो·प्रां
नई·प्रेमदायीयो·नाइक·स्यांम॥प्रां
नेसुर·रसिया·रंवंन॥मोहंन·छलछ
नांम॥६५॥निजस्त्रीकानांम॥जा
जो·पतनी·सहचरी॥बलभा·प्रेयसी
:दार प्रिया·कांअंता·परिग्रहं॥ऊढा

जंनी·बिचार॥धा॥पानिग्रहीता·ग्रे
हनी॥जाया·धंमंनि·कलित्र॥दुतिया
:दैता·प्रेतमा॥अवंनि·बधू·बिचित्र
:॥६७॥पितानांम॥मातानांम॥
तात·जनक·जनयता॥पिता·बाप·
पित·जांन॥अंबा·माता·साइत्री॥ज
नंनि·जनयत्री·मांन॥६८॥पुत्रनांम
तनय·पुत्र·दारक·सुवंन॥अंगज
:नंदंन·सुत॥नंद·आत्मज·उदबह
:प्रानज·तनयज·पुत्र॥६९॥बाल
कनांम॥बाल·सतनयैधव·पोतय
क॥अभाक·आडिंभ·किसोर॥सिसु
:कुमार·सव·पिरथुकं॥षीरकंठ:
लहु·भोर॥७०॥बेटीनांम॥कुमा
रीनांम॥दुहिता·तनया·कुंनि·सुता॥
अंगजा·आतमजाय कन्या·कुमा

री·बालिका॥दिकरिम्कनी·कनिका
य॥७१॥प्रसूतिनांम॥तोक·अप
ति·सुक·संतती।प्रजा·प्रसूति·सं
तांन॥बंस·अन्वय·अभिजन·जनन
।गोत्र·कुलं·पहिचांन॥७२॥भाईनां
म॥बहननांम॥ भ्रात·सहोदर·बं
धु·सहजा।बंधव·अनुज·सुततात
॥जांमि·सुसा·भगनी·बहना।औरस
अंगजा मात॥७३॥सतीनांम॥त्रि
यापुरुसनांम॥ सती·पतिब्रता:
साधवीसीलवती·पतिसेवा।दंपता
पति:कांतापता।दंपति·प्रीया।प्रि
एव॥७४॥दूतीनांम॥चेटि·बसी
ठी·दूतीका।चेरि·चेटिका·दासि
॥दूति·कुटनि·संचारिका।चुंटि·सं
भलि·सतनासि॥७५॥बेस्यांनांम॥

गंनिका·बेस्यां·पंनिगनां।पन्पत्री·रू
पाजीवा।नगरनाइका·लोभनी।सां
मांनी·लगतीय॥७६॥असतीनांम॥
असति·असीला·पांसुला।स्पोरं
नि·बंधका·धिष्टि॥बिभचारनि·पुंच
लि·धरषणि।कुलटे सुरि·गातिबिद्वि
॥७७॥मित्रनांम॥मित्र·सषा·सह
चर·सुहृद।बयस्य·संगीसनेहाइ
ष्ट·एकमन·प्रीतम।बिनेअंत्र·इष्ट
प्रेह॥७८॥सषीनांम॥सषी·सहेलि
:सहचरी।बयस्या·अली·रंमंति॥
रजनि·सजनि·बल्लभी·संगनि।स
हचारनि·भावति॥७९॥सरीरनांम
बिग्रह·देह·सरीर·तंन।गात्र·क्षेत्र:
अंग·बंध पुर·पिंड·बर·घन·बपु·ब्र
षम।औरस·कलेवर·कंद॥८०॥जीव

नांम॥ आतम·जिय·चेतंनि·जन॥
देही·जंत·पुमांन·पवंन·सरीरन·हं
ह·पुरुष॥ स्वासो·प्रांनी·प्रांन॥ ८१॥
मनंनांम॥ सांत·चेत·मंन·चित·म
नंस॥ रिदै·अंतह्करन·ज्ञांन॥ केवल
ःचपल·करमी·बुधी॥ चंचल·खव
न·बषांन॥ ८२॥ सीसनांम॥ सिर
ःसीरष·उतमंग·मुंड॥ मुरधा·कर
तिन·सीस॥ मस्तग·मूलि·श्रिंगाव
ली॥ तरावली·अंगीस॥ ८३॥ मां
गनांम॥ केसप·वृतम·केसज्ञ॥ से
तापथ·एकंत मंग·गंगलट·मध्य
सीचितरेषा·श्रीमंत॥ ८४॥ बार
नांम॥ केस·सिरोरुह·मूरधज॥ चि
कुर॥ चिकुर·कच·बार तम अस्ति
र·बिषधर·अमर॥ चूंड·ःसदातम

कार॥ ८५॥ अलकनांम॥ घूघरि
यारेबारनांम॥ अलक·कुगवरि
लर·कुंतिल॥ कचमाली·सारंग॥ कुं
चित·आरालक·लोचकुर॥ अवली·
रुहकुटिलंग॥ ८६॥ चोटीनांम॥
कचा·गुंथिता·बेनिका॥ कवरी·धमि
ल·बेनि॥ चोटी·त्रिबली·स्यांमज·ज
टमाला·लंबेनि॥ ८७॥ बालक की
चोटीनांम॥ रिदैकी रोमावलिनां
म॥ काकपछक·सिषंडिका॥ चोटी
ःचूडा·साष॥ रोमावलि·रुह·लोमः
रुम॥ रोमराजि·रिदनाष॥ ८८॥ म
स्तकनांम॥ मस्तक·भाल·ललाटक
।अलिक·इंद·त्रिलाट॥ माथा·केम
ग·भागिथिति॥ अछिरपुटा॥ कमघ

टा॥ ८ली॥ भौंहनांम॥ पलक॥ बरुनीनां
म॥ स्याम धनुष भौंहै॥ त्रिकुटि॥ भुव
: सींगनि॥ तिहं जांन॥ पलक॥ निमेष
चषि बसन॥ बरुनि॥ पलक रुह॥ बां
न॥ ८०॥ नेत्रनांम॥ नैंन॥ नेत्र॥ द्रिग॥ प
लोचनं॥ ईछन॥ अंबक॥ चछु॥ लोइं
न॥ सारंग॥ आषि॥ गो॥ दृहित्ति॥ बिलोक
नि॥ अछ॥ ८१॥ पुतरीनांम॥ कटाछ
नांम॥ पुतरी तारिक॥ जोति चषि॥ अ
रु॥ कनीनिका॥ तार॥ नाछ॥ कटाछक
: बीषिनं॥ आधा दे कु॥ बक्र॥ बिचार॥
॥ ८२॥ कांननांम॥ नाकनांम॥ श्रोत्र
: स्त्रवंन॥ श्रव॥ करंन॥ श्रुति॥ साषि:
सब्द ग्रह कांन॥ घोन॥ नासिका॥ नक्र
नक॥ गंधषि॥ सिंधनि॥ घ्रांन॥ ८३॥

॥ मुषनांम॥ आंनन॥ मुष॥ बकत्र:
बदन॥ लपन॥ तुंड॥ मुहं॥ आस्य॥ बात
: कंवल॥ ग्राहक॥ बिकर॥ ग्रासित॥ पर
ग॥ बिगास्व॥ ८४॥ जिभ्यानांम॥ कंठ
नांम॥ रसग्य:॥ जीभ॥ जिका॥ रसन॥ ब
कनि: जपनि॥ कवि॥ ग्रासि॥ ग्रीव॥ कं
ठ॥ गर॥ नीगरन॥ त्रिरेषा॥ सुरबासि
॥ ८५॥ बांनीकेनांम॥ भाष॥ भारती॥ स
रस्वती॥ बांनी॥ बांनि॥ जरंग॥ बचन॥ ल
पति॥ सुमिरन: त्रिकुट॥ बाग॥ गिरा॥
रसि॥ बंग॥ ८६॥ ठोडी: गालनांम॥
अंस॥ भुजानांम॥ ठोडी॥ चिबुक॥ अ
धर अध॥ गाल॥ कपोल॥ गंड॥ षवा:
सकंध॥ अंस॥ भुज सिरं॥ बाह॥ दोह॥ भु
ज दंड॥ ८७॥ हाथनांम॥ आंगुरीनां
म॥ पंचसाष॥ कर॥ हस्त॥ सय॥ हाथ:
क्रमातो॥ पांन अंगुरी॥ करसाषा:॥

अंगुलि।करपल्लव·पंचांग।।५९च।
नषकेनांम।।कांमंकुस·करसुक·क
रजा।कररुह·नष·महराज।।भुजाकंठ
कंठ·उंरस्थो।।नषर·ओष·तुंड·ओज।।
६०।।ग्रीवांनांम।।हिदैनांम।।ग्रीवां·
कंधिरा·सिरधरा।।धमंनि·सिसेधि:।कं
धान।।उर·हितु·हिरदै·कुचंतरा।बछ
:छाती·हिय·जांन।।६१।।कुचनांम।
सतन·पयोधर·कुच·उरजा।हिरदैनै
न·उरोज।।सिकुन·स्यांमसिर·पीनं
अस्तन·अमी·बषोजं।।पेटकेनांम
पीठिनांम।।त्रिबलीनांम।।पेट·उदर
पुब·तुंद·चर।कुषि·संघर·जठराग्न
।।पीठ·पिष्ट·वंस।त्रिकं।त्रिबलि·त्रेरे
षा।नाभ।।६२।।कटिलंकनांम।।जोनि
नांम।।मधि·बिलग्न·बलगंन·मधि
मालंक·कटि·कंचियद·श्रोनि।।लग

उपस्त·अस्त्री।चिंहंन।मैंनमंदिर·अ
रु·जोनि।।६३।।नाभीनांम।।नितंबनांम
जांघनांम।पेंडूनांम।।नाभि·कुंडरि·
कुंड·तुंद·कूप।।अधो·नितंब·अरोह
।।जांघ·केसरह·षंभ·जुग।उरु·ऊरु
न·पिंडोह।।६४।।पिंडुरीनांम।।पगथर
नांम।।प्रतिजंघ·जानू।पींडुरी।डोलि
:पींडिका·जांन।।पैतर·तरवा·अंति
पग।।पगथरि·रेषि·प्रवांन।।६५।।पग
नांम।।चालनांम।।चरन·पाउ·पदमों
नि·पग।।अंघ्रि·क्रमन·क्रमया।६६।।चा
ल·गवंन·रवंन·चलन।क्रमगे·हंस
:धार।।६७।।सिसननांम।।गुदानांम।।
पुरुषचिंहंन·मेहंन·सिसन।सेफो·मे
ढ्रक:लिंग।।गुदा·अपान·द्वारमल।।
मूत्रद्वार·अधिमंग।।६८।।गोदनांम।।
अंकनांम।।गोद·उछंग·करोल·अं

को। अंकमाल· उतसंग॥ मंडन· भूष
न· आभरन। अलंकार· सद· अंग॥ ८॥
सीसाभर्न नांम॥ मुकट। करनफूल
नांम॥ सीरघमंनि· सीरषपुहप। चू
डामंणि· मंनिसिंग॥ मुकट· कीट· जा
लंथ। करनफूल· करनंग॥ ९॥ टीके
नांम॥ आड नांम॥ टीको· तिलक· त
मालपत्र। पत्र· पुंड्र· बिसेष। आड· लि
लाटिक: पत्रिलता। पत्रभंगि· पत्रले
षि॥ १०॥ कुंडल नांम॥ नकफूली नांम॥
करनबेष्टन· ताडपत्र॥ कुंडल· अरु
ताटंक॥ नासा नामी· अन· पुहप। अभ
रन· मुक्तिक· नंक॥ ११॥ काजर। तंबो
ल नांम। कंठाभरन नांम॥ अंजन· क
जल· दीपज। मुषरंजन· तंबोल ग्री
वेय· कंठाभरन। कंठिका· कंठसुत्र:
बोल॥ १२॥ हार नांम। बहरषा नांम॥

मुकतमाल· मुकतावली। मुकत· क
लापक· हार॥ बाजूभूषन· बाजूरबि
॥ अंगद केयुर· चार॥ १३॥ मुंदरी नां
म। जावक। माला नांम॥ उरमिका· मु
द्रा· मुद्रिका॥ अमियन· अंगुलिक:
जांन॥ जावक· लकत· महावरी। माल्य
दाम· स्त्रिंक मांन॥ १४॥ छिद्रघंटिका
नांम॥ रसनां· कटिसुत्र· किंकिनी
कलपा· कंचि· रसंन॥ छिद्रघंटिका:
सपतकी। कटिमेषला· रवंन॥ १५॥
नूपुर नांम॥ नूपुर· हंसक· सिंजनां
पादकटक· मंजरी॥ तुलाकोटि· नेव
र· कहै। धुनि जंनमी षगंलीर॥ १६॥
सुनांम। घाघर नांम॥ बस्त्र के नांम॥ स
नोंन· मंजन· अपलव। चूचि: बिल्वप:
अंगराग॥ चद्दल· सिचय· अंबर· बू
सेना। असुक· चिवर· बासाग॥ १७॥ छि

थरनांम॥ बेसं॰ आंगीनांम॥ छोम:
डकुल·पटकुलं।पटोलमो·दगोल:।
बेषो·नेपथ्य·माकलया।कंचुक·अंगि
का·चोल॥१८॥ चरनां॥ सारीनांम॥ नु
रानांम॥ परिधांननांम॥ चरनां·चंडा
तक·चलना।साडी·साटिका·जांना।नी
वी·ग्रंथि·बंधन·प्रलंबा।अंबर·निवस
परिधान॥१९॥ सुगंधताकेनांम॥ म्रि
दज·परिमल·इष्टगंध।आमोदश्री·सु
गंध॥ सौरभि·बासा·आघरना।घ्रांन
तपन·बसुगंध॥२०॥ केसरिनांम॥ क
पूरनांम॥ केसरि·कुंकम·रकतबून।
धुंसन·कासमीरोज॥ हिबक·घनसा
रय·कपूर·सारंग·चंद्रा।चोजु॥२१॥
कसतूरीनांम॥ कसतूरी·म्रिगनाभि
ना।म्रिगमद·हरि·मदकुंग॥ मदनि:

म्रिगंडज·धुगंधधुलि।म्रिगनाभी:
सारंग॥२२॥ चोवानांम॥ अगरनांम
चोवा·शरीरमंडनं।देवबलननदू
प॥ क्रि आगर·अग्र·काकतुंडारजं·
बसिक·गुर·ऊप॥२३॥ आरसीनांम
सोसानांम॥ मुकर·आदरस·दरप
नं।बिंडजा·आरसि·नंति॥ बिंबम:
छाया·लिछमी·श्री·सुषमा·छबिकं
ति॥२४॥ घरकेनांम॥ सदन·सदम
:मंदिर·निलया।वोक·अगार·निवा
स॥ धिश्नी:धांम·निकेतन।ग्रह·प्रा
साद·आवास॥२५॥ बेसंम·संतिस्थिनि
सालयो।सउध·काश्रयो·भौन॥ बार
:आलये·सरन·रम्या।गेह·सधन·दं
र·रौन॥२६॥ महलनांम॥ मंडपनां
म॥ महल·धौरहर·गुंज·मिहस॥ न

हनिलः अमत्रो गार॥ मंडप·जनता
श्रय·श्रुमो॥ग्वाच·क्रमयादं·चार॥
॥२७॥ भंडारनाम॥ मेरीनाम॥ आ
गागारं·द्रविणि॥ कोस·कोष·भंडा
र॥ धौम·अटालक·अरु·अटा॥ मे
रि·अटारी·चार॥ चौबारानाम॥ जो
ष्ठः॥ आंगननाम॥ सत्वयीग्रह·क्री
डासमरः॥ नासयदं·चौबार॥ जाल
क·बीतांडन·गवष·अजिर·चतुर·
अंगनार॥२९॥ दीपगनाम॥ दीप
कः ग्रहमनि·जोति मै॥ कजल धुजा·
प्रदीप॥ सारंग·संज्यासुत·दियाघ
रमंडन·अरु·दीप॥३०॥ पलिंगना
म॥ सेजनाम॥ पलिंग·प्रजंक·पा
लिकः घट॥ अवसल्प·मचका·मं
च सेज·सयन·सयनी·तल्पयातु

लिका·सेज्या·मंच॥३१॥ गीडुवान
म॥ चंदोवानाम॥ गीडू·गिडुक·उ
पधान॥ गेडु·उछीषक·जान॥ चं
दोवा·चोलोच·कदा चंद्रोदयो·बि
तान॥३२॥ आलिंगननाम॥ सस
लेष·उपगहन·फुंनि॥ परिरंभनः
परिष्वंग॥ अंगमाल·परिरंभयो॥
आलिंगन·आलिंग॥३३॥ क्रीड
संजोगनाम॥ कामकेलि·मईथुन
:सुरति॥ रति·हितरति·संजोग॥
नधन·ग्रामधर्म·मोहन॥ कीलाके
लि संजोग॥३४॥ रतिद्रव·क्रीड
:संतमुता॥ लील·बिलास·प्रगयानं
सुरंग·मिलन·बिभ्रम·ह्यलना॥ ब
दहनीष्ठजानु जांन॥३५॥ बिनीनि

नांम॥ बिप्रीति·कुमिंत·कुंनजा॥बेस
दंड·ग्रहचार॥रीति बिपरजे·जांनि
यों॥ अरु·बिपरीति·बिचार॥३६॥
प्रीतिनांम॥ लाडुनांम॥ प्रीति·नेकु
:मयत्री·सख्य॥ सुह्रिद·राग·हित
:प्रेम लज्या·ब्रिडा·ह्री·त्रपा॥त्रिपा
:मंदाक्ष्य·पेम॥३७॥हासेकेनांम॥भै
केनांम॥ हासं·हसनं·हासिका॥ह
सितं·समितं·हास॥भै·संका·डर·तं
के·भिहा·भीत·साधासं·त्रास॥३८॥
कल्याणनांम॥ मंगल·भद्र·कल्यां
ण·सिव॥कुसर·छेम·आनंद॥स्वास्थ्य
भावुक·सुस्ति·भव्य॥श्रेय·सुभ·चि
दानंद॥३९॥आनंदकेनांम॥हा
रद·अहलादं·हरष॥तंत्र·उनमोद·

संत॥समद·प्रमोद·उल्लास·रंग॥
आनंद·कील·अच्योत॥७०॥संतो
षनांम॥सुखनांम॥तुष्ट·प्रीति रति·
स्वास्थि॥त्रिब्रिति·सुव·संतोष॥सु
ष·समसं·सांतं·सउख्य॥सुखबेदन·
निरदोष॥७१॥क्रियानांम॥भाग्य
नांम॥ अनुकंपा·करुनां·दया॥क्रि
पा·घ्रिनं·अक्रोस॥भाग्य·दैवं·निय
ति·बिधि॥दिष्ट·भाग्य·उदेस॥७२॥
प्रसादनांम॥अभिप्रायनांम॥अनु
ग्रह·हितं·प्रसंनता॥अरु·परसाद·प्र
संति॥चितवंनि·छंद·अभिप्राय·
मत॥भाव·अभुय·आकूंति॥७३॥
सुभावनांम॥सोहैनांम॥प्राक्रीति·
सहज·निसर्ग·रुचि॥कंसल·श्रोभ
सुभाव सपत·सयन·सप·सौम:

में चेहरे

सोह॥ क्रिया धर्म·समजाव॥४४॥ कौ
तिग नांम॥ अदभुत·बिसमय·आ
श्चर्ज॥ ओघं·कौतिग·चित्र॥ कौतूह
लं·कुतूहलं॥ कुतर्कं·अचंभ·रुचित्र
॥४५॥ इछ्या नाम॥ कांम·लोभ·बंछ्या
:स्प्रिहा॥ त्रिसनां·इछ्या·अभिलाष॥
लिपसा·कांष्या·लालसा॥ ओर·मनो
रथ·भाष॥४६॥ गर्ब नांम॥ गर्ब·अ
उधति·मद·समय॥ अहंकार·अभि
मांन॥ चित·समुनतहि·लिपता॥
हठ·मांनयो·गुमांन॥४७॥ कपट
नांम॥ मिस नांम॥ कपटं·कइत
वं·छल·छदम॥ कूटं·दंभ·उपाधि
॥ मिस·बिपदस·निभंल छिं॥ मिष·
छल·ब्याजं·ब्याधि॥४८॥ नींद नांम
एकंतनांन॥ नींद·प्रमीला·निंद्रयो॥

तंद्रा·अलय·सुपंत॥ बिंजन·इकां
त·उपास·छंन॥ अरु·बिबिक्त·एकं
त॥४९॥ बिरह नांम॥ बिलाप नांम॥
बिप्रलंभ·बिप्रजोग·भिंन॥ बिरह॥
बियोग·बिजोग॥ रोदन·रुदित·बि
लाप·क्रंदा परिबेदनं·रुदनोग॥५०॥
रोमांच नांम॥ उतकंठा नांम॥ पुलि
क·कंटको·रोमहर्ष॥ रोमंचित·रोमं
च॥ उतकंठा·उतकलि·अकुंस सुमि
ति·चिंतन·सोच॥५१॥ सोक नांम॥
पस्चाताप·सोकं·त्रिब्रिति॥ उदबेग·
फुनि॥ सोच॥ अधिर·बिषादं·चित
यो॥ बिपण·कंपसतु·मोच॥५२॥ दु
ष्य नांम॥ खेद नांम॥ कष्ट·पीर·दुष्य·
जातनां॥ बेदन·बिथा:बिपति खेद
प्रजा·त्रासा·क्लेम॥ सम·श्रम·बद
ति॥५३॥ औधि नांम॥ बासं नांम॥

पुर-२

अवधि·पूरनां·धारनां॥थित·सीमां:
मरजादा॥बार्ता·भ्रितांत·प्रभित्ति:
वता॥उदंत·किंबदंति·बाद॥पद्य॥
पत्री संदेसनाम॥बाचक·बचिक:
प्रसादनं॥अनुनय·लेख्य·पत्रि·बचि
:चटु चाटु·संदेसयो॥सात्वन·पात
:मित्रि॥पप॥प्रिन्न्या·उतरनाम॥गी
तनाम॥अनुजोगं·प्रिछ्या·प्रसंन
उतर·प्रतिबाक्यांनि॥गीतं·गेय·गंध
र्वा·गीत·नाद·अरु·गांन॥पद्य॥न्नि
तिकेनाम॥लसिं·नाट्यं·नाटिकां॥तं
डव·अंगबिक्षेप॥अंगहारू·अभि
नय·लयं॥बिंजक·व्रिति·नाचेय॥प
॥सपतसुरनाम॥षरज·रिषभ·म
धिम·पंचमा॥धिवत·निषाद·गंधार
कहे सकलप समासुर॥अब[illegible]सथो
नबिचार॥पद्य॥सप्तसुरस्थाननाम॥

ड·मगे·गमन ...
रिषभनासिका·कंठपंचमासिरअज
निषाद ताल्हु रिदै मधिम·मस्तकधि
वता॥अरु गंधार कपाल्हु॥पद्य॥सप
सुरउतपतिनाम॥रिषभमहिषाधि
कपंचमं॥अलि षरज·सिषी निषाद
मधिम उल्लू·धीवत कुरिंद॥अरु गंध
रउतपाद॥पद्य॥कबित्त॥बाजित्र
नाम॥तूर·समरधुनः
तंत·कोसि·दोनों·घन·तूरज·पंचित
क·सुछिर·अनंध·बिपंचि·बल्लकी·
संष·मूरज·बेनव·बेस·म्रिदंग·मु
रलि·मंदल्ल·मुरजादिक॥आनक:
झालरि·ताल·भेरि·ढक्का·बंसादिक
॥तालादिक·जल्लफट·फुकर·डुंद
भ·त्रिधा·आतोद·सहि॥ताल·तंत·
बितंत·घन·सुछिर·पंचसबद जनु
षकहि॥पद्य॥नौरसनाम॥हास्य:
करुनं·अदभुतं॥रौद्र·बीर·सिंगार

र-२

सांत·भयानक·बीभछ।नौरसभेद
बिचार॥[illegible]नौरस[illegible]नाम॥स
[illegible]॥ हितचितसंभदोऊसोऊर
सहै सिंगार हसैरस रीति बातें तेऊर
सहासहै आगमसंजोगलषि आंसू
ढरै करुनासौं जोरिही करत रतिरौद्र
तेउदासहै बीरउठरतगरिलागत
भयानकसोनषदंतचीन्हपतिबीर
कौबिलासहै पूरनसंजोगसांतअ
भुतविपरीतसुरछाप्रसेदतनबी
भछनिवासहै॥६३॥ अथगननाम
[illegible]॥ मगन·न
गन·यगन·जगन·।भगन·सगन·बि
चार रगन·तगनं·॥अथगनाह न
·घ·न·ध·र·ष·ल·टार॥[illegible]
[illegible]
[illegible]॥ मगन·तीनिगुर·भूम·नगन·
गुर·आदि·चंदपति॥नगन·तीनिलघु

ऊ·सुर्ग·यगन·लघु·आदि·नीरतिरि
॥जगन·मधिगुर·सूर·सगन·गुरअं
तिपौनइस॥रगन·मधिलघु·अगनि
:तगन·लघुअंति·बौमतिस॥ लछि
मी·कीरति·आउ·त्रिधि·रोग·भयं·त्रि
नसे·गर्वन॥बदतनीषजनुअघगन
समझिलैकुयतिफलरवन॥[illegible]
चौदहविद्यानाम॥ तंत्र·मंत्र·तनसु
धि·गनिका।सुर·तर·बेदक·ग्यान॥
नाद·रसांइन·बाद·कवि॥बाज·चतुर
ता·जान॥६६॥ [illegible]
लछि·धनुष·विष·गज·सुरासीस·र
भ·मनि·चंद·कांमधेनि·असु·कलप
तरु·अरु·धनंतर·मकरिंद॥[illegible]
[illegible]॥ मजि·तंबुल·कं
चि·ककना।चीर·हार·तांटक·पत्र·पु
फ·मोरि·नुपूर·करनले·कंचुक·चतु
र·छत्रिनिंद्र

उत्सव·महो-
हो ॥ ... ॥
त्सव·महस्र·कृतिं। प्रब·महोछौ·रंग ॥ ग
निका·जोतिषी·निमित्तबिद।प्रस्नबित
दैवग्य ॥ अथ बैदनामं ॥ बैद·चिकि
त्सिक·वैद्य ॥ चिकित्सा·गदहार
आयुर्वेद·रोगप्रयो बैदक·बैद्य·बि
चार ॥ अथ देवालैनामं ॥ मूरतिनामं
देवाल·मठ·आसतनं। देवग्रहो·चैत्य
॥ बिंबं·प्रतिमा·मूरति। अर्चा·अरु·म्
रत्य ॥ अथ तपस्वीनामं ॥ छं ॥ ...
... परिब्राजक·परिब्रत·तपस। पार्स
रा·सन्यास ... हंस·गेरुआ·लछिमन·गरु
... स्वामि·कार्त्य·सुक्का ॥ ... ॥ चारि
आश्रम नाम ॥ ... ब्रह्म ... ॥ ग्रही·बांन
प्रस्त·त्रिभिका अरु संन्यासी जांन ॥ द्विज
... बैस्य·सुदर। चारि बर्न पहिचांन
॥ अथ ब्राह्मण के नामं ॥ बिप्र·देव·भू·
बाडवा·सुमन मनु·षटकर्म·द्विज·द्वि
... ॥ ... ॥

... ॥ ... नाम ॥ सप्त·तंतु·जग्य·सत्रं
क्रितु·मख·अध्वर·तिह जांन ॥ होत्र·होम
·सुर·तर्पनं ॥ षटक्रम·हवन·पिछांन ॥
॥ ६ ॥ अथ राजपूतनामं ॥ म्रिगछालानामं
छित्रिय·बाहुज·राजन्य·रजपूत सो जां
न ॥ अजिन·चर्म·क्रिति·तुक·तुचा ॥
अरु·म्रिगछाला नांम ॥ ॥ अथ राजानामं
राजा·पार्थिव·छितिछित। महीपाल·नृ
पति·छितिपति·नराधिप·भूछितं। धितप
ति·परजापति ॥ ॥ राव·धराधिप·भूप·
न्रिप·नरिंद·भुपाल·नरेस। छोनीनाथ
·सासते। अरु·नरदेव·छितेस ॥ ॥ स्वा
मीनाम ॥ नाथ·प्रभू·पति·परिवृढ·ई
स्वर·नेता·स्वामि ॥ बिभु·ईस·नाइक·अ
धिप। इसिता·इन·पनाम ॥ ॥ सभानाम
छत्र चामरनाम ॥ सभा·समिति·पति
षिति·सम्मिति·संसद·परिषद·समाज
॥ छत्र·राजचिह्न·आतपत्र। चमर·बाल
ब्रन·साज ॥ ॥ अथ बीर·... नाम ॥

धं॥ बसीठनाम॥ अंतहपुर·अवरो
ध·छद्म॥ न्रिपति·महिषि·पटरानि॥ पथि
क·पंथ·सुत·धुग·पंथी॥ द्रुत·संदेसक·
लागि॥ ६॥ पौरिया नाम॥ जासूस नाम
द्वारपाल·दारक·दण्डक·प्रतीहार·पर
दार॥ अवसर्प·हेरिक·प्रछिस·चर॥ जा
सुस·सपरसचार॥ ७॥ सेवकनाम॥ से
वक·भ्रित·अग्याकरी॥ किंकर·अनुचर
·दास॥ चेट·भ्रितक·कर्मकर॥ अनुग
प्रेष्य·अनुजीवी·जाम॥ ८॥ पाइकनाम॥
पाइक·पदग·पुरोगामी॥
सुभटनाम॥
पदातिग·पत्य·पदाति॥ सैन·सैनिका·भट·
भट॥ जोधा·जोधरि·सति॥ १०॥ सूरबीर
नाम॥ कायरनाम॥ बीर·बिक्रांत·बीली
सुभटा च रनभट·अरु सूर॥ कातर·भीरु
क·कदसिक॥ भयद्रुत·कादर·कूर॥ ११॥
बलनाम॥ पौरष·बल·बिक्रम·सकति॥
प्रानतरह·सतुरज्य॥ ओज·सह·सथाम·उ
रजबल॥ पराक्रम·बीरज्य॥ १२॥ बैरीनाम॥

अरि·रिपु·सत्र·बिपछि·परद्वादरित·बैरि
:प्रतनीक॥ सपतनि·द्रुट·दसुर·अहित·
सपथि·पर·दोषीक॥ १३॥ कटकनाम॥
कटक·चक्र·दंड·बल·अनिक॥ धुजनि
चमू·दल·सेंन॥ प्रितनासेन·पताकनी
:बरूथिनि·अनिकनि·औंन॥ १४॥ सकंथ
बारि·अनिदाहनी॥ बहनि·सेन·सुनिर
ग॥ हय·गय·रथ·पाइक·चतुसमेसे
न्यां चतुरंग॥ १५॥ सजोवनाम॥ कौच
:बरंम·सनाह·दंस॥ कंटक·तनत्र·जी
न॥ सारसन·संजोव·कनि॥ अधिकंगि
जौसन मोंन॥ १६॥ टोप अंगरखीनाम
हथ्यार नाम॥ सिरस्त्रान·कुनि·सीरख
न्य॥ अंगरखिका·जालिक॥ आयुध·स
स्त्र·हथ्यार·अरु·प्रहरन·हेति·हथिक
॥ १६॥ धनुषनाम॥ जिहनाम॥ धनुषः
सरासन·कोरमुक॥ कुवंड·चाप·इखा
स॥ जिह·मकरबी·सिंजनी·गुन·जिय
परत्यंचास॥ १७॥ तरकसनाम॥ सिपर
नाम॥ [illegible]

तूंन·निषंग॥खेटक·चर्म॥ग्रो॥सिरपर:
राघन·अंग॥१८॥तीरनाम॥बांन·प
त्रि·सर·कांड·ईषु॥विषक·सइक·जिह
मंग॥विप्रकत·रोपह·कंकपत्र॥खग·
सि·ली·मुष·अरु·सुग॥१९॥तरिवारिनाम
पूरग·विमांन·निसत्रसा॥चंद्रहास·करवा
र·मंडलाग्र·किरवांन·असि॥कउषेय:
रिष्ट·तरवारि॥२०॥छुरीनाम॥बेतालि
कनाम॥ सस्त्रिक·छुरी·क्रिपांनिका॥अ
सिपत्तनी·असिधेनि॥बंदीजन·बेतालि
का॥सत्तुति·पाठिक·जेनि॥२१॥छतीसद्र
वधनाम॥ कुंत·छुरी·असि·बांन·जंत्र·प्र
स्तर·हल·मूसर॥गोफनि·कंपन·गदा·
दंड·दंडायुध·तोमर॥चक्र·धारयन्त्र·चं
य·बज्र·डस्फोट·सुमुष्टक॥मुद्गर·आं
कस·फरस·पास·कटारी·गोलक॥जम
धर·कुगार·गोली·[illegible]·रजु·नाला·करया
त्रन·सकति॥कांति·त्रिसूल·कुद्दाल·ज
नुसीषकुतीस·आवध·सिति॥२२॥जुध
[illegible]

योधन·संग्राम॥रन·सपराइक·संजुगं
॥कलह·विग्रहो·नांम॥२३॥जनसंख्या·
आहव·समित॥द्वंद·अरु·जरजन्त·रारि
:मृध·आसकंदन·समिक॥कलिस
स·कोट·विचारि॥२४॥देसनाम॥गा
वनाम॥ जनपद·राष्ट·त्रिबिधि॥विषय:
मंडल·अरु·देस॥पुह·पुर·नगर·पु
री·स[illegible]निपतन·ग्रांम·निवेस॥२५॥
कोटनाम॥पोलिनाम॥दरवाजानाम
बप्र·साल·कोट·बरन॥ओर·उग्रमर
कार॥पोलि·प्रतोलि·विसष्य·रण्य॥गो
पुर·अरु·पुरद्वार॥२६॥पीलवाननां
मा॥सारथीनाम॥ महामात्र·हस्तिप
क॥आधोरन·निषादि॥जांन·सूत:
सत·सारथी॥नियता·बार·इत्यादि॥
२७॥तुरकनाम॥मुगलनाम॥तुर
कं·मुमिन·मलेछ·फुकनि॥जिवंन·मदे
मदी·जांन॥प्रसथाना·मुद्दगल·मुग
ल॥पारसिकासक·मांन॥२८॥बीनि

यानांम ॥ बेदेहिक·नइगम·बनिक।
बांनज·स्वार्थवाह ॥ क्रै बिक्रै·चक्री·ब
नज्ञा ॥ पन्या ॥ जीवी·आह ॥
बामननांम ॥ आजीविकानांम ॥ अपु
न·बिपुन·हठ·चतुस्पथा ॥ पत्र·पनि·ना
ज्ञन·मंड ॥ जीवनब्रिति·आजीविका ॥
ब्रलम·क्रियानक·मंड ॥
मा धनकेलनांम ॥ संपति·श्री·लिछमी·
बिभूति ॥ धनं·सम्रिधि·जोन ॥ इन्य:
श्री द्र·धनिसुर·सम्रिधि ॥ लछिवान·ध
नवांन ॥ ३० ॥ आपदानांम ॥ क्रपनकान
मा ॥ आपदि·बिपति·दरिद्र·निस्व ॥ निध
न·आपदावांन ॥ लोभी·क्रिपन·कद
र्जयो ॥ बंधमुष्टि·लोभांन ॥ ३१ ॥ गोकुल
कनांम ॥ दूधनां ॥ दहीनांम ॥ गोकुल·
गोस्थ·घोष·ब्रिज ॥ बलवा·गोप·घरज्ञ
॥ दुग्ध·अंब्रित·पै·षीर·गुन ॥ गोरस·द
धि·षीरज ॥ ३२ ॥ घीनांम ॥ छाछि·की
ज्ञीनांम ॥ घ्रित·आज्यं·नवनीत·हवि ॥

अघि·प्रघिन·घीय … चेस्थत·सके:
मंथितं·आनील·… ज्ञीय ॥ ३३ ॥ बीनि
पकवांननांम ॥ … नि ॥ मासनांम ॥
पवित्र·समान·… तंन ॥ पकवांन·
घ्रितयक·स्तूप·प… त·स्त्रधो·अंध ॥
बोदनं·कुर·ततव … ॥ माग·राद्ध
नाम ॥ भोजननांम … नेमांना·साकर:
बिजन ॥ स्तूपा·पोलि … सूप ॥ बादन·अ
मन·आहार·नष्ट … जन·जीवंन·ते
प ॥ ३४ ॥ त्रिषा … नाम ॥ सकर·नां
डनाम ॥ अदन्य·… पासा: त्रिट्·त्रिषा
बिभुष·षुधा·रुचि·ध्याति ॥ फंनिक:
अंबरा·सकर·फु… नि ॥ षांड·गंध·गुलि
:सति ॥ ३६ ॥ मि… नाम ॥ कर
सनीनांम ॥ सिति·पल्ला·आकरा·गुड
॥ गुर·सितपय·रस… घ्योत्राज्ञी
क्रिषि क्रिता ॥ कर… पक·किषिब

hundred

DMV ज 33

यानाम॥ बेहेहिदा·नहणम·बनिका।
बानज·स्वार्थबाह॥क्रै बिक्रै·चक्री·ब
नज्ञा॥धं·न्याजीवी·आह॥१९॥हाटनाम
वानलनाम॥आजीविकोनाम॥ अपु
न·बिपुन·हट·चतुरपथ॥पत्र·पंनि·जा
जन·मंड॥जीवनब्रिति·आजीविका॥
ब्रुतम·क्रिसानक·मंड॥२०॥संपति
सा धनवंतनाम॥ संपति·श्री·लिछमी·
बिभूति॥धनं·सत्रिधिय·जोन॥द्रव्य:
आद्र·धनिसुर·सचिधि॥लछिवांन·ध
नवांन॥२०॥आपदानाम॥क्रुपनकोना
म॥ आपद्दि·बिपति·दरिद्र·निस्व॥निध
न·आपदावांन॥लोभी·क्रिपन·कद
र्जयो॥बंधमुष्टि·लोभान॥२१॥गोकुल
कीनाम॥ दूधनां॥दहीनाम॥ गोकुल·
गोस्ट:घोष·ब्रिज॥बलवा·गोप·घरज
॥दुग्ध·अंब्रित·पै·षीर·गुन॥गोरस·द
धि·षीरज॥२२॥घीनाम॥छाछि॥की
जीनाम॥ घ्रित·आज्य·नवनीत·हवि॥

अपि·प्रषिंन·घीय उदघिस्वत·तक्र:॥
मथितं॥आनोल·कांजीय॥२३॥बीरि
पकवाननाम॥पहिति·भातनाम॥
पदिस·समांन·हविष्य·तंन॥पकवांन
घ्रितयक॥सूप·पहित·स्रधो·अंध॥
वोदनं·क्रूर·भतक॥२४॥प्या॥गोदव
नाम॥भोजननाम॥ नेमांना·साकं:
बिजन॥प्रपा·पोलिक·प्रप॥षादन·नै
सन·आहार·भक्ष॥भोजन·जीवन·नै
घ॥२५॥त्रिषा॥तृष्णानाम॥सकर·षां
डनाम॥ अदन्य·पियासा:त्रिड्·त्रिषा॥
बिभुक्ष·क्षुधा·रुचि·छ्याति॥ फंनिक:
अंबरा·सकर·कुनि॥षांड·गंधधुलि
:सति॥२६॥मिश्री·गुरनाम॥कर
सनीनाम॥ सितोपला·अकरा·गुड
॥गुर·सित्थय·रससईस घोत्राज्नी
क्रिमि क्रिता॥करकपक·क्रिमि

ल·क्रिष्य ॥२७॥ [illegible] ॥ कुम्हार नामा ॥
[illegible] नामा ॥ हाली·सीरं·लांगलं ॥
कलाद·सुवर्नकार·कुंभ·कलस·घट:
अरु·घगा॥अरु·कलाल·कुंभकार
[illegible] ॥माली॥तली नाम॥ दि
वाक्रिति·घोरं॥दी॥नापिक·अंतच
साइ॥ काछी·मालिक·मालकार॥तेल
कन्चक्री·गाय॥२८॥माली नाम॥कि
कल्लीगर॥लुहार नाम॥ ब्रधिक·सथा
पिक·सुषमकं॥काष्ठनतक्ष·रण्यकार
॥सस्त्रमार्ज·सिधावकं॥लोहकार·तो
कार॥३०॥चितेरा॥दरजी नाम॥धोबी
सुलाहा नाम॥ चित्रकार·रंगाजिवा॥सो
चिक·संतनबाइ॥धोबी·रजकं·निर्नेज
कं॥कुवधिकं·तंतबाइ॥३१॥कलाल
नाम॥मदके नाम॥सुराजिवी·मंडहारक॥
कउरिक·कलाल·जान मंदिरा·मद:

वारंनि·सुरा॥मधु·कादंबरि·मांन॥३२॥
[illegible]मांस रगत नाम॥ आंमष·पिसितं
:मांस·पल·क्रव्यं·जांगल·जांन॥रुधिरं
श्रोनितं·रगत·रत॥छितरज·त्रिकु अ
स्त्रांन॥३३॥जुवारी नाम॥जील नाम॥
द्योतकार·अक्षर·कतव॥अक्षदेवी·ज्वल
त॥वावर·वनेचर·पलिंद·त्रिल॥भीलक
आरु·विरांत॥३४॥चोर नाम॥ सतम:
पटचर·चउर·दस्यु॥तसकर·मोषक:
चोर·परद्रह·वितहर·निसाचर॥तम
चर·धनहर·जोर॥३५॥जीवर नाम॥
अहेरी॥सिकार नाम॥धीवर·केवर्त
:वागुरिक॥जालिक·जीवर·दास लब्ध
क·म्रिगय·अहेरि·वधि॥आखेटक·म्रि
गयांस॥३६॥चिरीमार नाम॥ जती
चमार नाम॥ साकुंनि·जीवांतक·फनि
चिरीमार·घगमार॥पादु·पाइका·उपा
न॥पादकृतं·चमकार॥३७॥चंडाल

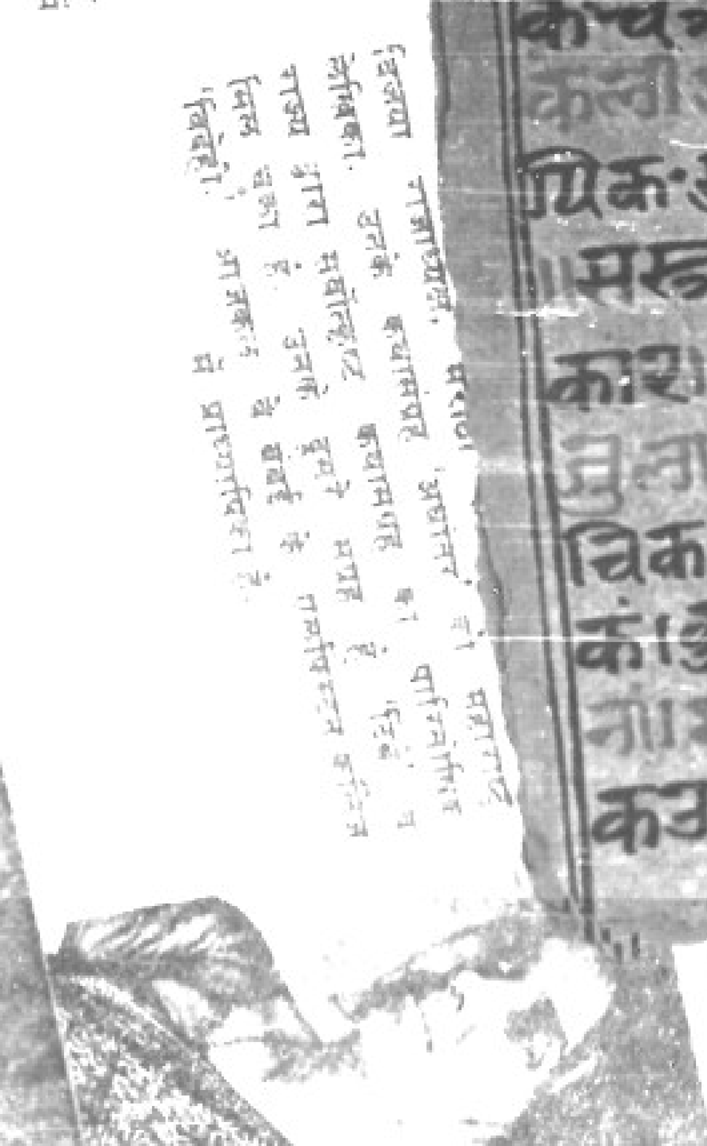

नाम॥गवारनाम॥ दिवाक्रिति·जन
गंम·सुपच॥मतंग·निषाद·चंडार नी
च·इतर·पांमर·प्राकृति·प्रिथगजनो
:गंवार॥६२॥जनमनाम॥जीवनना
म॥जनंम·जननं·उतपाद·जनि॥उतप
ति·उदभव·जांन॥जिविन·असय·स्वा
सति·जरत·जिवन·स्वास·असु·प्रांन
॥६३॥जोबननाम॥ब्रिधनाम॥जोब
न·तरुन·बईस्पथं॥तरुन·बयहिं·बय
स्यांन॥ब्रिध·बिस·स्थविर·बारधिक·
त्रसा·जगु·जरियांन॥६४॥गुनवंतना
म॥उतिम·श्रेष्ट·जोग्य·पुज्य॥श्रेयवां
न·गुनवांन॥साधु·सत·सज्जन·गुनी॥
प्रसाद·चार·महान॥६५॥दुजननाम॥
दुजन·धूरत·पिसुन·खल॥विज्याच·पाप
:सठ·क्रूर·षुद्र·नीच·अत्रिज·अधम
कर्नेजयो·करूर॥६६॥अबनाम॥बैर
नाम॥द्रुत·ग्रबिर·अबंध·अंबा॥आमि

मांनियो·उनंत बैर·विरोध·विद्वेष:
क्रुंनि॥इंमकजननीचजनत॥६७॥सांव
लनाम॥अंतरायनाम॥रोगनाम॥श्रि
घत्ल·तगड·संकल्वि·अडका॥विघ्न:
प्रतुह·अंतराय॥आंमय·आतंक·रो
ग·गद्य·म्रदन·संवाहन·गाय॥६८॥
धूलिनाम॥कीचनाम॥उदिमनाम॥
पांसु·धूलि·रज·रेनुका॥चिषिल·कर्द
म·पंक·गारि॥बिबसायो·उतसौ·बि
क्रंम॥उदिम·आलिय·बिचारि॥६९॥
मीठे·कसैलेकीनाम॥षाटीके…
नाम॥मिष्टक·मधुरं·मिष्ट·मधु॥तुवर
कसैल·कषाइ॥अमल·इंतसठ·पां
चन॥उष्मन·कटुक·कटु·गाइ॥७०॥
…नाम॥
लवंन·सर्वरस·षाराख्यो॥तीषिन·तिक
तं·जस मिष्ट·तुवर·अमल·कटुक॥

लवंन·तिकत·कटरस॥ [illegible]
ताम्र·रकत·लोहित·[illegible]
[illegible] नाम॥
सोन·पाटल·लाल॥ स्याम·असित·[illegible]
सनं·स्पमल॥ अंजनाभ·असंकाल [illegible]
सुकल·धवल·सुभ्र·[illegible]
उज्जल नाम॥
लघ्या सुचि·गऊर·सित·सेत॥ बिस[illegible]
पांडु·पाडर·उजल·सित·अवदात·[illegible]
हरित·[illegible]
त॥ [illegible] हरा [illegible] नाम॥
हरया·पलास·हरा हरियारा·तिह[illegible]
पीरा·पीत·हरदिया॥ पीतो·पियर·[illegible]
॥ [illegible]
ना॥ [illegible]
द्वे·जुग·द्वंद्व·उभै·जुगल·मिथु[illegible]
नाम॥ [illegible]
न·जगल·दुइ·द्वै॥ ती॥ तीन·राम·त्रितै[illegible]
·अष्टौ·चारि·चतुर·अष्ट·सो[illegible]
[illegible] नाम॥ निवह·ब्रिंद·कादंबक·[illegible]
·ओघ·संमूह·ब्रात·संघ·प्रकर·[illegible]
रासंहित·स्तोम·बिऊह॥ [illegible] समु[illegible]

बार·संदोह·गन॥ बच संच·समुदाय·त्र
या·समाज·ठंड·फुनि बृंद सी धजनु गपास
॥ [illegible] जाल नाम॥ [illegible] नाम॥ जाल·[illegible]
ग·मंडल·पटल·अरु·कलाप·संघात
रासि·पुंज·उतकर·कुल·कूट·जूण·सर·
जात॥ [illegible] पंक्ति नाम॥ [illegible]
नति·पंकति·धोरनि·अवलि·माला·पा
रस·राजि॥ समाहार·निकर·निचय·निक
य·पकठ·साजि॥ [illegible]
अखिल·कृत्स्न·सम
[illegible] नाम॥ [illegible]
स्त·बिस्व॥ निखिल·समग्र·अशेष·[illegible]
र्ण·सकल दल·पंड·फुनि उशेष ड·अ
[illegible] अनेक नाम॥ प्रचुर·बहि
धैबु॥ [illegible]
ष्ठ·पुहकल॥ प्राज्य·सुपट·[illegible]य·प्रब
लं·अधिक·अदभ्र·बहु॥ बकुलं·[illegible]
[illegible] नाम॥ सल्प
रि·बहुय॥
दभ्र·तुच्छ·सुछिमाल्प·स्तोक·अणु·[illegible]
मात्रा·सल·ष्यन·लेस·लघु॥ घ्याम·[illegible]

छोट·परब्य·

रिस्व·वांमनं।आयत·दिरघ·प्रलंब·।नि
ल·नीच·नेष्ठ।आनंतं।तुंग·प्रसु·उनत:
उचेंब॥ ... ॥बिचालेक
नाम॥ ब्यवर·कुहर·बिल·रंध्र·छिद्र।गर
त·अवट·छिद्रान।अंतराल·मधि·मधि
म·बिच।अंतर·बिचाल·मांन॥७०॥मो
को नाम॥ ब्रिहत·बिपुल·बिस्तीरनं।मह
त·बिसाल·सफार·उर·युरु·बिथत·गरि
ष्ट·प्रथु·मोट·बिकट·बिचार॥७१॥कोठ
को नाम॥ करकस·कठिन·कठोर·परु॥
दारुन·द्रिट·उद्दाम।निष्ठुर·क्रूर·उकट
रीष्य·करेरो·नांम॥७२॥कोमलको ना
...नाम॥ सुषक्षम·कोमल·
म्रिदुल·म्रिदु।कंवलय·अरु·सुकमाल
॥सीधा·ब्रिज·प्रगुन·सरल।कुटिल·बक्र
:अराल॥७३॥सुंदरतानाम॥सुंदर·म
नोहर·रुचिर·रुचि।मंजुल·मंज·आलिरां

रि·नांम॥७४॥रम्य·प्रसस्त·मनोरमं।काम्यं
:अरु·कंमनीयं।सोभंन·साध·सुदेस·क्र
नि·सुभग·और·रमनीय॥७५॥बड़ाइ
नाम॥सुभावनाम॥अग्र·अग्रेसुर·प्रव
र·मुष्य।अग्रनी·बर्ज·प्रधांन।प्रकिति·प्रार
धि·पुंगव·परा।रितम·सुभाव·बषांन॥७
६॥आदिनाम॥अंतनाम॥प्रथम·आ
दि·अग्रम·अदिम।पुरब·पुरस्त्य·संघात
जघन·अंत·पश्चम·अंतिम·पश्चरंभ·प
श्चात॥७७॥पवित्रनाम॥उजलानाम॥उ
...नाम॥ मेध्य·पूत·पवित्रय।मलमस·म
लिन·मलांन।छालित·उज्जल·धउत·सु
चि।बिमल·निर्निकत·जांन॥७८॥बरा
बरिनाम॥सद्रस·तुल्य·मंनिभ·सम॥
अरु·संकास·समांन।~~छालित·उजल·थ~~
स्यामा·कष्या·उपमा·तुल्य।अनुहार·उप
मांन॥७९॥समीपनाम॥निकट·परस:
समप।निनं।उपकंठ·संनिधांन।संबिधि
:अंतिकं·संनिधं।समिप·उपांत·बषांन॥८०

बिप्रक्रिष्ट·दूरं·परं।स्वासप्ति·ध्रुव·नित्यः
थीर।लोल·चपल·चंचल·चेलं।चंचलः
और·अधीर॥८०॥बिपरीतिनाम॥हि
डोलानाम॥ बिप्रज्यास·बिपर्जयं·बंन्यासं
बिपरीति दोला·प्रेंखं·प्रेंखोलनं।प्रेषा·हिंडो
ल·इति॥८१॥सघनकेनाम॥प्रगटके
नाम॥ सघन·मेडुरं·बिबिड·दिढ।सांद्र·
निरंध्र·घान।प्रगट·संबद·सफुट·बिके
ता।उत्बन·प्रकास·पिछांन॥८२॥उतावलि
लिनाम॥बेगानाम॥ बिप्र·द्रुत·लघु·सी
घ्र·फुनि।तुरत·सतुरं·तुरत्य·जवो·बेगः
तर·रंस·रंह।मंथर·मंद·सत्य॥८३॥
अतिनाम॥धीरानाम॥प्ररानाम॥ गाढ·
बाढ·त्रिस·द्रिढ·त्रिसर।तीब्र·अतिरथं
अति॥ स्तेनिउदवसाः अक्ति·पिल।भरित·
पूरन·प्रतिति॥८४॥संकरानाम॥निर
कानाम॥ आकल·संकल·संबाध·कट
संकट·संकीरन·मीति भरित·निचित
ब्यापत·दिपत।आकत·ओर·गुडित॥

केनाम॥ सिध·निपन·निमित·बिहत॥
ओर·क्रित·निष्ठित॥त्यक्त·उझित·उतस्र
ष्ट·फुनि।प्राप्ति·आसादिति॥८७॥अप
नोपकेनाम॥मिलिके नाम॥ अंगीक्रि
त·प्रतिग्यात·फुनि।प्रतिसुत·अरु·उराक्रि
त॥ षचित·जुक्त·समवेत·फुनि।संवलि
त·मिश्रि·अश्लित॥८८॥थापनकेरो
कननाम॥उपारनकेनाम॥ प्रस्थापित
प्रतिश्रिष्ट·फुनि।छंन·स धंति·छादित
उतषात·उनमूलित।उतपाटित·उधित
॥८९॥बोलनकेनाम॥जाननकेनाम
उकीत·उलपित·भाषित।उदित·कथित
·आख्यात।बुधं·अविसित·अबगत·बि
दितं·ज्ञांनन·ग्यात॥९०॥कहन·गिरप
रकेनाम॥दिननकेनाम॥ श्रष्ट·स्रस्त·प्रस
कन·कहन।पतित·गलित·चित·पेष॥
अनस्ट·अनेषतं।पेष·गवेषित·देष॥९
१॥काटनकेनाम।बांधनकेनाम॥ छि

द्दित·षंडित·क्रितनं·छेनन।लूनं·अरु
छित्तभिदित॥बंधं·नगडित·कीलितं·नरष
:औरु·संत्रित॥(७)॥दाजन के नाम॥रा
दाह·पुलुष्ट·सिष
धनाम॥चौरननाम॥
चकहा।ज्वाला·दगध·जलित॥राष्या·भस
तं·भसम·छुति।पाटित·भिंन·दारित॥(७)
॥आलिके सूके कनौ॥बारलके नाम
किडन·तुमिस्तं·आरद्रं॥सुष्क·निरस:
आस्यांन॥बर्तुल·अंडुल·निस्तलं।बित:
वलया·क्रित·मांन॥(७)॥सप्त दीपनाम
जंबू·सिलमलि·क्रौंच·कुनिपुहकरा·प्लि
:कुस·जोन।साकदीप·प्लछ·अरु·स
पत दीप परवान॥(७)॥नौषंडनामा॥भ
र्त·हरिवरष·किंपुरष।मिला ब्रत:रम्य
क।षं॥क्रिनमय·कुरुषंड·हरिमिलै॥कै
तुमाल·षंडनाष्य॥(७)॥ब्रतनाम सल प्रिन
मा कबित॥बुधिप्रकास·सुचि·सील·रू
प·सत्य·विद्या·बंदित॥प्राकम्य·बिने·प्र

मांन·बैसनों·धीवंत·सुक्रित॥अलंहार·
तुछनिंद्र·मातपितभगत·जितिद्रिय·न
अग्यांन·गुरसेव·दया·निर्लोभी·विक्रिय
क्रिया·बिचछिन·कोमतुछ·सजन·बि
सासी·गुनसंपन॥दाता·ध्रम·उपगार·कु
ला॥लछिनबतीसौंनीवउनु॥(७)॥मा
रंगासबदनाम॥बीनां·ससि·गज·बा
ज·मीन·म्रिग·सैन·चाप·अलि॥कोकि
ल·केकी·कीर·गरूर·चात्रिग·असि·बी
जलि॥सारस·घन·दिन·हंस·हेम·रवि:
गुंजा·चंदन·दीप·अग्र·कर·सूर·सेतनि
सि·म्रिगमद·षंजन॥त्रिकुटि·बज्र:
श्रीफल·कावल·जल·धुव·बसु·चित्र·कं
मदन॥संष·कलिम·चित·बिद्रुम·कपि
:प्रिय·सारंग·जलनुमीषनन॥(७)॥ह
रिसबदनाम॥श्री·हरि·हर·ससि·सेक
:सिंघ·इंद·बहनि·नाग·मग·जम·बंस·प
पारद·पौन·सेस·सुनि·रवि·सकंद·षग
चिबुक·मर्म·काच·काग·सेज·तल:

दिन·केकी·द्विग॥ अलि·नल·अप·हय·कं
म·कूप·बंन·कुच·कोकिल·म्रिग॥ गज·म
हि·स्वांन·म्रिगोट·कपि·कनक·स्याम·उं
दर·सुकहि॥ बदत नीषद जनु ग्रंथ बिधि
इते नांम हरि सबद कहि॥९९॥ इंद
सबदनाम॥ बारिस·ससि·बाला·घनं॥
दधि·मुक्ताहल·भेक॥ इंद·मधुप·मंनि·ब
रिदे॥ अरु हैं इंद अनेक॥१००॥ सिंधु
सबदनाम॥ सिंधु·हलहर·रकतोतपल॥
मुक्ताहल·हल·जांन॥ अब्रित·कंद·पंक
ह·परक॥ चषि·अंक·सिंधु·बषांन॥१॥
गो सबदनाम॥ दीधति·बज्र·सुग्रीव:
इषु॥ बाकु·बारि·भुव·नैंन॥ गऊ·पसू:
हि गो सबद॥ बदत नीषद जंतु बैन॥२॥ गु
र सबदनाम॥ ताडिक·कंकन·दीह·नर
नितर·केवर·हार॥ ब्रिम्ह·श्रेय·सबयुर·
बयंन॥ ए गुर नांम बिचार॥३॥ लघुस
बदनाम॥ ष·ह्रं·गंध·संहरि·अचल॥स
र·सिल·दंरक·भेर [illegible] हल·हाल:

लकु॥ ए लघुनाम निबेर॥५॥ षटरागन
मा॥ भैरव·मालकउसकं॥ दीपराग·हिंडो
ल॥ मेघराग·श्रीराग·कुनि॥ ए षटरागक
लोल॥६॥ भैरौ रागनी नांम॥ भैरौं राग
नि भैरवी॥ मधुमाध सुदिसाष॥ ललित॥
अरु·षटमंजरी॥ बदत नीषद जनु भाष॥
॥७॥ मालकौसकी रागनी नांम॥ माल
कौसकी रागनी॥ गौरी·रांमकरी जु॥ और
गुनकरी·मारवा·षंभावती·षरी जु॥८॥
हिंडोल रागनी नांम॥ राग हिंडोलंहि राग
नी॥ टोडी·देवगंधार॥ अंधावली॥ बिलाव
ली·नटनाराइननार॥९॥ दीपराग रागनी
नांम॥ दीपगतिया॥ धनासरी बैरारी·जु ब
संत॥ कुनि·देसी·अरु·कांनरो॥ इम जनु
नीषद नंत॥१०॥ मेघराग रागनी नांम॥
मेघराग की रागनी॥ गौड·मालार·मा[illegible]स
रंग·और·कमोदनी॥ आसावरी·बिचार॥
॥११॥ श्रीराग रागनी नांम॥ सिरीरागति
य·गूजरी·मालसिरी·जु बिभास ककुभ

वंगालो॰ तीसषटरागनीषजनुत्रास ॥२॥
मोतीनांम ॥ सीपनाम ॥ मोती॰ मुक्ताहलू
मुकता ॥ सीपज॰ सिंधुबषांन ॥ सीप॰ सप्फ
ट॰ सुक्ति॰ फुनि ॥ मुकतामात॰ पिछांन ॥
॥७॥ षटभाषानांम ॥ सहंसक्रिति॰ प्रा
क्रिति॰ फुनि सूरसेनि॰ अपभ्रंस ॥ औरु
पिसाची॰ मागधी ॥ एषटभाषप्रसंस ॥५॥
कथीभारती नीषजेनु ॥ हितचितकरिनि
जनेकु ॥ जहांनोंसपदप्ररनां ॥ तहांसम
जिपैलेकु ॥१०॥ संष्यासबगुंनैनदोहरा ॥
कितजनुनीषसुचेत ॥ सवहकपारिषा
चसे ॥ आठौकबितलहेत ॥७॥ ॥१२
तिश्रीजनजोषबिरचितायां भारती
नांममालायां ॥ सकलरहस्यातुग्यानस
त्रेग्यानोप्रदीप॰ दोहाबंध ॥ संबत्तु १७२
३ वर्षे मिती जेठ सुदि २ बार सुक्रे दिने लि
ष्यतं हरीदास पठनार्थे ॥ ॥ सपूर्णम
मास ॥ ॥ श्रीरांमजी सति ॥ ॥ श्री

दिनांक..................

अध्यापक

वक्ता	कक्षा तथा वर्ग	विषय	मुख्य बिन्दु

? p 1–15 not complete

-3, 40T-6-72.

॥ श्री परमात्मने नमः ॥
सुक्तो व रधरं विष्णुं शान्तिं व
चतुर्भुजं ॥ प्रसन्नवदनं ध्या
येत्सर्वविघ्नोपशांतये ॥ १ ॥ ब्रह्मस
लोकादिह प्राप्तेन नारदेन गच्छ
त्रियं दृष्ट्वा नत्वाऽस्य आसीते
पप्रच्छ मुनयो मुदा ॥ २ ॥ नैमिषे
निमिषे देवेत्सपय: शौनका
दय: ॥ देवर्षिमुपसंगम्याय प्र
च्छुरिदमादरात् ॥ ३ ॥ ऋषय उवा
चु: ॥ ब्रह्मन्केन प्रकारेण सर्व
पापक्षये ॥ ४ ॥ तेत्र: विना दानेन

तपसा विना तीर्थैर्विना मखै
॥ ५ ॥ विना व्रतैर्विना ध्यानैर्वि
ना चेंद्रियनिग्रहैः ॥ विना स्तोत्र
समन्त्रैश्च कथं मुक्तिरवाप्य
ते ॥ ६ ॥ देवाधिदेवदेवेशः तपः
नयमेसांकरे ॥ कथमाराध
नीये देवो ध्यानपरायणाः ॥
॥ ७ ॥ श्रीनारद उवाच ॥ इदमेव
पुरा पृष्टं पार्वत्या परमेश्वरं
॥ यद्विना च तत्र ॥ बचेतन्क
थयामि सुविस्तरात् ॥ ८ ॥ कै
लासशिखरासीनं देवदेवं

[illegible] हं प्रणिपत्य महादेवं
पर्यपृच्छत् इमां प्रियां ॥ ८ ॥ पार्व
त्युवाच ॥ भगवन्सर्वपरो देवः
सर्वज्ञ सर्वपूजितः ॥ त्वं लिं
गमर्चयते देवैर्ब्रह्मसूर्यादि
केरपि ॥ ९ ॥ त्वत्तो नान्यं तेषि
ममां सिद्धिं सर्वेश्वर प्रद । त्वं
जन्ममृत्युरहितः स्वयंभूः स
देवांतिकोमांत्वं ॥ १० ॥ सदा ध्याय
सि किं स्वा[illegible]द्विर्ग्यासामद
नीतकः ॥ न पश्यसि कस्मा
त्वं जटिलो ज्ञानमध्यस्थः ॥ ११ ॥

किं वा जपसि देवेश परं कौतूह
लं हि मे ॥ अनुग्राह्या प्रिया ते स्मि
तत्त्वं कथय सुव्रत ॥ १२ ॥ श्रीमहादे
व उवाच ॥ नेदं कस्यापि कथितं
गोपनीयमिदं मम । किंतु वक्ष्यामि व
ते भद्रे त्वं नक्तासि प्रियासि मे ॥ १३ ॥
सुरा सत्ययुगे देवि विष्णुं नमन्त
योगिनः ॥ यजन्ति विष्णुमेवैकं
ज्ञात्वा सर्वेश्वरेश्वरं ॥ १४ ॥ प्रियां
ति परस्मान्न द्विमे[illegible]कासु प्रिये
परां ॥ याः न प्राप्नुवन्तु देः सर्वैरदृ
याः लोके श्रा वर्जिता ॥ १५ ॥ न तां गते

तृ

प्रयच्छंते विना भागवतान्नराम
स्तुयादपि संश्रुत्वा देवं विष्णुव
र्जितुषाः ॥ रुद्रदेवपुराणोः सिद्धां
तो निर्मलैर्विश्रांतचेतसः ॥ विष्णु
येनाधिगच्छंति किं तत्वं किं परं प
दं ॥ २ ॥ तुलापुरुषदानाद्यैः र
स्वमेधादिभिर्मखैः ॥ आराणसर
मयः पृथिवीतीर्थस्नानादिभिः प्रियै
॥ २ ॥ गीयज्ञाद्वारैः पिन्ह्मैर्वेद
यागादिभिर्विधैः ॥ तपोभिरुग्रैर्नि
यमैर्धर्मैर्भर्त्तदयादिभिः ॥ १० ॥ सु
दुःखशरणैर्नत्येर्धर्म्मैर्वर्णाश्र

६

मोचितैः ॥ इत्याद्यादिभिस्त्वा
कृच्चरितैर्नैमज [illegible] ॥ श्वान
यांति तत्पदं श्रेयो विष्णु सर्वेश्व
रेश्वरं ॥ सर्वेभावैरनासूत्यपुरु
षं पुरुषोत्तमं ॥ १४ ॥ अनन्यगत
यो मर्त्या योगिनोपि परं तपः ॥
ज्ञानवैराग्यरहिताब्रह्मचर्या
दिवर्जिताः ॥ १५ ॥ सर्वधर्मोज्झिता
विष्णोर्नाममात्रैकतल्पकाः ॥ सु
दे सुखेन यां गतिं यांति न तां सर्वेपि धा
र्मिकाः ॥ १६ ॥ स्मरंतेवाः सततं वि
ष्णुं बिस्मर्त्तव्यो न जातुचित् ॥

विधिनिषेधास्सुरे तयोरेव
किंकरौ ॥२६॥ किंतु ब्रह्मादिभि
र्दैत्यसुराद्यैर्ह्यनिशं ह सः ॥ निर्गु
णे भाविलीनाश्च वयं ये संपद्मा
गताः ॥२७॥ श्री॰ लब्ध्वा चात्मनः
पूजां समाराध्यतो हरिः ॥ म
या वांछितादपि श्रेष्ठं वांछितार्हं
निर्गतात्मनः ॥२८॥ तेनैव सात्वा
दयामयो भसनो न केवल
ली ॥ श्रीयासे नात्मवैतान्यु ने॰
[illegible] ॥२९॥ देवाद
दिव्यं हि जातु दयं कव्यादे

करुणामयः ॥ ततस्तद्रस्त
ज्यं तैस्त्रैलोक्ये सचराचरे ॥२८॥
मां चोवाच यथा मिलस्य ज्य श्रे
स्तोप विश्यसि ॥ त्वमाराध्य तथा
चांभो गृहीष्यामि बहं सदा ॥
२९॥ श्रीभगवानुवाच ॥ द्वापर
स्यांतु [illegible] कल्प्या मातु प
दिषु ॥ स्वागमे कल्पते [illegible] र
जनान्सुहितुरखा व कुल ॥३०॥
मां च गोपवधूने स्पा [illegible] हिरे
कोतरौ तव ॥ न ते त्वं श्रीमत्व

मयोद्य स्वरेण स्वरं ॥३३॥ श्रीम
हादेव उवाच ॥ ब्रह्महत्यासह
स्रं पापं यस्यास्ये कथं च न ॥ न
पुनस्त्वद्विज्ञाने कल्पकोटिश
तैरपि ॥३४॥ यस्मान्मया कृता
स्फोपवित्रस्यां कथं दह्ये ॥ श्रु
तिस्मृतिवेदवाक्यानि तन्मे वद सु
रेश्वरी ॥३५॥ नश्यंति सर्वपापा
नि तन्मे वद सुरेश्वर ॥ तद्वाह
देवेश विदेमे ममप्रीतात्म यच्छ
तथ्यं ॥३६॥ श्रीभगवानुवाच ॥
सदा नाम सहस्रं मे पावनात्पा

वनं परं तत्त्वमात्म दिनं ॥ नमो मदेव
यं जिदिच्छसि ॥३५॥ श्रीमहादेव उ
वाच ॥ तमेव तत्परमात्म त्वं भजामि
त्वामि चिंतये ॥ तेनाद्वितीयमहिम
जगत्स्रजोस्मि पार्वति ॥३६॥ पार्व
त्युवाच ॥ तन्मे कथय देवेश यत्ना
मयि शंकर ॥ सर्वेश्वरी निरुपमा तन्
स्यां हरी त्वभो ॥३७॥ श्रीमहादेव उ
च ॥ साधु साधु त्वया पृष्टं विश्वलोकेन गव
त्प्रिये ॥ नाम्नां सहस्रं वक्ष्यामि श्रुत्वा वै
लोक्य मुक्तिदं ॥३८॥ अस्य मंत्रस्य ॥
नमो नारायणाय गुरुरूपाय महात्मने

श्रीरुद्रसत्यं विश्वाय महाहंसाय धीम
ते॥६०॥ ॐ अस्य सहस्रनाममंत्रस्य
श्रीमहादेव ऋषिः अनुष्टुप्छंदः॥ श्री
विष्णुपरमात्मा देवता प्रीत्यर्थे जपे
विनियोगः॥ ॐ वासुदेव परं ब्रह्म
इति हृदयं॥ मूलप्रकृति इति शिरः महा
वाराहेय इति शिखां सकल इति शिरोखा
मरी तेन सधन इति कवचं ... हं
हिकाम ... नित्य इति नेत्रं ... अस्त्रं
स्त्रं इति तोसे ... सर्वपापक्षय
र्थे विष्णु ... सहस्रनामस्तोत्रं॥
॥६१॥ ॐ वासुदेवपरंब्रह्मपरमात्मा

परात्परं परंधाम परंज्योति परंतत्व
परंपदं॥६२॥ परंशिव परोधेय परंज्ञा
नं परागति॥ परमार्थ परश्रेयः परानंद
परोदय॥६३॥ परोव्यक्तो परो व्योम
परर्द्धि परमेश्वरः॥ निरामयो निर्वि
कारो निर्विकल्पो निराश्रयः॥६४॥
निरंजनो निरालंबो निर्लेपो निर्विक
ल्प निर्गुणो निःकलंको निर्भयो चिंत्यो
चिन्तोच्युत॥६५॥ अतींद्रियो मितो
पारो नीशो नीहो नायो द्वयः॥ सर्वज्ञो
सर्वगः सर्वः सर्वेशः सर्वभावनः
॥६६॥ सर्वशास्ता सर्वसाक्षी पूज्यः सर्व
स्य सर्व

द्रकः॥ सर्वशक्तिः सर्वसारः सर्वात्मा
सर्वतोमुखः॥ ६८॥ सर्वावासः सर्वरूपः
सर्वादिः सर्वदुःखहा॥ सर्वार्थः सर्वलो
केशः सर्वकारणकारणं॥ ६९॥ सर्वाति
शायकः सर्वाध्यक्षः सर्वेश्वरेश्वरः॥
षड्विंशको महाविष्णुर्महागुह्यो म
हाहरिः॥ ७०॥ नित्योदितो नित्ययु
क्तो नित्यानन्दः सनातनः॥ मायापति
र्योगपतिः कैवल्यपतिरात्मभूः॥ ७१॥
॥ जन्ममृत्युजरातीतः कालातीतो
भवातिगः॥ पूर्णः सत्यः शुद्धबुद्धस्वरू
पो नित्यचिन्मयः॥ ७२॥ योगप्रियो यो

गम्यो भवबन्धैकमोचकः॥ पुराण
पुरुषः प्रत्यक्चैतन्यं पुरुषोत्तमः॥ ७३॥
वेदान्तवेद्यो दुर्ज्ञेयस्तापत्रयविवर्जितः
॥ ब्रह्मविद्याश्रयोऽनघः स्वप्रकाशः स्व
यंप्रभुः॥ ७४॥ सर्वोपेय उदासीनः प्रण
वः सर्वतः समः॥ सर्वानवद्यो दुःप्राप्य
स्तुरीयस्तमसः परः॥ ७५॥ कूटस्थः
सर्वसंश्लिष्टो वाङ्मनोगोचरातिगः॥
संकर्षणः सर्वहरः कालः सर्वभयंक
रः॥ ७६॥ अनुल्लंघ्यः सर्वगतिर्महा
रुद्रो दुरासदः॥ मूलप्रकृतिरानन्दः प्र
ज्ञो विश्वमोहनः॥ ७७॥ महामायो

द्विश्वभोनं परशक्तिमस्वैकस्त्रः ॥ स
देवानां सोनंतलीलः सर्वभूतवशंक
रः ॥५०॥ श्रीअनिरुद्धः सर्वजीवो
[illegible] केशोमनः पति निरूपाधिप्रिय
[illegible] हरः सर्वनियोजकः ॥५८॥ ब्र
[illegible] लोचरः सर्वभूतहृदेशनायक
[illegible] कतिरुस्वामी पुरुषोदि[illegible]
[illegible] ॥५९॥ [illegible] मीहिमा मीतसा
[illegible] गुणश्वरः ॥ योगमाय[illegible]
[illegible] नासरोषशा[illegible] श्रियःपति ॥६०॥ श्री
[illegible] पादाब्जोर्णनत्य श्रीः श्रीनि
[illegible] ॥ नित्यवक्षः[illegible] श्री

निधिः श्रीधरो हरिः ॥९२॥ वक्षः श्रीनि
मल श्रीदो निष्कुः श्रीगर्भमंदिरः ॥
कौस्तुभोद्भासितोरस्को माधवो ज
गदार्तिहा ॥९३॥ श्रीवत्सवक्षा नि
सीमकल्याणगुणाश्रया जगत् पीतां
बरो जगन्नाथो जगन्माता जगत्पि
ता ॥९४॥ जगत्सुहृत् जगत्स्रष्टा ज
गधाता जगन्निधिः ॥ जगदेकस्फु
रद्वीर्यो नाहंवादी जगन्मयः ॥९५॥
॥ सर्वज्ञः सर्वमयः सर्वेत्तिमो सर्वे
श्वरः ॥ सर्वमोक्षोद्यमो ब्रह्म
[illegible] स्वेतनः ॥९६॥ [illegible] पिता

[illegible] तीशाकोदयीश्वरः॥
सर्वदेवमयः सर्वदेवमूर्तिरनुत्त
मः॥६६॥ सर्वदेवैकशरणं सर्वदे
वैकदैवतं॥ यज्ञभुग्यज्ञफल
दो यज्ञेशो यज्ञभावनः॥६७॥ यज्ञ
त्राता यज्ञपुमान्वनमाली द्विज
प्रियः॥ द्विजैकमानदो विप्रकुल
देवो सुरांतकः॥६८॥ सर्वदुष्टांत
कः सर्वसज्जनानंदपालकः॥ सप्त
लोकैकजठरः सप्तलोकैकमंड
नः॥६९॥ सृष्टिस्थित्यंतकृच्चक्री
शार्ङ्गधन्वा गदाधरः॥ शंखभृन्नंद

कीपद्मपाणिर्गरुड[illegible]॥७०॥
अनिर्देश्यवपुः सर्वपूज्यस्त्रैलोक्य
पावनः॥ अनंतकीर्तिर्निःशीमः पौ
रुषः सर्वमंगलः॥७१॥ सूर्यकोटि
प्रतीकाशो यमकोटिदुरासदः॥ ब्र
ह्मकोटिजगत्स्रष्टा वायुकोटिम
हाबलः॥७२॥ कोटीदुजगदानंदी
शंभुकोटिमहेश्वरः॥ कुबेरकोटिल
क्ष्मीवान्शक्रकोटिविलासवान
॥७३॥ कंदर्पकोटिलावण्यो दुर्गको
ट्यरिमर्दनः॥ समुद्रकोटिगंभीर
स्तीर्थकोटिसमाह्वयः॥७४॥ हिमव

कोटिरविः कंदर्पकोटिर्ब्रह्माण्डविग्र
हः कोटिस्तमेधपापघोषदेकोटि
मार्दनः ॥७६॥ सुधाकोटिस्त्वाधि
हितिः कामधुक्कोटिकामदः ॥ कु
लविद्याकोटिरूपः सिपिविष्टः
विश्वभवः ॥७७॥ वृक्षेण स्तीर्थ
पादः पापप्रख्यातकीर्तिः ॥ आदि
देवो जगन्नाथो मुकुन्दः कालनेमि
हा ॥७८॥ कुमारो नन्तमाहात्म्यो
योगीश्वरोद्भवः ॥ नित्यतृप्तो
निःसंको नरकान्तकः ॥७९॥
एकसर्वविद्यैकमयो

न्यपहः ॥ जगद्रूपान्तमो नित्यः स
पालुसज्जनाश्रयः ॥७९॥ योगेश्व
रः सदोदारो हर्षद्वन्द्वविवर्जितः
ध्याल्लज्जो विश्वरेता प्रजापत्यः स
ताधिपः ॥८०॥ शाकंबलसच्चिन्म
दःशान्तुकुलसौर्धधामगः ॥ सूर्यसोमे
द्राणो विश्वचेता सर्वस्यपारगः
॥८१॥ जगत्सेतुर्धर्मसेतुर्धरो विश्व
धुरंधरः ॥ निर्ममोऽखिललोकेशो
निःसंगो द्भुतभोगवान् ॥८२॥ व
श्यमायो बृहद्विश्वो विष्वक्सेनः
सुरोत्तमः ॥ सर्वश्रेयःपतिर्दिव्य

न राज

नो: ईश्वरः तुष्टितो ॥७७॥ सर्वेल
दोगितेश्वरः सर्वे दैतेंद्र दर्पहा
समस्त देवग संदं सर्वदैवत नाय
कः ॥७८॥ समस्त देव कवचं सर्व
देव शिरोमणि: ॥ समस्त देवता डु
ं पत्साचानि पदेंद्र: ॥७९॥ सुर
तत्प योगिज्ञाता भगवान् वशिष्टप्र
याः श्रि दे: सर्वदिशोद कौशिगोरि
षुगतिपदः ॥८०॥ सर्वदेवतजी
देशो ब्रह्मण्यादि नियोजक: ॥ ब्र
ह्मादिपराध्यायुः ब्रह्मश्रेष्ठ: शि
वस्मरः ॥८१॥ विराडन्त

:पराधनस्तुत्यः स्तोत्रार्थसाधक:
॥ परार्थकर्ता कृत्यज्ञ: स्वार्थकृत
सदोधित: ॥८२॥ सदानंदसदाभद्र
सदाशांत सदाशिव ॥ सदाप्रिय: स
दातुष्ट: सदापुष्ट: सदाचिंत: ॥८३॥
सदापूतः पावनाग्रो वेदसूक्तो वृ
कषि: ॥ सहस्रनामा त्रियुग: चतु
र्मूर्तिश्चतुर्भुज: ॥८४॥ भूतभव्यभवन्
ओमहापुरुषवर्णेस: ॥ नारायणोऽ
नेकेशः सर्वयोगविनिःसृत ॥८५॥
वेदसारो यज्ञसारः सामसारस्त
पोनिधि: ॥ साध्यश्रेष्ठ पुराणर्षि नि
ष्कारणं निरत्ययः ॥ शिवनिर्त

नाविश्वसीर्थकैकतरष्रदः॥ न
रः किंतु हरिर्धर्मनंदनोधर्मजीव
नः॥ ९५॥ आदिकर्तासत्यसर्वस्व
[illegible] दर्पहा॥ त्रिकालजित्कंदर्प
[illegible] त्रिलोक्यनीश्वरः॥ ९६॥ आद्य
[illegible] विद्ययीवः सर्ववागीश्वरेश्व
रः॥ सर्वदेवमयोऽक्षयरूपोगी
[illegible] ९७॥ अनंतविद्याप्रभ
वो मूलविद्याविनाशकः॥ सर्व
[illegible] जगत्त्राता [illegible] कोमधुस्व
[illegible] ९८॥ अनेकमंत्रकोटीशः॥
[illegible] ब्रह्मैकपारगः॥ आदिविद्व
[illegible] वेदवित् [illegible] श्रुतिसागरः

॥ ९९॥ ब्रह्मार्थवेदहृदयशास्त्रविद्वा
न् जन्मजः॥ विद्याराजो ज्ञानमूर्ति
ज्ञानसिंधुरखंडधीः॥ १००॥ महादे
वो महास्फूर्ति [illegible] जगद्बीजवहित्रस्थ
॥ लीलाव्याप्ताखिलांभोधि [illegible]
[illegible] प्रवर्तकः॥ १०१॥ आदिकूर्मोऽखिला
धारः [illegible] जगद्गुरुः॥ अम
[illegible] त्रिकार
[illegible] ॥ १०२॥ आत्माधारो [illegible] धराधर
[illegible] धरः॥ [illegible]
हरः [illegible] पतिः आदिदिक [illegible]
कः॥ १०३॥ समस्तपितृप्रीतिदः
॥ १०४॥ समस्तपितृजीवनः॥ [illegible]
[illegible]

...स्येमातलीनगलाधिः श्री
...नाः...सागरः॥ महावराहोय
...ध्वंसको ज्ञाडिका श्रयः॥३॥
श्रीनृसिंहो दिव्यसिंहः सर्वानिष्ट
...खलः॥ एकवीरो हुलवृतो
...मंत्रैके नंजनः॥४॥ ब्रह्मादिदु
...हंरूपो तिदुर्गो नाम्याति भीषणः
... [illegible] ...जगद्गुरुः ये
... [illegible] ... मारचक्रप्र
...पनो महामारगणोश्वरः॥ अचो
...मोघवीरोद्धः समस्तासुरघ
स्मरः॥ ...सिद्धिदायकस्वपदुष्टच्छेदीका
...यौकधोलीयतिः॥ ...तान्तव
हन्सद्यः समस्तनयनाशनः॥७॥

१५
सर्वविघ्नान्तकः सर्वसिद्धिदः सर्व
पूरकः॥ समस्तपातकध्वंसी सि
द्धमंत्रादिकारकः॥८॥ भैरवेश्व
हरान्त्रिघ्नः कालकोटिदुरासदः॥ दै
त्यगर्भश्राविनामस्फुटब्रह्माण्डगज
दः॥९॥ स्मितमात्राखिलत्रातिदु
तरूपो महाहरिः॥ ब्रह्मचर्मशिरस्य
दीदिव्याश्चोर्ध्वंगात्र...॥१०॥ ब्र
ह्माण्डभेदी रौद्रो मारुद्रसी...
पुरः॥ योगिनीग्रस्तगिरिन्नी ...
...त्रिलोकीशः॥ वीरचक्रेश्वरो त्यु
ग्रोयमारिकालशंबरः॥ क्रोधेश्व
रो रुद्रचण्डीपरिवारादिदुष्टभु
...रासर्वो द्रोमो मृत्युमृत्युकाल

र्स्तु निवर्तकः॥ असाध्यसर्वरो
गघ्नः सर्वदुग्रहसौम्यकृत्॥२३॥
गणेशाकोटिदर्पघ्नो दुःसहासव
गोत्रहा॥ देवदानवदुर्दर्शो जगद्
यदसौख्यकः॥२४॥ समस्तदुर्गतित्रा
ता सज्जनकल्मषदायकः॥ उग्रेशो
ग्र मार्जारः कालमृत्युक नंदवेः
[illegible]॥ अग्रं नायुधधीरे शोभ्रसिंहद्वी
रत्नद्रुजित्॥ योगिनीचक्रगुह्येशः
[illegible] स्तु मांसत्वक्रोधहृद्धी
नारायणो मेघरूपः शंकरबाहुः
॥ मेघरूपत्रिविक्रमातलाइच्छाकि
सहस्रहुत्कृः॥२८॥ तुलसीवलभो
वीरो बाला महाचारो विलेहः॥ म

next is missing

hundred

D Π V ग 33

-?

-ચિંતામણિનામમાલા- નંદદાસ

श्री कलाय नमः ॥ श्री कम

ल लोचन सुखकारी ॥ श्री

सुमिरत ईश्वर सुर तार्थ ॥ तिनकी

[illegible] निमाह्या ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

त्।उधारना।ध्विकिमाचनवकिवद

न्विदारमा।जगकारन[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] निमाला [illegible] लिक पुनरूप
रमाला [illegible] को [illegible] संसार कहूँ [illegible]
[illegible]
[illegible] को [illegible] कहूँ मनि [illegible]
[illegible] अधम को। [illegible]
[illegible]
[illegible] कहूँ [illegible]
विवाद कहूँ [illegible]
[illegible]
[illegible] पर [illegible]
[illegible] को [illegible] कै [illegible]
नाम [illegible] है। [illegible]
[illegible] कहूँ [illegible] है [illegible]
[illegible] है। [illegible]

अपार कहूँ संसार समान है। पात
गिरनि कहूँ अपात है। चिंतन
ही अन धन को चोर है। कामादि
कनि [illegible] को [illegible] है। [illegible] कोटि
प्रयागमा थानि को माधव है। कलि
काल मृग कहूँ जरनि को बाघ है। उ
पशागनि कहूँ सुर [illegible] राग है।
तीरथ आनि थानि कहूँ तुम गुरु हौ। गु
है। १४। जे संसार समुद्र तिन का
तिन कहूँ पम सुसीध मंत्र कल।
यह संसार अपार को पार कहै है। य
ह [illegible] कहै कनि हारु है। १५
बुंद उदधि दधि को घृत सारु है।
पार्वती पति [illegible] अधार है। का

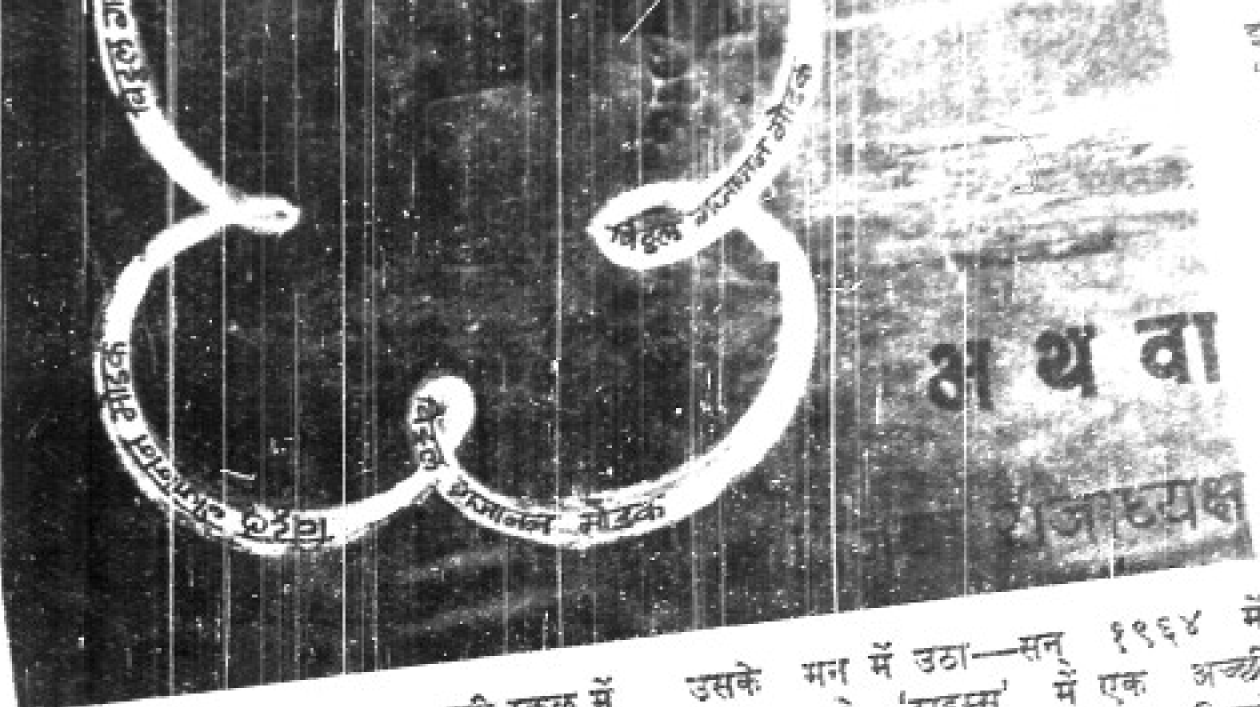

छाया: रमेशचंद्र एस. शुक्ल

...र वह
...सका मन क्रोध से भर
..., अपना नाम सुधीर
... अथवा मनोहर क्यों
... नाम का अपभ्रंश भी
...र ससुराल के लोग मेरे
...पंत' अथवा 'राव' लगाये
... बुला सकते. लेकिन उसका
... ही था. अपने नाम के
...जानन' के संबंध में उसने
...र ही नहीं किया था. वह
...ल रहा था कि 'गजानन'
...कुछ हो ही नहीं सकता था.
...पनाम के बारे में तो कोई
...हीं उठता. इसे धारण करने-
...अकेला नहीं था. इस संबंध में
...विनिमय करने के लिए उसे
...रनेवाली सभी पीढ़ियों को
...रना जरूरी होता और यह
...हीं. इसलिए उपनाम को ले
... कोई शिकायत नहीं थी. यह
... कभी उठा ही नहीं कि उसका
... 'बेडेकर' अथवा 'गुप्ते' अथवा
...थवा 'डिसूजा' क्यों नहीं है ?
...ह ११७, शुक्रवारपेठ में रहता था.
... कुछ यों ही-सा बाड़ा. बाड़े में
..., गोखले, पाध्ये, करमरकर के
...र रहते थे. उसे लिमये काकी
... नहीं लगती थी. गोखले के घर
... नहीं थे. इसलिए वे उसे हमेशा
...की दूकान तक दौड़ाया करते थे.
...का परिवार ... उसका अंत
...का मित्र था.
...ड़े हुआ ही करते
...र के लोग सभ्य
...म यहां मजबूरन
...श्मशाना पर हम
...ायेगा. तब हम
...ये कमी नहीं.
...उले यह सोच
... कि 'हम यहीं
... लिमये चले गये
... गोखले की
... लगने पर वह
... वहां भी कुल...
... थे ही. कुलक...
... आये. काले ही
... इस प्रकार के
... में क्या अर्थ
... लिमये, उपनाम
... और उसे
... मच्छर थे,
... शुक्रवारपेठ
... होता था,
... बुधवारपेठ
... कटोरी में चटनी.
... बुधवारपेठ में फड़के के
... की भाजी आती थी. सब कुछ पूर्ववत्.

भर्ती होना स्वाभाविक था. उसी स्कूल में सदू, बाबू, मन्या, श्रीपाद, काशीनाथ थे, इसलिए उसकी उनसे पहचान हुई. उसी स्कूल में शिंत्रे सर, प्रभू सर थे, इसलिए वे उसके शिक्षक हुए. आगे कॉलेज में भी ठीक इसी तरह जो वहां थे, वे ही उसके दोस्त और प्राध्यापक हुए. उसी कॉलेज में कुंदा देसाई थी, इसलिए उससे प्रेम हुआ. सुमन मेडेकर से कुंडली मिल गयी, इसलिए उससे शादी हो गयी. फिर वह उसकी पत्नी थी, इसलिए उसके बच्चों की मां थी, इसलिए वह उसके बच्चों का बाप था. सदू काका उसके पिता के भाई थे, इसलिए उसके काका हुए. नलू मौसी उसकी मां की बहेन थीं, इसलिए उसकी मौसी ... काका का ... काका था, ...

उसके मन में उठा—सन् १९६४ में जब उसने 'टाइम्स' में एक अच्छी नौकरी का विज्ञापन देखा, जिसमें शर्त थी कि २५ वर्ष से अधिक आयुवाले आवेदन न करें.

वह घोपेश्वर कंसर्न में ही नौकर था. उसने देना बैंक में अर्जी क्यों नहीं भेजी, अथवा वह बंबई के सचिवालय में क्यों नहीं चिपक गया ?

उसका पता १२५, बुधवारपेठ ही क्यों ?

पैदल जाना सुविधाजनक होते हुए भी वह बस से क्यों जाता है ? अथवा बीच-बीच में अपने दोस्त के स्कूटर पर क्यों नहीं जाता ?

सुलाखे उसके इतने पास रहता है फिर भी उनका आना-जाना क्यों नहीं है, अथवा मराठे को वह क्यों नहीं पहचानता? ... 'देसाई बदर्स' से ही सामान ... में

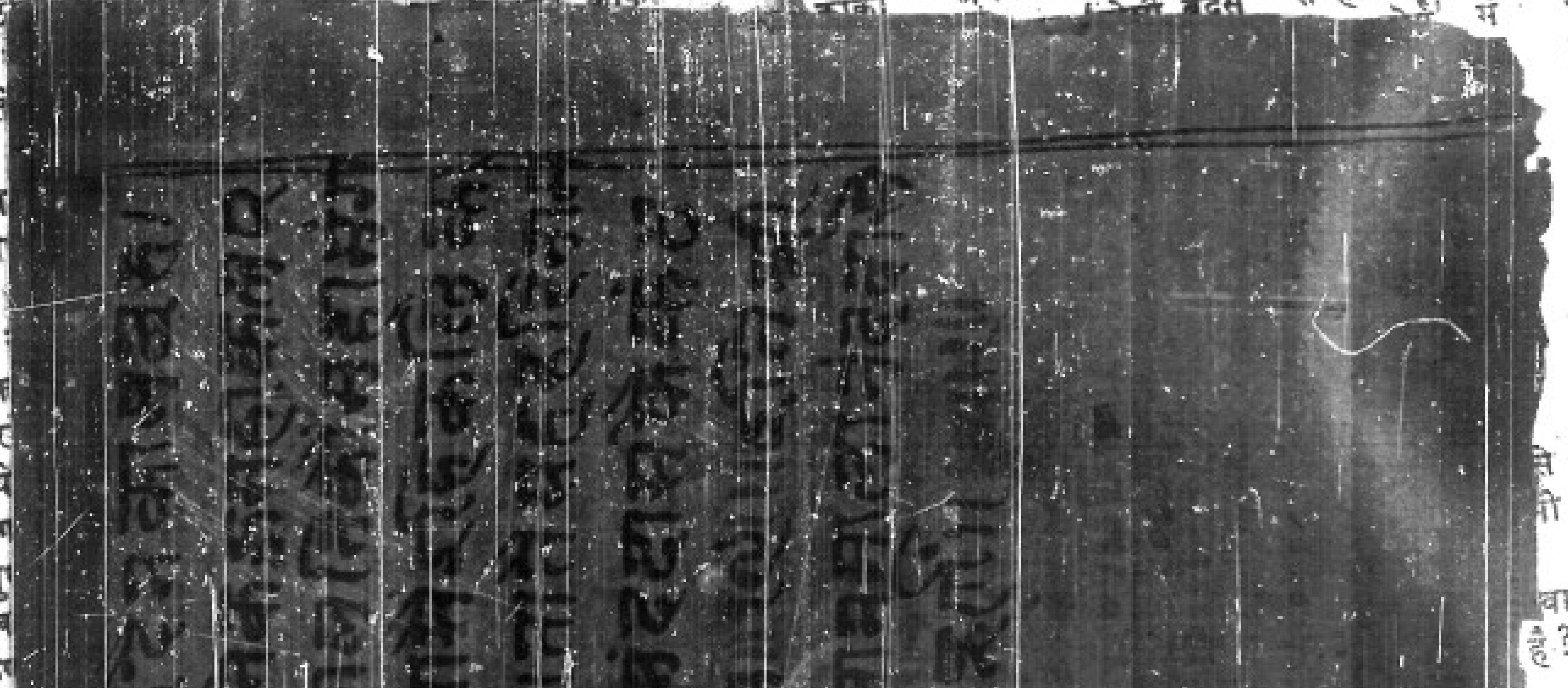

'वैदेही' आजकल ... में प्राध्यापिका हैं.

इन प्रश्नों में ...
'मैं कल मर ...
मर क्यों नहीं ...
वह विजा...
पर के देसाई ...
देशी मक्खन ...
उस तरफ ...
जाता भी है, ...
के सर्वोपयो...
खरीदा कर...
और स्वादि...
होइए.' ...
बार जान...
कारण वह ...
का आनंद ...
कहता है. ...
बस पक...
लेकिन ...
जाता है ...
पास के ...
अच्छी ...
के रा...
दवा ...
उसक...
लेकि...
वह ...
तैसा ...
कल...
मर...

hundred

DMV ग 33

?

दिनांक...... कक्षा घण्टा प्रकाशक-

-नाव महात[illegible] - ?

मध्येनककूदेसकोमबूरु।
कलपतरनिकऊमहाकलप
तरू।६। मंगलनिकौंमहामंग
लरूपहे। तामैंइहिकलिका
लअनूपहे। तातेयहहरिनाम
दासहितानंददासकेकंठ
बसऊनित।१७। इति श्री
चिंतामनिनाममालानंददासे
नक्रितंसंपूर्णं।। ।।।।

।।नावमहात्मा।।चौपई।। ।।श्री
हरिगुरुचरणचितलांऊं।रस
नानावमहात्मगांऊं।जागायतें
आनंदपावै।पापतापसंताप
नआवै।१।चारिवर्णआश्रमच्य
पारायणसबहेहरिनांवकील
रो।नामकेवलअजाम्रमतोह
ह्यो।तबहरिरहासैंनावउचो
ह्यो।२।तबताकूंहरिदरस
दिषायो।करसौंकरगहि
नावदिढायो।अहंकारआवै
नहीकोई।आदिअंतिजाए
तहेमोही।३।वेदगरवनना

रदसौं नाष्यो। नीकै नाव हिरदै
मैं राष्यो। नारदि कह्यो व्यास
सूं जाई। अपणा उत्तम कथा
सुणाई ॥४॥ वेद विभाग सबै
ही कीया। न्यारै कै हरि नाव न
लीया। तब श्री भागोत उ कि
यो पुराण। आदि अंति हरि
नाव बषाण ॥५॥ नाव तणी
महिमा मुष गाई। तब हरि
दा की जलणि बुझाई ॥ सोई
नाव शुषदेव मुष गायो। रा
जा कै तब तिमर न साये
दा सतकही सनक संसार

ताकौं सुनि तिरिये भौ पार
सुकसं प्रश्न का है इक राजा
इ हिस्यो सरिध्र मकुंण हि स
रे काजा ॥७॥ पंच मंत्र तन नर
क नाना विधि। सुनि सैनी त म
या मे राचित ॥ करम कुकरम
सबै मैं कीया। तानै कंपै मेरा
हीया ॥८॥ जोग जागि जप त
प उबरि हो। निहचै इन नर
क तिमै परिहो ॥ संत सभा मे
सुषदेव बोले। राजा को संसै
सब षोले ॥९॥ परम स्यंघ त्म
धरम दिढाऊं। मत र रपै ह

रिनांव सुनाउ ॥ हरिनांव सिंध
जा बन मैं होई। कलि बिष कुं
उर रहै न कोई ॥ १० ॥ अजामे
ल सुत हित तासौ। त्रष्ट नयो
तब नांव उचास्यो। सुत हि
त मंदिर तारी बाजै। कउं बा
पाप सकल उठि भाजै ॥ ११
गनिका सुक हित मन हि
पढावै। उसी तुरंग परम प
द पावै ॥ ग्राह ग्रह्यो गज संकु
ट भारी। तब हिरदा मै नाव
उचारी ॥ १२ ॥ गोकंड अधंफ
र छाडि रु धायो। संकट तै
गज ग्राह छुडायो ॥ नांव हि

रदै प्रहिलाद हि लीयो। पि
ता मारन कौ उदिम कीयो ॥ १३
जल थल गिरि ज्वाला तै राख्यो
तातै नांव अधिक ही भाष्यो। का
ढि षड़ग कौ प्यो है काल। मो
हि बताइ तो हि को रष वाल ॥ १
॥ षंभा मे प्रहलाद बतायो।
नांव लियां तै बाहरि आयो। ह
रनकसिप कौ उदर बिदास्यो
ऐसो नांव उहे पलु तास्यो ॥ १४
पंच बरस के ध्रू हरि ध्यायो। नांव
लियां निहचल पद पायो ॥ नांव
प्रमाण तरे हैं पांणी। नांव की म

हिमा हलावंत जाणी ॥१६॥ सुर
असुर पति वानर होई। हरि वि
ण मुक्ति न गयो नहीं कोई ॥ को
टि ग्रंथ मत एक दिढायो। नां
व लियो तिही सुष पायो ॥१७॥
नारद बूझे हरि सुं बाता। कल
बसु हो त्रिभुवन ताता ॥ जोग
जगि बैकुंठ नाहीं जहां नकर्म
वसु हां बसां ही ॥१८॥ मुष नांव
ले अरु वेणु बजावे। नारद पे
हरि हो स्यो आवे। काया के ले
श काहे को साजै। हरि हित नांव
सब धरम पतिगाजे ॥१९॥

असंषि अद पाय की रासी। हरि
बिन कैटै न जंम की पासी ॥ पे
कपलक जो हरि के लै षै। त
कौं जंम सुपिनै नहीं देषै ॥२०॥
सक्रिद बचन हरि नांव उचारै
सो भी नांही जंम के सारै ॥ जो
कीरष्या करै हरि राइ। अष तै
नो विचरै जगु मांही ॥२१॥ एक
बार जिनि हरि नांव लीयो भां
नूं कोटि पुंनि तिनि कीयो। प
ञ्ममति हास अगस्त मुनि गाये
हरि चरणां परि ताथ छिवायो
२२॥ सो मे तो संस कारी तु राजा

hundred one

ΔΠV ज 33

- ભાવ ૬.૧૫ ct

सवहिन के को जा । र
त[illegible] म तत्रै तीजिगा करता ।
छ पुर स्त्र ओ शुद्धि मन धरता ।
२३ । तिहं डूंगा के पेखो हार
कहि के वल हरि नांव अधार
जै सेवर वर पेड सिवा डाप
उप पूत सो ता फल पाई । २४ ।
सुषमै मैलै याम संनेहीं औ
[illegible] तपुछ कै रहीं । नारको रै
[illegible] ते है । तौ कै ऋ
[illegible] वै दावै । २५ । सब को
[illegible] रे रहै तो तुओ त
[illegible] कवै डाई । दि ग्रिगुन
[illegible] तरै गा को । ता ते देव

सकल सलु मा नां । २४ । कोटि
मीहि लै सिंधवु लावै । नांव लेय
तै मन सुष पावै । नांव तजो जिनि
काहूं जो लै । नांव लियां धेनै मु
षि बोलै । २७ । तुला पुरुष दान
दिक दीजै । सब मिथ्या हरि नाव
न लीजै । कासी बसि करवत ले
[illegible] नांव बिनां को तरै न तारै
। २८ । गायत्री मन मैं जे न [illegible]
नांव विनां मिथ्या तन छीजै । स
र[illegible] ग्रहण कुरुषेत नावै । नांव
विणा सब क्रम बंधावै । २९ ।
से म बतीस रूप जो कालैषे तो
का विणा सो ज्ञान [illegible] । पा ।

बिणा नैयेन हीं होई। हरि बिणा
मुक्ति जाये नहीं कोई॥३०॥ जल
बिणा नहीं सोहै सरवर। फल छ्या
या बिन फ़ीको तरवर॥ चंदा बि
न रजनी नहीं सोहै। हरि बिन सु
नि सुगते सो को है॥३१॥ होइ अ
नान जे हरि गुण गावै। पुरब लि
खत भोग करावै॥ ग्यान बैरा
[illegible] तिसो होइ॥ अनंतन पम
नो फल लोहो॥३२॥ सकल धर
मं तउ छिन होइ। नांव महात्म
गुणे जो कोइ॥ अधइ औ या पद
को पावै। ताके धरम आगे दक देल
[illegible]वे॥३३॥ हरि नांव सति सुमि

रै जो कोइ। विधि निषेध किंकर
ता होइ। जाके है हरि नांव की आ
सा। विधि निषेद का नांही दासा
॥३४॥ ॐ मांसे हे सवइ है सवाद॥
हरि विण कोण हरे विख्या दा॥ वे
डी कंचन लोह कहावै। पैडै चल
तो ही दुख पावै। जो हरि पै डै च
लो चाहै। कुंभ नैडी काहै को ना
है। पाप पुंनि कुकर्म करणी आस
हरि बिणा कैसे ग्यान की पास॥
॥३५॥ ग्यानी दाता सूर कहाइ। हरि
बिन पार न पहुंचे नाइ॥ मुंचित मु
कित अरु अजदधारी। नांव बिणा के
न कटै न नारी॥३६॥ स्रेव क रि

तीर्थफिरिफिरिन्हावै। रांमबिमुख
ष कैदेनपावै। सकलदीपकौन्ह
पकहाई। गोबिंदकौरंगरत्ति
पाई।३४। जोगंगगिनपतपस्य
पारा। ऐसबहैहरिनांवकीलार
अतिजिगनसोवनेव्रतदाना।
ों हिनहरिकैनांवसमाना।४
६। जोफलबड़ीदीदरसनपाये
जोफलभोगमेगातीर्थकाया। जो
फलकोटि...कैदीको। तरै
तैअधिकफलहरिनांवसाना।
जोफलसेतबंधवदिजा
या। जोफलसिंधबोदावरीन्ह
या। जोफलकोटिकैन्यायर

गायो। नाहींतैंअधिकफल
हरिगुनगायो।४१। हरिनजि
रागीरोगगीमावै। हरिसिंजिब
ध्यानमनकौंपावै। जेअन
छसेनापकहीजै। हरिसौंजै
नीचऊंचपददीजे।४२। ह
रिसिंसेवकरावनेनीको। हरि
नांवसबपरसापरदीकौ।
नाममहात्मसुणोसुणावै।
सबवंछितफल...सोपावै।
४३। मनसाबाचाऔरकर
मा। धर्मदीदासमहरि
नांवविस्वासा।४४। इति
श्रीनामहात्मसंपूर्णं।

hundred one

DMV गु 33

-नाममाला

॥ नाममाहात्म्य ॥ ॥ दोहरा ॥ नेह नमि जि
य जिनि धरा ॥ हा हा हैं बलि जांऊ ॥ रसना
कै सुष कारनैं ॥ नीजन ब कु दिधि नांऊ
॥१॥ जाके रंग राचे सबै ॥ जोगी जंगम से
षा करता कहैं करम को ॥ आतम के
अलेषा ॥२॥ अंतर जांमी जगत गुर
जन के सुरवन कोम ॥ जो जन मरम
निवारि है ॥ छेद दशा मारांम ॥३॥ चौ
पई ॥ तौ रांम नांम मन थिर है द न सा
रा भव सागर तै उतर कु पाश ॥ सुरनर
मुनि जन जाकी सेव सुमिरो कोन
निरंजन देव ॥ पा माया [illegible]
पकी रा उ सुमिरो कौन सां [illegible]
॥ हरि किरन भ्रम भ्रोडं जा [illegible] सुमिर
हु का हे न दीन दयाल ॥५॥ दीनै चरन

केवलकरसीस॥सुमिरहु जोनराइ
जगदीस॥ जाकी जोतिजगतप्रगास॥
संतनकोहेतसुमिरहुतास॥६॥ता
कीनिंदलोकमहिआन॥भावसहि
तसुमिरोभगवान॥ जोसुषचाहोस
कलसरीर॥सुमिरोमाधौमनकरिधी
र॥७॥जीवजंतसबकेप्रतिपाल॥गणं
[illegible]सुमिरोगोपाल॥ [illegible]
[illegible]रेउलननर॥सुमिरौंकहुलाल
[illegible]लिकहूथां॥जरतअगनिकहु
नपलबगारै॥सुमिरौपारब्रह्मसु
[illegible]॥कौलकरमकीकाटनफांस
[illegible]सुमिरहुकौ[illegible]अबिनासी
[illegible]निसनातनजौहोइचितचैनास
हिबकौसुमिरहुदिनरैनि॥[illegible]

रूपसयलजगगुराता॥सुमिरहुमनमो
हनसुषदाता॥१०॥रिधिसिधिसबपुरी
जंनकीचेरी॥मदसूदननाजिसुनिसि
बमेरी॥कहांअंतिकीनेसंसारि॥भ
जहुदमोदरगरबनिवारि॥११॥छाडहु
कौनमलिनमतिमंदा॥सुमिरोकैसो
करहुआनंद॥कोकोसुनलवकौनकी
माला॥ सगमोहनजितनजिसंजारै
[illegible]धरती[illegible]बरउतिमछाजा॥सुमिरौ
[illegible]नरामचंदराजा॥सोहुतहै[illegible]
अधांन॥धरणीधरसुमिरहुतिहि[illegible]
॥१२॥अंतिअनूपआदिनहिअंता॥सिम
रहुसुरसुमिरौभगवंता॥काया[illegible]
रमजिनिलाऊ॥सिकहुनगुनगोबिंदके
गाऊ॥१३॥जोलहुजनमपदारथहाथ

साधसंगति सुमिरकै जगनाथ॥ न्हा
न करवी पुंनि बकै कला। प्रीति सहित
सुमिरकै बीठुला॥१५॥ अंधकूपकौ उज्या
रौ पै है सु मुत चित की चिंता हरै॥
आनंद होइ सु गेहु गिजा जैं। श्रीपति
सुमिरि सुधारस पीजैं॥१६॥ बेद चतुर सु
षकी रतिगाई। न्हे धरम जो भरम न जि
नो। [illegible] निरंजन निराकार [illegible]
रंगधर सुमिरकै अंतरजामी॥१७॥ धर
[illegible] सब कांम। सुमिरकै वै
[illegible] नांव। कौन समय आन पर आन
चित लावकै। सुमिरकै रघवीकै समुष
[illegible] संतकै सब जीव निकौ जी
व। सुमिरकै प्रांण सनेही पीव। नेदश्र
[illegible] न्यारे। सुमिरकै प्रभु जग

त उजियारे॥१९॥ लाल चलो नमोहमद
मारि। पर स्रोत मन जि उतर कै पार। पुर
नरपि आवागमन न होइ। नरहरि कौ
सुमिर करे लोइ॥२०॥ जौ पै अनबस कै
गेरांम। सुमिरकै काहे न ही कल्यांन॥
उलिया हरि सये सुपनारी। सुमिरकै
जीव निजगत मुरारी॥२१॥ बकुरि कहि
कहियो यकु बार। सुमिरकै सब कौ सि
रिजनहार। रावरंक वसिकौ निकाल
सुमिरकै भगत बछल गोपाल॥२२॥
अन भेय दही नौ सन कौ जिनि। सुमिरै
को है न जगत सिरोमनि॥ कौ मैं कौप
नैंपर नारी। सुमिरै बांके राय बिहारी॥
[illegible] है को ऊकरि बैति हि होउ। सुमिरै
को है न ही रिन छोड। साधर मधोनध्यौ

त्रिनिकाली। सुमिरौ काहे न हरी बन
माली॥२४॥ ज्यौ लौं काल गेंन जंम के ह
थ। समझि सोचि सुमिर रघुनाथ॥
जन के संगी मिल्यो गुन गावन। सुमिरौ
क्यौं न पतित कौ पावन॥२५॥ त्रिविधि त
प पाप कौ हरता। सुमिरौ क्यौं न सब
कौ करता। गीध व्याध गनिका कौ तारन
परमेसुर न जियाप निवारन॥२६॥ हरि
कौं न तजौ जन कौ ह्रदय। सुमिरौ काहे न
परमानंद। संत कहै तत निज सार
हरिकौ भजौ मल्ला वौवार॥२७॥ माता
पिता सुत नहि साथ। सकल सौ सुमिरौ
त्रिभुवन नाथ॥ पार सु सकिल वंड
धार। सकल सौ सुमिरौ अलष अपार
[illegible] जबलौं आंनि लगे जंम दूत। का

कौ पिता कौंन कौ पूत॥ मूरिष होइ
समनि पछितावइ। पुनि माटी माटी मि
ली जाइ॥२८॥ रिजक रहे सबकौ न
रिपुरारि। सुमिरौ स्यांम सजीवन मूरि
॥ सबके अंतरजामी आय। सुष दुष
लिपहि पुनि नही पाप॥२९॥ धरती अं
बर पांन्यौ पौंन। जल थल सुमिर कु
सौ वा जौंन। सुमिरै धू हरि थिर थांन।
सुमिरै ब्रह्मा वेद पुरांन॥३०॥ सुमि
रहि गोरष कारि आदेस। सुमिर गन
संकर सुमिरै सेस। सुमिर हि
रिजन सुमर हि नेह। सुमिर हि तेती
सौ सुर थंद॥३१॥ रसनां लगौ अन्नप
मस्वाद। सुमरहि ध्यौ उनि प्रहिला
द। करता हर्यौ आपनौं सेवा। सुमि

रहिअंबरीषसुषदेव॥१३॥नारदसा
रदतंबरगाय॥१॥सुमिरहिव्यासव्रि
सनदीपायन॥ अरूसिधिमनौनव
निधिपाई॥सुमिरहिसुतौबालमीसिध
गुसांई॥३०॥पारब्रह्मसोंपरचौनयो॥
सुमिरहिनरथनेदत्त्रमगयो॥मने
सुधिमनसाअस्थिरराषि॥सुमिरहि
अरसनाँतासाषि॥३१॥ध्रुवकीक्रि
पासहीसकसरा॥सुमरहिबिलमंग
नेश्रुंकेरा॥नायमगतिदासकौदास॥
सुमिरहिविदुरघरैंभ्रमवास॥३२॥
मनकौमिहोअषकलअरहंभेव॥जो
गजुगतिसुमिरैंजेदेव॥मायामग
नकहौसिनिकोइ॥सुमिरहिजनक
विदेहीहोइ॥३३॥जाकेत्रियकोले

१

मनरत्नी॥सहजेसुमिरैंहरिचांवंतजती
॥तज्यौंभ्रमप्रजीवनिकौंसाथ॥सुमि
रेसुतौमछिंदरनाथ॥३५॥चहुंदिसिचा
हिचमकिचितिचेत॥सुमिरहिदत्तात्रे
यततबेल॥ब्रह्मअगनिमेंविसनांस
री॥महामगनसुमिरैंमरथरी॥३६॥जो
गजुगतितिनिजानीनेग॥सुमिरहि
चरपटसतीक्रियौरी॥दिल्लउकौंनमें
अमृतमठी॥सुमिरहिदेवलओघड
ही॥३७॥कामक्रोधनरमकीयौविट
लि॥सुमिरैंहिजोगीजनओपल॥सुमि
रैंनांमाओरकबीर॥सुमिरहिकेतवे
गौसपुन्निपीर॥३८॥जिनिकैंहिरदै
मप्रकास॥सुमिरैंसेनिधनांरैदास॥

के में सहली ले चहर

निरमलनांवसही पेत्रयमोचन॥सु
मिरैंमेहालाहितिलोचन॥४१॥संतसं
गतिकोनिमदिनसोहा॥सुमिरैंडूंग
रनरसीसीहा॥बुधिबिवेकबकूतसु
रप्पांन॥सुमिरैंबिजुलीषांनपगांन
॥४२॥कांमक्रोधभ्रमसंसाथोइ॥सुमि
रैंअंगदेओदुरहोइ॥निरबैरीउति
नअस्थूल॥सुमिरैंसुवमनगतिको
मूल॥४३॥सोजपीपा॥सुमिरैंसही॥
भिनिवैद बिध्यानैंकनरही॥चरनदा
वलाचितबिसलैधरिया॥सुमिरैंकिस
नरामकहरियिया॥४४॥जतसतबुधि
बिबेकचितवैंन॥सुमिरैरांमानंदादि
सैंन॥मायाभ्रमितामोहउदाससु

२

मिरहिहितचितसोंहरदास॥४५॥कन
ककांमिनीजैसीधूलि॥सुमिरैंहरीत
नमनसूलि॥सोसागरउनिवकरिन
आवै॥परमानंदसूरगुनगावै॥४६॥जा
तिवरनकुलछोडीरीति॥सुमिरहिसथ
नापरपरतीति॥संतोसंतोषीसेवगआ
ज्ञापतिब्रतसों॥सुमिरैंस्वामीदाइ॥४७॥
दोहरा॥तोरांमनांमलेउचरहिं॥आन
मनोंनविकछ॥सोसागरतेंईतिरैमन
बुधिसमसासुद्ध॥४८॥ए॥बाजीदाजेहरि
भजैंगुरुसुधिज्यांनबिचारि॥सांधणातिन
हींमथिलियो॥औरसकलछाछिडारि
॥४९॥इतिगुननामसमालासंपूरणसमा

के म सहला ले चेहर

॥श्रीगुरुप्रनामो॥ ॥दोहरा॥ साधनि
संगसदारहौं। सुनौंसया ढेलो॥३॥ मनब
चक्रमतो कौं न जै। तो ग ज़िन सकई कौ
३॥ ध्रम मांह नस्यंघ है। प्रगट्यो जन कै
को जि॥ हरनकाँ सिव कौ लैगयो। ज्यों नी
तरकौ वाज॥४॥ भगत सुमेरी आतमा
ताकौं जाइ बिरोध। सुरपुर नर पुरन
गपर नदो तन हो सागे सोधा॥४॥ औरह
तकी सेवत जि। मोहि न बाधै माथौ। मेरे
ग्निसि अंगुरी करै। काटौं ताका हाथ॥
॥ मौंह किये तो सौं कहत। यह जां नी जि
उमाहि॥ बांध सिरे रासवको। सो दैं छटन
नाहि॥ ॥ पारी वे स्वरांन सबा राधौज
म कोरी पा। उदर बिदास्यो असुर कौ। न
रस्यंघ कै देषि॥८॥ भगति करी ल्पोल

नहै। तजि बलोक की लाज॥ देवल पै
होइ ग्रिमैं। केवल नांमा काज॥७॥ छ
त्रपति कोप्यौ काल है। करि नस कौ
कै हरि अंत राघौ दास कबीर मैं गाइ
गैंवर कै दंत॥८॥ दुरबासा जिय दोष
धरि। गयौ ब देन सराप॥ लयौ अंबरी
ष उबारि कै। मनब चक्र मैं आप॥
॥ देषी अन देषी करै। जन की दैवन
दोषि। भगति मांफ सी गोपवै। करै ते
हि को या दि॥१०॥ यह इम सलै तुनाय
रे। साधसंत तैं को झलौ हीयौ ऊपड़
रिकै। त्रिपति सुको क्रम हो ऊ॥११॥ मेरे
जन नन सो को जा। चितवै करारी दीठ
॥ चांवक तो रैचौ होहरे। गुन ह गार की पी

म सहला ले चहर

ति॥४॥जो बसंता द्वैसाधकौं।सो दोषी
है सो अगाहि कै गरदनि मारिहौं।कब
हौं न वककसौं चोर॥२५॥सो ही तें उतपति कै
सो ही मांझसमाहि॥सो बिन मेरे दासकौं।
दोर लोक थिय नांहि॥२६॥ परसहस कौं थ्या
गैता गोन्पा रो।कियो न जात्र॥ आगें आ
गैं बक्र रा वी छैं पीछें रा॥२७॥ हौंही म
ना हैं पिता।जो बिन ओर न कोइ॥ना हि
अँधकूप बिसर है।तो पृथ्वी पल्ले हो इ॥
गुन आ तीत निरधार हो।निरगुन कह
माहि नै २॥ छै औ अब दिसनापरैं
दोपोन्यकेहेत॥३०॥धरती आवस्था
दिहै।प्रविसिपिवैं गोन॥साधनित
तिर चोरचौ।नतो बकारि जकौं न॥३१॥

सिहस्वांदी निरवैरना।निरलो नी सिह
कांम॥अनंत नमो कौं जांनियौं।साधमे
रो निजधाम॥३२॥जनलक्ष लमहि यल
सोधिसव॥अवसुर सोइ हि ताकै सो
हिससमरथैं जो को ऊ।साधनि मुषकैवा
ऊ॥३३॥हम महि इनहि अंतर नहीं।साति
कहैन सुनि तो हि॥साधसुषी तो मैसुष
साधुदुषी दुषमोहि॥३४॥साधसु मेंलसु
सोरहै होंमंतनि कौ जीव॥स्वामीसेव
गयो मिलै।ज्यौं बहुरथ अरुसी व॥३५॥न
गौ मिन इयै जानियु है।नौ तें मेरे दास॥
भव बंधे कोम अब घूं पिलो।जो बहून अ
कवासा॥३६॥निसु वासुर सुमिरन रहे।
महानिरमल करिमन॥सो बबसता हि

कौन है। लै सुदरा कजे न॥२७॥ अब हि
सु आसंग आपरनि। सोचत हौं दिनरा
ति॥ कै हा है मत्वौ मन ग्राही ये। जगत हं
मारी जाति॥२८॥ होई जो ईश्वरा दे सरन
न कि। सोई आपनौं करि लै ऊ। भगत ब
छल पह बिरद मथा। करतें छाडि न दै
ऊ॥२९॥ सनमुख आयो चाहिये। हौं कै
छोडौ हाथ॥ सूर पुरन्दर पुर [illegible] पुर।
नौ निलोक कौ नाथ॥३०॥ जोगी जंगम
तपसी। शिव बिरंचि महा मुनि॥ हस्त
केवल की [illegible] राधे जुगं [illegible] गंनि
[illegible] आपम रीष करि लीयौ। धरिल
रोक परिहाथ। सो गिब रानौं साधवै
नौ बतौ न छाडौं साथ॥३१॥ डूरी बात

सब जीवकी। मग [illegible] कहत हौं तुम आध
धरती ज्यौं अटरहैं। जे लागे हैं सुझ।
३०॥ अरिल॥ जे बलगे हैं सुजनि मेरे स्व
ग हैं। जन बाजीद बिचारि न ऐसें स्वा
न हैं॥ अष्ट सिधि नौ निधि न राषौं दास
तौ। पारि हां सुष देसत सुष मो हि नक
रौ यास तै॥३१॥ ॥दोहरा॥ या सनकौं
डौ दास कौं सुष देषत सुष मोहि।
बाजीद बिबेकी जीव है। [illegible] कहौ
थे हैं तो हि॥३२॥ ॥इति गुन अ
[illegible] संपूरणं समाप्तः॥ ॥अरिल
॥ सुमिरण के अंग के॥
और मौर सब छाडि धनी वहू ध्याईये।
मुकति करै पल मांऊ न मौज लिआ

रये। वैविदासकैपासहाछिलैजपनी
हारिहांटलतहैकिहिकोंमिनियानि।
यिअपनी॥१॥जन्मजातिहैबादियादि
ये।केरिपावकौं।मुसकालिसबआ
पनहोइगोजीवकौं॥जाकेहिरदैरा
मरैनिदिनरहतहे।पारिहांसुकातिमा
नेनहिफेरसाथसबकेहतिहैं॥२॥
नांनाभकोस्वरिफबीहैजीवकौंनि
सबासुरबासुरबाजीरसुमिरपुनिपी
वैकौं॥यहसुबानप्रासिद्धिकहतसब
गावरे। पारिलंआयमनअजामेल
तिस्योनगइननांबिरे॥३॥गाफिलर
हैवीरकहेकौंबनतहैं।सूगां

नसकैसासमुझौंराजिनतहैं।जागि
लागिहरिनावकहांलौंसोइहैंपा
रिहांचाकीकैसुहियक्योंसुमेंदाहे
रहैं॥४॥आजसुतौनहीकालिहिक
हतहैंतुमकौं।नावैवेरीजांनिजि
यमैंमुझकौंदेखतआयनीदाछिब
तावनहांवातहैं।पारिहांलोहैकौ
तौवचलैहौहीजातहैं॥५॥नलो
मायामोहमैंतनहिस्रम्ह शोसुनया
रायनधामआयजपोबकझोरि
नांवअग्यांनहिरहैनहिआवरोंपा
रिहांदीयासौबुझिजाइनियायर
गानइ॥६॥रटकुयौंमअरुमेंनिआ

म महला ले चेहर

पनैपीव कौं॥ माया मोह जंजार समेत
जीव कौं॥ कुटंब बंध धन धनही
कौ ते रहे॥ परिहां बादर की सी छांह
जान कहा बेर है॥ ७॥ घरी घरी घरिया
लघु कारे कहत है॥ बछ तगई है आ
व अलप ही रहति है॥ सो वेद कि कहा अ
चेतन जागि जपि पीव है॥ परिहां चलि
है आज कि काल्हि बटाउ जीव है॥ ८
[illegible] स्त्रु शी को जात कहे हो कहा बेर
हो रहे सो विविचारि बात बहि फे
रहै मंत्र कहा बरबी स षेत है था
री॥ परिहां जाति नावै अब हारि जा
है रावरी॥ ९॥ परत त्रि दे दैनैन श्रव

[illegible] सुनत है॥ ऊसर बोवे बीज का
सो सुनत है॥ चरन कवन चित दे
हत तिओर सो॥ परिहां तोरे बनत नव
रस्यां कसि रि मोर सो॥ १०॥ तिन तैं हर के
होत कहां जग जी तिये॥ तजि बस रस
थी नीर कूप जल पीतिये॥ कहि [illegible]
कौं याहि आस तजि और की॥ परिहां
[illegible] बाजीद बिचारि कही है और की
[illegible] छाडि गहि सरन्नि सिमार
रे बिना रांम के नांव नलो नहीं और
॥ ओं हूं सकौं न पत्याइ बुधि [illegible]
मै॥ परिहां जप तप तीरथ [illegible]
नाव मैं॥ ११॥ गीत कवित गुन छंद प्रबं
ध कां नियै॥ तिनि मैं हरि को नाम निरंत
रि आंनिये॥ जन बाजीद बिचित्र करा वे

क से सहला लें चेहरे

कौंन सौं॥ परिहां सब मालनि कौ स्वाद
लग्यौ इक लौंन सौं॥ ९२॥ अरथ ना अया
यां ना तिरे हैं लोइ इरे यां मक हत कति मं
गन बूडे तो कोइ रे॥ करम सु कितीयक
वानि लिखे हैं जांहिगे॥ परिहां हाणी के अ
म वारन कै कर जांहिगे॥ ९४॥ ज्यूं तूं कूरव
पटा हि गो बिंद गाइयो॥ राम नाम के लेत
[illegible] पक [illegible] या इयो॥ [illegible] न व च वा जी दव
[illegible] ली गि यो॥ परिहां पकरो सांगि अ
[illegible] नि [illegible] गि रे॥ ९५॥ पढौं नांव
[illegible] ली [illegible] दियो [illegible] के
[illegible] पचुनौं ती दीदियौ॥ रंचक चिणगी अ
[illegible] र अबर या॥ परिहां कोंवन
[illegible] का [illegible] सबरे॥ ९६॥

॥ अरिल बिसवास के अंग की॥ ॥
हिरदै न राख्यौ बीर कलपनां कोइ रे राई
घटै न मेर रच्यौ सो होइ रे॥ समदी पनव
पंडे ज्यौं बसंन धाव ही॥ परिहां लिख्यौ कै
लम कीको रउ है पुंनि पावही॥ ९७॥ जो
के छठि लिख्यौ लिलार सो इ पर यादि ये
॥ काहे कौं बाजीद अनंत क इ जाइये
॥ [illegible] थलां [illegible] ते [illegible] कि सम [illegible]
यो॥ परिहां बांमन [illegible] ने सही आइ है नी र
॥ ९८॥ बिन ही मांगें बीर सबै कोई लहत ह
तौ काहे कौं दौरि छुनी सौं कहत है
द ब चन बाजीद बुरौ है लो ई कै परिहां
या मानस कौ धरम रहत न ही की इ रो सें
जो जीय है कछु पांन पकरि रहि मन के

लिपटै हय कौ हेत जाचतैं जन कौं॥ प्री
ति सहित बाजीद रांम जो बोलै लई॥ प
रिहां रोटी लये बहाय नाथ संग डोल
ई॥ ५॥ रिजक न राषहि रांम सब निकौं
दे रई॥ काहे कौं बाजीद छ्रिथा कौ ऊ
कूरई॥ जब मसु फल का रिन ऊ किगै
बिद गाढ कैं॥ परिहां जा कौं ता कै पास
र है दौर्‍यो आइ कैं॥ ५॥ हाथै मनो बघा
र लेयो कहा जात है॥ रिजक आपनौं
जोर लिप्त नहो नहै॥ रोटी कौं बाजी
द लाल लिप्त यक॥ परिहां आलिगर कौ
देषैं नैनैं बिन जोय ही॥ ६॥ बोलित
जोनी देहि आपनौ लोइ रे॥ हुरी नलो
बीपी टगनै गही कौ इरे॥ साहिब के ब

समांन हंस कहा बग॥ के॥ परि
कही पीव जीव सब ज के॥
कलप नां बीर हिरदै का॥ थोई
कैं पंचपची सु सुषारैं सो ईय॥
जनहि के जीव समा हि कहा सि
हीं चैंच सबा नी छ्रनि सब निं
॥ ८॥ २॥

वे।इ[illegible]ती ईब्रह्मसौं चित्त लावै॥३॥एक
तकां है [illegible] मुनिनीकौ। एककहै उधारक
रिजि[illegible]कौ। हैंद्रतुरकूकहे रहदो ईस
तगु[illegible]निलैतपकै होई॥४॥रांमनक्ति प
बिन[illegible] मनिनिस्तारा। ऐवैलेउगके ब्योहार
॥भ[illegible]धर्मन जानैंकोई। जबलगत्रि
याक[illegible]सो[illegible]॥५॥च्यंतामनि केरो मोलि
बिका॥ [illegible]कल्पब्रिछका केघरिजाई॥
पार[illegible]काहैं। कोंनकौ चाहै। कांमधेन प
कौवे[illegible]र[illegible]॥६॥कर्मधर्मकरि रांमन
धावे [illegible] मननर्विचत्रमनमनलावे॥ इहि
बिधि [illegible]धुकहै उपदेस॥ ब्रह्मादिक च्यंत
सकै [illegible]सम[illegible]ह्मा॥ आदिअंतिजेते नय
साध[illegible]पाउपार। उनसबरनों अहिल्लादकौ
लनको[illegible]चालबिचार॥ [illegible]॥६॥ब्रह्मपुनसन
को[illegible]कचारी। मनऐ उपजे अधिकारी
पंच[illegible]बिकैरहे सदाई। लगमनभगनगोबि

दगुन गाई॥ १॥ प्रातसे छमुछकथा सुनं
ही। अरु मध्यान मृतमंडल जांही॥ संध्या
पुर बैकुंठ प्रवेसा॥ सनकादिक विचरैं
हिने सा॥ २॥ जैसैं गऊ बछ कौं नावै मा
तु मातु करि बालक धावै॥ त्रिया वृत जु प्रनी
रषियासा॥ सुनि दीदरसनकी आसा॥ ३॥
जबही पाव पौरि मैं दीनौं। उहै पार सत अं
तर कीनौं॥ पर घर गवन पूछि कै कीजै॥
प्रभु रिसा इउतर कहा दीजै॥ ४॥ सनका
दिकावोवाच॥ हंम जानै पहं महिषि छां
नैं। प्रभु कै निकट रहै सनमानैं। अनपर
चै कौ औगुन नांही। अहं बुधि आई मनमां
ही॥ ५॥ अहं गर्व कौं गहर नांही। होइ अ
सुर विचरौं जग मांही॥ सनकादिक नि अ
पयं दीनौं। हरिकासि बपु हरनाछि की
नौं॥ ६॥ जैरु बिजै क है सुनौं गुसांई। बडु
रि मिलैं कब अंतर नांही॥ सप्त जनम अ

राधकरा हं। कै विरोध तीसरै मिलाहं। ७
मित्र हि मित्र विसरि पुनि जाई। बैरी हि
रदै रहै समाई॥ जांनि अजांनि अगनि
कौ परसै। भाइ अभाइ ब्रह्म यूं दरसै। ८
प्रबल बली बलिवंत सुजोधा। नहि सम
न कोई त्रिभुवन सोधा॥ बर्ष सहस्त्र दस
दृष्टत जांही। जुद्ध होंस कौ पुरवै नांही॥
जो छिति प्रिथी रुपावतर चांपी। चाहि त्रि
दिक रिपृथी कंपी॥ करतु मकरत अन्य
था समर्थ। कीयौ बाराह चरित्र जन केर
था॥ १०॥ हति हरनाछि धरनि थिर थापी।
हरनांकासि बतन कौ ध्यौ पापी॥ हरि बै
बैरी हरि दासा। भाव भक्ति भेटै कृष्ना
सा॥ ११॥ सुर अरु असुर बैर मंडयौ ह
रनकसिब हु तप स्या गइ यौ॥ तब सुरप
ति सिवपुरी लगाई। अ सुंदर त्रिया बंधि ले
जाई॥ १२॥ मन मुछ नारद दरसन दीनौ।

छाया : रमेशचंद्र एम. शुक्ल

तबहिंइंद्रबकूआदरकीनौं॥ दीनबछल
हरिदासकहावै। परपीरातैंअतिदुषपावै
॥३॥ नारदकह्यौसुनौंसुरराई। निद्दिकरमक
रिलाज्ञनआई॥ इंद्रकहैअबसुनऋषुसां
ई। बालकहतौंत्रियाडरनांही॥४॥ तबहरि
गुंनसहितबजाईबीना। प्रहलादकौमन
हरिलीनां॥ तारकूंरामसुनायौबांनी। कृ
याकरीकाहूंनहींजांनी॥५॥ नारदकह्यौ
सुइंद्रसुनिआई। याकेउदरभक्तहैभाई॥ चा
रिबरषमेंगादरनांही। कैयौहरिभक्तअसुर
कुलिजांही॥६॥ अजातसत्रनांमप्रहि
लाद्हा। नारायणकौसेवगआद्हा। कौंणचू
कअसुरघरिआयौ। बिधनांबिधिसंजोग
बनायौ॥७॥ दूहा॥ ब्रह्माअंत्यजुएकरस।
कनककमिंत्रनहीहोई। जनगोपालजगदी
सकौंकुलकारणनहीकोई॥८॥२॥ सा
धकेलछिन॥ सांतसीलकपालअद्रोही।

ग्यांनबिग्यांनबिदेहीमोही॥ सारासारबिबे
कबिचारै। सत्रमित्रसमदृष्टीसारै॥१॥
गोब्रह्मनअंमंतनिसुषदाई। परमातमा
आतमासमाई॥ परदुषदुषीसुषीसुषपा
वै। ताहितैहरिजनतकहावै॥२॥ बकतू
मांतिकरिकीजोसेवा। तुमकौरद्दिकदे
हैदेवा॥ तबनमस्कारपरदहनदीनी।
तबहिंइंद्रबकूबिनतीकीनी॥३॥ छाडि
जुदेईनहूंलैजांउं। भक्तहेतरायौतुमठां
उं॥ रिषिस्थानरहीतबमाता। गर्भसहि
तअवितबताता॥४॥ बकूतनांतिसींचत
कुमिलाई। परघरजनमभलाजयहआर्द
पुत्रीबहनसुनौंरीबाई। होईपुत्रअप
नैघरिजाई॥५॥ हूंप्रसंनरिषिआसिकु
दीनों। मातातबहिसीसधरिलीनी॥ कि
यौउपनयदेहसुकौंनी। तबदेवगनबोलि
बांनी॥६॥ कैबिधिहंमकौंनाहरदीजै॥

छाया : रमेशचंद्र एम. शुक्ल

केहरनाकुसकहैसुकीजे॥सत्त्रअगनि
जलबिषैमैनाही॥रैनिद्योसबाहरिघर
मांही॥ ३॥ ब्रह्मसिध्दियैमरौनकबहौं॥हो
उहोउब्रह्माकह्यौतबहौं॥ दिब्यबर्षमत
तपुकिहिकीनौ॥ ह्वै प्रसन्न ब्रह्मा बरदीनं
॥४॥ तबहिहरनकसिपुघरआये॥माता
लेरिछितहोसिधाये॥ यमसमोहपूरोले
यो आई॥प्रहलादसुतजनमेजाई॥५॥
जनममयेदिबिदुंदभिबाजी॥सुरनरसक
लआरतीबाजी॥सबसंतनिकेमनिआ
नंद॥ अंतरजामीहैगोबिंद॥६॥ एकबर
ष द्वैतीनिकचारी॥पांचबरसकेभक्तिसं
भारी॥ प्रेममगनआनंदमैझूलै॥रहदसा
नयमिसतैफूलै॥७॥ दूहा॥ पंचबर्षको
जबनयो॥साधुपुत्रप्रहिलाद॥ जननीपा
लसमफैनही॥बालकेलिरसस्वाद॥१॥
॥ हरनकसिबलीयोसुत्रबुलाईयाकी

तुमकोलाजबडाई॥ राजनीतिसबजाइ
पढाउं॥ममकुलधर्मबसेष्टसुनाउं॥१॥सु
दिनमहूर्त्तसुक्रजुसोध्यो॥नीकेकरिराजा
प्रमोध्यो॥मल्लैमहूर्त्तबाजाबाजे॥घरघर
मंगलकलसबिराजे॥२॥ गानुकरतचेट
सारजुआये॥सरस्वतिओरगणेसपुजा
ये॥ बहुबिधिबालनिपूजाकीनी॥ प्रल्हा
दसोपाकनचीनी॥३॥ तबतिनिकह्योसुरा
जकुंवारूं॥पढैगुनैंसमझैब्योहारूं॥ तेन
मसिधिपटालिखिदीनी॥करस्योकरजुरि
भावनिकीनी॥४॥ रामभआयनलिखि
जानैं॥ कहैसुनैनऔरकीमानैं॥ संडाम
र्कौकह्यौपढिबाला॥जोसेषुसीहोइ भोवा
ला॥५॥ कहैप्रहलादसुवालहिजानौ॥
लोकतणिनिम्याबादबषानौ॥ जिहिको
योउतपतिवोॐकारा॥पंचततनेसकल
पसारा॥६॥ चारिखांनिजोनिचौरासी॥सु
रनरनरजीवतिकुंपुरबासी॥ अपरसनारि

विषुअंम्रतकीनां।मतगुरबिनाजाईचीनों
॥७॥षंडब्रह्मसुरचीवह्नुधरनी।देषीवा
राजाकीकरनी॥पाढ्यपढोंजिहिराजैरा
जा।औरपाठसोंनांहीकाजा॥८॥बिप्रग
येमोजनहिअस्नाना।तबबालकनिहठ
कियौनिदाना॥कहैप्रहलादआपनीगा
ण।हंमसबसषातुमारैसाथा॥९॥कौंनु
पाढतोहिलागैनीकौं।हंमसौंकहौभावतो
जियकौ॥मित्रकपटसमदोछ्रनजाईबि
दरांनकहैसमझाई॥१०॥कहैप्रहला
दसुनहुरेबाला।जनममरनजियकौब
डकाला॥जातैंजनममरनमिटिजाई।
होजानैंसोबडौउपाई॥११॥अम्रिलाइ
रतुवारिदिषाई।सुषनहीवसुजरिबरि
जाई॥अंधकूपमहैंमैंजोपरियै।तोभोसा
गरकैसैंतिरियै॥१२॥बिषबनबेलिअंम्र
तफलचाहै।बिषफलषाइअमरउमाहै
॥तोहनावकैसैंनिमतरियै।अरुजोपायं

पषांननिमरियै॥१३॥अग्निग्रेहकैसैंसुष
होई।कौंनभांतिसीतलताहोई॥सर्वजा
तपछिमकलआवै।नैंनबिनांकैसैंमघु
पावै॥१४॥कामूकेलिकामनिरसबीजै
पावपसारैंमैंकोसीजै।सुतपरिवारषा
वकीपासी॥तनधनजोबनरहैनजासी
॥१५॥जबलगरोगग्रसतनहिंभईया।त
बलगवोषदकाहैनषईयै।जबघररज
रैरूकूपषनाई।उदिमलौकहसैभा
ई॥१६॥जबलगपाइपरैनहीबेरी।तबल
गमार्गलीजैहेरी।जबलगरहैनहीरम
बारू।तबलगभजिबालकुंवारू॥१७॥
तातैंसबतजिबनमैंजाइयै।साधसंगति
मिलिहरिगुनगाइयै।ग्यांनवाक्यिवैराग
बिचारौ।इहिबिधिआपआपनयौतारौ
॥१८॥दूहा।रांमनांममहाजोनहीं।पुष
कौआवैगाशि।जनगोपालसषांनिसौं॥
कहीप्रहलादिबिचारि॥१९॥कबइय

छाया : रमेशचंद्र एम. शुक्ल

छाया : रमेशचंद्र एम. शुक्ल

हैं अह प्रहलाद [illegible]रे। ताताले उछंग बै
गये। मुष चुंबन करि हिरदै धारे। कहो पु
त्र यो हार तुम्हारे॥ ३॥ नी की बिद्या पढ़ी सु
भाषो। सो तुम मोतैं कछु न राषो॥ जो मांगो सो
देवो तुरत्त। मेरे कौंन बोल को अंत॥ ४॥ प्र
ल्हाद उवाच। श्रवन कीर्तन सुमिरन कीजे
चरन सेव अरु तन मन दीजे॥ बंदन करि दा
सन भावे। दिढ बिसवास तैं सषा कहावे।
॥ ३॥ अरु आतमा समरपन कीजे। नवां भक्ति
प्रेम मगन दीजे॥ बिद्या सो जिहि ब्रह्म मिलावै।
औरै बिद्या प्रपंच हि जांनै॥ ६॥ जब लग मैं म
रीन हि म्रलै। तौ तन पाइ कौंन बिधि फूलै। स
बज गु बंध्यो अहं अरु ममता। साधु सबन
[illegible]॥ ७॥ तो हा [illegible] कप कहीं
[illegible]री। जो भी को करि भीजे हेरी॥ सुरनर अ
सुर बिसै सुष ज्ञैसे। पसु पंछी सुष पावैं तै
सैं॥ ८॥ [illegible] सकल उपायो। सुषि
नें जगत बि[illegible] उहकायो॥ धावत [illegible]

कै पांनी। ग्यं जीव बंधे देह अभिमांनी॥ ७॥
सुक नलनी द्रिष्टांत दिषायो। इहि बिधि जी
व अबंध बंधायो॥ छाडि देइ तो कौ नैं बांध्यो
ग्यं अग्यांन करि दुष आराध्यो॥ ८॥ सो मैं
सौं बत गई पंचासा। बारह बालपन्य पुनि म
सा॥ कांम के लिग रहे कौ बोहारा। रांम भक्ति
बिसर्यो संसारा॥ ९॥ संचि तिमिटे सुषि
या भावे। और अबिद्या को को धावै॥ बार
बार नर देह न पइये। औसर गयें बहु रि प
छितइये॥ १०॥ दूहा॥ सुपन आइ संसार है
सोव सही लो सांचु॥ जन गोपाल हरि नां[illegible]
जगे। तिन निंद्रा भ्रम बांचु॥ ११॥ ५॥ इत
नी बात सु भी है जबही। असुर हिं नये अ
चं नौ तब ही॥ [illegible] लिषि लीनी गुल
ही। यह बिद्या कौनैं समुझाई॥ १॥ मम
द्रोही कौ ध्यांन दृढायो। सो हरना छिमुये
हं मभायो॥ गाइ बिप्र रिषि बेद अरु देवा।
ये तो करे बिष्न की सेवा॥ २॥ हंम इन की

छाया : रमेशचंद्र एम. शुक्ल

कीनप्रतीती।पुत्रबिगारसोकरीअनीती
अबलैछाययाहिसमझाऊ।नातरजीव
तरहनन पाऊ॥३॥असुररिसाइकहीयह
बांनी।बिसुप्रहलादसमत्यकरिआनी।तब
हिबिप्रप्रहलादहिलाये।साधुदंडअरु
भेदबताये॥६॥करखगायनजुलिखेतब
आई।औररेअछरपढिरेनाही।द्वैअछर
पढिहौंसुनिपांडे।हरिबिनुऔरपचासों
छांडे॥५॥तेरेपितादिसासबजीती॥
बेरबिप्रसुरडरेअनीती॥बिनासुनरं
मकोंकतमारे।साधुसोईपरकारिजसारै
॥कहैप्रहलादनमारैकोई।जोवरअग
निमैगायमोहिअघरअर्धमुपरबारपितायों
प्रगटभयोतबबाहरिआयो॥७॥ताहैरा
मकहोकोमारा।मारेरामतबहिकोमारे
औरमैंमरननहाथिहैजाके।हमतुमबिश्व
मरनसबताके॥८॥बारबारतुमसौंको
भाषै।अंमृतछांडिबिषकोचाषै।बालक

सबैजुबिनुतीकरही।कौनभांतिकेसेदंभ
निस्तरही॥९॥असुरकुंवारसुनौंममबां
नी।नारदतुकौबैदपढांनी।मैंतेमेरीयह
संसारू।यातैंरहितसुब्रह्मबिचारू॥१०॥
कामक्रोधमोहमदमछराजीतैइनहिभि
लैपरब्रह्म॥बालककहैसुनऊप्रहला
द।रुषिसोंकहाभयौसंबाद॥११॥तुमन
गयेवेइहांनआये।यहसंदेहकहौसम
झाये॥कथ्यपुरातनकहिसमझाई।मे
रौपितातपस्याजाई॥१२॥सुरपतिबांदिय
रीमममाता।उदरग्रभहौंरह्योसंगाता
।रुषिनारदकौदरसनपायो।बहुतभांति
सुस्मृतिसमझायो॥१३॥पुत्रीजांनिकरी
प्रतिपाला।हितउदेसप्रगटकेबाला।
सोहंतुमहिकहूंसमझाई।उत्तमदेहक
ष्टकियिआई॥१४॥हरिसेवाकौंकछूनच
हिये।अनधनबस्त्रसमर्पौनाहियोसे
वासामग्रीनहिचाहे।पैकेप्रेममन

रवा है।। यादिवा द्विजा नहीं अधिकारी। क्षत्री
बैस्य सूद्र त्रिय न्यारी।। रामभजन कौं सब अ
धिकारी। बुरा अति अलेछ बिचारी।।१६।।
प्रेमसहित हरि के गुन गावै। सब तें ऊंचे
सो पद पावै।। असुर कुंवार भक्ति मन ला
वै। जन प्रहिलाद हि गुर करि धावै।।१७।।
शुक्र पुत्र अति बिसमै भइये। अति आतु
र राजा पै गइये।। संडामर्क पुकारे जाइ। प
ढ़त्यौ पाग असुर के राई।।१८।। तेरे पुत्र क
है बिधि ऐसी। बेद पुरानन सब जे तैसी
। और सास्त्र संग के भांडे। राजनीति के
मार्ग छांडे।।१९।। तातें हम कौं दोस न दीजे।
जे नाने सो या कौ कीजे। औ वन बत्य जु
हरी हमारी। और यह हदि साजे है जु बिचा
री।।२०।। दूहा।। नगर ढंढोरो फेरियो। स
ब को मारन जाइ। जन गोपाल प्रहलाद
के एक राम सहाइ।।२१।। ।। दूहे कौ छंद
बाधो प्रहलाद। महामनि साध सुसां

ट प्रहार याकै रैं दिस चाय।।६।। महामन धीर
उ रैन सरीर लगावे जु अंग। रहैं बिष सं
ग।।३।। हला हल घोरि तें दे हिब हो रि छुका
वै मैं मंत्र न टूटै तिहिं दंत।।४।। नमो रे सु अंग
लप्यो हरि रंग।। तु पक रुती रु। बरिषै हि नि
र।।५।। गुरु सुर मेल्ल। बहै मकु मेल्ल। जु ईस
प षांन। बहै बाकु बांन।।५।। जो ला अकुच
कौ। चले अति बक्रा। य प्रवात न रक्षा रि सु दे हि
हि चारि।।६।। जिते हथियार करै जु प्रहार
रहै यच्चि हारि। सरीर न ही हारि।।७।। दूहा।।
चारि जाम करि जातनां। असुर रह्यौ नहिं कौं
प।। जन गोपाल प्रहलाद कौं। छुवै न गु गंभी र
गंभ।।८।।७।। जन प्रहलाद रहै न ब और स
नंकु चित्र को दीपक जैसे।। प्रान रह्यौ परमेसु
र संग। ता ती वावनल गी नहिं अंग।।१।। सां
चौ दिवु देत है जैसे। सीतल बहनि होति है
कैसैं। साचे कौ परमेसुर राषै। कहा जग
त अगांनी नाषै।।२।। दूहा निकरी असुर सौं

बात॥ हंम तैं बाचीनपेकोंघात॥ सब अव
धगुजसपैलगायो॥ बिचि बिचि बांटि हल
हल लायो॥३॥ ना जांनौ वो कूंने राख्यो॥ दिब्य
देह अंमृत सो चाख्यो॥ असुर हिरैं निछ मासी
होई॥ है प्रहलाद हि मारे कोई॥४॥ भोर भये
कह्यौ जल मैं बोरो॥ मिलि जंजीर धार सैं छोरौ
॥ ऐसी भांति डारि हौ जबही॥ मगरमछ ले
जेहै तबही॥५॥ ऊकम करत प्रहिलादहि
लाये॥ गरि लंगर लोह मगाये॥ बांधि असुर
जब बोरन लागे॥ लयो अचंत सो सोवत जागे
॥६॥ छूटि जंजीर बूडि गये लाई॥ पदम पत्र प्र
हिल्याद तिराई॥ तारे राम कों कैं कहो कोई॥
सिला तीरी जांने सब लोई॥७॥ इहा जिनि
कंठ ... नर है॥ तिन सों बांधौ धाई॥ जन गो
पाल प्रहलाद की॥ हरि किरी सहाइ॥८॥
॥ हरनाकसि बत बउगो रिसाई॥ अंध कू
प मैं डोरो भाई॥ मेरी बात न मांने कोनौ॥ टूटे
बं... कहा सो मोंसों॥१॥ पुत्र चाहि तैं मनो अत्र

ऊत॥ जो कुल धर्म न चालै ध्रुत॥ गहि प्रहि
लाद कूवा मैं दीनौं॥ माटी सिला पाटि तब
लीनौं॥१॥ त्राहि त्राहि सब कोऊ भाषै॥ छि
न छिन रांम कहां तें राषै॥ राम नहां रोसदा
म चेत॥ जांन हि नहीं जगत अचेत॥३॥
बिरह को छंद॥ रोवै ता की माई॥ परे मुरछ
ई रोवै ता की धाई॥ करे हाइ हाइ॥४॥ रोवै
पित धीय॥ नहीं मनों जीय॥ रोवै सब बीर॥
कहां मति धीर॥५॥ रोवै सब मित॥ परे ब
ऊ चित॥ रोवै सब बाल॥ पटक हि भाल॥
६॥ रोवै सब साध॥ कहां प्रसाद॥ रोवै गुरदेव
करे को सेव॥७॥ रोवै रिषि बिराय॥ कदा स
सदाई॥ रोवै पुरहाट॥ निहार सिबाट॥८॥
रोवै सब गाय॥ लियै मुष घास॥ रोवै म सुपंषि
निहारे हि त्रिअं हि॥९॥ रोवै गुरदेव॥ कहा हार
मेव॥ न काढ हि सासा॥ दैत्य के त्रास॥१०॥ दू
हा॥ सकल बिस्व कंपत भयो॥ दयत सों न ब

छाया : रमेशचंद्र एस. शुक्ल

छाया : रमेशचंद्र एम. शुक्ल

सा२॥ अबगति गति गोबिंद की। सुकौं इं
ल छीन लाय॥२॥ हरन को सिब कौं सुष सों।
मोन्हौं छिन आनंद॥ जन गोपाल प्रहलाद रा
ह। प्रगट पूर्ण चंद॥ १२॥ ए॥ मारग जो पृथिर
नित बदीनो। जे जे कारस कल जग कीनौं
। दिष्ष असुरमनि अचिरज होई। अबिगति
गति जांनैं नहि कोई॥१॥ कहि प्रहलाद इष्ट
को तेरो। जातें परहस सरैन मोरो॥ कौंन गु
री कहि संग उबारो। मैं तब कुन जांति क
मारो॥२॥ मेरो इष्ट सुनौं हो राई। डि
सब कियो अरु मंझि समाई। सचराचर मैं
व्यापक सारे। अग्यानी तिह हरि बिचारे॥३॥
रांम नांम निज मंत्र हमारे। जीवन जरी सदा
उर धारे। छ हृ गधार बिछ अगनि मंझारी।
जल थल पबत मो ति बिचारी॥४॥ जंम जो
रा मो कौं न बिचारे। प्रस्ले अगनि जन कौं नहि
जारे। सब को रांम कहे रे भाई। तातें हि मांहि

कहों अधिकाई॥५॥ रांम नांम सब को ऊगावे
बिन बिसवास कहा फल पावे। मरि के रांम
सती कहे हैं जे मो देषन हारक है घूरबै सो॥६॥
ज्यो अम्रत कलस सीस भरि लीजे। मरि जि
इये तौ सुषां न पीजे। रोटी पीठि भूष न ही जा
ई। बिन जल पियें न त्रिषा बुझाई॥७॥ तो घट
रूष आहि घर बारा। बिन घसि आये मरै गंवा
रा॥ रांम नांम को चोरो कीनौं। कृष्ण निकुसर
नि सुषदीनौ॥ ८॥ दोहरा॥ नाही आस स
रीर की। सब सुष कृष्ण जानि॥ जन गोपाल प्र
हिलाद यां सुमिरे सारंग प्रांनि॥ ९॥ १०॥
प्रगट भक्ति प्रहिलाद पुकारे। रांम नांम सुनि
रे जग सारे। बिन रोहे बिन नाचे गावे। बि
न ही भैं कर ताल बजावे॥१॥ लजया रहत रांम
रस मातौ। तूटे देह जु गगन सो नातौ। सब
सहित हरि नांम उचारे। ग्यांन ध्यांन बैराग
बिचारे॥२॥ साचु कहत जग मारन्धावे।

चोरहिकों उजियारो आवे॥ इहिविधि जगत
भक्त कों वैरी॥ धनि रांम राषे सुरनेरी॥४॥ दयंत
कुल बल दाव बिचारे॥ है कोउ प्रहिलाद हि मा-
रे॥ अब कै बांधि गिरि पर तें डारो॥ अहो असुर
मम कारिज सारो॥५॥ मों टक्क बांधि असुर लै
जांहीं॥ प्रहिलाद कै भै कछू नांहीं॥ असुर
कहै सुनि राजकुंवारा॥ कहा बिष्न अब करै
संभारा॥६॥ जल थल बिष्न पर्वत अरु आगी॥
षडग धार बिष तें भै भागी॥ डारो वेगि तुम
हिं नहिं दोषा॥ तुम सों असुर करै गो रोषा॥७॥
॥ डारत हि बंधन सब टूटे॥ जन रांम रां
म कहि छूटे॥ ज्यों पंषी आकास तें आवे ज-
ब प्रहलाद मगन गुन गावे॥८॥ दोहरा॥ ज-
ल थल पर्वत राषियो॥ षडग धार बिष त्रास
॥ जन गोपाल प्रह्लाद कों पूर्ण ब्रह्म प्रका-
स॥९॥१॥ हरनकसिप कहै सुनि प्रह- १०
लाद॥ छांडि क्यों न बिष्नु को बाद॥ तो हों पि-

ता पुत्र तू मेरो॥ राज पाट बिभौ सब तेरो॥॥
कहै प्रहिलाद बिष्नु पितु माता॥ सगो सनेही
ग प्रीतम त्राता॥ बिनु सब थोथी सगाई॥ लष
चौरासी आवै जाई॥२॥ माया मोह चिंता हि
बिसारो॥ मिथ्या जनम बिषै सों हारो॥ सुपनें
में रजधानी [illegible]॥ जागि परे तब दीसै काची
॥३॥ कैसो जाई कै आपन मरियो॥ पिता बिष्नु
कै सें परहरियो॥ बिष्नु कहत सो ऊ च्यो रिसा-
ई॥ मारो बेगि नागिन सी जाई॥४॥ चंदन के
बनि उपज्यो बांस॥ तब तब करै कदंब कों
नांस॥ जैसें सर्प अंगूठा लागे॥ नष सिष ल-
हरि हलाहल जागे॥५॥ तब हिं कांटि अंगू-
ठा डारो॥ मोह करै तो सबै सुहारो॥ तन कों
धन का हि सुहाई॥ बन दहटी तें बेदन जाई॥
॥६॥ सत्रु पुत्र कों मैं बनायो॥ कुल अंगा-
रन काहे जायो॥ [illegible] बस पै साष अरु स्यांन
लगायो॥ अंतरजांमी निकटि मिं आयो॥७॥ त-
ब तिनि नाग पास सों बाधो॥ समुद्र बोरि दियं त

श्रा राधे। तबति निगहिपर्बतसेंचाये। डोली
धरनिसेसमसिर कांपे॥ ८॥ पर्बतनये मांन कु
सिरफूला। छूटि पासि जलथलसमतूला
॥ सकलबियापीसबमैं राघे। जन प्रहलाद
रांमसति भाषे॥ ९॥ दोहरा॥ समर्थ राखनहार
है। तौ मारनहारन कोई॥ जनगोपाल ज्यौं जु
ऊ बिमारै। पै बालन बका होइ॥ १०॥ १२॥
होरी बहन कहै सुनि राजा॥ मो तैं सरै तुम्हारै
काजा॥ मैं बकु भांति तपस्या कीनी। तब सि
ब मोहि अैसै गति दीनी॥ ११॥ जारे जरौं न मारैं
मारौं। अब कैं काज तुम्हारौ करौं॥ बकु त
भांति कुरि का ठम गांठै। लै पैठैगी तुम अगनि
लगाऊ॥ १॥ बीबसं कोलै कर उछाह। म
[illegible] तब घरर चौका व
बिस्तारा। दसौं दिसा पर्बत से डारा॥ २॥ होरी
गोद लीयौ प्रहलादा। गनि तिकी अथ इकनी
श्री इ॥ जौ कौ कवा कौं दै सुप देषै हरि तैं बि
सुष असुरगति लेषै॥ ३॥ रजा रच्यौ अनं

मौ भारी। देषन गये नगर नरनारी॥ लै प्रह
लाद तन छि नयेंठी। भीतरि दै आडी कै बै
ठी॥ ५॥ जौ हर कौं छंदा। आयौ तब राय। भ
ई हाइ हाइ लगा व कु आगि। न जाइ सु भा
गि॥ ६॥ मारो इहि ताई। सहां कै आय॥ करी
गजबारि। उठै तिपुकारि॥ ७॥ जा दै हणिया
रा सन मुषसारा। कर कु कर जोरि। तिलाच
करोथि॥ ८॥ फिरै बकु जोधा। करै तु प्रमो
धा। सिचे घृततेला। सु अगनि कै मेला॥ ९॥
रुई रुकपासा। भरे जु आस वासा। तावे सन
सत्ता दयंत के हूत॥ १०॥ धरनि अकासा। अ
गनि प्रकासा। कहै सुदयंता। भाजैं मलचा
ला॥ ११॥ न जांनहि ऊंधा। कपा सुष संघारा
थे जाहि रांमा न हो इ अकोम॥ १२॥ दोहरा
च्यारि पहर घड़ी रहि सु जली। होरी कै गई राष
। कंचन कौ बांनौ भयौ। जरी घृच ची लाष
॥ १३॥ भक्ति द्रोह सब तें बुरौ। कब हौं कीजै

मांहि।हीरीअगनिजुजरीबुझी।जनगोपा
लतामांहि।।२४।।२४।।मनहीमांहिअसुरउ
षपायो।बाहरितौकछूकहिनजानावै।स
हिनसकैहरिकौपरताप।पापीकेजियसो
गसंताप।।२।।जबलगसुतप्रहलादअनेरो।
तबलगराजनहीइहांमेरो।बैरीपछिमोधि
इनलीनो।राजधर्मकुलएकनकीनो।।३।।
मीजीवतहीकरैअनैसी।सुवपाछेकरिहै
केसी।।करिप्रहलादहमारैनायो।बिछु
माहतैपरोछिजायो।।३।। सुरनरअसुर
उआगयाकारी।नाजानोतिंकहाबिचारी
।।नातरिअबगाहिमारौतोहीं।पीछेदोसन
दीजैमोहीं।।४।।कहैप्रहलादसुनोहोरा
जा।अधअज्ञानबकैबेकाजा।।जिहिरा
खोजलथलज्वालामांही।अजहूंहोतोहि
मेरासोनांही।।५।।जोमसिपूत्रबापछिम
नांना।गंगयमुनजोलौयेआंनां।सीत

लबहनिहोइजोकबहौं।रांमनांमनाहि
छांडौंतबहौं।।६।।तबपकरिषंभसोंब
ध्योधाई।जोबोलैताहिघालेयाई।का
टिषडगमारनकौधायो।प्रहलादकौभै
नहीआयो।।७।।मोहिबताइकहांहैरां
म।सारैसकलतुम्हारेकांम।।हैसबमां
हिसंतजनबूझै।कांमक्रोधमैंकैसैसू
झै।।षंडगषंभमैंतैमैंसोई।पूर्णब्रह्म
सतिकरिजोई।।हरनकसिबकरऊंचो
कीनो।हैहैकारनयोपुरलीनो।।८।।दोह
रा।।हरनकसिबकीबैरता।पलटिअस
नाहरहोइ।।यहीभावप्रहिलादकौ।गऊ
बछलोसोइ।।१०।।यहदयोणाकोदेषिबो।
सूझैतुमइनाहारि।।जनगोपालतैसोसु
हा।तैसोउहांबिचारि।।११।।१४।।नकबछ
लताकौछंद।।प्रगटोनरसंघ।जहांनि
जअंग।।फाटोतिनिषंभ।।कियोसुअचं

ना।१। उग्रो गलग ाजि। रह्यो रिपु लाजि। अ
ग्यांनी अबुद्ध। कियो तिनि युद्ध।२। गह्यो
लल काति। धरनि पछारि। जहां घर बाल
तहां मचीमार।३। दिवस न रंत। हत्यो नम
दंत। पुरष न नारि। सु ब्रह्म बिचारि।४।
नृसिंघानक तैस। डरे सुरसेस॥ अदभुत रू
प। न देख्यो अनूप।५। प्रहलाद कै अंग।
गरुड बछ संग। मारे ता हिंधा।६। निकट जु
जाद्र।६। रक्त से नैन। भयांनक बैन॥
बडे बडे दंत। सोहै गरि अंत।७। अ
निनाल। ते बाह बिसाल॥ दयाल दयाल
दयाल दयाल।८। दोहरा॥ भक्त बछल ता प्र
गटा। दिषि अरूप सरूप॥ जन गोपाल प्रह
लाद तब। कियो भक्ति के भूप।१। ॥१८॥
भ्रंस स्तुति कौ छंद॥ प्रभु समरथ। सब बेतु
म हथ॥ प्रसै छिन माहि। सिर जो सब नांहि
।१। दस न कि दिठाव। कियो जु पसाव।२। दे

सुर सैंन। देषैम मनैंन।२। अगाध अग
धा कहै सब साध। अतीत अजीत। कहै
सब रीत।३। अनंत गनंत। कहैं सब संत
अगाह अथाह। कहै सु अलाह।४। अले
ष अदेष। कहै सुर सेष। अभेद अछेद। क
हैं सब बेद।५। अपार अपार। कहैं निकार
। अतोल अडोल। कहै जु अमोल।६। अ
दीत अभीत। कहै गुन गीत। अजाप अथा
प। कहैं जु पाप।७। अदेह अछेह। कहै
जु अछेह। अनंग असंग। कहै जु अभंग
।८। दोहरा॥ सेस पार पावै नहीं। निगम
नेत जु संग।१। अरंकार कौ सिव जपै। स्तु
ति करी नहीं जाइ॥ समदृष्टी सब जीव
सो जल समांन रहै सोइ। जु कोउ संत
दास कौ। तहा विषम मो होई।३। बिग
सि कह्यौ नरसिंघ जू। मांगि मांगि प्रहला
द। तुम तैं कछु न राखिहों। कहि गोपाल सम
आदि।११। १६। प्रहलादो बाच। तुम बिन

नाथ कछू नहीं मांगो। देहु भक्ति दिढ तुम
सौं लागो। प्रेम भगति अंतरगति दीजे। तुम्हा
रे चरन कंवल रस पीजे॥२॥ रसना नाम नैं
न तुम दरसन। श्रवणनि कथा चरनक रप
रसन। बानी बिमल होइ गुंन गाऊं। मन मन
सा तुम सौं लै लाऊं॥३॥ अरु प्रभु साध संग
ति मोहि दीजे। यह प्रसाद अब सि मोहि की
जे। आठ सिधि नवनिधि मुक्ति न लेऊं। तुम्हा
रे चरन निरंतर सेऊं॥४॥ इंद्र ब्रह्म सिवपुरी
न भावै। अर्थ दर्ब की कौंन चलावै॥ सक
ल बिस्व को इस मोहि दीजे। पांनी डां तुड
ही सब की जे॥५॥ राज रिधि अमर पद रणे
रो। भक्ति छोडि मागै सो मारो॥ ज्यौं च्यं तामः
नि येकौ डीब छोकाल पहुछ यैं को दौ सं दे
॥६॥ इहि बिधि सेवग कछू न चाहि। माता
मनु ले पुत्र न्रु बाहे। सर्प अग्नि माटी हि क्ति
डावै। बालक दुसी माता दुख पावै॥८॥ स्यं
घ स्वांन की छीक हावै। बहुडे ले वह छस १२

म हियावै॥ सुक्र म प्रमु छु जन सक कांमी॥ तु
म कौं भावै अंतरजांमी॥७॥ हौ नाल कक
छू मांगि न जांनौं। तुम तैं नाथ कहा है छां
नौं। सुर सुर नर सुर नाग न भावै। चरनक
वल न लिय हृ लिय आवै॥८॥ दो हरनत क
दौ उकर माथै दीये। साधु साधु प्रहलाद
मम समांन गुन गाय है। कहि गोपाल सन
साध॥९॥ ॥१०॥ नि हि क्रम ब्रह्म की स्तुति ॥
नहीं तिहि पाप। नहीं तिहि पुंनि॥ नहीं ति
हि थूल। नहीं तिहि सुंनि॥१॥ नहीं ति
हि सा। नहीं तिहि याव। नहीं तिहि भेद॥
नहीं तिहि भाव॥२॥ नहीं तिहि कौंग। न
हीं तिहि नैंन। नहीं तिहि मुष। नाहीं ति
हि बैंन॥३॥ नहीं तिहि नासा। नहीं तिहि सा
सं। नहीं तिहि पिंड। नहीं तिहि बास॥४॥
नहीं तिहि हस्त। नहीं तिहि अस्त। नही
तिहि जीव। बिचार न बस्त॥५॥ नहीं ति

हियै।६। नहीं तिहि येटा। नहीं तिहि ओनि
त। बीज सहेटा।६। नहीं तहां संश्रुति। आ
वागवन। नहीं तहां बोल। नहीं तिहां मोन
।७। अजोनि अजोनि अजोनि अजोनि।
।८। दोहरा। अपनी जांनै आपगति। औ
रन जांनै कोइ। कौंन भांति फल बीज मैं
फल बीज कहोइ।९। सारद लिख्यत तन
अंत न कछु। वसुधा कागद होइ। महिमा
भगवंत की। क्यौं करि बरनै कोइ।१०।
अमृत रस प्रह्लाद जस। कहै सुनै जो
कोइ। अमर पद पावै सही। भक्ति मुक्ति
फल होइ।११। मैं मति सारु आपनी। क
ही जु घटि बढि बात। कहि गोपाल सुत
[illegible] नीकै समझत मात।१२। श्रीचा
इति श्री ग्रंथ प्रह्लाद चरित्र संपूर्ण समा
प्त॥ ॥श्री॥ ॥श्री॥ ॥श्री॥

॥ रामजी॥ अथ ध्रुव चरित्र लिख्यते॥
गुरु गोविंद प्रणाम करि जो मन बच क्रम
चरन निचित दीजे॥ राम भगति को प्रा
रंभ होइ। गुप्त बात समझावै सोइ॥१॥ स
त जुग त्रेता द्वापर गइयो। कलिजुग आ
६ वागवन जु भयो॥ पांडौं राज परीक्षत दी
नौं। कलि प्रवेस प्रिथी परि कीनौं॥२॥ रा
जा कहौ युद्ध करि नाई। उनि षडग कौ
म्यांनि समाई। तिहि राजा पै डेरो माग्यो
सरनागत कछु कौ नै त्यागौ॥३॥ बैस हत
पसु हत्या भाई। सुरा पांन हिं जिहि ये स्थ
ल। राजा पास कंनक लीयो मांगी। कलि
की छाह सु मति भ्रष्ट लागी॥४॥ आखे
क राजा बन जाई। कंनक छत्र सिरि ऊप
रि नाई। तिहि राजा कौ मन भरमायो। त्रिष
वंत है ड्यउ दिषायो॥५॥ सामिक आश्रम
राजा आयो। तब तिहि आदरस्यांन न पायो।

hundred two

૮૫૦ ગુ. 33

ધ્રુવચરિત્ર

हियौ ठि। नही तिहि ये ट। नही तिहि अोनि
ता बीज समेहैया ६॥ नहीं तहां संस्त्रांति। अा
वागवन॥ नहीं तहां बोल। नही तिहां मोन
॥७॥ अजोनि अजोनि अजोनि अजोनि॥
॥८॥ दोहरा॥ अपनी जांनै आपगति। अौ
रन जांनै कोइ। कौंन जांनि फल बीज मैं
फल षै बीज कहोइ॥९॥ सारद लिष्यत न
अंत कछु। बसुधा कागद होइ। महिमा
अनंत भगवंत की। कोंक रि बरनै कोइ॥१०॥
अंमृत रस प्रह्लाद जस। कहै सुनै जो
कोइ। अंतै अमर पद पाइयै। भक्ति मुक्ति
फल होइ॥११॥ मै मति सारू आपनी। क
ही जु घटि बढि बात। कहि गोपाल सुत
हेत कौं। नीकै समझत मात॥१२॥ इया
इति श्री ग्रंथ प्रह्लाद चरित्र संपूर्णम् सम
प्त॥ ॥श्री॥ ॥श्री॥ ॥श्री

॥ रांमजी ॥ ग्रंथ ध्रुव चरित्र लिष्यते ॥
गुरु गोबिंद प्रणाम करि जै मन बच क्रम
चरन नि चित दीजै। रांम भगति कौ प्रा
रंभ होइ। गुप्त बात समझावै सोई॥१॥ स
त जुग त्रेता द्वापर गइयौ। कलि जुग आ
६ वागवन जु भयौ॥ पांडौ राज परीछित दी
नौं। कलि प्रवेस प्रिथी परि कीनौं॥२॥ रा
जा कलि सौ युद्ध करि जाई। उनै घड ग कौं
मृग निसमाई। तिहि राजा ये डेरो मांड्यो
सरनागत न कछु कौनै त्यागौ॥३॥ बेस स्त
य सु हंसा भाई। सुरापांन हि जिहि ये स्त्री
ई। राजा पास कंन कलीयो मांगी। कलि
की छाह सु मति नहीं जागी॥४॥ आषेट
करा राजा बन जाई। कंन क छत्र सिर दिय
रि जाई। तिहि राजा कौ मन भरमायौ। त्रिष
वंत है दयादि षायौ॥५॥ सभि कु आश्रम
राजा आयौ। तब हि तिहि आदर मांन न पायौ

मतकुअयगरेमैमेल्यो।सुदासमाति
अनलगहिमेल्यो।६। देहदसाआत्मपुन
भूलै।सुखसागरमैंमुनिवरफूलै।जे
सोसर्पप्रहचकीमाला।यहकृतककरिवि
कुरेजनुसुवाला।।७।। तबलहंसशृंगीरिषि
सुतआयो।देख्योसर्पतबक्रुतदुखपायो।।
सततोसमैंतहिकपाई।विनअपराध
सजाकिनिपाई।।८।। जेवराजासिरिछ
अउतारयो।ज्योंबुध्यांनुमनमांहिविचारयो
।।कोनकृतककरिहौंघरिआयो।।नारचनं
सापलंककलगायो।।९।। ज्योरंनमहितिस्
नीनाजे।उलटीमतीकृतविधिला
जो।।अनंधनर्येविप्रहिकोमांनें।जतीहो
इवनितासंगठांनें।।१०।। अबमोकोंमुये
वनिआवे।गुरद्रोहीकैसेंसचुपावे।जि
निकीसेवासोनिसतिरिये।कैसेंभांति
अवग्यांकरिये।।११।। मातबहनसुताग

मकीजै।कौनभांतिजगऊपरिजीजे।।
गर्उबिप्रअरुसाधसंतावे।कैसीभांति
वोयमायपावै।।१२।। भारतवंसधर्मकीरासी।
अपनोंग्यांनगहोअविनासी।।ब्रह्मस
स्त्रगर्भरछ्याकीनी।छोरीचक्रककहाम
निदीनी।।१३।। तबसम्यकशृंगीरिषिआ
ये।द्वारपालराजाहिसुनाये।राजाआइ
दंडवतुकीनौं।नीचीदृष्टिचरननिचि
तदीनों।।१४।। सम्यककहैसुनोहोराई।
भावीहैसोमिटैनकाई।।कर्मकियेको
लागेपापा।सततौसमैंयेहैसापा।।१५
राजुत्यागिराजावनिआये।मुनिकीप्री
तितहसुकधाये।जौंआराधेसस्त्रावे
क्रियाकरिसुकरसदिखावे।।१६।। कृ
हो।।अतिदुर्लभनरदेहहै।बारबारन
हियाइ।जनगोपालहरिकीभक्ति
नचरनचितलाइ।।१७।।भक्तोकाहुसें
भंमांनमोदेहहोदेहसजीपानंगुरुसत्र

छाया : रमेशचंद्र एम. शुक्ल

पि डर्लभं मनपै हे कुठ प्रियदर्सनं॥ ॥ सु
कस्यो कहै परीक्षत राजा॥ दरसन देन
रे मम काजा॥ नेरी मृतक हाकरै प्राणी
जोग जुगति गति जांन नाणी॥ २॥ तुम ई
समान सत गुरु नहीं कोइ। दरसन देव
सु कृतारथ होइ॥ चिन्त निन्त करि मो हि
सुनाउ। श्रवन पुट नि अमृत रस प्याउ
॥ ३॥ श्री सुकोवाच॥ माया तजो
[illegible]

कहो गुसाईं भक्ति बखानो। प्रछै मागजु
होइ अयानो। कौंन भक्ति कौंनै फल पा
यो। तब सुक ध्रुव इतिहास सुनायो॥
श्री सुकोवाच॥ ब्रह्मवंस जग बंदन राजा
सुत उत्तानपाद नृपति हि काजा॥ सुरुचि सुनी
ति ताकै द्वै नारी। बंस रूप कुल गुन अधि
कारी॥ २॥ नृप उत्तानपाद सुरुचि [illegible]
वै। सो सुनीति कै महल न आवै। उत्तम
कुंवर सुरुचि कौ जायो। ध्रुव सुनीति गर्भ
बिदित गायो॥ ३॥ कब हुक नृप बैठे सिंघा
सन। चवर छत्र सिर सुभ द सुभासन
ति हि औसरि तहां ध्रुव चलि आयो। बैठे
गोद मनोरथ पायो॥ ४॥ जब ही ध्रुव बैठ
न कौं कीनौ। बालक जांनि नृपति सो ली
नौं॥ दैखि सुरुचि अति उर रिस आई। गोद
मांहि तै लीयौ छिडाई॥ ५॥ नृपति गोद

जो। पै तो हित्तावे। मेरी कृपाकौं न फिरि
आवै॥ तूकरत्न गढु रत्नगाकौ आयो। गो
दमाहि बैठन को आयो॥६॥ तप बिन राज
तेज नही पावै। अजा कंठथन [illegible] धन आ
वै। कहै तेसर अन बर्जी ठै। सरअरिके
बकुतडुपयारी ठै॥७॥ सो तिसालकेसंस
[illegible] सचन कीतनो सुहा [illegible] ग
[illegible] मंदिर बाहरि कीनो। निंदा बच
न बकुतडुपदीनो॥८॥ दोहरा॥ बकुतनै
ति करि [illegible] दियो। रांनी कीयो न सोच
[illegible] मिटै नही। [illegible]
[illegible] सो तनधु [illegible] माता पे आये। नै
नीर प्रवाह बढाये। माता कहै पुत्र कि
नि मारे। पंच बर्षके बालक बारे॥ [illegible]
वै रोदत तब बचन नहि आवै। बकुतनै
ति माता सम झावै। माता कहै पिता वै

मेरो। बिदिमान न रत्ता कौ तेरो॥ [illegible]
म्हारो पिता न्यपति मम न रत्ता। बिधि सं
जोग बनायो करत्ता। पिता जो नि हो बेब
न गईयो। गोद मांहि रोमीग हिलईयो
॥ [illegible] करि महल निका [illegible] त्रा
स देइ दुरबचन निमारयो॥ असी नीति
बकुतडुपदीनो। राजा कछु सहाव न
कीनो॥ [illegible] ॥ तातें दौप्र छत होतो कौं। कौ
न सरन सुष कहो सु मो कौं॥ माता बाच
सुनि सुतताता मात लगावत। सजन सं
ही श्राता मित॥ [illegible] ॥ ता बिन सब थोथरी
सगाई। लख चौरासी आवै जाई॥ जिदि
प्रभू का छिन रकतैं लीनो। जनकी दुंद
मनि अपत न दीनो॥ [illegible] जीव अपराधी ता
दिन जो भैं। संकट परै तब कछु मानै
मातापिता बिधि के संगी। सुत कन्या जा
नैन अनंगी॥ [illegible] ॥ जठर अग्नि मैं जरत
लबारे। ग्रभवास संकट सब टारे॥ ग्रभ

छाया : रमेशचंद्र एम. शुक्ल

● छाया : रमेशचंद्र एम. शुक्ल

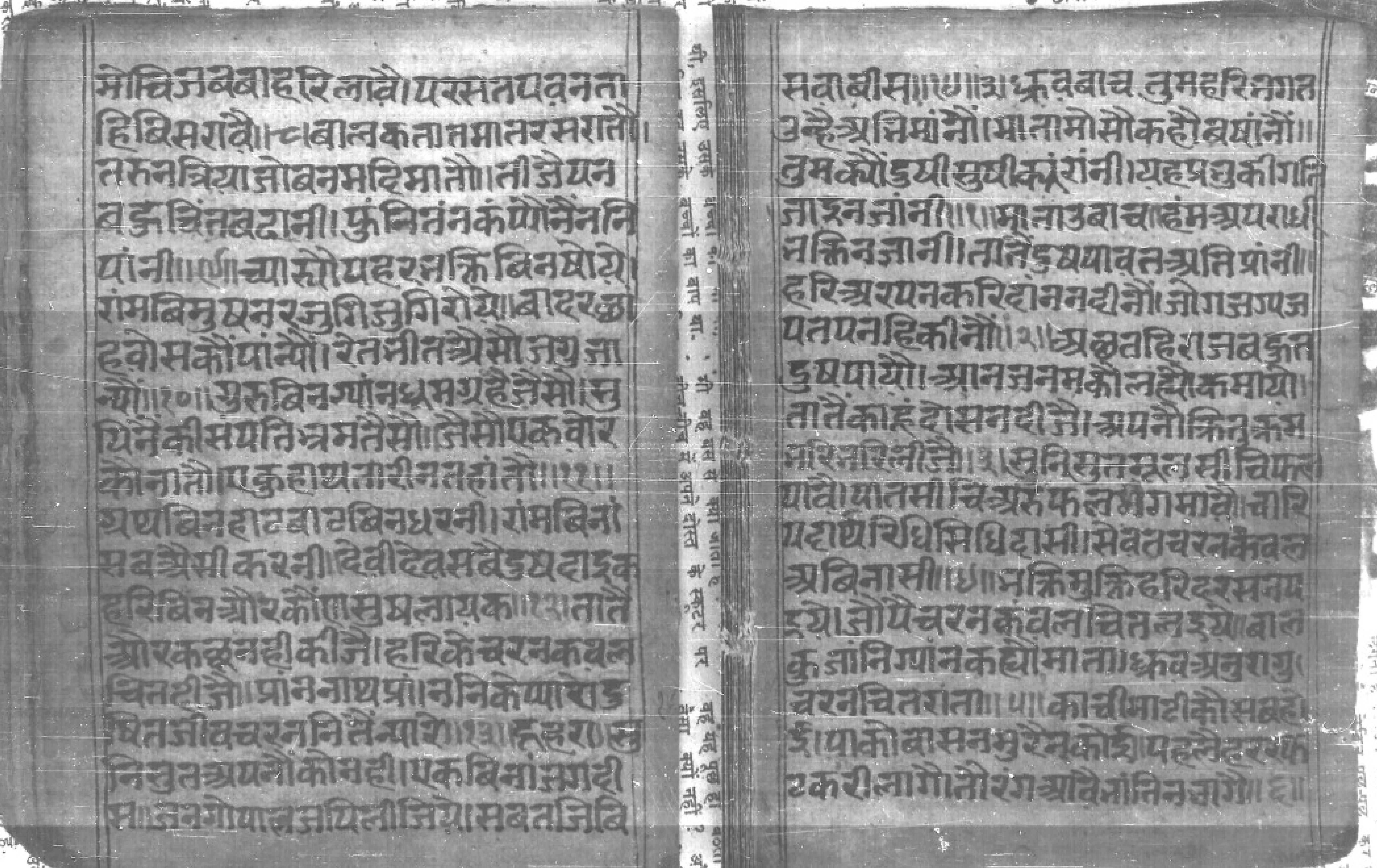

मैचिजेबबौहरिलावै।परस्सतपवनतौ
हिबिसरावै।।५।।बालकतातमातरसरातै।।
तरुनत्रियाजोबनमदिमातै।।तौजैयन
बडूचिंतबढानी।।फुनिततनकंपोनैननि
पांनी।।९।।च्यासोयहरभक्तिबिनषोये।
रांमबिमुषनरजुगिजुगिरोये।।बादरछा
हवोसकौपांन्यौ।रेतभीतअेसोजगुजा
न्यौं।।१०।।गुरुबिनग्यांनधमग्रहैजैसो।सु
यिनैंकीसंपतिभ्रमतैसो।।जैसोएकवीर
कोनातौ।एकुहाथनारीनलहांतौ।।११।।
अणबिनहाटबाटबिनधरनी।।रांमबिनां
सबअैसीकरनी।।देवीदेवसबैडुषदाइक
हरिबिनऔरकौंणसुषलायक।।१२।।तातै
औरकछूनहीकीजै।हरिकेचरनकवल
चितदीजै।।प्रांननाथप्रा।ननिकेप्यारेङ
षितजीवचरननितैंन्यारे।।१३।।हहरा।सु
निसुतअपनौकोनहीं।एकबिनांजआदी
सौ।ऊनगोपालअपीलीजिये।सबतजिबि

सबीबीस।।१४।।अथध्रुवउवाच।तुमहरिभगत
उन्हैंअनिमांनौं।।मातामोसोकहौबषांनौं।।
तुमकौंदुषीसुषीकरुंरांनी।।यहप्रभुकीगति
जातनजांनी।।१५।।माताउवाच।।हमअपराधि
नभक्तिनजानी।।तातैदुषपावतअतिप्रांनी।।
हरिअरपनकरिदांननदीनौं।।जोगजग्यजप
तपनहिकीनौं।।१६।।अछतहिराजबडूत
दुषपायो।आनजनमकौलह्यौकमायो।
तातैकाहूंदोसनदीजै।अपनौकिनुंकरम
भरिलिनीजै।।१७।।सुनिसुतकलसी।चिफल
पावे।पातसी।चिअरुफलभोगमावै।।चारि
पदारथरिधिसिधिदासी।।सेवतचरनकंवल
अबिनासी।।१८।।भक्तिमुक्तिहरिदरसनद
इये।जोपैचरनकंवलचितलइये।।बाल
कुजांनिग्यांनकह्योमाता।।ध्रुवअनुरागु
चरनचितराता।।१९।।काचीमाटीकोसबह
ई।पाकौबासनभुरैनकोई।।पहलेहरसकै
रकरीलागे।तौरंगआवैसांतिनजागे।।२०।।

छाया : रमेशचंद्र एम. शुक्ल

दुखबिनग्यांनउपजैकाऊ। सुखमैंसुकृत
रांमसहाऊ॥ ध्रूवमाता ये आग्यामांगी। हौंब
नजाइरहौंरागी॥ ७॥ माताकह्यौपुत्रतूबारौ
सातबरसलौंबननसिधारौ॥ भूखप्यासजो
जनकहौमांगै। सीतउश्नदारुणदुखलागै
॥ ८॥ बनमैंस्यंघबाघदुखककहियै। बीछीस
र्पकष्टतनसहियै॥ बालकु... निहतौको
माई। तबसुतनेरौकहाबसाई॥ ९॥ ध्रूव
उवाच॥ माताअपनैंग्यांनबिचारो। हेको
बनमैंराखनहारो॥ तुमहीकह्यौताततअ
रुमाता। सज्जनसनेहीसदासंगाता॥ १०॥
...कष्टमैंराखे। सुकजीवतन
...जिनभाखे॥ याअनुरागध्रूवबाहरिआ
यौ। राजायेमंत्रीसबधाये॥ ११॥ ... माता
कहपुत्रहिततजे। भयेग्यांनसंकोच॥ भा
वीमिटैनअसुतसुन॥ जनगोपालनही
सोच॥ १२॥ ७॥ मंत्रीयुवाच॥ बनकौगवन
कीयौध्रूवराजा। तानैंहंमआयेतुमका

जा॥ आइसुदेऊसुबातबिचारैं। हंमतुम
रीआग्यांपांवधारैं॥ १॥ बेगिकहौकछुबि
लंबनकीजै। दूरिजाइफेरिकिनलीजै
॥ तबराजारांनीकौंबूझै। ध्रूवबनिजाइ
तोहिकहासूझै॥ २॥ रांनीकह्यौकुसेरीदे
हू। जेहैकहाबोलिकिनलेहू॥ राजाक
ह्यौजाइलैआऊं। रांनीराख्यौध्रूवकौंभाऊ
॥ ३॥ तबलगध्रूवदरवाजेआये। पीछैतैं
मंत्रीसबधाये॥ ठाढेरहौबुलावैराई। तुम
कहिहैसोकरिहैमाई॥ ४॥ हेहूसेरअंन
कियोराजा। रांनीपठयेतुमारेकाजा॥
ध्रूवयुवाच॥ जिहिपरमेस्वरकीयोसेरतैंदूनौं
ताकैंऔरकहाहैऊनौं॥ ५॥ हरिनिरग
तेफिरैंनकबहौं। कोटिकजतनकरो
जोतबहौं॥ तबमंत्रीराजापैंआये। ध्रूव
नफिरैनृपबचनसुनाये॥ ६॥ तबराजा
कह्यौगांवकदीजे। मांनैतबहिफेरिअ

● छाया : रमेशचंद्र एम. शुक्ल

वलीजे। मंत्री ध्रुवकौं गांव सुनावै। तब ध्रुव चर
नकं वलचित लावै॥ ८॥ जौ मैं ना मम मनोरथ
कीनौं। तौ तुम नाम गांव कौं लीनौं॥ सो ना
म लेत काह्कै है भाई। अब मोकौं हरिचरन
सहाई॥ ९॥ फुनि मंत्री राजा पै आयौ। आति
आतुर राजा उठि धायौ॥ चौथौ अंसु अरध
सब राज। ध्रुव सबलै हु सं बारौ काजु॥ १०
पहलै सर अंनन नहिं दीनौं। अब कौं नाव
राउ कौं लीनौं॥ हरि मारग तैं जौ फिरि अ
उ। सती होई कत स्वाग लजाई॥ ११॥ रानी
जब हि गोद तें डारयौ। तब ही सजा कौं न
बिचारयौ॥ सोई करौं जु प्रभू कौं पाऊं। नां
तरि जग मैं सुप्रलदिषाऊं॥ १२॥ करमों क
रप करयौ तब राजा॥ मिथ्या देई पिता सु
त काजा॥ छोडौ मोहि करौ अपघाना। क
कौ पिता कौन की माता॥ १३॥ माया मोह
हंधौ संसारू। हरि बिन कौंन उतारे पारू॥
रू। राजा मंत्री सब पचिहारे। हठ करि ध्रु
व तब बन हि सिधारे॥ १४॥ प्रभु अनाथ के
नाथ कहावै। हरि कौ नांम बिरद बुलावै
वै। दीनदयाल पति तके पांवना। सबसु
ष देइ सहरि बिहावन॥ १५॥ दूहा॥ जाहि
न को इता हि प्रभु। जिहि प्रभु तिहि सब
कोइ। जन गोपाल नारद मिलै। हरि की
सरन सिसो होइ॥ १६॥ ५॥ नारद ध्रुव कौं बच
न सुनायौ। जो है के हां कहां तें आयौ। ते रे
माता पिता कुटंब कहां नाई। ग्रह तिपक्षि
कै सें बनि जाई॥ १॥ ध्रुव उवाच॥ आद
न जांनं तोरें न हिं जांनौं। सति रूप न हि
पिता पिछांनौं॥ तब लग यह जीव
क हियौ। गुरप्रसाद किछु सीलहियौ॥ २॥
पूर्व कथा प्रथम सब नाषी॥ माता नैव
त न ही राषी॥ चलत जु राजा लौ न दिया
गो। सब तजि हौ हरि सरनै आयौ॥ ३॥
उत्तानपाद सुत ध्रुव मम मनोऊ। कहन सु

● छाया : रमेशचंद्र एम. शुक्ल

ननकौं बचन सुनाऊँ॥ अपनौ नाम प्रकासौं
देवा। हौ बालक नहि जांनौं सेवा॥४॥ नार
द नांव गांव कछु नांही। गो दोहन बिचरौं
जग मांही॥ तब हि प्रणाम दंडवत कीनें।
अंकमाल नारद तरि लीनें॥५॥ प्रेम अंस
करि सी चे सो ई। अति बिधि तापतन की सब
खोई। चलि ध्रुव लौ हि फेरि ले जाऊँ। रा
जा पै सनमांन बढाऊँ॥६॥ रोनी करै तुम
रा सेवा। आग्याकारी उत्तिम देवा॥ बाल
कु तात मात सुख देवौ। तरुन त्रिया पुनि
तिनि करि लेवौ॥७॥ पुत्र राज दै बनहि
सिधारौ। सब राजनि की बात बिचारौ
... बाघ बनि संबुक भाई। भूत पिसा
च निदेखि डराई॥८॥ छुध्यां त्रिषा अति
तो हि संतावै। सीत उस्न दारन दुख पावै
औरौ जीव बकुत डुख दाई। तहां बालक
कौ कहा बसाई॥९॥ तुम तरि का कछु जु
किन जांनौं। मेरौ कह्यौ सति करि मांनौं॥

करनी कठिन कारी नहि जाई। सति सब
द कहूं सुनि भाई॥१०॥ दूहा॥ बहुत भां
ति करि मै कही। ध्रू कै नि ह चै रांम। ज्ञान
गोपाल न मै लयौ। हरि सारि सब कांम॥
११॥ चौ॥ ध्रुव नारद सौं बिनती कीनी
हूं बड भागी अब मैं चीनी॥ इहि औसर
तुम दरसन पायौ। धनि जनम जननी
ले जायौ॥१२॥ ज्यौं लागत लायामे ह्वै कौ प्या
वै। रोगी मरत धनंतरि आवै॥ नाग दव
नि ले है गरुड भुजंगा। जौ छूटत नौका कै
संगा॥१३॥ ऐसी बिधि तुम्ह तुम्ह दर्स कीनौं
भांति भांति अपनौ करि लीनौ। मात पि
ता कौं नहि दि कैरौ। अंध कूप गृह मह
अंधेरौ॥१४॥ पुत्र कुलित्र मरै जौ कोउ
तौ कत राजा छाडै राजू॥ राजन रक का
उ पके संगा। करै त्रिनी तिनि गति सौ अंग
॥१५॥ तातै ग र औसी न दि का चौ। दीनजा

● छाया : रमेशचंद्र एम. शुक्ल

ह्रिरि भगति बटावै॥ मोकों गुरु उपदेस
जु दीजे। मन बच क्रम अपनौं कर लीजे॥
५॥ ज्यों भूखे कों भोजन भावै। त्रिषावंत ज
ल बिन दुख पावै। ज्यों अकुलात फिरत अपिया
सा। यों हरि कारन ध्रुव भयो उदासा॥ ६॥ चं
द्र स्वाति ज्यों चंद कों डोलै। पिय पिय करै अ
नन हि बोलै। जैसे चंद चकोर मन भावै। र
वि कें उदै कंवल बिगसावै॥ ७॥ गाइ बिना
बछला ना बोलै। ज्यों बछा बिन गाइ अके
ली॥ आरति वैन संग ही भावै। इंधन अगि
नरां भगन जावै॥ ८॥ दूहा॥ करि प्रणाम ध्रुव
परि रहो जहि नारद के पाइ। दीन बछल ह
रि दास है जन गोपाल जस गाइ॥ ९॥ ७॥
नारद ध्रुव के मन की जांनी। ...
अति माया हि वांनी। तब ध्रुव कौं दीनो उपदे
सो। जिहि बिधि जानत संकर सेसू॥ मूल
मंत्र हरि नाम दिढायो। रैन दिवस इक तार

पढायो॥ श्रवन कीर्तन सुमिरन नाई च
रन सेई अरु तन मन लाई॥ १॥ बंदन क
रि दास तनु भावै। दिढ बिस्वास तें स
खा कहावै। आतम आत्मा समर्पन कीजे
नवधा भगति प्रेम मन दीजे॥ २॥ मन प
वन लै उनमनि लायो। मास छह थंभ रस सु
ख पायो। दसवें द्वार लगाई तारी। पर चै
ब्रह्म अगनि प्रजारी॥ ४॥ हिरदै नाभि कं
वल तुम सोधौ। ज्यांन ध्यांन सौं मन प्रमो
धौ। अरध उरध षट कंवल प्रकासे। अंत
र जोति तिन मे बासे॥ ५॥ श्री सन ध्यांन क
हे जम नैं मूं। प्रांनायाम सु प्रगट है मैं मूं॥
श्रवन नैंन नासा मुख इंडी। पंचो स्वाद ...
रि अति नीदी॥ ६॥ काम क्रोध छांडै अंह
कारा। जातैं श्री हरि रहत निनारा॥ राजस
अहंकार छांडि दै ममता। कुल अभिमांन त
जो भरि सरि मीता॥ ७॥ दीन होइ हरि कौ गुन
गाई। ऐसी भांति बिगि प्रभु पाई उस अनपुर

छाया : रमेशचंद्र एम शुक्ल

यह उपदेस जु दीनौ। माथैं मानि मानि धरि
लीनौ॥८॥ दूहा॥ ज्यौं सुखेत बीर ज बयौ
बरिखा लहि अघाइ। जन गोपाल सु फल
फलै। त्यौं फलक दैन जाइ॥१॥ चा नारद
बोच॥ हरि मारग बढु अंतर जाई। केह
रिकै हरिदास सहाई। यह लै तन मन
कुं निसंसारू। माता पिता कुटंब परिवारू
॥१॥ पुत्र कलित्र धन संपति राजू। ए चौ
मद त्यागै सरै जु काजू॥ इन को प्रीति
नै जो कोई। तब देवन तै अंतर होई॥
रिधि सिधि दे मन कौ बोरावै। मानि बडा
ई चित लगावै। जे रैंगटे बूडे उडि जाइ
परकाया प्रवेस कराई॥३॥ औरु
जानै। चालि करि जाय जहां मन
मानै॥ तहां चतुर अरु ग्यानी। मो
ह तजै न किं जि निजांनी॥४॥ जो को ऊंच
दीरै डालि मनु तैं इक डराई॥
आइ छूसरा है ई यठाई। बलकल छी

करि डहकौ जाई॥५॥ जो जन राखै हरि
यौं रिसाई। ताकौ कालन गारै काई। गुरु
गोबिंद सहाई जाकै। तीनौं तायन ब्यापै
ताकैं॥६॥ सिष्या दै नारद जु सिधाये तब
ध्रू चलै मधुपुरी आए। द्रिढ बैराग पर
मगुर ग्यान नूं। परम सुरसौं लागौ ध्यान नूं
॥७॥ दूहा॥ इहि बिधि बन मैं हि बास क
रि। निहचल चित लगाई। जन गोपाल
हरि भगत सौं मन मुख सदा सहाई॥८॥
॥९॥ नारद उक्त भजन मन धारयौ। मन ब
च क्रम गोबिंद बिचारयौ। सदाचार संत
नि सौं कीनौं। षोरस मांहि हरि कै प्रेम लीनौ
॥१०॥ अंन तजि कंद मूल फल षायौ। तिंऊ त
जि पत्र नितब आयौ। पवन जै तब जल
हारू। जल छाडौ तब पवन आधारू
॥ पवन तजत इंद्रासन डोल्यौ। तब हि
इंद्र कोप करि बोल्यौ। देवी माया लई बु
लाई। अब तुम ध्रू को डहकौ जाई॥

छाया : रमेशचंद्र एम. शुक्ल

रितुवसंतगंध्रपगावै। सूतेमदनहिपे
रिउठावै। मैंनांऔरउरबसीआईनहां
ध्रुवरहेरांमल्पौलाई॥४॥ बहुतभांतिबा
जित्रबजावै। अतिउचैसुरगंध्रपगावै॥
कोकिलकलासंगीतसुनावै। देवचित्र
कौनैंनहिलावै॥५॥ ध्रुवकैलागीब्रह्म
समाधी। तनसुधीनहींरामभक्तिसाधी॥
ऐसीबिधिध्रुवजाइबनलीनौं। तबदेवी
मायाछलकीनौं॥६॥ तिहिसुनीतिकौ
रूपबनायो। पुत्रपुत्रबचनमांहिसुनायो।
पहलेआंधीआनिचलाई। मेघवृष्टिपी
छेबरिषाई॥७॥ भीजेबसनसकलतनु
कंपै। हाध्रुवपुत्रपुत्रकरिजंपै॥ होंअनाथ
[illegible] एकैपुत्रलयोबैरागी॥
८॥ कहौकौनकैसरनैंजाऊं। बोलौपुत्र
बहुतदुखपाऊं॥९॥ धरनिपरैलोटैमुरझा
ई। अतिऊंचैसुररोवैधाई॥[illegible]॥ जागीसमा
धितबैध्रुवजानी। एकापकीकौआवैरा

नी। होइअग्यांनतौतबहीआवै। एकैपुत्रकौ
बनलिपगावै॥१०॥ ऐसैमोकौंमायाछलकी
नौं। तबध्रुवचरनकंवलचितदीनौं॥ अस
रिषिनारदकीसुधिआई। हरिमारगबहु
अंतरभाई॥११॥ हरिकीक्रिपादासनहिंछू
लै। गुरुप्रसादसुखसागरफूलै। प्रलैकाल
जनकौंत्रैनांही। गुरगोबिंदबसैंमनमांही
॥१२॥ दूहा॥ बहुतभांतिकरिपचिगई ध्रुव
कैथीरजध्यांन। मीनतिरैयंघीउडै जन
गोपालसिधिग्यांन॥१३॥ १०॥ तबकृपाक
रिहरिदरसनदीनौं। गुप्तप्रगटप्रेमरसभी
नौं। मांगिमांगिध्रुवजोतोहिभावै। सोसु
[illegible]हेजीयआवै॥२॥ अर्थधर्मकोमना
[illegible]देवअपवर्गकोकरनक्रा॥ हौंपराध
[illegible]कौनाई। सिवबिरंचिसबकरतबडा
ई॥३॥ [illegible]केसंगलग्योहैंओलौं। बिनहि
बचनबुलायोबोलौ॥ [illegible]पायेजीबुप्पायोपी
ठी। [illegible]॥४॥ गाइबछ

छाया : रमेशचंद्र एम. शुक्ल

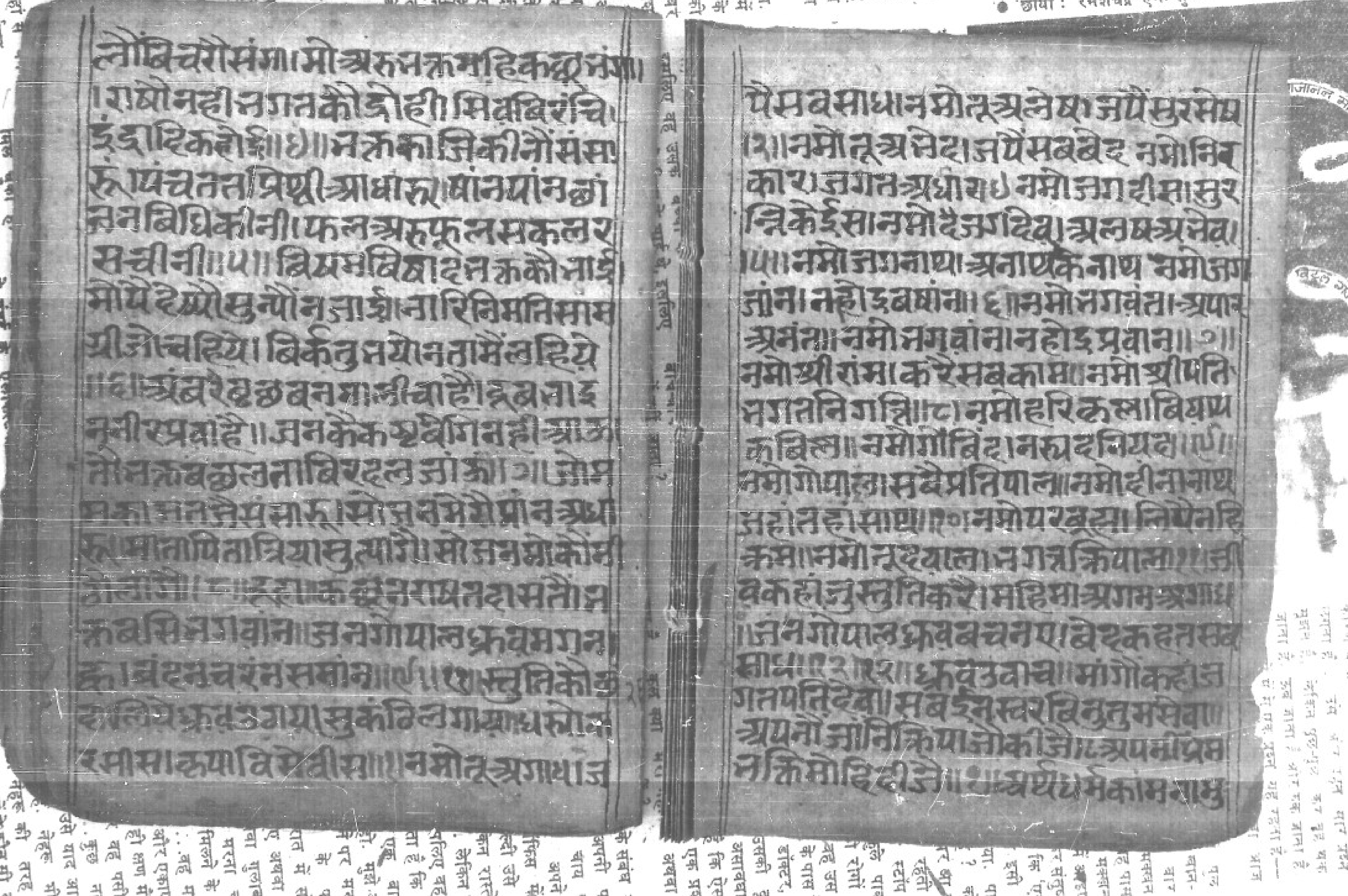

लोंबिचरोसंग।मोअरुभक्रमहिकछुभंग॥
।राषोनहीभगतकोद्रोही।सिवबिरंचि
इंद्रादिकतोही॥४॥भक्तकाजिकीनौंसंसा
रू।पंचतत्वप्रिथीआधारू।षांनपांनछां
जनबिधिकीनी।फलअरुफूलसकलर
सचीनी॥५॥बिसमबिषादभक्तकोभाई
मोपेदेष्योसुन्योनजाई।नारिनिमतिसास
श्रीजेच्चहिये।बिकैतुमयेनतामैंलहिये
॥६॥अंबरेछछवनमालीचाहौंइबनाइ
नलीरूपबाहे॥जनकेकष्टबेगिनहीआछे
तेभक्तबछलनाबिरदलजाऊं॥७॥जोप
भक्तामनतेसुनारू।सोतजनमेरोप्रांनअधा
रू।मातापितात्रियासुत्यागे।सोजनमोकोंम
लागे॥ ... कछुनरायनदासतेंभ
क्तबसिभगवांन॥जनगोपालध्रूवभगान
कें।बंदनचरंनसमांन॥९॥२॥स्तुतिकोक
दलियेध्रूवउगाय।सुकंविलगाथ्याधरपो
रसीस।कृपाविसेवीसा॥नमोतूअगाध।ज

पेसबसाध।नमोतूअलेष।जपैंसुरसेष
।२।नमोतूअभेद।जपैंसबबेद।नमोनिर
कार।जगतआधार।३।नमोजगदीस।सासुर
निकेईस।नमोदेवाधिदेव।अलषअभेव।
।४।नमोजगनाथ।अनाथकेनाथ।नमोजग
जांन।नहोइबषांन॥६॥नमोभगवंत।अपार
अनंत।नमोभगवांन।नहोइप्रवांन॥७॥
नमोश्रीरांम।करैसबकाम।नमोश्रीपति
भगतनिगति॥८॥नमोहरिकस।बिघप्प
कबिल॥नमोगोविंद।नरूपदनियद॥९॥
नमोगोपाल।सबेप्रतिपाल॥नमोदीनानाथ
अहोनहासाथ॥१०॥नमोयरवस्ता।निषेनहि
कर्म।नमोतूदयाल।भगतक्रियाल॥११॥जी
वकेहीतुस्तुतिकरै।महिमाअगमअगाध
।जनगोपालध्रूवबचनए।बेदकहतसब
साध॥१२॥१२॥ध्रूवउवाच॥मांगोकहोज
गतपतिदेवा॥सबइनस्वरविकुतुमसेवा॥
अयनोजानिक्रिपाजोकीजे।अपनीप्रेम
भक्तिमोहिदीजे॥१॥अर्थधर्मकामनामु

छाया : रमेशचंद्र एम. शुक्ल

क्रिफलमांगेहौंतिनिदेकु। एकुपल।मिथ्यजो
निबालकजोमांगैं।जननीनीबदेइगुडत्पा
गैं॥२॥बहिनमातामारीदेई।अगनिहाथघ
लनगहिलेई॥कूपपरततैमाततउबारै।औरौं
मतलबकृतबिधिटारै॥३॥ज्यौंच्यंतामनिदैकौ
डीलीजै।यांहनबदलैपारसदीजै।कामधे
नतजिअजाबिसाहै।अंमृतछाडिबिषैसु
षचाहै॥४॥कलपबृछतजिसेंबरसेवा।मू
वालोपछिनावैदेवा॥हौंअग्यांनबालक।
प्रभुऐसौ।तुमसर्वग्यदेहु।किनितैसौ।
ब्रह्मलोकसिवइंद्रअस्थांनं।सुरसुपतनजे
भेजैभगवांनं॥अलपबिहिसुखपथवीरा
ज।तामैंसख्यौकोनकैकाज॥६॥सुपन
मतनआदिबषांनैं।मराफलैसबकोईजा
नैं।जाकोमृततताहिसपकेसौं।सुणिनैंकी
संपतिभ्रमतैसौं॥७॥इहाकछूनचाहि
येनगतकैं।मुक्तिबेरहततउदास।जनगो
पालतादासकैं।हिरदेकरतहरिबास॥
॥८॥१३॥श्रीभगवोवाच॥साचीबातकही

धूवऐसी।मेरेभक्तनकैदेंसबतैसी॥सु
रनरनागलोकनहिनीकौ।मोबिनसबैम
गतकेफीकौ॥१॥येरोगदेषिउपचारजुकी
जै।बैदहिजिनसरोगीकीजै॥तुसकांमजन
नीडुखपायो।राजकाजबनमैंउठिआयो॥
२॥मुक्तिदेवतौकोईनजांनैं।मरिषिबरि
गयौकौंनयहमांनौ।राजदैंउकुलकल
सचढावौ।इहिबिधिअपनीभक्तिबढां
ऊं॥३॥भक्तिबढावौंअंतरजांमी।भमग
तिकहौकहांकैहैस्वांमी॥मममआगपाजो
कोऊपारै।ताकौकारिजकौनबिगारै॥
॥४॥बाजीसौंदषैसंसारू।नटकौबालक
लषैबिचारू।बालकसर्पगंगरियांबाघ
धरिलेचलेआपनेंकांधै॥५॥अहिनडसै
बालककुडरानांहीं।अगनिजरिनिहचैम
नमांहीं।मेरीषुसीकरौतुमराजू।भक्तिमु
क्तिदैसारूकाजू॥६॥सेवासोईजुहोइंस
लमानौ।अग्यातजैमनलोडिगिविजांनौ॥सु

छाया : रमेशचन्द्र एम. शुक्ल

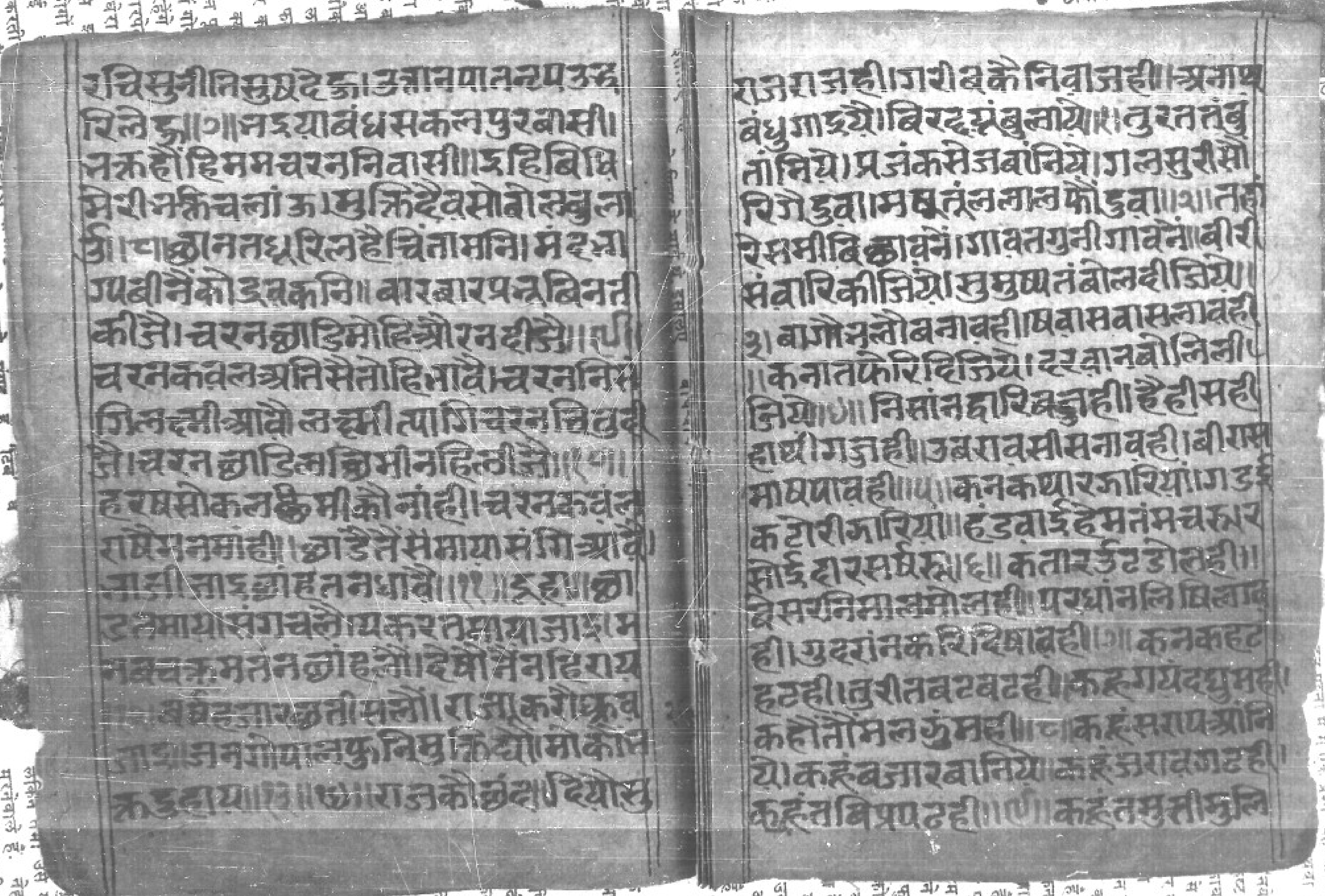
रचिसुनीलिसुछदेक्का। उत्रानपानलपउद्ध
रिलेक्का॥ ७॥ मदयाबंधसकलपुरबासी॥
लक्रहौंहिममचरननिवासी॥ इहिबिधि
मेरीभक्तिचलांऊ। मुक्तिदेवसोबोलखुला
उ॥ ५॥ छानतधूरिलहेचिंतामनि। मंदभा
गपवीनेकोइककनि॥ बारबारप्रभुबिनती
कीजे। चरनछाडिमोहिओरनदीजे॥ ६॥
चरनकवलअतिसेतोहिभावे। चरननिम
जिलक्ष्मीआवे। लक्ष्मीत्यागिचरनचितदी
जे। चरनछाडिलक्ष्मीनहिलीजे॥ ९॥
हरषसोकलक्ष्मीकोनांही। चरनकवल
राषेमनमांही॥ छाडेतेंसेमायासंगिआवे॥
नाही नाद छाहतनधावे॥ ९॥ इहा छा
डलमायासंगचले॥ ......मायाजार म
नबचक्र मतनछोडलो॥ देषोमनहिराय
......बेदजारकलतीसलौ॥ राजाकरोधक्षुध
......जनरोपालकुनिमुक्तिदियो॥ मोकोत
क्रकहाय॥ ३॥ छ॥ राउलकोछोडदियोसु

राजरायजही॥ जारीवकेनिवाजही॥ अनाथ
बंधुगाइये। बिरदसंबुलाये॥ १॥ तुरततंबु
तांनिये। प्रजंकसेजबांनिये॥ गलसुरीसो
रिजेडुवा। मखतूलनालफौंडुवा॥ २॥ नेह
रिसमीबिछावने॥ गावतगुनीगावने॥ बीर
संवारिकीजिये॥ सुमुष्पतंबोलदीजिये॥
३॥ बागोभलोबनावही॥ षवासवासलावही॥
॥ कनातफेरिदीजिये। दरवानबोलिलीजिये॥ ४॥ निसांनद्वारिवज्जुही। हैहीसही
हार्थीगजुही॥ उबरावसीसनावही॥ बीरास
माषपावही॥ ५॥ कनकथारझारियां॥ गडु
कटोरीझारियां॥ हंडवाईहेमतंमचरूअर
सोईदारसषिरूप॥ ६॥ कतारऊँटडोलही॥
......सपनिसालमोलही॥ परधानलि......
ही॥ गुदरांनकरिदिषावही॥ ७॥ कनकहट
हटही॥ तुरीतबरटवटही॥ कहूगयंदधुमही॥
कहीतोमिलकुमही॥ ८॥ कहूसरापआनि
ये॥ कहूबजारबानिये॥ कहूंउरावगटही
कहूंतबिप्रपढही॥ ९॥ कहूंतसुत्तीमुलि

यो।कहंतमगा अखुलियो कहंत तहीरचीरदी
दिष्यतसुषसरीरही॥१०॥कहंत तयांन फुकि
ही।कहंककर षुलही।कहंतमेवा षुलिये
कहंमीगईखुलियो॥११॥ बिरदभाटबो
लही।पावतनगअमोलही॥कीत्रि अपार
सोहये।जगतभ्रमोहयो॥१२॥ दूहा॥ हय
गयमयगयमनगय।ककमनयोसाब
सांजजनगोपाल।ध्रुवचकतचित।हवि
दीयोहरिराज॥१३॥ पातनकेतवप्रभुकी
आग्यामांनी।अकरनकरनइहेजियजांनी
॥ आग्यातजोबकुतडपपावें॥सेवगआमा
नेगकहाऊ॥१४॥तबध्रुवचलेनिसांनबजा
ई।दिसदेसराजनिसुधिपाई॥बकुतलानोंवि
सामग्रीकीनी॥भयेबिमाहकन्यातिनिदी
नी॥१५॥दीयेदाजेहाथीघोरे।सोनेरूपेदा
सिपटोरे।करिमनुहारिपहुनाईतिकी
नी।आगेचलेबिदानिनिदीनी॥१६॥ अस
भांतिनिकटतबआये।रिषिनारदनपब
चनसुनाये।तपकीकथाप्रथमसबभाषी

ध्रुवकीहरिप्रतंग्यारषी॥१७॥ नक्रिसुनि
सोंदीनोंराजू।सोपुरिबालोंमास्योराजू॥
राजाबोलेबचनउदास।अबलौंध्रुवके
मेसुषबास॥१८॥मरिषिपिरिगयो।किकाहूं
षायो।सर्पसंघजलअगानिसमायो।मेमी
अजाजायजोषोइ।कांमबिगरेसोधेसो
ई॥१९॥मेंअपराधीबालकत्यागयो।त्रियात्रा
सउगिसंगिनलागयो॥सोमकारीहठिकुरि
नममायो।ध्रुवनिगयोबकुरिनहीआयो
॥२०॥ स्त्रीजितमूरतुकमेंकहियो।पिंडदेहतो
पित्रनलहियो।दानपुनिसबकेरअकाजा
परत्यालापकरैराजा॥२१॥करैबिलापप्र
कुतडपपावे।नारदकह्योबेगिध्रुवआवे
॥सुरचिसुनैअचिरजकरैसोई।मरननगा
यो सीवकोहोइ॥२२॥सुनैसुनीतिबकुरिग
षपावे।मतिवकहैकिरिषिमनहिमनाये
तिहिऔसरिध्रुवहूतपठायो॥ जोइकहै
राजाहोआयो॥१०॥ प्रभूकीआग्यातुमहि

छाया : रमेशचंद्र एम. शुक्ल

छाया : रमेशचंद्र एम. शुक्ल

सुनाई। आइस दई सुकरो गुसांई गुरुप्र
सुपिता आयनों राजा॥ आग्या अंगाकरै नही
कोजा॥२१॥ आग्या मांहि चलै जो कोई। तीन
कौ कबहु अकाज न होई॥ हों निज सेवग प्र
भु पगायो॥ कहन संदेसा तुम पै आयो॥२२॥
हू हा सुरुचि सुनीति दोउ संग लै। रथ बै
ठे प्रिय राजा॥ पुरबासी सन सुष चले। जन
गोपाल ध्रुव काजा॥२३॥ दो॥ ध्रुव के डेरां न्र
पति पधारे। संग सुष कै ध्रुव संगि सिधारे
पहले सुरुचि कौं बंदनु कीनो॥ पाइ परस
राजा हि सुष दीनौं॥२४॥ तब अंक माल भरि भे
टी माता॥ प्रेम मग्न संकरि सींचे गाता॥ कुस
ल प्रसंन परसपर कीनौं॥ सजा वे मे आस
न दीनौं॥२५॥ तब राजा ध्रुव की कर तब ड
ई॥ धन्य सपुत्र पिता अरु माई॥ सात साषि
कौ नाम लिवावै॥ धन्य जननी जो पुत्र हि
जावे॥२६॥ पुत्र बिना निष्फल संसारू॥ सुर न
र असुर अनुकरन बिचारू॥ एक पुत्र तैं सर्गि
हि जायी॥ एक पुत्र तैं नरकै सिधइयो॥२
तब गदगद है ध्रुव बिनती कीनी॥ तुम्हारी
क्रपा अगनि हरि दीनी॥ बहुत भांति भो
जन करवायो॥ पांन सुगंध देत सुष पायो॥
॥२७॥ बासुर गयो निसा पुनि बीती॥ राजा
रांनी ध्रुव सों प्रीती॥ हरि बिस्वकर्म हि आ
ग्या दीनी॥ कंचनपुरी पलक मैं कीनी॥ ध्रु
राजा ध्रुव परम भांति जु आये॥ मनि मैं मंदि
र सब निदिषाये॥ तब राजा मन अचिरज
भाई॥ दछिन लंक उतर कत आई॥२८॥ तब
राजा नारद समझाये॥ ध्रुव कारनि हरि भ
हल उठाये॥ प्रभु समर्थ त्रिभुवन पति स्वां
मी॥ जांन राय हरि अंतरजामी॥ ॥२९॥
मंदिर कौ छंद॥ बिच बीच राज मंदिर॥ चहु
मंदिर कौ छंद॥ बिच बीच राज मंदिर॥ चहु
नी जराव सुंदर॥ चक्र बो रचि अनसारि आ
तहां तोन्र पक्र बारि॥ सु ॥ कुसोभा भांति
भ्रा जही॥ मंदिर नि प्रा तिराजही॥ सुनि छु
ति झुति जालरी॥ बिचन गन मोल लाल

री॥१०॥ इति कलस धजा फरहरैं। अरिअ
सुर देखि थरहरैं॥ दरवारि रवि प्रकास ही
अमरावति आभास ही॥११॥ बाजार अधिक
सोहई। तहां सुरस मूह मोहई॥ बिच बिच
बाग बावरी सर सुर आंनरावरी॥१२॥ रवि
चंद कंवल फूलही। तहां भवर बैठि भुले
ही॥ दरवाजे कोट राजही। सुरसुवन सभि
बिराजही॥१३॥ तोपमा अंनतको गनै। सु
दे छिदेखि मन मनैं। सुरवन जौन जांनियै
हरि दत्त कौंन बखांनियै॥१४॥ दोहा॥ प्रगट
नई कंचन पुरी। अजहू अटल ध्रुव थान
जन गोपाल सभितारिकौ। परदछिना
देत नित॥१५॥१०॥ ध्रुव राजाकी आग्या मा
नें। राजा ध्रुव सिवडौ करि जांनैं। अरस पर
सब कुतें सुख पावौ भक्त जांनि अति सो जि
य भावौ॥१॥ बहुत भांति रांनी सुख पावै पु
त्र पुत्र करि प्रेम बढावै॥ भई [illegible] धकरै
अति प्रीती। नृप सम मांन राखें सब रीती॥२

पुरबासी नैंननि के तारे। निस बासुर जिनि
होह निनारे॥ कथा कीरतन भक्ति कराही
सुमिरण करत जांम चलि जांही॥३॥ कछु
इक द्यौस गये बिधि असी। राजा के मनि
बन की बैसी॥ बहुत भांति ऊपज्यौं अनु
राग। तुम्ह ध्रुव राज हिं महि बैराग॥४॥ धि
ग यह राज पिता दुख सहियै। असे मो राज
कुरि कैत न हियै॥ राज करो हरि भगति ब
ढावे। घर बन दोउ समि करि ध्यावौ॥५॥
तब सब राजनि की साखि सुनाई। पुरख्या
गति असी चलि आई॥ पुत्र सपुत्र जु पाछै
राखै। नाही पिता कौं नय कह भाखै॥६॥ कह्या
प्रथम राज जगदीस दियौ। फुनि राजा दि
यौ राज उत्तांनपात [illegible] बचन चल्यौ जे
न गोपाल हरि काज॥७॥१५॥ सतजुग अ
व की प्रभुता होई। लछि बरस लौं जीवै
सोई॥ बहुत भांति करि प्रीथी फलि फूलै।
सब कौ सुख दुख्यौ नही दूलै॥१॥ बारह

● छाया : रमेशचंद्र एम. शुक्ल

छाया : रमेशचंद्र एम. शुक्ल

न गोपाल जपि वो करै। निस दिन बारूबा
रा॥११॥ इति श्री ग्रंथ ध्रुव चरित्र संपूर्ण स
माप्तः॥ ॥श्री॥ ॥श्री॥ ॥श्री

ninety four

-DMV 12
P235 [illegible]

रिपीया पेट ॥ [illegible]
[illegible] नाथ उंकार [illegible] सिंभ मग्रारी [illegible] ॥ चारे पहर अ
संग तनि दूरि संसार [illegible] लिबिया बोलीये ॥ ऐसे [illegible] गोरष
नाथ प्रकारं ॥ मत्स्य मछंद्री [illegible] राई ॥ [illegible] अपस
मत [illegible] सु [illegible] रे ॥ जाणि तौ गुरु तौ अलि
[illegible] बेद बिचारं ॥ द सबद दसे दोष हारे ॥ ॥ पहि आभ्यांतर द वौ
असु बंदा रे पांचौ मिलै तु [illegible] ॥ आदि मिचौ दासी [illegible]
ऐको दसी ॥ अगि [illegible] तु [illegible] ॥ [illegible] के [illegible] वा
[illegible] गीवा ॥ त्रिसंधि [illegible] ॥ [illegible]
ताई बाति हो छै [illegible] चाहैरा ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] संग [illegible] ॥ [illegible] गुरु [illegible]
[illegible] गोरष [illegible] ॥ [illegible]
तौ तडौ [illegible] ॥ [illegible] दव [illegible] दस्या
[illegible] ॥ ता गुरु बिंद्या नगरी मे ता [illegible]
[illegible] गुरु तु [illegible] ॥ ॥ ते का [illegible] चीन्यो गुरु अबै
[illegible] त्ता न्रोले ॥ अबै [illegible] गुरु [illegible] चे प्रान्हे ॥ ॥
॥ २ ॥ नाचवस गोरष नाथ [illegible] ॥ अबै रस [illegible] गुरु
[illegible] ॥ ३ ॥ रस [illegible] गई [illegible] गई छोडि ॥ त
[illegible] पूता जोग न होई ॥ ४ ॥ रसक सबदि गई ता ग
[illegible] गोरष नाथ गुरु [illegible] ॥ ५ ॥ २ सहै
[illegible] गोरष [illegible] ॥ [illegible] गवन [illegible] मे ता [illegible]
[illegible] ॥ तु [illegible] गुरु [illegible] ॥ [illegible]
तो जोग न होई ॥ [illegible] ॥ जहां [illegible] उपजे तहां फिरि
[illegible] ॥ [illegible] चित [illegible] ॥ ॥ [illegible] ताणौ

[illegible] ही [illegible] सो ॥ च व द द हिये इ नो पे के दं म दे [illegible]
मंदी जाई तिरा सा ॥ २ ॥ पवन को नी र ले आं ब र पा ॥ सास
सु सार [illegible] ॥ [illegible] न जो र ष ता घ ई म दो [illegible] ति [illegible]
[illegible] स मा [illegible] ॥ ३ ॥ जो [illegible] ग ग घर डाई ॥ प त त [illegible]
हिर लाके [illegible] गया नो [illegible] [illegible]
[illegible] त त [illegible] ती ॥ [illegible]
[illegible] तरि मे [illegible] नो ॥ ४ ॥ [illegible]
[illegible] म [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] नो ॥ ५ ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] नो ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] नो [illegible] ॥ ७ ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] जाई [illegible]
नो ॥ ५ ॥ ॥ ९ ॥ जोरन [illegible] नो तो न [illegible]
र त न अमे ते [illegible] चा [illegible] द न पंड के दा ॥ [illegible]
ता मो ल जाई [illegible] का लि से [illegible] ॥ ९ ॥ जै सी मा नि [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] चंदा [illegible] नारी सं ग [illegible] ॥ जां न र तं [illegible]
[illegible] ॥ ११ ॥ आदि ना थ [illegible]
[illegible] ते [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ना [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] न म [illegible] ॥ आ [illegible] नारि

नै आपै स्यो ना मू [illegible] अगि [illegible] रोग नां द तेलो द
ता पीई [illegible] हीस्यूं गंगा [illegible] ॥ आपै आरे पां नै [illegible]
[illegible] म [illegible] के द [illegible] दम स्य दो ई स मिकि री रा
[illegible] आपै [illegible] मि [illegible] री को ॥ रती का को [illegible] मासे की [illegible]
[illegible] मासे चार मासा [illegible] मास मे [illegible] धारे [illegible] जी
[illegible]
[illegible] जांणे [illegible] नपूं नो ॥ [illegible] दी
नै मस्त रा [illegible] पव [illegible] कियां नो [illegible] नाया तो १२१
[illegible] दि सभौ नो ॥ [illegible] ॥ जां [illegible] नै जो सी
[illegible] विचारी पद [illegible] परिषा कि नारी जी ॥ [illegible] हीजा
सियां [illegible] द [illegible] ते [illegible] रा [illegible] नौ [illegible]
पराचिया आप [illegible] सजी ॥ [illegible] बाप [illegible] हौ दि
[illegible] मा [illegible] पी [illegible] नायो [illegible] प
[illegible] रो ति [illegible] दि [illegible] नहा री जी ॥ [illegible] बिस दे
आदि [illegible] देवी [illegible] या ॥ [illegible] नी [illegible]
[illegible] कर [illegible] री मा [illegible] ॥ गंगा जम [illegible] पारी [illegible] डी पे
[illegible] छव [illegible] धरा [illegible] धरां ॥ ते
[illegible] सोहि नम [illegible] जी ॥ [illegible] ने [illegible] चांद
[illegible] दे जती गोरख [illegible] प
[illegible] कि [illegible] ॥ ॥ [illegible] पांचो [illegible]
[illegible] जाई [illegible] दो [illegible] जाणिये ॥
पे तीकि [illegible] बि [illegible] के ॥ बोलि जक री तौ [illegible] जी [illegible]
॥ आखी [illegible] तो [illegible] मोत्र [illegible] तो [illegible]
[illegible] ॥

सब देषे तो तौ वैठ उदासी। चौदी कै तौ पै इजापरी [illegible] बंक
[illegible] कै तो हिरदय नष हपा। तंगी मैत्र उते जौषि
ता सिल [illegible] हम मारथ नाथ मछंद्र का पूत तो षि
री ने मायां नयां अवधूत ॥ ५ ॥ गुर देव सब ज देव सो
री [illegible] आनंद देवा तो ही लीन ज्यों [illegible] देव अरे ने
देव पूजि [illegible] देवा तो देव दूर न वैन नाथ त्रिवेणी
गाना [illegible] दस वे द्वार के द्वारा ॥ ६ ॥ जुग जुग [illegible] तौ
तिरिय पार। गोरष [illegible] रिषि चार ॥ ७ ॥ मन सा
दे [illegible] पवन [illegible] तौ जौ दूजो
री [illegible] नाद [illegible] ऐक वौ सम
[illegible] पवन [illegible] ईस्ता गंग
[illegible] अदली [illegible] पुरा तो ॥ ८ ॥ पट संमोदि
[illegible] ले धारा। तलां वसे [illegible] चारी। हंस पवन [illegible]
[illegible] नौ मैं [illegible] ॥ ९ ॥ गंगा तीर [illegible]
अवधू फिरि फिरि [illegible] अर पवन तो [illegible] ती
[illegible] रवि ससि [illegible] ॥ १० ॥ चंद न सूर दोउ गगन [illegible]
[illegible] चोर अंधारो। पंच पार्ट के [illegible] पोट [illegible]
[illegible] ॥ ११ ॥ काया के धाम न [illegible] सतगुरि
[illegible] गोरष तो [illegible] चंगी चोर म
[illegible] ॥ १२ ॥ अवधू बोल्या तत विचारी। प्रीथी मां
[illegible] अदव द [illegible]
[illegible] पावस [illegible]
[illegible] तौ [illegible] चारि जुग

सिधि लहै॥ ७॥ पांच मद हम भैं परतत्त्व पाया। सप्रत दीप अस
नासी। नव छंदापिय मी ई किवाँस महि। पकादसी ई कतारी
॥ द्वादस त्रिकुटी ई ला ग्यो गत्ती। चवदसि चुंतनि लाई। औ
ऊ सकव लदलसी लब तीसों। पुरमराण तो गमरई॥ ९॥ द
सबै। निरजउ नम नो बास॥ सबद ई दस मों नों नाम तगो
यपना पन नपांडू कापूला। ब्रह्मचन्द्र पीव रहै सोना॥ १०॥ ११॥
वनमोदव ई लाव। वीनमो देवाई। ब्रत दी खिवाई। मंत्र कौ २२०
अपाई। पि नेति नेत्र अपिराजा देई रेव कोई। ताकरा मैं च
लावाव। गुरु नै मारा सोई॥ १२॥ वौंऊंकार अपै बाव मत्तं
न पायो। वौंऊंकार वापी तें सकत तसमा। वौंऊंकार नाम
...कै देव गुरु मोई। वौंऊंकार सापि ना सिधि न होई॥
...देती नाभू... नादे ती जोनन रहै। नादे ती नौऊ मायली
...देती नाभ्रु ला नादे ती जोनन रहै॥ नादै नौ नाद
नी मन्त्या धरि धारी। नादही तो आपै चाकू पीकू है चीं ना नाद
वीचै पाईये पद द्विवीनी॥ १३॥ बाई वादै बाई गाई गाई पं
लेकारै बाई सिद चक्र वेधै। अरधै उरध पीकिर रातें बाई रं
सारूपी पारे पाउ है वहै। बाई कप्रसादि बांद गुरु मुषि रहै
॥ १४॥ मन मारै मन... मन तारै मन तीरै। मन जे अस्थिर होई
तौ हि लुव ... मन अगाधि मन अनंत मन मथो सार। मन
ही पेष्यू दे बाकू विषै विकार॥ १५॥ सातिरु पीर जे अपै से
वरूपी बांद बाप इक तारवि आपै मोत तक तें चंद चा
रि लो ग बिधी ने प्रासि धरि आवे। पिंड मकी सफि होवे
अरतके नपावै॥ १६॥ पेई राता राम चंद अबैन गवाम
पेई पांचो तत बाकू पहाजि पूजा मा ईप चूतत वाके
माहि माया सो बदतगा कर ई मदरि पद जो नो॥ १७॥ १८॥

अवधू जाप जपद जपमाला नीची द्रौ॥ जाप अजपा जपीला [illegible] तौई
अगम जाप जपी तौ गोरष॥ चीन्हतौ बिरला कोई॥ [illegible] अवधू
तैबद नकापाकारि [illegible] चेतन्नि कारि जपमाला॥ अवधू
अजन मनांपानि गदर तौ जप तजो [illegible] चवाली॥१॥ ऐकै
[illegible] जपीला [illegible] [illegible] [illegible] उ ब्रह्म सम
पिर एकाकार [illegible] ऐक अमरि सिद्ध मगरा सुषि जाणि॥२॥ देवअपि
तुलिका पीला॥ तारि ला नौपारे॥ अैसा जाप अजपा तौ गोरष
देषिका धारी ला॥ [illegible]॥३॥ चित्रापि रीचि [illegible] जपीला [illegible]
नो नेतरम बिकारे॥ अगम जाप अजपा गोरष [illegible] नीत [illegible]
दनिज घानं॥ [illegible]
रूपानं॥४॥ चै अपि चतुर बेद [illegible] पर्यो॥ अरिया [illegible]
रि बोलि॥ म [illegible] जतिगीत [illegible] अजप [illegible]
तौ पीवन [illegible]॥५॥ [illegible] मत ता मैं चौगानं॥ [illegible]
लतत तु [illegible] तमानं॥ [illegible] गगनानं बेचि [illegible]
[illegible] नं॥६॥ ऐक [illegible] तत [illegible] नतमे एकै॥ एकै
तत उपाया॥ अंह तौ ऐक सूं परचा हूवा॥ तब [illegible]
समाया॥७॥ [illegible] जाद नैव्यं द द घोड॥ [illegible]
नापवनं मूलचांपि [illegible] सारि [illegible]॥ [illegible]
[illegible] नं॥८॥ [illegible] तपनला॥ [illegible] नकारि [illegible]॥ [illegible]
[illegible] का॥ चेतनि [illegible] मगल करि॥ अवरत [illegible]
[illegible]॥९॥ ति तवे नाकोई [illegible] न साधी॥ कीया ताव बि
[illegible] सो तैपकैरि आपणा ही हूवा॥ जाकै दं ढाजा [illegible]॥१०॥
[illegible] कहा तौ कोई नपती [illegible]॥ बिण [illegible] अनंता पी
[illegible] गोरष बोले [illegible] हीर [illegible]
॥५॥ १६॥

तत्तबणीजी ज्यो ततबणीजी त्यो मोरा मन पतीयाई ॥४॥ मन
जगोरख नाथ बणी जु कहीं पंच बल दमो गई ॥ सद गुरु
बावे बापर ताई मेरे मन [illegible] रहीया मोजा ॥ १ ॥ मिर दद
[illegible] बणी [illegible] जासा ॥ धु [illegible] मारा पसरया ह्ला तह जाणु
[illegible] पुर पि [illegible] बाणी [illegible] ॥ २ ॥ गोरख नाथ
[illegible] पुत ॥ गुरु बाणी [illegible] करणी [illegible]
तरणं ॥ गुर बचन [illegible] ॥ ३ ॥ १४ ॥ [illegible] २३८
जी [illegible] लेगणी [illegible] देरा ॥ [illegible] दसरावि
रम नसा [illegible] ॥ [illegible] ठ [illegible]
ब न अ स घो नक तो [illegible] सु सरा ॥ [illegible] घ [illegible]
ते [illegible] ॥ [illegible] न [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ १ ॥ [illegible] नक मोरा [illegible] सु सरा
बुद्धि अस घोनक [illegible] ॥ [illegible] गुरु [illegible]
[illegible] ॥ को [illegible] धवाली चे नांकी
धा कदु पकीया [illegible] ॥ म नपव न दोई [illegible] री ॥
उनमन [illegible] दूरा ॥ २ ॥ जा नगुरु दोई तू बाल्ह [illegible] रे
[illegible] चेतत [illegible] ॥ [illegible] ती तांती बाड [illegible] लागी [illegible]
[illegible] ॥ ३ ॥ यो [illegible] गुरु [illegible] पामी [illegible]
[illegible] बारी [illegible] प्रसाद [illegible] माया [illegible]
[illegible] ॥ ४ ॥ १६ ॥ तत बे ली रे तत बेली ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] न [illegible] करे बि
[illegible] ॥ [illegible] काया कुं जर [illegible] बाडि [illegible]
[illegible] ॥ पुरिष [illegible] तीकर [illegible] ॥ [illegible] के [illegible]
[illegible] ॥ १ ॥ मन [illegible] ॥ [illegible]

नौ। फल पै द्वारे है हा पूरि कै बेहा। जप्यौ रे मेरो गौ। गा॥ सु
जाणै॥ ना॥ है लहि या दौ लरि गिरि अब चै गगन पत्र तो फ
ला दि मडि सबै तडी दा। फु॥ रना गौ॥ फूले नो नु हा डरे ला
॥ ३॥ कोटन है लीकृप न मै र है मी चल है सी दो। पै फल पूत
सबै जो लै गोरख बाबा॥ नि सन है री घरि पै॥ ५॥ १६॥ बृ मो भा रम
ब्रह्म रगिया परे ना॥ गोरष बोले जानै सुजा न अपै बीज बिरान
पड ती म रवि बन नग्री ब्रो॥ फुल न फूल लबि न फल लिया॥ बी फकरा
बेद डा ब्य गयी तरबर चढिया॥ १॥ गगन नबिन चंद्र ब्याह
बिनसूल॥ कुड़ा बिन दरि चिढ़ीयो॥ ना॥ पक्षेपर नरण सेन लो
ता घर पर सोधियां है॥ २॥ सुंन न पुल लसे गा नहीं पूजा॥ धुं
दी बिन ब्र नहद गाजे॥ बाजी बिन पडु पष दूष बिन समापु
रा पवन बिल नेमा धरजै॥ ३॥ सद बिन गीली यां चर गहै
बिन तु लियो॥ चंबरा बिन ज लहर सारीया॥ स पर मा र पष कहै
पं पुलै॥ ह गा ड गस्या पुत्र पार बन लपटिया॥ ४॥ सस बेदस
दंपर कौ सा॥ धरती गगन नव अदो॥ गंग जमुना बीचि चष
लै गोरष॥ गुरु रक्षै दूध साहै॥ ५॥ १८॥ बैदं गोरष
नाथ करवौ द्वारि॥ गगन नै कै द्वारि चढिया॥ ई कबीस
पूरी ड नासि पुर ऊपरि सस बेद ड चरिया ॥ द्वादस
रति री तरि रवि सती॥ रमिषो रसमि व यां नं॥ प्रतस
दस अंमृत बिचारि उनमनि च्चरत ता घियां नं॥ ७॥ नाद
ना दव गरजै गगन पाछि प डमपा ना॥ ८॥ डीढी डल
र ना चै॥ पात तप रवत ता॥ २॥ चंद सूर नी कद्दा की
द्री धरे ता॥ तस मे उल मता॥ ना दीव दीसै गी च्या कासी

नाथ गुरु कोचे ते ॥३॥ तो नमे साहि ये गा लो दे या ईकि वी स
सदस श्रम मे फा गा । न दत रि ना की धुरि धे गुत्ती पु रो मु
मनी च दी श्रम मं ते । मछ दू पू सा दे जा तो गो रष बो ल्या त्रि
रत नी सिधि ते यां न ॥४॥ श्रे व ल्लि ये पापि दि मोरि या
ऊपरि लो बा बि जो र फ लि यो । सो फ ल पा ता भी गे लो गा
रे ति दि मुर प र सा द दी मो ॥५॥ इं द्री मि चा तो ऊ ब गा दि ते ऊ
ई वा ल नी दा लो दु मो । बा के व द ता लि यो । ने तो गु रि
न दी ठे ॥६॥ ला क द टू ब मि ल्यो ति रे । दे षंत ज ग ता टे कं
[illegible] ता सो ती ग्या ई ॥७॥ ड ग री नं
छ जो दि स तु सा धा तो मे दो ला गा श्रर दव दे लि सो ला वा स
से को ट ना ग र ॥८॥ पे क गा ई नो ल छ दा । पं च दु द ल जा
ऊ पे वा स सो ल द क र दि घा । मा ल नि म न म न रा बि ला
मा ई ॥९॥ पवा वि ह न दे चो री की धो । चो री नें श्रा नो गा ई
म थि दु ष दे तु नो गो र ष बो ल्या दु के पा नी न व्हा ई ॥
॥१०॥ गोर ष ले गे या ला तो ज गा दि गा ई दु ध पी जे ला । मदी
वि ग लि श्रम पी रस सा चो । श्र न त ष ता गा जी जे तो । ई फ म
हि मा हि ह नी मा ई म ई । पि ता बि न म वा छो र तो । ऊ
ति वि ह ना ता त स रा दि या । श्रादि लि पि चा रे गो क तो ॥
॥१२॥ श्रे न द द स क दे स प क ला वा । क म म हा द र द सि धि
तो को था के श्र ता री ग ग न म द त मे । प ह से जो नी ती या र
तो ॥१३॥ श्रे सी गा ल वी घ रि बा रें हुं सारे । ग ग न म द ल में र
धी तो ति दी ल गि रह्यो प रि वार दंमा रो । ते ई दि नि रं त री बां
धी सो ॥१४॥

कोतो सी लोप् सुछिनर तत ॥ बरं ॥७॥ बिचरउत गाई लो ॥
मांछिंदु प्रसादें जती गोरष बोल्या ॥ तहां रहे लपलाई लो
॥७॥२१॥ अवधू जो मांगि न छिजे री ॥ जहां जगमग जोति
उत्पारी ॥टेक॥ जसं जुग तहां रोग न ब्यापे ॥ औसा परषि गुरु क
राग ॥ तन मन [illegible] पचात नां ही तो कादेहु पाचि मरता ॥
॥१॥ कोल न मिटा जंजाल न छूटा ॥ तप के [illegible] तथा न मूस
कूल का नास कैरै मरि पूता ॥ जे गुरु मिलई पूता ॥२॥ मय
तु घात कोको [illegible] ॥ प्राहि दुगाति बि नसे [illegible] ॥ सतगुरु
मिलै तो उबरै रे बाबू ॥ नहीं तो परलै हुवा ॥३॥ कहू परुष
काया का मंडा ॥ [illegible] लो चौ ॥ गोरष कदै सु
ता हुरे नंदूं औसी पुरइ को ई सी जो ॥४॥२२॥ गोरषबा
[illegible] जीव [illegible] नदे
पाती [illegible] ति [illegible] पालता
[illegible] ॥१॥ कोई त मैरी [illegible] ॥ [illegible]
तीबु [illegible] रो ॥२॥ कारस नपा कोरष [illegible] लो [illegible] ॥
चारि [illegible] पार [illegible] रो ॥३॥ सींगी नादै गोरष
पुसारे गोरष [illegible] तहां चंद [illegible] ॥४॥२३॥ [illegible]
[illegible] देव [illegible] ॥ [illegible] चोपी लो दर्स
लो राहि चंदा ॥टेक॥ [illegible] मन का [illegible] माई ॥ [illegible]
सुझो चंदा ॥ कि [illegible] ली जाई ॥ [illegible] ती ले [illegible] नि बदे
पेक [illegible] री ॥ [illegible] वे ही ॥१॥ ब
दे नगोरष ता [illegible] गढ ही नंदा ॥ [illegible]
की लो ॥२॥ [illegible] ॥ देवी के देहुरा निरंजन देवा दुतिया

रे म न रसा के मी स र का ॥ १ ॥ तनताप स तल तो ॥ ॐ बन न दी न तल
जा डि दे दारिम मो जि सै न तापल ल कै चि दुनै चू के ते दे
म खाडि दे फंद ब ना हो ह न दि कि कम ॥ २ ॥ दीसं बि न म न स पी
न ती प्या या मो छ ॥ ॐ ट ला नि इया तब तपास ते ता पं सं तो षे
के दू लो ॥ न या ॥ रि दू दा स व टु जैं मन मन या रे नदी फ दा ॥ ३ ॥ रुप
जे न वि न सै ॐ आ वै न जा ई गग न म र स ॥ आ दि रू हा सम
ही ता ॥ न म र च ना च म न म न न दि स म ा ई म न कै स माये
को ई आ ले न ता के ॥ ३ ॥ १४ ॥ हीरे लीरा बो धि लै का या के
न जा ई गग न मि ष र चंदा रा दे ते स मा ई ॥ पंच मन त
ता तो त धरि ले जा इ त्रि पुरी टीकर नो कारि ले उ पू षि र
दा ई बा ई बाई न ला षि र दो ई म ला र म ज रा रै ॥ ॐ टी रुषे
गुर देव को टी ये क ब के ॥ ५ ॥ का म स त दु रू गो टी को ती
गी रि म न स पा दा च पे जो गी सं ग जं म नो कू न भ ॥ जु
म न ा कू ते ब ठा करे स्नान न म न चा पि रा पि ॐ व पू धारि
लो धि या नो ॥ ६ ॥ म दु दू षि र करे मि व स न्ही जो रे ॥ पू रा गु रू स
षि तै बा ट गां ठि को र ॥ फू टै द ब ब द्य मा गी तरे म र ना ता
स द जे घा के पा ई पा वे फ र न क हा ॥ ७ ॥ चं द गो टा फू टा करि
को ॥ सू र करि बो पा टी आ वी घे क उ कप दुल छे ॥ त्रि वे
णी की घा टी ॥ ९ ॥ ता त घे क छूं टा गो टा पा टी गो टा ॐ रघे
त व ज त न दी पा र हो इ बो ॥ स्रि ष ज त घ री पा वन ता षे
॥ ५ ॥ २६ ॥ रा गरामसा तु री ॥ २ ॥ ॐ सा रे उ प दे स दा षे ॐ

गुरराया।। जिनि जुगति चुरब पवन रहत नाया।। टेक।। अठि तै समसै बेद करि तै
खिल्वि न भेद।। जोगी तै नेदां नि नेद।। पुरि तै आसा उ भेद।।१।। खिष
मी संधी मंजारि सखि आपां चौं बवत मारि।। रवि बाद सबेद दुवारि
सेई बात दहि निराकार।।२।। जपि तै अजपा जाप बिचारि तै आपे
आप।। फूटी तै सब बेबिया प।। लिप ना दीपु न तमा स।।३।। अरे
नि सिसंमा ध्यांन।। निरंतरि रि भेवा रस।। कहै गोरष नाथ पा न
पाईबा परम निधांन।।४।।१।। गुरु की जे [illegible] नि [illegible]
गुरु बिन न ग्यान न पूरमियेरे।। टेक।। दूधै धोईया कोई लाउ ज लौ
[illegible] लौ।। [illegible] त्रै सल न नचै लौ।।१।। अरे
[illegible] तौ कागा लेई [illegible] गुरु न बेक [illegible]
पाई हो।।२।। चींटी के लेखा उपदेस माई लौ।। गोरष [illegible]
मेवा पत्ता बिउ ले लौ।।३।। [illegible] कवाड़ी [illegible] बूं
[illegible] गोरष नाथ मछिंद्र नापूत लौ।।४।।२।। कैसा बूझे अवधू
गगन न धरती।। चंद न सूर दिवस न हीरे ती।। [illegible]
निराकार सहा षेम न थूल लौ।। पिंड न पंच [illegible] लौ।। उ [illegible] न
म न बूष न बेल लौ।। [illegible] न सबद गुरु न ही चेला।।२।। [illegible] न
नाचा न जोग न जुगति।। पाप न पुन्य मोष न मुकती।।३।।
हूं बाबि न लै आवै न जाई।। जुरा मरण वाकै [illegible] न माई।।
नाल तगोरष नाथ मछिंद्र का दासा।। [illegible] वाके आ
सा न पासा।।५।।३।। आवे माई चरि थरि ताई।। गोरष अवधू
नारि तरि षाई।। टेक।। फेर न [illegible] जे [illegible] न दीक
दौ [illegible] दा।।१।। पव न गोटि कोर [illegible] मेल तत्र तरि
गगन का बिलास।।२।। धपा न नीं [illegible] सुलच [illegible] के
[illegible] गोरष नाथ मछिंद्र ना [illegible]।।३।।४।। कैसे बोले [illegible]
नादक [illegible] निरंतर [illegible] तुम लौ ती।।

पछिम गाची देखली पाछोंगा चांदे ... जोगी ता कै से फी
दी ता सनेही ॥१॥ सरजीव तेडी ला निरंजन तंत्र पूजी ला ॥ पाप की
करणी कैसे दूतर तिरीला ॥२॥ तीरथि तीर थी स्त्री नर्क
रीजे बासरिपला ते नीतारि कैसे तीर्ला ॥ आदि नाथ नाती
मछिंद्र नाथ पूता ॥ निज तत निहारे गोरष अवधूता ॥३॥
पंडित जाण जे गाबाद न होई ॥ पूंबो हूय अवधू सोई ॥४॥ पढ
बन्ना कली विसन पालन न भेद देवा ॥ प्रथम सी न रूपगा के बेद
कीयाता तम के रूहू को गाकी सेवा ॥१॥ एकडंडी दोइडंडी त्रिडंडी नग
वा न हूवा ॥ बिसन कौ तिनि पार न पायौ तीरथी जी मि भूमि मूवा ॥२॥
... जोगी जंगम उपासी ... हूवा ॥ महादेव कौ पा
र न पायौ राष ... तिमूवा ॥३॥ चारि मदाधर बाबदे चला पंक
कारी हूवा ॥ काईम कौ तिनि पार न पायो ... नि मूवा
॥ चौरासी सिध ... जे ... तूत्ता सी हूवा ॥ अरदत कौ ति
नि पार न पायौ कैमा तू चिलै चिमूवा ॥४॥ एक ... नादौ कु
राला ॥ ग्यारह रुपुरासां नी हूवा ॥ अलह कौ तिनि पार न पायो ॥ बंगदे
ई देई मूवा ॥५॥ नव नाथ चौरासी सिध आसन ... हूवा जो
ग कौ तिनि पार न पायो ... जिमि मूवा ॥६॥ पंचतत की
काया छिनासी साधि न सक्यां कोई ॥ कातद वं न जुवग्या न प्र
कास्या ॥ बदंत गोरष सोई ॥७॥ ६ ॥ ... गोरष नाथ काया
गढ लेबा ॥ ... सैरद निरदेवा ॥१॥ काया गढ नी ल
रि नी लषपकी चऊं फिरै गढ लीया न जाई ॥१॥ कंचे नी चेपरब
ता ... कौ ... गढि ताई ॥२॥ ईदो
... कुटि ... सहज सन्यं मे ... ॥३॥ आ
दि नाथ नाती मछिंद्र नाथ पूता ... काया ...
अवधूता ॥ ७ ॥ ... ॥ वदंत गोरष राईपर सिंहलेके दार ...

गिरीलीपूतानि सुत नसारा ॥ १ ॥ ऊंचे ऊंचे परबत तां बिंद [illegible] ति
लो गोरष नाथ कलियासी बट ॥२॥ कालिंग गाये तो जांगा ऊं ति
लटीसे ॥ कां वरू कातालीपुर नगरी पइसे ॥३॥ अर धै आ
वा तो जावा लौंगा न जाने मोछिंद्र वार ॥४॥ आदि
सरो ऊर चे के दरं [illegible] नौतालौं गान जाने मोछिंद्र वार
नाथ जाती मछिंद्र नाथ पूता काया के दास साधी हे गोरष
[illegible] ॥ कायो रूकै अव धाबि पपंग के है जासे
रूरंत्र तो राम सोई ॥ आपणा ही पंछी के फल आपणा ही
आपणा ही बर आपणा ही कालत ॥ आपणा ही संच लाघ
आपणा ही गाई आपणा ही मारी ता आपणा ही पाई ॥ आ
पणा ही टाटी फूजके आपणा ही बंध आप हो हत के बाणा
रीत्ते केथ ॥ न्हाई बिके तीरथ न पूजिहे कौ देवा रहत गो
[illegible] तो न लछ दगा
रामना पन्नात पत्रे देव ॥
वे नांउं नू गुन लहंगो ता मुन नोदं जीव आछे ॥ देन
राके घर सिद्ध हजी आछे ॥ अदीरा के घारे सांडी बंनतना के घारे
मांडी आछे ॥ रतीमां जी हांडी ॥ राजा के घारे सेत आछे उं
ग ता मघो छ्रेबेत ॥ तेली के घार तेल आछे ॥ ते तहे तासे ल
मलपी के सिरि सींग आछे ॥ देव तम घेत्पो ग ॥ बाटी मघोदि
[illegible] पिया गरंगा ॥ ऐसे सत्ते नान मालियां बहुते
ती दिष लाबे नाम त गोरष नाथ जी गुरी माया सत गुरु
[illegible] ॥ गुरू जी ज्ञो मा के मन की जे ॥ ता पे आसी म
दार सपी जै ॥ ६ ॥ नवी तीरे छिर धर तासी मगे पुरिस्य
लप डी वन की माया ॥ मन छे पलीमेरा सिस पडि है ता
पे के घावि नासा ॥ गोऊ तप हु मन मपे ल तपे ढीलत से
रहु गुलाबी पंथी आनी न हारस कुगाति मीरष्या ॥ कोर

सतमात मुसतमांनमुसाहै आप सिदकसबूरीकतमांक
क हकमोहेद तसबाकी सो मुसतमांनतिसीमें जाई मुस
मांनतव अदालिमें रहै दितपा ककतमांकेसे दरांमम सेक
दाय नषपै सिकादेषिक रिषिजमतिकरे घटदरसनकी पुर
वैआस तेमुसतमांनबाजाउं दपीरजाहीदीस्येवास दी
दूमुसतमांनदोईषुदाईकेबंदे हमेजोगी नराषेकिसही
केफंदे अनंतमरति अनंतमाया अगमगोचरयोंरहता
मा दिय देउरामसीति नमसतारा अब निरंतरकंकरपथर
का [illegible]ता आतट आधिकतेतषे अंतरा लेटाचीआपार
चढे सीदावे ता यो चढे पंतीपासुईटा तीगते अगदिप
लीनहीहेबकारस अमाहेबाउपदपीर अलेषपुरिसक्
चूनोपापरबानिआ दंमहीकरांणि हमेतुमे जाईरदें बाउ
दपीर अलेषपुरिसकीमरजी बगनीमांहे माषीपडी षां
का | हाईकोईषाति तकिसनमुषत्या सहलापरमतमाषी
तीया पातिसाहिकाचतया नमांणा माषीजाईबिटालया | इत
लीमनतालत नगीतते ई तलाषेमनरादिया मांडरकेपदिस
हमददातता मुसतांसिदिकपाककहमो बाबारतनदाजीन
कदिसा | षाते मजारषे दिमषतमजी | किथरकीयासिर
ताता कादे मप तुमजी सिसतीकी बाता | षेरमजार षूबदरषो
दी | अरसहुरसकीयासिरहाता ||
मम दितममयो जाता ||

सिक्के अपणे [illegible] पीर मुरीद हवै । जे [illegible]
से [illegible]पी कौ निर्दिचे परचे हमाति [illegible] । अब निरंतर
ऐके [illegible] सब दीन दे [illegible] दिये यारा । [illegible] कदे
दे किती ऐके [illegible] तुम [illegible] । किधर कारा दे कौ [illegible]
वे अते [illegible] गुरु चेला दे पैदमें दरव[illegible] ते ए पुरे
सकू सो [illegible] । [illegible] साचा कुती सा
चा [illegible] साचा [illegible] ते भउतप
ना सो हीदू बोल्ती [illegible] काय[illegible] ते काजी बोदि
[illegible] ते मुल्ला दरद जांणै ते दरवेस बोल्तिये [illegible] बंदी
पै अब [illegible] पीर । [illegible] ते [illegible]
[illegible] पीर [illegible] दे जगत
[illegible] रत पारी [illegible] । अगर
दो नां । अउव [illegible] तिसका पीर [illegible] तिस का मुरीद [illegible]
रत पत [illegible] दाई । चारिया
ऐकयार [illegible] । ऐकयार बंदीआं ने । ऐकयार माही
बंदी [illegible] । ऐकयार [illegible] ता । [illegible]
र [illegible] माही । [illegible]
[illegible] यार [illegible] बंदीआं ने । [illegible] दी को
[illegible]
[illegible] । [illegible]
ने [illegible] । [illegible]
[illegible] अमे [illegible] दरियाव

दित्ते सब्बउ सम नेसब्बउ सब्बउ [illegible] दारे। अस माते सब्बउ उ
णी सब्बउ अमे सब्बउ अ दो सब्बउ [illegible] कफिरबोध श्रीग
य नोध तेने सा सद प्रद पाति स [illegible] ॥
श्रीकाफिरबोध सम्पूर्ण समाप्त ॥ अकोत्तयो रद [illegible] सनमुवी
दहसि अमत्तिगउ दासी तनसदीद हासि वेसास [illegible] की दो
गीहसि दिमतिक तेवदहसि किनरबस [illegible] दसि मुमरतीकाफि २४
रहासि पस्लगोब तीक मकलदहसि मोम दैतपावदसि दं [illegible]
तनापाकदहसि दिरसबेरनहसि बेहिरसञ्जुवत्तियाद हसि
बेईमान ता लसीहसि [illegible] दहसि दरबदेद
रबसमहसि बेतरदकसावहसि मनीगाफिलहसि दुदीगुम
राहसि पे रहोमाहसि बेपरवा [illegible] बेमानमुसलम
नहसि बेईमान काफिरहसि [illegible] दहसि दरोगदो
हिगाहसि दिलमदिलमहसि जोरउलमहसि अरोसा
फमुसाफहसि जान [illegible] दहसि देत [illegible] दहसि रव
मुसाफत्तीहसि मिदरीनि भाउ हसि सरमस [illegible] हसि बेस
मदवेदीहसि सीतरो उाहसि [illegible] तेवा गवत्तनहसि स
पतितीहसि हमनवदीहसि चोरी तात तचीहसि जारी
री दीन हसि [illegible] अदबक मकातेहसि छवा
बेपीरी हसि फकीरी सबूरीहसि नामनूरी सुकी रीहसि
दया दैरात हसि वेदवाक दरद हसि तेगमरदहसि अद
तियाति हदि।

[illegible] सरषद हासि नीरद मनासरषद हासि दे मवरकति
हासि [illegible] तीहरकोति हासि अबेतके मुलामहासि अस मै
नादाकू मलामहासि दोनो जोद रहिहासि बीनामाधरहासि अ
सिकदे मीहासि डीबो हदहू नहासि अकलसिकेलां महासि
केलामस लोमहासि दा जीमराद्विहासि नादलरिनमरा
दिहासि सिद रिमामरहासि नांम्हिसीमगमरहासि बरिमारू क
हासि थि उ मतिकबूलहासि अलो नरहसि लपोद ऊरद मि
हेमसदहासि अ लाबेदहसी [illegible] गमत नरादव थव
[illegible] जंलिखे मेमा हम वंद पथ
मे [illegible] द दुतिये लंगोट बंद त्रितिये [illegible] बंद चतुरथे
कूमरबंद पंचमे लंक सबंद षसटे कोलबंद सपतबंद
[illegible] वती [illegible]
कीसर [illegible] गति बिरल बिरलपुरिसि पार [illegible]
[illegible] गतउती गोरष [illegible] मदकोकू [illegible]
[illegible] दपीरहोद सेद पीरसू [illegible] माला उपंद पीरहोगी [illegible]
[illegible] प्रसादे जती गोरषि गाथा ॥ १० ॥ इति श्री
[illegible] ॥ ॐकारं आदि परब्रह्म
[illegible] नाद बेद [illegible] उतपंनी नाद [illegible]
पे पर ब्रह्म [illegible] पृथम आदि उतपंन
माया [illegible] चंदा [illegible]
प [illegible] उदे [illegible] एककारि [illegible]
[illegible] जो [illegible] आसा [illegible]
[illegible] सोलह कला [illegible] चार [illegible]
[illegible] सत [illegible]
हस्त

हसकातेउत्रोपिरदीकाया। कौतककरे देदकैया [illegible] है
पषकेदिकरिपेकेहु रहण॥ चंदसरदोउसामिकरिगुदण॥
इव तेउपर माधीनिरंतर रहा तै नाहीजता ईसी कियमे
रसकेच नकूचा ईहा बिधीपाजरो वीनवेसना उपजे तिही मेदि
पजंति नाही नराछि बगत संसार माहीं। बांकि ते सतिगुरकहि
तेदभिधि संकेत परचा तांणि॥ आत्मा दैन कुरं मध्यूर मजे ३॥
तिउ ज्योतता नवकोटि तिउ करि पूरित नाता। पिउ की नप
टै ता ला न ता तै पंसारहै तो मनमुपता जो मेरि सागर धुनि
[illegible] पी तेहां संकेत विधी है मोर्ड [illegible]
[illegible] अ[illegible]पद पावें तब सेरताकोई सदजी मे [illegible]
राण॥ ध्यान [illegible] ते सम गुहाण॥ आ[illegible]का टका [illegible]
जीति ते उ भपुरी साहिते के छो आत्मा उरु श्रीगोरष [illegible]
या। सब संसार छिन स्या आपसाजी या जू [illegible]
अगम पंथ पावें ते तेगुरु बंका कौतक [illegible] ज [illegible]
ते। भ्रि तै मेटि तै मे नहूं भवचा। [illegible]
मूतत बिना बिरख्या। अमी रस तरीया [illegible]
री पंच तत्र आत्मा माही अते पच्चकच च [illegible]
सिधौ [illegible] रग साधि कौन किया [illegible] कीया
ति बिन [illegible] मै बिचार कर्पै ति और ध्यान नाही [illegible]
तेवा [illegible] च ते पांई तर [illegible]
पारिष्या [illegible] सबद [illegible] जी [illegible] सबद
[illegible] की करीति मुषे प्रकास [illegible] जीवता [illegible]
कीबासा उ [illegible] दि उंत्रधरे

मिषस्त्रिआसणाकरै ॥ केतेटिसर फूटत घाव नहीं ॥ मिलत ह मछे
कौंवरु जीतिते निम तौदीप घलि गगन भांहीं ॥ मनकौ तेम
न तौ फूटे तहां तोगोसर ॥ जबबिचारंति दिदि [illegible] दकौ है
तौ मैं [illegible] के हां तौ भार धरिगी सिवण ॥ मनपत न दोड स मिक
रिगदिवा ॥ इत्तादि गंगा च [illegible] धंगाति अंबर न रै ॥ नीरमैं पैसि
करि अगादि ता त्तै ॥ बाट मैं [illegible] किपंगोतीन रै ॥ तदिपरि
पूपिस्याआपै डधरै ॥ पान कै पूग टै पंसिपं तू न [illegible] ध्रुपया ॥ अव
तप [illegible] क छ मोगे रहा नाचिया धणघा ॥ संसार मै जे म्या अव नी
मलोई ॥ बिसण दपीव तौ छि तेस्या न कोई ॥ वइंगकै ठही
परद त पूसा दाचि मह [illegible] तम गा मन [illegible]
कुगदाणा इ न त्ता गै म [illegible] गाँठ हराफिरह ॥ तौ धुं दिदीप ज
गै अर गं नीन मापै धवंगाती न कोई ॥ हेली का रम ते तौ या
न जाई ॥ कपांगिक यी हो ये हिना पाछि करांगिन पाई ॥ आसम
र कै बंधै मंद सागमाई ॥ कंपंत श्रीसां तू नाय सुणे नरा
तोई ॥ ते मिमै तू तम मुकदं दा न कोई ॥ नू सासो नत्तावड
लिहि कि रि चेतणा ॥ सार घकै लोहे ॥ आपा नरे तणा ॥ तेपता ज
ते मत तिरामिति डुलोई ॥ तन बिचारंत तो देवता होई ॥ अप
सैयौ बुद्ध्या तिरै थौ सहजिपत दै जोती ॥ काया कै जी तरिम
नलीं कि नि तेजो ॥ धंधवा मैं मोती ॥ अरधउरधदो कसंपट
करी तौ संप्राणी नाड़ि त्रिअं मी रसपी ते ॥ अपरे मंडलत दोनाद
तरी तौ हरिअा संगा तसं तगति करी तै ॥ अहेप मंदिर तदां सै
सतीं चावासा ॥ मद जै स [illegible] तपाप र काम्ता ॥ करता रतलुइं
मा कहीं नजाई ॥ मन निधि धरापि लै वाड़ी नपाई ॥ चाकौ
कीबा डीया तासे कूवा ॥ तरि तरिसी चुवता तेलसिधा हुवा

तांबुधि स्वरूपी । ते सुकागुरु सुरिज देवता । त्रिनिरूपी हाथ
का गुरु ईस्वर देवता । अनादि स्वरूपी आकासका गुरु श्रीगोर
ष देवता । अविगत स्वरूपी । तें पंचों ही पंचतत्व की का थ उतपति
का थ उतपति । आपही अविगत स्वरूप नां । आकास आकास उ
तपनी वायु । वायु उतपनी तेज । तेज तें उतपनी [illegible] जल तें
तपनी प्रथी । प्रथी ग्रासंत तेया । तेजा ग्रासंत उ । तेज ग्रासंत
वायु वायु ग्रासंत आकास । आकास ग्रासंत अविगत । पंच
तत्व पचीस प्रकिर्तिका भेद बोलीये । निरंजन देवता पांचौं
तो मस्त । आगम निकौ पुर पवनका पंथ सुरति निरति सांधि
सुन्य मैं समाया । अविगत स्वरूपी एव [illegible] अ
वागवाणी निरतंतरे ॐकै [illegible] शिवाई ॐकै [illegible] शिवाई श्री गोरष
नाथ पादुका नमस्ते ॥१॥ इति श्री गोरष [illegible] सम्पूर्ण
[illegible] ॥ ॥ [illegible]
देवसी आगम अगोचर अस [illegible] सिष मैं [illegible] के
ताका नांव धरी गोरष ॥ अ [illegible]
[illegible] पाता [illegible] तदी [illegible] तद
बिमस्ति रसपीया ॥ इंद्री ही आकोई इंद्री ही अन्तोप इंद्रीर
ची है ती [illegible] तोक आछे स गोरद [illegible] ताकारंगी अनेतवि
धा [illegible] रहता ॥ बेदकतेबन्छोपी [illegible] सबदांकी तते
आंगी अगम सिषर चाटि सबद । एकासा तदांबू केअ ल
षबि नागी ॥ अ [illegible] नागी दो इंद्री पक [illegible] तीन सव
नई कजोती तासी बिचार तरे तुल [illegible] चुनि त्यो मांगी
ही तेपद जोगी तांबि रलजोगी । श्री रसबंध [illegible] चेलाई

सिबाधेसिमासहियारंग काफ्र जो धन करिवामंगर दोसबाछे
ही लागाई बारीन दिढ करि रापिवा ग्राय णाचीत ॥२१८॥ है
लिजे बेदिबा धीर हाथां न ग्रालिनी सिद्धि थल बाकुलि रि यद
हमे थैले नवारे मन संग तासैं दिच तारदोसि घकै संग
मन मुष जाता इुर डाोषि तं कुं तासैं कासं ग्रागदं मुषीद
हू मात पिताकी मिटै भ्रात जैसा होई कहै वे नाथ ॥ ना
थ केदांतो सब जग नाथ्या गोरष कहंता सोई कैल मंछ
गुरमुद मद होती पद तैमुचा सोई ॥ सबदैं ताते तं छ घाजे
लाई श्रेसा महमद पीर तां वे नारसिंन तां का जी मोह
तं ह हि सरीरं ॥ महमद मदन को हजा जी महमद के
बिय सविचार ॥ महमद हाथि करद ज हो तां लो हा गदी न
सारं ॥ भारप्रसारं [illegible] नीरं गग नउ फुहि रण नाथ
जनि कुपाया के रितु काया कुटाबा द बिना द ॥ कोई ब
दीकोई हिवादी जोगी कुं बाद न करणा ॥ ग्र ठसठ तीरथ
समदि मपां छै जोगी को गुर मुषि जरणां ॥ [illegible]
ही हू स मानां लगी ग्रपणे [illegible] नौ तेरा दची दे
दे का जी महला तं बूढी [illegible] मदा दे ल जां नौ ॥ मो न्यास
व दं चू काया दंद [illegible] चैरा ता न रथरी पर चैगो पीचंद ॥२१९॥
ग्रहि ति भि मन ते उ न मनि रहे ॥ मन की म्याडी ग्रगम की कहै
ग्रा साषा है है देति रास के देव ह्या मैं ताका दास ॥२२०॥ ग्र र
घै उत्ता ता उरध धरे का मदन गध सुधो पीकरे तउ ग्रतमंगा न
का दे साथ ता का बिस [illegible] लैपा वा ॥ ग्र उपा उपै सु
मन धरै पांचौ इंद्री निग्रह करै ॥ ब्रह्म ग्रगनि मैं हो
मै काया ता समदा दे वंदे पाया ॥२२१॥ धं न डोबन की करै

श्री सा चेलै ते तौ वैको सती पास नादबंद जाके घटि तरे
ताकी सेवा पारब्रह्म तीक रे ॥२०॥ थाहै उघाडि तेनर रती कूं
कूं की लै उलरसती प्रतै तो तदिन अरस अदली कदे बोर
धकी धकी काया सहाली ॥२१॥ सबद सीता सबद दीकंची
सबद दिसबद उगाया । सबद दिसबद उचाप चाद्रवा ते
सबद दिसबद समरजाया ॥२२॥ सबद बादी सै अवधू स
बद बादी पून मान सन थंभ अनेनाम धो पूमा [illegible]
ध्रू तु उष्प उल्ते दीसे चंद्रा ॥२३॥ सबद बादी अवधू सबद
बादी सबद देसी रतिकाया न्पत्याणा वेको दिसाजा मन
मुडाई त्ले पर ता का अंत न पाया ॥२४॥ पंघा विनपुस्ति
अगनि बिन जलि बिजा अनि राज्ञिघाउ लदिया सब सबे
द श्री गोरष नाथ कांधिया न कुलैरो पंडित पढिया ॥२५॥
गगन मंडल मै औंधा कुवा तहां अंम्रत का बासा सगुरा हो
ई सु भरि भरि पीवै निगुरा जाई पियासा ॥२६॥ गंग तेन गो
मंतत ते उरे न सो षंत पवतेन नखे तांति बाडी मती तारे नता उ
तरु दक न इ व त कहूं तौ कोण पतियाई ॥२७॥ बासमंद तीस
वउग वास [illegible] स्वादसहे तो मीठा सा चषकहूं तो सतगु
र मानै रूपसहे ता दीठा ॥ मरौ वे जोगी मरौ मरण है
मीठा जिस मरणी मरौ तिस मरणी गोरष नाथ दीठा
हबके न बोलिबा ठबके न चालिबा धीरै धरिबा पाव ग
रब न करिबा सहजै रहिबा भणंत गोरष राव
[illegible] श्री [illegible] फल [illegible] आधा सिधा [illegible]
अवधू [illegible] आधा ॥३०॥ [illegible]

वधू दिढ करि साधौ न्त्रीया कां मन्नो धन्अम करी बचाया तौ सबद
सतर की या ॥३२॥ स्वामी वन षंड जाउ तौ षुधा व्यापै नग्री जा
उ तौ माया ॥ नारि नारि आउ तौ व्यंद बियापै कैसी कै तन राषै गा
प तीषर जुं तनम्नव की काया ॥३३॥ अवधू पाणी नाये बिंबा दूमान
मारिवा ईहि विधि लेईबा ब्रह्म अगनि का तेव हठ न करिवा
पड्या न रहिवा यूं बोल्या गोरष देव ॥३४॥ थोड़ा बोलै थोड़ा षाई
ता घट पवना रहै समाई गगन मंडल में अनहद बाजै
प्यंड पडे तौ सतगुर लाजै ॥ अवधू अहार तोड़ो न्यंद्रा मोडो
कबहूं न होई रोगी नागा बंग बनासपती ज्यूं कोई बिरला
बिरला जोगी ॥ अवधू अहार कूं तोड़िबा पवन कूं पल
टिबा ज्यूं कबहूं न होई रोगी छठै छ मासि काया पलटी
नागा बंग बनासपती जोगी ॥ देवकला ते संजम रहिबा भू
तकला आहारं मन पवन ले उनमनि धरिबा ते जोगी ततसा
रं ॥ अवधू न्यंद्रा के घरि काल जंजाल अहार के घरि
चोरा मै षुनक पारे उरागरा तो अरध उरध लै जाई
अति अहार इन्द्री बल करै नासै ग्यांन मैथुन चित धरै
व्यापै न्यंद्रा झंपै काल ता कै हिरदै सदा जंजाल ॥ अहा
र निन्द्रा बैरी काल कैसै करि रषिबा गुरु की जंजार
॥ अहार तोड़ो न्यंद्रा मोड़ो सिव सकती लै करि जोड़ो
तब जतीबा अनाहद का बंध नही पड़ै त्रिभुवन तौ पड़ै के
ध रस ताकी रे तो जग मन छूटै जोगी कहा ताहीरा न फूटै
जल के संजोमि अलल अकास अनके संजुमि जोति प्रकास
पवन तास संजुमि लागै बंध चांद के संजुमि थिर ह्वै कंध
आसण दिढ अहार दिढ जे न्यंद्रा दिढ होई गोरष कहै
सुणो रे चेला मरै न बूढा होई ॥ मन की मांस अनील

कैलै तत कोअंध अनाहिदो अनफरि वो वाई बदंत गोरष नाथ पूतापी
षिपा चिसाही ॥१००॥ अवधू दमारी कां मधि नओं सिमे संसार दमारी
वारी मूर पर समादो निपथा आइबा तौ अंतकाल न होइगी नारी
॥१०१॥ बड़े बड़े कूले मोटे पेट नाही पूता गुरु सूं भेट षड़ पड़ का
या नृमल नेत्रा हूई चलष पूता गुरु सूं भेटी ॥१०२॥ अगम का पूत्रा पीन
का उरण पेट को हूवा उन्मन का सूता बदंत गोरष नाथ पाया उरध
करि पाइ दुरि कइ ला लोग ॥१०३॥ पेट की अगनि बिवर्जित छिति
की अग्र गति अभ्या नपान गलै का सेग तो दो ता प्रसि ध्वरलै अव
धू पवन ॥१०४॥ धाये दीमरिये बिन षाये मरिये गोरष कहै पूता
संजमि हीं तिरिये ॥१०५॥ धाबै न मारि बाधा लौ न राषिबा जाणिबा
ब्रह्म अग्नि का भेवं हठी दीपौ मुकला होइगी सति सति भा
षंत श्री गोरषदेव ॥१०६॥ जिह्वा स्वारथि तत न षोजै ते लाक रष
र बाधा लौ अहार हि बिदु पावै ते पवन लागै तालि का लाइक राषा
तरि नारि षा इंद्री हलि हलि जाइ जोग नहीं पूता षाव उीव लाइ ॥१
०७॥ इंद्री का लड़बड़ा जिह्वा का फूहड़ा गोरष कहै ते प्रतषि च
उड़ा ॥१०८॥ अवधू मन चंगा तौ कठौटी गंगा बांध्या मेल्हा तौ जगत्र च
ला बदंत गोरष नाथ सति सरूप तत बिचारै तौ रेष न रूप
॥१०९॥ सींपी साषी छि सप्ता बरा ना षकहै पूता षोटा नषरा ॥११०॥
अवधू मन ता षिरत षाटै फरंत भी है कषड़ात ता गोरष कहै स्व
॥१११॥ रअवधू अनपा ति दी जोगा ॥११२॥ बजरी करता अमरी राषै अ
मरी करता बाई जोग करता अम्ब दराषै सो गोरष का गुरू ना
ई ॥११३॥ अगम मुखिया दस्रमादि मुखि धारा जो राषे सो गुरू हमारा
॥११४॥ अवधू ईश्वर दे मारे चेत्या ना ताी जे मा कि ट कोलियेना ती
निगुरी पृथमी मरि मरि जाती हम उलटी थापी सिध्यां षी ॥११५॥
साच का सबद सौ ना की रेष निगुरां कूं चापा कि सगुरा कूं उपदेस

घटि घटि गोरष बाहै क्यारी। जो निपजै सो होई हमारी॥ घटि घटि
गोरष कहै कहाणी। काचै भांडै रहै न पाणी॥११८॥ घटि घटि गो
रष फिरै निरुता। को घट जागै को घट सूता॥ घटि घटि गोरष घटि घटि मी
न्ह। आपा परचै गुरमुषि चीन्ही॥११९॥ पावड़ियां पहरि [illegible] अव
धू लोदप[illegible] जत काया नागा मूनी दूधाधारी। एता जोग न पा
वै॥ दूधाधारी परघरि चित्त। नागा मूनी चाहै नित। मूनी क
र पर्मी [illegible] की आस। बिन गुरु गुदड़ी नहीं बेसास॥१२०॥ दाषिणी जो
गी रंगा चंगा। पूरबी जोगी बादी। पछिमी जोगी [illegible] ता लो त
सिध जोगी उतराधा॥१२१॥ अवधू पूरब दिसा ब्याधि का रोग
पछिम दिसि मृत्यु का सोग। दषिण दिसि माया का जोग। उ
तर दिसि सिधि का जोग॥१२२॥ पूता रातै जोधू तै आप [illegible]
तो उनमनी मैं ताप॥ अहूठ पठण मोहि ब्या करै सो अवध
लिवपुरि सचर॥१२३॥ घापेड़ी मैं जो कापापणा [illegible]
पव न [illegible] गगन सिषर जाता। ज्यों बंबू दै सुधि न जोन [illegible]
पे ड़ी को है येत तसमान॥१२४॥ घरबारी सो जो घर की जाणै
बाहरि जाता भीतरि आणै॥ अबनि रंतरि [illegible] ट माया सो घर
बारी का ये नि रंजन की काया॥१२५॥ गिरही सो जो गृह को
पालै। आतम तत्त की मेटै माया सहज सील लकाधरै सरीर सो
गिरही गंगा का नीर॥१२६॥ अवधू अमरा [illegible] न पाप न पुं
न्य तरउत सांचि सौतल [illegible] सो दंद सो [illegible] सबद
तो ही परमार्थ सतत सिध॥१२७॥ मन थाजे जोगी कायामढी
पंच तत्त ले का पागढी। विमल कं [illegible] ज्ञान सूधारी सुमति
पावड़ी हुं डांडि चारि॥१२८॥ चोल तत्त चंद [illegible] पछी [illegible] बे
टा बूहा अगनि परजलै। औ [illegible] गुद्री कारवधु जावत प्र
पीत धत कंथ॥ बालतत प था त् टंत कं या [illegible] दि च
ती दस॥१२९॥ पंथा तत टंत कंथा नंद ब्यंद अरू बाई अठसर

ठितासच्यदा टहो तीत त्रि कहो ईमेरे ताद्दे ॥१०॥ वेसंद्धि तारं त्रं
विस्तारए कररि जत पकाया ॥ है यु अ ताते एकरसिदे खिदा
ट ज्याचत गोरषराया ॥ है अवधू तो दवीषि दीवाद ता अप
धूपक नकी मूठि साव ता अवधू जीव ता मुक्ता क॰ ताता अवधू
पा उरे सूक्षा ॥२१॥ चारि वा पुरुष कसा मिवा कपा धरिता धोन
दो कोसि वागपोन ऐका पकी को मिधका ॥ ऐ ना बदंत गोरषनाथ
हो देषिा मन हंगा ॥ ऐक तो वीर दूसरो धीर तीसरो षटपट
चौथो चोड पांचे पाचमा तत हांस ॥ डु इस्वाद दसवी त लंबा
पंच कहा ॥ ऐक पकी सिधी ना दुसम त तेसा धवा चारि
कही न तत चेला ॥ मै न मा न ता मगारहू नदीतव पूम अकल
॥२२॥ कैसे नर हे आसा पासु ॥ है अवधू नस पवन इदास कमन
रहे मारिके ऐ ते कैसे नर नैको सिसिधि कैसे ॥ यहु मनम
त्रिपहु मन सीव ॥ यहु मन पंच तत्व का जीव यहु मन लेजेक
न मानि रहे तीनि लोक की बाताकहे ॥ अवधू नवघरि दीसाधि
लबाट बाई हिया उ चोसिहु दाट ॥ कोइ अपल टे आवि चल हृदय
छाया ॥ ऐब डि तिनि पड़ै सिध ॥ अवधू दसकै गहि वा क लदि
रादिवा जूवा डिवा अनन्द त्तूर गगन मडल मै तेज चमके च
दन हिस हसरा ॥२४॥ आस अपास बाई कौ ताधिवा रोकि लेडु न
वदुवार छूटै हमासी का पाप लटिवा तब उनमनी जोग अपार
॥२५॥ नित पल धारिवे सिवा ॥ सप दे रोकिवा कदे नदोई वारे
गी वर सदैन मे तीनि वार काया पलटै ॥ नाग वंग वनास र ते
जोगी ॥२६॥ अवधू षोडस नाडी चंद प्रकास्या द्वादस नाडी र
न सहस्र नाडी प्राणा का मेला ॥ जहां असंषि कला सिव थाने
॥२७॥ अवधू ईडा मारग चंद्र भीणी जै

पंगली मारग ना तें प्रभू म नामारग बांणिधौ लीये नीके मे
अ स्या दे ॥ अधपूरन अनाडी हंस च लेगा कोटि कर्म की
नौदे [illegible] री चंदा बाई साधा किरणि पूरती उबक्षाद
अभावरे [illegible] पारि किलिमिलि चंदा पूनम के चरिसूर नादके
धारि भेद [illegible] अडेत अनहद तूर ॥ उलटि [illegible] के संके
तबाद बाईके धारि चोफेर [illegible] सुंन्य मैं [illegible] नी करके
रिया [illegible] अनिधरिया ॥ अवधू पवन नाडी
नौ दकर्म को [illegible] हीपवनं सीते गनाडी छिदकाक्षसा
कोई जोगी जांणें तगुरु बं ॥ उलट पवन संचित पगां बैठ
तपव [illegible] दै दूदानि रतरि जोगी चित तब चंदवसे जहां उपदे
अरधंन के मूल [illegible] छत मचे प्रांणपुरिस का बासे हुदस
हसा उलटि [illegible] तब ही जोति प्रकासे ॥ आमलि बैसि
बापवनलीं दिसो चिला ॥ पौन मानसम बंधे पा बहंत गोरष अनं
ध अ [illegible] बिचारंत [illegible] दिसे चंदा ॥ गोरष बौले
स्वामि [illegible] पांचौ पवस निवासी ॥ आपाणी आतमा आपके
[illegible] ॥ अवधू ऐक पूछिबा कहो
चारि तो मौवौ [illegible] मारी ॥ फूलमा फूल के
[illegible] बिष चेकांक रि हाडे बाबा लत ॥ [illegible] हे देवतत
ती [illegible] पूछैवा हे तौ गोरष सोई ॥ बूहा अगनि
[illegible] ॥ आपीआपीवंत तब हाडे बाबा लत ॥ [illegible] उलटि आप
सींचं तमूलं फूलफूल के [illegible] फिरि फूलं ॥ [illegible]
व नगगांव रम मोई ॥ तब बालक [illegible] तौषि जोई ॥ [illegible]
स्त हम [illegible] पवन मेला [illegible] सीबा [illegible] जसार तेला
बार हक [illegible] ॥ [illegible] चारि कहा सा
पे अ [illegible] उरम पूरम [illegible] सिधे साधे
त चारि कल पीवै ॥ असा धसाथे त गगन नगाडं [illegible] उन
[illegible] उलट तपवन [illegible] तब [illegible] आपी [illegible]

पीवंत तब्रह्म ग्यानी ॥११७॥ अलेष लेषंत अदेष देषंत दरसपरस
ते दरस ऐसी सुन्यंगार जंत्र बाजंत ना दे ॥ अलेष लेषंत ते निज प्र
तीति ॥११८॥ बाहरि न भीतरि नेड़ा न दूरि जोजतरे वाजे अनहद सूर
से तय फाटक मन दीरैबे धा तिहि परमारथ श्री गोरष साधा ॥११९॥
निरती न सुरती जोग न भोग जुरा मरण नहीं तहां रोग गोरष बोले
लै एकंकार नहीं तहां वाचा ओअंकार ॥१२०॥ उदै न अस्त राति न दिन
सरबे सचराचर भाव न भिंन न सोई निरंजन डाल न मूल सर
बब्यापी कलासुषम नो अस्थूल ॥१२१॥ ब्रह्मांड फूटिवा न ग्रसिवा
लूटिवा कोई न जाणी बिन्हे वदंत गोरष ब्रहंड ओर उलटा थे तिवा
तहां पकड़ि बापंच देवं ॥१२२॥ अहंकार तूटिबा निराकार फूटिबा सो
षी ली गंगा जमना का पाणी चंद सूर दुदे ईसन का परणी लू
कई दो अवधू तहां की निसाणी ॥१२३॥ चेता रे चेतिबा आपा न रे
तिबा पंच की मेटिबो आसा वदंत गोरषनाथ सत्य ते सरिवां
रूपरि मन में वासा ॥१२४॥ मिथ्या [illegible] लेखा [illegible] गगन स
धां न्यै बाईले सूरा मीन के मारग रोपी जोगा उलट कूप लकड़ी
मे आगी ॥१२५॥ बास बासंत लहां पुग [illegible] ल द्वादस अंगुल गि
गन धारि में त वदंत गोरषनाथ पूता दोई आचरा ई न पड़
त काल न [illegible] जाई ॥१२६॥ आवो देवी बैसो द्वादस अंगुल पै
सो बैसत पैसत होई गा सुष तो जाईगा जन्म जन्म का दुष ॥१२७॥
स्वामी का चीबाई का चा उपंद का ची काया का चा बंद कां कहि
पाके कैनि बिधि सीझै का ची अगनी नीर न षीजे ॥१२८॥ तो देवी पा
की बाई पाका उपंद पाकी काया पाका बंद ब्रह्म अगनि आपे
ल ला पाकी अगनी नीरा जले ॥१२९॥ स्वत आ जाई रहां टा प्रा
नीये दन बाई ॥१३०॥

[illegible] नां धांन आगनी बांदन जाई ॥ १७१ ॥ इलाटिया
निहचल आसण पवनां धांन ताते तो दे सो षिरया पांणी चंद सूर दोउ कांनं
पवन षंड चत्र नो बंधिया नांभि ॥ १७२ ॥ उलटी सकति चंद लै ग्रेइ
पारिसा पैसा [illegible] बिनां रापि [illegible] उलटी चंद रांद के गंदा [illegible] जी
नव सष पवन षे तले जिंगा उलटि चंद रांद के [illegible] चंपेति तोनि
गोरष बोल्या कहे ॥ १७३ ॥ सूर नादे चंद चंद नादि सूर चंपेति तीन
तें उ जाया जी लो [illegible] नांगनि गार [illegible] पूद पूरा [illegible] जति तें
दृस्या धंति सरा ॥ १७४ ॥ छत पवनं निरंतरि रवै है की इकुया पे उरा
रहे मन पवन चंद तासि सिरा दीया होस नां पनिरंतरि रवि [illegible]
॥ १७५ ॥ इकुटी त्रिकुटी इकुटी संधि पछिम द्वार पवन नो बांधि द्व
टे तेल न बूझे दीवा बोले नाथ निरंतरि होवा ॥ [illegible] ॥ नाद बंधि
जाई ते दोउ पूरि ते अनहद बाजा ॥ एकांति करा सा सो छि दै
नर षरी कहे गोरष मछिंद्र का दासा ॥ [illegible] ॥ नाद नादी सब कोई
कहे नादी हल हकांहिर लारदे ॥ नाद बिंद हैं जोगी की सिध्या जिहि
साध्या ते सिध भिल्या ॥ १७७ ॥ नाद ह मारे बाधि कौ ल नाद बजावंतु
टे पकं ह अ नहद मद द बाजतार है ॥ सिध संकेत श्री गोरष कहे
[illegible] पवन दो आसण हसी [illegible] जोगी दोउ तिरिया
आपवन का कोई जांणै भेव सो आपे करता आपे देव
अगूदी जोग आसण है जोग अगनि दीहरे चौसठि गामा
अगनी का कोई जांणै भेव सो आपे करता आपे देव ॥ [illegible] ॥ दाउ
गगन्द्र ही जोग [illegible] दी हरे चौसठि रोगा [illegible] को ई जांणै
[illegible] सो आपे करता आपे देव ॥ [illegible] ॥ पवन [illegible] ते [illegible]
दी नांजं तत आपा मसही षोजी [illegible] वादी [illegible] धी [illegible]
इ पहै ॥ [illegible] ॥ कोई निंदै कोई बंदै कोई करै हमारी आसा गोरष
कहे सुणारे अवधू यह पंथ षरा उदासा ॥ [illegible] ॥ [illegible] तोरे जे ते
जाई [illegible] मांगे केता षाई [illegible] केता [illegible] गोरष
चे न ते का सौ के [illegible] ॥ जोगी दे ई परनंद दा रूषे [illegible] मास

अरू तेरी गुरु नयै ॥ ईकोतर सौ पुरिषा नरकि जाई ॥ मतलमत
नायंत श्री गोरषराई ॥१३॥ अवधू मास भषंत दया धर्म का नास
मद पीवंत तहां प्राण निरासं ॥ भांगि भषंत ग्यान ध्यान षोवंत
जंम द्वारि ते प्राणी रोवंत ॥१४॥ जोगी सो जो मन जोगवे बिना बिलाइति राज
ति राज तो भोगवे कनक कांमिनि त्यागै दोई सो जोगेस्वर निरभै हो
ई ॥१५॥ मन पवनी सोई करै अवधू जास गगन मंडल में रहै आसा अनहद
स्थिर नवरउ निरंदे सो मन न्यामी आगम की कहै ॥१६॥ उनी सोई
उन आपा ट रै ॥ आवत जात निरंतर माछै ॥ पांचौ इंद्री की मरदै मा
न सो ई कहिये तत समान ॥१७॥ सबद में सो जो दर की जाणैं प
चै पवन आपू जाणैं सदा सचेत रहै दिन राति सो ई द्र [illegible]
ल ह की जाति ॥१८॥ लालची तंत अमर पर उतरिया मछंदर देह रवा
पंदि तावद [illegible] जोगी नाति मव र न पारं ॥१९॥ प्रथिवी
[illegible] दपि सारं आपा [illegible] राति उतारिबा परं बदंत गोरषलष
कादि दौ साषी घटि घटि दी पक बले परि प्रम न दे अंनाथी
[illegible] दे हीं रहे [illegible] ते तिक्षा करि दकमा न [illegible]
मजा करी ले तो चेला तत सारं ॥२१॥ गोरष कहै [illegible] अवधू
जगमें अस र दाणं आप देषिबा कौ नेल रिबा परि हुआ थी क
षून कदाणं ॥२२॥ गोरष [illegible] फ हे सुणौ रे अवधू सत पात सी
उरि ए तो मुदि गरजी [illegible] ॥२३॥ तब बिना दीप दी [illegible]
[illegible] मन में रहणं तेद न कदणं बोलिबा अमृत बाणी आगि
तो अग्या न हो ईबा अवधू तो आप लेईबा पाणी ॥२४॥ मन
निरादिबा ते बनकाहिबा पीबा नी कर पाणी ल का छाडि पल
का जाईबा तब गुरमुषि लेब जाणी ॥२५॥ नगरी सो न तब हु
लमन लबष र सन्यासो तेत पंडित पुरिषा राजा सो न तद ज
प्रबाणि पंसिद्धा सो तेत सिधि [illegible] बुधि कीबा
॥२६॥

बिरला जांणत ते दोनिं नेदा बिरला जांणत दोई घट अघट बिरला
जांणत न्य कछ कदांणी बिरला जांणत सिधि बुधि की बांणी
अनंत राया लेस नर नरिया । नैं कर करतार दिया भो [illegible] सीधूरमो
गादु देली यसत गुर मारग का हिया । कादु देख तो घट की अ
गादु देली यसत गुर मार ग का दिया चंद्रहोई तो घृत की त्रासा करणी की
सा लागि तिपजे चौतार दूध होई तो घृत की आसा करणी कै
तब सार [illegible] कहणां सु तेली रहा गादु देली कहणपरदा लखिया घे
धा प दस गुणपास वा बिरलाई पावर पढि सकै दरसी तारि गया
बोधा [illegible] कथणी सुदेली करणी दुहेली बिणा पावै गुड मीठा
पाखे हीग कपूर लखणीं गोरख कहै सुण हूब [illegible] सुरिग सत
न बै सिबा अवधू पढि तस पू नकारि बाबा दे रा जगमग मकू
नकीरबा हतै न पाई छा ना दे [illegible] तीजी मुक्त कुं ग्या नमा
या बोध हस गात गाया बेदं काप डी सन्यासी तीरथ दिगांणा
नपाया नूबा न पदेवा न दे [illegible] देवल जात्रा सू न्य जाता तीर
पजा आपांगी अतीत जाता सुफल जाता जैवाल अकेल
गिं [illegible] हीदू पाठ वै देहुरा मुसल मान मसीत्य जोगी
बेपरम पद तहां देहुरा न मसीत्य [illegible] हीदू कबेरां मकु मुस
लमान पदं जोगी अपै अलख कू तहां राम न्य ना नपुदा
ई [illegible] इकै तो सपीर तो बात कहीर रूपा भदमद मे नापू
दाई दुइ बीच दुनियां गैताणई हम तो दीरा ल चबेर दे
पतेर हा ऐसा ऐक सुप न बबार तन दासी ने कहा [illegible] क री
मासु बैठ मक मारू जागत सूता तीनि लोक न्त गजाल पस
कदां जाई गो पूता [illegible] कतां मे इ बैठा मे ई जागत सूता ती
नि लोक थै रहै निरतर तो गोरष न्यव धूता [illegible] आवत प्रचत
त्व कूं मांहे जाती पूत्त जागा वै गोरष पूछै बाबा मछींद्र या
सद्गुरु कहां थै आवै [illegible] गगन मंडल मै सुन्य द्वार बिजुली

लौ चंद्र सकै घोरे धार। ता मधि न्यंद्रा आवे जाई। पंच तत्त मैं रहै
स माई ॥२०॥ न्यंद्रा कहै हौं अलिया गलिया। ब्रह्मा विस्न महादेव
छलिया। न्यंद्रा कहै हौं कारी बिमती। जागे गोरष दूष पड़ि सूती॥
२१॥ उन्यंद्रा कहै हौं मसूता नीनी जे कबहूं चित लेंग नहीं की तो अनहद सबद
गगन चढि गाजै। पांडे पड़े तो सतगुरु लाजै ॥२२॥ तू दीढे रीरस कस
बहै उनमनि तागी आसि थिर रहै। उनमनि तागी दोई अनदा तूटी
डेरी छिन सै कंध ॥२३॥ पहिदे जि पिंड ता ब्रह्म पियांन मयां मुकति २४
न बैकुंठ बासा। नाराइण जाति आचौरासी मैं जाई। सत्य सत्य ता भंत
श्री गोरष राई ॥२४॥ आकास का तत सदासिव जांणा। ता सिव आदि
पूं ता रिपद निरबांणा। पांडे परचा ने गुरमुष जोई। हद डूं ब्रा
बागव णा न होई ॥२५॥ पांडे होई तो मरे न कोई। बूढे है दे
षे सब लोई। पांडे बूढा डेलि के हरवासा। त्यात गोरष नाथ म
छंद का दासा ॥२६॥ अधरा धरे छि चारि का घंटिया ढीमे सहै ध
र छंद अपरचा हवा। तब दुती नहीं कोई ॥२७॥ पंच तत्व ते
सिधौ मंडिया। तब लोदि तो निरंजन के पद सं प्रन मस लसी
मिलाई ले अरध। तब लटिले आपे रंडा रं ॥२८॥ ऐक लंपसी
गाती नवल रुष बांणा। वे धार मी नगम न पस्या न वे धार मी न
अगिन के साध। सत्य सत्य ता भंत श्री गोरष नाथ ॥२९॥ कलाबं
ड जाई वा सुन्य फल लाषि वा। ब्रह्म अगनि पहरि बा चीर॥
नी रुर रुर ती अमृत पीया। यं मन रुका ती रं ॥३०॥ पर तस
व तारहे निरंतरि। महार सरी के काया। आसि अंतरि गोरष
अगम अगोचर है सिद्धि कांम। ई मग गुफा नदी छिप्रा म जम
ति न जांती जागे राति। मन का दूके ना वे दारि ॥३१॥ न

डीबदतरि कोठा [illegible] प्रसाद [illegible] गालब कुं को [illegible]
ग्रसत कै रे उलटि हाते ता [illegible] धरे [illegible] मांडि तपा
कां मुकि और तोपर मपद [illegible] कि आसणा पव [illegible]
कर दिसदि नआरि तपाचि [illegible] चै भरे [illegible] ई न म
दसवै दार नाद बांद ले धूं [illegible] दस [illegible] दे
रषघाउ और घाट [illegible] त तुजे कि कथी ला पे
[illegible] ता की करे सरीर खि [illegible] घट ही रहि व
ईवादूर आहि निसि पीवे [illegible] ली व कालि कर स्वाद
वाई को लषि तब तोंगि [illegible] ता गी घट का ल [illegible]
परचाव तागी उन मनी क [illegible] आहि निसि ई क्यों
मूल ला [illegible] ता गी ना [illegible] रूप तब तांगीव उ
चष स रूप [illegible] मपती [illegible] जोगिया कैसा
[illegible] ता न जेसा [illegible] रि तामहि करि देष
[illegible] जोगी निसपति [illegible] दृष्टि आगे
दिव [illegible] रतितु का ईवाकें [illegible] नासिका आगे पव
तब [illegible] गया पद [illegible] ईस म धरं स ज्याता
उं [illegible] नाकी पे [illegible] क च [illegible] मूल फिर गि पर र
तद्वा [illegible] अब [illegible] ई [illegible] री कर गुरा गो अ मे
प द [illegible] धा जाई [illegible] गारे चांदि [illegible] तद
रकराई [illegible] अरध उरध [illegible] बीठ ठाई मध्य सु
जाई [illegible] ताकी सं [illegible] ई [illegible] तगोर [illegible]
गति [illegible] पाहा [illegible] पाया हेर [illegible]
ति [illegible] स हे ता दी सा [illegible] तब [illegible] रहे
अब धू मन स्वाद [illegible] गी [illegible] ते सूरति
गानं अनाहद सबद [illegible] तगा तब गंग

-DMV 12 / P ૫૯૮

P235 ડાંગરેના નાવા

ninety five

DMV 12

P · ડાંગરકનાગ
· ઈષવાંત

अवधू काया दे मारे नालि बोलिये दारू बोलिये पद बंदे अगति
पल्ली ता अनहद द गर डू व्याह्द गण ला उडि गगन ।२००। सुणि सुणा
वंता सुणि सुधि वंता अनत सिध की बाणी । सींस नवल सतगुरु
त्रिया ता गतरे गोरख बाणी ।२०१। घटघट मुलिया अपा नन सोई
बनबन चंदन न रूप न कोई । रतन रिधि व न कीद सोई बेता तवू
झे बिरला कोई ।२०२। दीवा का नाव सच न दीजिये छ जुंदे तो
आईछोटी वदंत गोरष नाथ सुगारपूता करवे दोई सुनिक
से टोटी ।२०३। डगवंत सूरपचपूर का तक ठक जाई दूर नाथ २३
कालंडार नरपूर षाया उरे बाचा फूरे । अवर की चंपा सबीक्
जैषपुरिष करै ।२०४। थांन मां नगुर रूप न देषीं बाधा मि
षापरगरांम । अगम कूं गवा ।। सदीष बादे सं अकल नाथ
कौ कोरि बा आदेस ।। २०५ ।। इति श्री गोपाल नारायण जी की सबदी सं
पूर्ण ।। ।। [illegible] वत जी का पद ।। तत्त ऐसा तो तत ऐसा तो कि
मकरि कप्यौ गंजीर रे निराकार आकार विवर्जित सत्य साधे द
रावंत बीर ।१। दृस्टी न मुस्टी अगम अगोचर पुस्त की ति
ष्या न जाई । डिंभिया दिष्या ना सोई जाने कलियां को नदल्यार्दै
।२। बाहरि कहूं तो सतगुर लाजै भीतरि कहूं तो झूठा बाहरि भी
तरि अविरंतरि सतगुरु सबद दृढ़ दीठा ।३। मीन चले जहां माघ
न जोवै । नाद न पवना गांके सर पहुप बास ना कछु नदरसे प
र मत तत्त ऐसा ।४। आकास डंडि च लोविसं गम पीछे भे
जनदर से मान ज तीदे रावंत यों पावे कोई विरला हरिपद
परसै ।५। तत बोलौ तो तत बोलौ तो अतल विराणी वितं
वेलरि बाड़ी विरदवी ता नि ऊबाल्या । गगन ही जाई र दे नी
।६। अमी कूं डस्ढ़ें घेरा बांध्या अनरा कूं तल नरे तौ ।

चेत छिपासा तो पोवे गा न गा अंतर पखे कि बे घेरे ती ॥१॥ बेराहि साधे
सा तक पोवे। वे ती अमी पिके ती रूप रे घ ताके चक्र ने ती
व पूछि तो मैं फच रे ती ॥ तिंनि दीक माई तिंनि दीपाई मदजे
फूलि तेरस ती बदत द एवत तमा हारे अवधू एक अमर फल दे
ती ॥ गोरषनाथ आसावरी ॥२॥ बाबा ती। आछे घट पाली तो दलक
रे घट ती ती रिपे मे सो बिले ते ई तोत नाही ती ॥ जदकादि
नि दो ऊ साधे तो जोसा थी कायाम ऊजल जाति नरपद रहि रितस्या मे
ति नकोव दोषा धरा ॥२॥ को सीमि भरै तो ऊँ दिदिजि निरत्या गी। तिन के
अभि तल सरीर मन गुर सबदी ते जेन चाली तिन को पूरा
तबीर ॥२॥१॥ ॥३॥ ... राग गउड़ ॥ आछे
आछे म दीर म ऊ तिको ई सूरे मन सम नवा ने सम मन ... रे ती
दे व तादो ॥१॥ ... मन वेधा धा मन का नको ई ... रे ती
जाति दोषि दोषि पड़ पतंगमा नादे तीनकूरे गारे ... ई दिर सिलु
बंधी मे ... माती ... दी पुरिष तत तवसार तो ॥ घड़ी ए के म
नवे जाति रे सन्यासी घड़ी एक भेग लमा तो रे ती घड़ी एके
म नवा ऊ नषरोषी ती घड़ी एक बिछियासा ता रे ती ॥३॥ ई दीव
छ जोगी ऊ ती र नहाई बा जब लग मन नहीं न बांधी रे ती पार
रंगापा ले ऊगा दे रे ती हउं ते ऊ तो का ले र मिषा धा रे ती ॥४॥ मंमद
र ले सस्या पार पाई ये मनवा बी ले रस्या पार न पाइये रे ती
आदि नाथ नाती मछंद्र नाथ पूता सती का सीई मंबो स्यो
रे ती ॥६॥१॥ श्री गोरष जी का पद ॥ सपत सघ ॥ आदि सेधकाम
तं अकार अं नती बाई वेकार ॥ पद तो संत निरंजन देव पर
या ब्रह्म सगा नका तेव ऊ लटि ऊ ल जाई गगन को चढे ॥ अं न से रस
पंड नपड़े ॥१॥ दूजा मथ निरालंब क ध्यान न जाई ही चंद के घरि
सूरि उ अमीना चंद सूर एके तौ बहै तो ईन उपदेस काया रहै
॥३॥

तीआसंण बिचारे पाप्र खेचरी मुद्रा त्यागं त मनषा माया त्या गेरा
षाकाल्ल ईन उपदेसै बाचियै जे मवरल्ल ॥१॥ चोथा संवसरतां ष
लागि जे छ्यादसरच्या गउल्ल पवन नीपी जे थींब पवन जी बाउह स
तो नप ईकाया न छेदै सस ॥४॥ पंच म संपवहीं लेवाई घट
चक्र वेधंती च्यारे ईं पंसथाकेवल्लस दस्न दलस्हें बाती जे ले
उनमकाषयादुष ॥५॥ छठा संषच्यकु तीं न लागि जे गुरय सं
दे सिव सिव की जे सिवसिवकरि निरंतर ही जे ईन पद
से जुगि जुगि जीजे ॥६॥ सप्तम संषकेद्रुपदहोई नाद्रांत जीवा
लकै तोई कालन्त जिस्यो रस हीसमाई रहे सोजोगी पंच तन त्या ल
ल है ॥७॥ सप्तसंषका जाणे तत्व सोई होई निरंजन देव
स्यतसंष न लागि तन धरीजोगी थिर होई केथ काया होई निरो
जी ॥८॥ नहीं छ्यो केकी पाणी नहीं छ्यांडसो ॥ नहीं छ्यांडराज जी
र लेवा तोर ॥९॥ तवा नेराकोको पाखसे ष्ट्र मरिबा नाफ कउ
माघं हुतो हिप्र छौ मन ॥ पायहियारे पडिता कोई मरिबा ना ते
ना मरै ॥१०॥ मनपव नमाद्रे दस्ती नेघोडा रीता नते गछे हेउ
र बरका भणि हैपे लेहेठा नाथै षराउरां कै ॥११॥ बुढा पा सबला
ला हवाई बमें कोई कोई जाणपे जी सतगुरसबदो राज प
धिरी सीषा गुरगोरषबच न न पूजांणपां जी ॥३॥१२॥ जोषी सब
जी कोपद ॥ मंगला मग्गु ॥ कहे राजा रमो पीचे द दसा ॥ दुरीबा
सतकी दिष्या देई रूमो णा ब ती माई ॥१॥ बाट घाट की षेगली
मेरे पाट पटोला ॥ मसाणा की ठीकरी थाल कचोला ॥ दुदे
फाटी कंथा मै फिरौ उदासा ॥ लु षा सकौ टूक डो लूं बे लिर
सा ॥२॥ धरती पलंग गउडा सा षरिसे ज परबतिमहलीं
सुरेऊ ॥३॥ त जी बंगाल देस मोणा वती माई उत्तरी पूपसादे
पीचे द चौपदई ताई ॥४॥

…॥ २॥ ता तीतो… ॥ सा … म श्री ॥ दीसती पाव ता गोरख
ली पाव सबरत तब डी मन्यता रतो सिमाया जोगा देत से त
पाप हराती ॥ तासिंध मा … नीम नो … चद मूरदा ऊलत दम्पु
भूरत गा माज मन ना सरा … दया दे सत्त फाल स जाग छतीस
ह आकासी ॥ ४॥ समत बीज मारे पैती सेवा नी ॥ पवन ताका हिरदा
है ॥ चेतनि गावलत रष वा नाम तो मन नेष तो नगा डी र ॥ हरि
ले अनन्द भा द्वै पै तीरसा वली ॥ मपत धो त्रिनि पार्ह ॥ …
गिलि हा तरे जरना गुरमुखि पैती मादी ॥ ३॥ तत सार्दि ता ने पुरान
सा ली ना ॥ गुरप्रसादे जोगी ॥ पंच तत्त सो ली पावेरा धारदसी
नि बोगी ॥ ॥ ६॥ … रिता थाकी सहजी ॥ अदे कारोपि धमी
बोगीती ॥ पर … तो सा मत्य मत्य ताछे तरा ता हरष्यरी ॥ पी रता
वरी जोरा ॥ ६॥ सुषि प्राद सत दुषि यारोक त ॥ … ताकी तहर को
मिली ॥ मूराड कत से दूना जुग ॥ मत्यसत्य तापनरा जा तरषरी ॥
दुषी राजा दुषि परि जुग दुषिवा ता भोगि घा ॥ सुषी पे सराजा तरथ
री ॥ जिनि मरका सब दपूजा गीयां ॥ ७॥ दडे राय मपडे रपे ॥ नपडे रपे
तताहि चारी ॥ साहूकार लोग छोड़ी जे मन ॥ तेसा ता नाउंगा तरषरी ॥ न
छारी ॥ ८॥ जोगी तरष्यरी तर पिन खूल्या ॥ तत्तिकरि रेडी बीड पारि
च कला ॥ दोई दोई ताक डी तुम तिसया वारी ॥ जोगी तरषरी जिवे जु
गचारी ॥ ९॥ अवधू उलटि कवल त कव लावि गामपु कर के
ई तवो ते कं वि ए ॥ पत ता वि न … धारी ॥ पैक
बेधोपंच ज सो नवो द्वार जाई ले कपाट दसवे द्वार मिवचारि
… रिक तब चंदा दोई ताम ना ॥ … गगन द नस्य
… बेधा मन नपा जे पारा ॥ साप तरस्यरी गोरष दास ॥
… रा सम न मंड सिमाया ॥ … मन जाई द … सिकरया मन
रा सम कल रम तोगी ॥ कहै तर … तेहर जोगी ॥ १०॥

सबद गुर जे तसा अनंत तामि चा ल्यौ लाई ।२। आधै उरध मद अ
जोग जुगत ने गगन लगाई डोर । प्रगट पद सो पर चढूवा गुर पर
सा दिड़ीद्व ता फूल ।३। सबद सबद समाया अवधू गगन समाय
सूता ऐक ती मंडलता दी पार गतकु दम ऐ के रि जतांही सूत ।४। सूर
णी लेकर साणि हुवै सी राजा दुही सोहनी जाति साति कोबिर ला दुही सी ओस
त्य सत्य नाथ लसिध दर ता ली ।५। अबरा अक ल कल पीन हो जाई स
क ला निरंतरि रह्यौ सं माई कर मन काया अयान माया सो तत सिध
रता ली पाया देवल तये दिसंतरी सब ज
गदेष्या जोई ताहीबे दीन दुमिले पाणी ने दी बिलाकोई ।१। देव लानै
हि वे वल ल नषा सुरति निरति लेखेल जो नर तं नकीको ध ली करदूप
रिष चारा गं षोलि ।२। देवल डिस्यां ढदवे बदू बोलना निवारि सारीर
सोस मकरि [illegible] पवन पर हो पेंत रे सबदांम
ल जतो ल देवल दे षिष्टि चारि करि तेबोली जेवोल ।३।
गुनाई जी की ला बदी ।४। अवधू सो जोगी जो अनन ले आणी उलट
वीं ला गगन के ताणी पलटी बाई बेधि से सोना [illegible] ते रस जोगी
सि कीया जो रा ।१। कलि जुग माही सत ऊगषाया उलटी जो
चढाई सेद बिदु गणे नगर हो ई सी ओ सत्य सत्य नाथ श्री
लसम ई ।२। अवधू तुरक केसव र स्यूं दोहू के गई बलने के नाई
जोगी के सव माई सत्य सत्य नाथ लश्री लाल गुनाई ।३। पह
पहरै सब को जागै दूजे पहरै जोगी ती जे पहरै तसकर जागै
चौथे पहरे जागी ।४। पारधच चढि या [illegible]
गुनाई परचे जोगी गुरमुषि जाणी संसे सी दरताई ।१। ब
सुरति सबद बोहोई सी बालक जा देरस [illegible] कलि
तू टे परले जासै बहु दि न मिल सै ताई

काया नगरी रमै मन रावल। आदि सिसासी कै तन्नो न्रम
चावल। चावल सी आपका ई डीब। सत्यसत्य नाषंत श्री सि
धगरीब॥ ॥ पाताल की मी हुकी आकास उत्तर षाचे। चंदसूरी मिल
ञ्रम गगन मन लीन गावे। सकल ब्रह्मांड उलटी फिरे तदा आ
धार कोचे डीब। सत्यसत्य नाषंत श्री सिधगरीब॥ ॥ फाटी कंथा
को उडीब। श्रीपोरस पंथ सिध गरिब। विविविरगि ईक तारि काय दीसै
त्रिधि करिबा जोग अभ्यास ॥ ॥ चुपकर ग्यानी की सबदी॥ ॥ काकुजी
के मकर तो अवधू बाई लचले अमरा तो मने देवलि चार ऐसे
चेतो रे चेतन कर ॥ ॥ साधी सिधि के गुर मेरो बाईस्यू बादग गनी
फेरा। मन का व्याकुल चुलि धांवो लो तो रपागिचु उपरि का मन उ
लो॥ ॥ बाईब धारा सपलउगा बाडी कि नदी नव ध बाई बिद
एं टदि धई डोर कोई नाषध ॥ ॥ नीचेरा उपानी ई पाणी ऊंचे
का तिसमझवा सबद बिचारे तब इक लिये दिन का बउ नद्भवा
॥ ॥ गुरु की पाटसी की सबदी॥ ॥ घंउ चलन्तो सब को देवै पुराण
चलंतो बिरला प्राण चलंतो जे उन देषे। तो सगुरु मे चेला
कहां बसे गुरु चेला बसे चेला कोण गुरु न चेला आप सु लो ज्ञान
त कयो मेरा ना ई गुरु सिष की को गावो लषाई॥ ॥ उरचै बसे गुरु
पश्चिम बसै चेला त्रिकुटी षेत्र उलटी मेला अनहद सबद लई
मेला पाई। गुरुमुषि जोति निरंजन पाई॥ ॥ काया कंचन मन
कस्तूरी सो तो गुरु को दी तो गगन मंडल मध्ये कवाई वा जस मरं
ना न होपली तो ॥ ॥ सिध मरड बदपका दि दे अनहद पाला कै ति बूंदस
री ती सबद माहिं सो बूंद लषै लो ॥ ॥ पीर संतु रारे परा षिपे मन मे
तूरं मतां दूजती मनी का पट तरा ला तो षिरर दतां ॥ ॥ ॥
॥ ॥ सबद सबद पारस सबद ॥ ॥ ॥
गा पंउ व सो पते। अविगत कंतपति ते ॐकार। ॐकार उतप

नोती निगुन तीनिगुन उतपना पंच तत पंचतत्व उतपनी
सकल विस्तार त्रिगुन ईस्वर उतपंनो आकास आकास कत
पनो वाई वाई उतपंनो अग्नि अग्नि उतपनो अदीलो आ
नील उतपंनो मही ऐत पंचतत्व बोल्लि पे पंचतत्वकी पंचीसप्र
कृति बोल्लि पे अस्ततुचा नाडी रोम ऐती प्रथ्वी प्रकृति बोल्लि पे ल
लमुत्र प्रसेद सुक्ल लोह ऐती आपप्रकृति बोल्ली पे खुध्या निंद्रा
तृष्णा आलस क्रोध ऐती तेजप्रकीर्ति बोल्लिये गोवंण धावण बल क
र्षण प्रसारण आकोचणी ऐती वाई प्रकीर्ति बोल्लि पे काम क्रोध लोभ मोह
भय दोष ऐती आकास प्रकीर्ति बोल्ली पे ऐती पंचतत पंचीसप्र
कीर्ति बोल्लि पे प्रथ्वी तेदक थिते प्रथ्वीका घर ह्रदे बासक तेजे
द्वार दोई मुष गुदा प्रथ्वीको मुष पेसार गुदा निकास जाईपी वे सो अव
र होत तलात चवोदार प्रथ्वीकापीलावरंण है ताल साव भीमस्व
द स्वामी ब्रह्मा कारा उकार गुण रजगुण रूप वेद रिगवेद वईषरी बाचा
जाग्रत अवस्था ईति प्रथ्वी नेद बोल्ली पे आप तेद कथंत आ
पकाघर लेलाट कीपका सेवास द्वार दोई जिभ्या ईद्री आपका
द्वार पेसार ईद्री निकास कोमन चेस्टा चवेदार त्रिपेच्च सत्वीवेदा
र आपका फटक बरंण सीतलस साव भारा स्वाद स्वामी विस्न
साल गीऊन सत्वगुण उकार वेद माधि मिवाचा सुपितन अव
स्था ईती आपनेद बोल्ली पे तेज नेद कथंत तेजका घर कुंडल
नी तिलीवासो द्वार दोई चाषि कोमे पेसार दोलि निकास दि
ष्टि देषे सो अहार रूपरंग व्यौहार तेजका घरा त्रिकुटी ताता स्वा
दा चरपरा स्वाद स्वामी रुद्र तामसी गुण कृस्न बरंण सामवेद
पस्यंती बाचा सुषोपति अवस्था

२२०

ईति तेज तेद बोलिए । बाई तेद कथंत । बाई का घर नाति बू
कै बासो । द्वार दोई नासिका । ईडा पैंगला पैसार । गुस्तानिका सा बा
द विवाद अहार । हां जपापे उब्योहार । बाई का नीला बरण ।
चच तासु ताव । परस्या अंतस्वेद । ध्या पीर ईसर देवता । चौथो
गुन द्वियाबरण । स्पर्स बनबेद । पस आचा तुरिया अवस्था
ईति बाई तेद बोलिए । आकास तेद कथंत । आकास का घर
हृदय पीतैवासा । द्वार दोई श्रवणा । बोवै श्रवणि पैसार । ठहिताण
श्रवणि टिकास । बवे सारा सो अहार । सामिता सबद ब्योहार । आ
कास का स्याम बरण । ऊ तासु ताव । कडवास्वाद । स्वा श्री निरंजन
देवता । अतीतगुन । श्रवण ग्रस्स बेद । अनूप मबाचा निराका
र अवस्था । ईति पंच आकास तेद बोलिए । ऐती पंच तत्व तेद स
पूरण कथीतं । ब्रह्म जोनैच नाथितं तत्व तेद कथंत । पृथी बा
ई आप तेज आकास । ईति पंच तत्व श्रवण नासिका । जिह्वा
त्वचा ईती पंच ज्ञानईंद्री बोली ए । बाईक दसत्रु चरण । उप
स्त गुदा । ईति पंच कर्म ईंद्री बोलिए । ईति पद्रह तत्व
की अस्थूल तेद बोलिए । [illegible] ईति [illegible]
हि ए मन बुधि चित अहंकार । ईती चतुर प्रकार का अंतहकरण
बोलिये । ईती नव तत्व का त्यंग सरीर बोलिए । पचीसवां तत्व जी
व बोलिए । छबीसवां तत्व ब्रह्म । छवीसवां तत्व जाणौ तेऊ
गपंद्र बोली ए । ईति छवीसवां तत्व बोलिए । । बैराठ तेद कथं
त मसगते उतरतिबंदा । ना-तीणे पसटांते उपदा रज प्रथवे मांसां दि
मत्त नीर । द्वितिय मास उपजंत षीर । त्रितिय मास रगत्र का जेल्ला चौ
थै मांस मांस की वृधि । पांचवै मांस उपजंत अंडा । छठे मास

चख १०

पाचै फूटै सातवैं मास सपत धात आठवैं मास अस काया न
वैं मास नोष डाढ़ि धमी दसवैं मा मद रह द्वार मुक्ता अ उ उत
कातीनि प जंत तीनि सै साठि हाड तीनि सै साठि मास का तोला
तीनि सै साठि साधि तीनि सै साठी बंधि तीनि सै साठि नस तीनि सै
ठी नाड़ी अहूठ दाघ काया अहूठ कोटि रोम ईकवीस सहस्र
सै द म चौदद पासुरी बारह आंगुल कलेजा चोदद आंगुल के
फस नौ आंगुल तिल्ली दोई आंगुल बूको ऐकपीली ईकईस
दा घ आंत मल हाथ दाउ ईकईस मन लकड़ा चारि आंगुल का
न दोई आंगुल चौथि ती [illegible] आंगुल [illegible]
ष सपत आंगुल डिढ़वा नौ आंगुल अंवरी को को घ ली अना
रह आंगुल ब जुड़ी का न डार त्रिप्र ड कपाली द्वार ऐक द्वार नव
द्वार दस द्वार तेरह द्वार चतुरदस द्वार अठाईस द्वार तीस
नव नाड़ी बहतरि कोठा दस आवा गवन द्वादस आंगुल
बारह कला सूरिज की सोलह कला चंद्रमा की पवन सरि
ज का बासा नाड़ी बाद चंद्रमा का बासा [illegible] का बा
सा हिरदै बुधि का बासा अंतहकरण चित का बासा अहंकार
का बासा बूझे उ बुधि प्रथी का तत मन अ नीर का तत चि
त तेज का तत अहंकार पवन का तत सबद आकास का तत
बोलि ऐ सबद का दसवैं द्वार बासा बुधि को कंचन बरन
मन का फटक बरण चित का रक्त बरण अहंकार का नील बरण
सबद का कंचन बरण [illegible] आकास का तत चषि ते
ज का तत नासिका बाई का तत जिभ्या पाणी का तत बाई
आकास का तत दसवाई का तत चरण तेज का
तत २०१

डपस्त प्राणीका ततै। उच्चापूछीकातत बोल्तीपे। षटचक्रनेद
कथंत। अरधचक्र। स्वाधीस्थांन चक्र। मणीपुर चक्र। अनहत
चक्र। विसुधीचक्र। आज्ञाचक्र। ईति षटचक्र बोलिपे। आ
धारचक्र गुदास्थांन चतुरपखुडीकाकमल। तहां गणेस
देवता। सिधिबुधिसक्ति। ईति आधारचक्र बोलिपे। स्वाधीस्थान
चक्र बोलिपे। लिंगस्थान षटपंखुडीकाकमल। तहां ब्रह्मदे
वता। सावत्रीसक्ति। स्वाधीस्थानचक्र बोलिपे। नाभीस्थान
दसपखुडीकाकमल। तहां विस्नदेवता। लिछमीसक्ति। ईति म
णीपुरचक्र बोलिपे। अनहदचक्र हिर्देस्थान द्वादसपखुडी
काकमल। तहां रूद्रदेवता। उमासक्ति। अनहदचक्र बोलिपे
विसुधचक्र कंठस्थान षोडसपखुडीकाकमल। तहां जी
वदेवता। अविद्यासक्ति। ईति विसुधचक्र बोलिपे। आज्ञा
चक्र भ्रुवस्थान दोईपखुडीकाकमल। तहां स्योदेवता। [illegible]
नासक्ति। ईती आज्ञाचक्र बोलिपे। अर्धउर्धकमल माधि
अस्टदलपदम। तहां मनदेवता। मनसासक्ति। ईती अस्टद
लपदम बोलिपे। नाडीत्रिया ईडा पिंगुला सुषमना। ईडा
मार गंगा बोलिपे। पिंगुलामार गंडजमुना। सुषमनामार
गासुरसती। त्रियानाडी त्रियानदी। ईडाचंद्र ताईते पिंगु
लातानबहंती। सुषमनानाद उच्यते। ईदे त्रियास्थाने उ
डामन मारगो। पिंगुलाबाई उचते। सुषमनानाडी बोलिपे
त्रियामारगंबहंती। बुधी ईडामारगे। पिंगुलानाविस्द उचरे
सुषमणाणी स्वंचह्रूपप्रति। त्रियानाडी उच्यते। ईति त्रियानाडी
बोहोते। बाईप्रवांणाकथंत। बेजेबाई द्वादसपन्रांगुलसा
सउस्वास हूटै। उस्वासबाई सुडसरआंगुल सासउसासहूटै।

बोलतां बाई ईकीस सहस्त्रां गुल सास उसास छूटै। आवतौ बाई पैंती
सहस्त्रां गुल सास उसास छूटै। सोवतै बाई अठतालीस सहस्त्रां गु
ल सास उसास छूटै। मईथुन जोग करतां बाई चौरासी अंगु
ल सास उसास छूटै। ईती बाई जे देह लोलिपे ब्रह्मा उ जे देह को पि २७१
त. पंचतत तिनि त्रिभुवन। ईकीस लोक। सपतदीप ब्रह्मांड। सप
त पाताल। सपतदीप नौषंड पृथ्वी। अठसठि तीर्थ। सपतस
मुंद्र। नौसै नवासी नदी। अठारह भार बनासपती। अस्ट कु
ली परबत। नवकुली नाग। नवलषि तारा। सातवार। नव
ग्रह। बारह रासि। अठारस वरग। सताबीस नष्त्र। अठा
ईस जोग। पंद्रह महूरत। आठ पहर साठि घडी। तेतीस कोडि
देवता। बांवन बीर। सवा लाष भेटंग। चौसठि जोगणी।
अस्ट भैरूं। नव नाथ। बारह रुद्र। दसावितार। चौरासी सिध। नि
नाणवे कोडि राजा। अनंत सिध। अस्ट सिध नव निधि। आठ
दसा। च्यारि षांणि च्यारि बांणी। च्यारि वेद। च्यारि कतेब। चा
रि लाष असीहजार पीर पैकंबर। षटदरसन। चत्रु निगम। ष
ट सास्त्र। नव ब्याकरण। बारह सिकंद। अठारह पुरांन
बांवन उपनंनषित्र। चवदस विद्या। चौसठि कला। निनां
वे कोडि षेडा। छपन कोटि मेघमाला। चौरासी लाषि जीवा
जोनि। बारह आदित। षोडस विधि पंद्रह तिथि। छह राग छ
तीस रागिणी। गुंनचास कोटि तपन। सपत सुर। पांच तत
ताल सपत। सपत धात। सुनो देवी पारबती। ईसर कथं
त महाग्यांन। उमा पारबती पूछंत। श्रीसंभु नीर्णय कथंते

ॐ केवल ब्रह्म ऐक सुध चेतन्य दूसरी माया [illegible] माया के संजो
ग जैसे वृछ की छाया वृछ छाया मिरजीमा [illegible]
ब्रह्म माया को ऐसो संजोग माया जड ब्रह्म [illegible] माया [illegible]री
ब्रह्म ब्रह्मकु परि कोई नही ऐक ऐकौर मन ब्रह्म [illegible] माया [illegible]
धरी ब्रह्म की जैसे ही तीनि इछ्या क्रीया ज्ञान माया की [illegible] तीनि
संसतर [illegible] मिथ्या माया के नाम पंच माया कहिये आकासक
हिये संन्य कहिये प्रकृति कहिये सांत कहिये ब्रह्म के नाम पंच
ब्रह्म कहिये जीव कहिये काल कहिये कर्म कहिये सुभाव कहि
ये ऐसे दहे तेथिसी रूप जो महतत्व वात्र कहिये पंचतत्व को
बिचार ब्रह्म ते आकास आकासतै बायु बायुतै अग्नि अग्नि
तै आप आपते प्रथी पंड ब्रह्मंड ऐक इनको कारण माया
जीव को कारण ब्रह्म ब्रह्म चेतन्य जीव चेतन्य माया जडवत
सरीर जड कारण कारज को ऐसो बिचार सतगुरु [illegible] संध चेत
न्य माया अनित्य चेतनि सरीर जड चैतन्य माया ब्रह्म को सद
सन्निधान कबहू पृथक नहीं होई छडबीस को महाविस्नु पद
कहावे पंचवीसतत्व माया के ऐक आसब्रह्म को नवतत्व को
सरीर तिनके नाम तीनि सुषिम कहिये लिंग कहिये जोति क
हिये पंद्रहतत्व को सरीर ऐक ताके नाम तीनि बिराट कहि
ये स्थूल कहिये दीरघ कहिये ऐ द्विसरीर प्रानि के चैतन्य तीपे
दूसरे जीव चैतन्य जीव बंद्ध अवस्था बिनर मुक्त अवस्था च्यारि
जाग्रत सुपन सुषुपति तुरिया तत्व छबीसा मील तिरहे तासो
जाग्रत अवस्था कहिये पंद्रह तत्व को सेवे नवतत्व को सरीर

सुपिनै जाई। तासौं सुपिन अवस्था कहिये। रवकी सत्त्व मिलि रहै सु
षदी सोवै। तासौं सुषुपति अवस्था कहिये। ब्रह्म कौ जीव पहिचा
नै। तासौं तुरिया अवस्था कहिये। ब्रह्म जीव दोन ही एकै है। ताकौ
दृष्टांत है। जैसी अग्नि उसनता। द्वितीय नही। ज्यौं ब्रह्म जीव द्वि २८०
त्य नही। ब्रह्म जीव ऐकांतर है। एकै सोपि कहिये। जीवरूप छूटै
ब्रह्मकौ अंत्रे सो अंतर। ब्रह्म जीव सत्या मोदिक कहिये। यासौं घटक
है सो रूठौ। मन बुधि चित अहंकार। चित अग्नि कौ सरूप। अहं
कार बायु कौ सरूप। मन तोय कौ सरूप। बुधि पृथ्वी कौ सरूप
इति चतुस्टय अंतहकरण। सब्द आकास कौ सरूप। सपरस
बायु कौ सरूप। रूप अग्नि कौ सरूप। रस पांणी कौ सरूप। गंध
पृथ्वी कौ सरूप। इति पंच तंनमात्रा। ये नव तत्व की सूषमदे
ही कहिये। आकास बाइ तेज अप पृथ्वी। इति पंच महद भूतानि
श्रोत्र आकास कौ सरूप। तुचा पृथ्वी कौ सरूप। चक्षु अग्नि कौ
सरूप। जिह्वा आप कौ सरूप। नासिका बाई कौ सरूप। इति पं
ज्ञानईद्री। बाइक आकास कौ सरूप। पांनी बायु कौ सरूप। प
दा अग्नि कौ सरूप। उपस्थ पांणी कौ सरूप। गुदा पृथ्वी कौ स
रूप। इति पंच कर्म इंद्री। पंच [illegible] कौ सरूप। आकास स्यो
म बरण। बायु हरित बरण। तेज रक्त बरण। आप स्वेत बरण
पृथ्वी पीत बरण। इति पंच तत्व बरण। नौ माणा। मन बुधि चि
त अहंकार। इति चतुस्टय अंतहकरण बोलीजे। सफुरनी च
तचमकी अस्त्र पाति करै। अहंकार के भेद अभिता। मन के सं
कल्प बिकल्प। बुधि के च सिद्धांत जाई। तत्व नासै तत्व प
द ब्रह्म पावै। असौ पद ज्ञान करि आलो पि होई रहै। अज्ञान

करि जीव बंधपावै । ज्ञानी जीव कौ मुक्ति है । तत्व ब्रह्म कौ अरथु तत्व
पद ब्रह्म । दै पद माया । असी पद ज्ञान । तत्व पद त्वं पद असन्ती
या । अज्ञान तापु नु कन्न्वे । अज्ञान ते जीव बुधि कहिये । ज्ञानी
जीव मुक्ति कहिये । ताकौ परिकरन । पद द्वयं माया ब्रह्म लक्षिन
त्रीणि । ब्रह्म माया जीव । प्रकृति च्यारि । जीव ब्रह्म माया सरीर । मुद्र
पंच । षेचरी भूचरी । चाचरी । अगोचरी । उनमनी । पंचकर्म नींद
रत कारज । करण । कारिज देह सु लाल । कारण । जैसे मांटी को
रज जैसे ताला । माया कौ सरीर । पद तत्व कौ बिनसै । न तत्व
कौ अखवर । ए है पद कौ विधु सकौ जो पद दो प्राप्ति देखै । उर
मीषद । अध्या चार्गा प्रक्षेद भुक्त । सीत उष्ण । सुष दुष । मान अप
मान । वाचा च्यारि परा पस्यंती । मध्यमा । बैषरी । गंगा घोष प्रति
बसती । कहन दाराम [illegible] । गंगा तीर घोष प्रति बसती । कहन दा
रामा चल । लोद च बक नाए । आरद ट घट कनाई । [illegible] पद
माय । जैसे ब्रह्म सु हास्या कहिये । सानप सी च्यारि । बोध कुटी
चर हंस परमहंस । इति श्री संकराचार्ज विरंचते । ब्रह्मं ज
ज्ञानमार्ग ग्रंथ उप । नषित पतितेहु रे पाये । मैं ह्नानी कौल न
तर ज्ञान मार्ग सेप्त बोसिच्चर ज्ञान ब्रह्मगेवाप्नुवन्ति ते । ॐ नमो शिवा
य ॐ नमो [illegible] वाई । श्री ग्रंथ नन [illegible] पद्दु का [illegible] स्ते ।
ॐ पद द्वयं । ब्रह्म माया पद
पंच च्यारि । प्रमिति की कर्म मोक्ष । तरिका [illegible] राजसी ताम
सी सातगी । बाचा च्यारि । परा पस्यंती मध्यमा बैषरी मुद्रा पं
च । षेचरी भूचरी चाचरी अगोचरी । उनमनी । मन बुधि चित
अहंकार । चतुस्टय अंतःकरण । सब्द स्परस रूप रस गंध पं
च तन मात्रा रीति । पंच तत्व नमा [illegible] स्यो । ओत्र भाको । च दुजिह्वा

प्राणा । इति पंच ज्ञानेंद्रियाणि । [illegible] शब्द रूप रस गंध
इति पंच कर्मेंद्रियाणि । पृथ्वी आप तेज वायु आकास पंच मह
भूतानि गोचरि उनमनी ऐ कन्न ब्रह्म त्रिकुटी रज आपा जीव पे
रक हंस गदद आस्तिमान न सपूत्र कृपा परमात्मा सत माया ब्र
ह्म जीव संज्ञति माया अविद्या संज्ञाति ब्रह्म जीव ऐका माया अ
विद्या ऐका । इति श्रीस करा चापरि ज्ञान विरचितायां
[illegible] हैं जो उंकारा धारि ला गो रंग मेरे चि
त न कहै मन नवो अपंग । [illegible] जहां जावत हां उलट पषा न पूरी रह
हरि सब समान बेद सुमृत सब देषे जाई उहां तें जाई प जे ह
रि ईहां न होई ॥१॥ एक बेर मन तेई उमंग । चोवा चंद न चरा
अंग ॥ पूजन चाली ठांई ठांई । सो ब्रह्म बताये गुरि आप मांहि
सतगुर मै बलिहारि तेरा । सकल विकल तं मै जारे मेरा । राम
नंद रमे एक ब्रह्म गुर के एक सबदि काटे कोटि कर्म ॥
[illegible] तांथै नक कूरस सारा हमारे राम को ना सन्यधारा
[illegible] गुर तकाची टाम गुरत वाई । गुर तहीं मे उरझि रहाई । गुर तरी
ऐ कमी ठाहै डी । पीछै बुधि पावै सोई ॥१॥ सूपि नैतर राजा होई प
ना नां विधि के सुष तहि है । अैसे सुष कै सुष लेई । जागौ तो कू
ठा सोई ॥२॥ मै मेरी गया न बसमाया । आत्मा संतोष न पाया । रामा
नंद गुर गोमि गाढे । तांथै त्रिविधि त्रिनि सम भावै [illegible]
[illegible] जी की [illegible] तू मेरे तरवर मै उन पंषी
अंबरीष पृ नारद साषी [illegible] जे तुम गिरवर तो मै मोरा । जे तुम
चंदा तो मै चकोरा ॥१॥ जे तुम तीरथ तो मै जाती । जे तुम देवा
मै पाती ॥२॥ जे तुम सरवर तो मै मंछा । जे तुम सूरदी तो
अछा

पै पूरा है अंतरजांमी ॥ मैं तेरौ सेवग तू मेरे स्वामी ॥२॥ हरि
कौ मरम न जानै कोई ॥ जैसा जाकौ तिसी सिधि होई ॥ घरि बैठा
तीरथ कौ धावै ॥ तीरथ षी जाई जकुत पछितावै ॥ तिहि तीरथ कूं
चित्त मेरे डीग्यरा ॥ पुनरपि जनम भि न आवै ॥३॥ तीरथ करि करि
जनम गवाया ॥ षोजा हरि तिहि न पाया ॥ कस पषाणा सब हिरदै मे
लिके सौ ॥ ऐसा चेतन सुव नरायण ॥४॥ तीरथ सब सलदेव देउ पूजा ई
द्रिवे सासि बिगुता ॥ षी पौ कदे प्रगट परमेसुर ॥ जन जागे जुग
सूता ॥३॥२॥ मना तजि सिर हरिचरणा ॥ परमपुनिति आरति स
रणा ॥ अवर जजा न सब ता उसि न होई ॥ बेद पुराण जे कोटि सा
स्त्र पढै ॥ बिना हरि जगति नही मुक्ति होई ॥ जिनि ज जह
रि चरणां ॥ जीते आनूं बराम ॥ जासकी जाति अषप पषीणा ॥ भ
सम मेले लिषिये ॥ सनक मुनि पेषिये ॥ नामा की ना मना सपतदीप
॥१॥ जाके ईद्रि वकरि दिग उर बद्रकरे ॥ मैं दि ये मे परमेदप
नाम थापि के सी करी प्रीति अैसी धरी ॥ नो चे ड नांव प्रसीधि कवी
रा ॥२॥ जासकी जाति का ढेढ ढोर ढोवता फिरै ॥ अठ ठकुरां गारे र
सी आस पास ... दंडवत करे ॥ प्रगट नीसा
णे दास दासा ॥३॥ जे नरा उपत चरणां कव ताष ती ॥ ता सम
तुलि नही अवर कोई ॥ आपल ऐक ह नेक दाई बिसतरे ॥
अति तू ऐक कौ ऐक सोई ॥ दसौ दिसा छाई रह्यौ संसार
मै कौ ॥ सरगि गए षे जे न पाई ॥ दास की पैकहू कठिन क
ली काल मधि ॥ भगत भगवंत तजि पार पाई ॥४॥३॥ रागरामक
ली ॥२॥ पूजा को गाव के सै उर गाजी व ना ॥ पाती कौ गाचे हाडे ॥ स
कल जीव मैं तम सीवरतौ ॥ ताषे मे नही ताडो ॥ जो दीसे
सो लिन असि जाइ गा ॥ आवि नासी न हि पाई ॥ बेद पयरा पि दहरे
ताषा ॥१॥

ताको मैं नहीं धरो डे॥१॥ साल्ति गरा मन प जो चां मी यह तो द॒व
न होई॥ साधू जो तो रस्से निरंतर रा॥ अबिगत ताको न कोई॥२॥ अ
लषि निरंजन तुम अबिनासी॥ तेरी गति कि नहू नहीं जाणि पी
पा पूजी पूजि जुग षोया॥ के पाथर के पाणि॥ [illegible]
दुकरि जु नैसो मन कं नित न जाई॥ तदुकहि उदौ तुम्हारे पाई॥४॥ म
अलष निरंजन निर्मल हरी॥ तहां साधि उदौ रस्स कीगरी॥५॥ सब २८
त निरंतर सब घटि स्वामी॥ अंतर जामि हरि अंतर जामी॥६॥ पी
पा प्रणवै रांम नि धोन॥ नग तीचिंता म रीति होदो दार बांद॥
[illegible] काया बन षंड पोजता मैं न
व नितो पाई॥ अनंत नजा राज अरांम कीद काई॥१॥ काया दे
वल काया देव काया पूजा पाती॥ काया धूप दीप नईबेद॥ मे
पाती रथ ज्याती॥२॥ काया मांहि अठसठि तीरथ काया मांहि का
सी॥ काया मधे कवलापती बैकुंठ बासी॥३॥ जे कुछ त मंडे पंडे
पिंडे सोधा जे सो पावे॥ पीपा प्रणवे परम ततर सतगुर भि
लै लषावे॥४॥१॥ एक अचंत तहां जोसा देष्या सो ततर करहु बि
रले पेष्या॥टेक॥ नाद बांद ष्येर है निसत्ता॥ सु तत परम जदयो
उजियाला॥१॥ त्रिकुटी बाहे जोति जु कहिये॥ ताहू पै अगम मत्रा
गोचर लहिये॥२॥ त्रिबिधि ध्यान त्रिदेव ध्येरा हिता त्रिगुण अ
तीत अंतर गति रंमिता॥३॥ जंन पीपो सतगुरु बलिहारी॥ ताके
सबदै मिले मुरारी॥४॥२॥ मन रे काया मेस्प का तेरा॥ जैसे तरवरि
पंषि बसेरा॥टेक॥ चंद न है तां सूर न होता॥ सो ती दिवस न रा
ती॥ दूसरा न होता इसुर न होता॥ करता कैं हा स्त रीती॥३॥

माय नहा तो बाप नहोता ॥ दोनौं कै मन का एक ॥ मन नहोता तु मे
नहोता ॥ कहो कहां थी आया ॥ २ ॥ ये चर अचर रसी गी सकोई ॥ गु
र प्रसाद पाया ॥ पीपा पु ॥ ६ ॥ ये पर मतत रे ॥ सब उ मध पुर
लया ॥ ३ ॥ ३ ॥ ईस मतं ईस मत इतरै सरणी आयो ॥ सराणई बि
हु पंजर राषि लै रै मई आराम ॥ टेक ॥ द पापा पदा द षण दा न दे
षी कापा त्रि ला चा ना सा ध स गो भति लौकू हु दे न मानै मन
॥ तो दंकि सां कल पर ही ॥ तूटै तो घ ॥ १ ॥ चे पाई ॥ मो हकी सांकल
कै से छू दे होर मई या सांई ॥ १ ॥ दे षो पुंन्य दषो पाप ॥ स कल
जग दे ष्यो स ताप ॥ ... ॥ आपे आ
... तेरी ... मेरी ॥ ...
प ॥ ... ॥ ... ...
दाई हो देव ॥ टेक ॥ ... ... ॥
लाया ॥ १ ॥ ... ... ॥
दीया ॥ २ ॥ ... ... ॥ ...
उ मी नर ना ॥ टेक ॥ जो न ही उचर सी ... ॥ ...
तन का रे रां मा ॥ १ ॥ ... ... ॥ ...
... ॥ ३ ॥ ३ ॥ ११ ॥ राग गौडी ॥ ... ...
ग ये ॥ दु ... ॥ ... ... ॥ ... ...
... ... ॥ ... ... ॥
गयो ॥ ... ... ॥ १ ॥ ... ... ॥ ...
मा घा ॥ ... ... ॥ वाजी ... ॥ २ ॥ ...
... ... ॥ ... ... ॥ ... ...
जी ती षी षा ॥ ... ... ॥ ३ ॥ १ ॥ १३ ॥ ... ...
मी ठौ ... ... ॥ ... ... ॥ दी न
राग गौड ॥ १ ॥ ... ... ॥ टेक ॥ ... ...
द या ... ... ॥ तौ पार उतारो ॥ ... ...
लया ॥ सत ... ... ॥ ... ...

रांम नांम दिढायां ॥१॥ जपां न तंबोली सा रखै । योंह्रीदे में न्हीं
प्रेम नीर ले ते रवे । विसरांतो हारूं ॥२॥ कितक रांणी कूं दीसबे
सति नांव तुम्हारो । परसकते नहीं वीसरूं । मनेष रांपिया
रो ॥३॥ जोई जोई मोदिव्या चिरजुहोई । नेई रांम न देष कोई
ऐक असे दुषि फिरिफिरि पावे । ऐको ऊंचे ऊंचे परबत ता के नी
रपुवे समकर ऊतल ओवे । तप तीरथ व्रत कीया को वो ॥१॥ तुंचित
मुनी ऐक जटा बंधावे । ऐक अरध मुषि अंग झुलावे ॥२॥ केइ
नेक ऐक नहीं जान्यौ । आतम सरूप परि पूरन नाहि पीछान्यौ ॥३॥
साची कहूं न मांनैं कोई । प्रसमकल में हिं देष्या सोई ॥४॥३॥ नर
की न्ही नवांनि पधारे राजा रांम । सहरसु बस बस्यो सरस सबकांम
॥टेक॥ हरि आऐ के ऐसाहि ना ॥१॥ मिटि गयो तिमर उदे भयो भांण
॥ जब हरि हित करि कीन्हौं वास । छूटि गऐ सब त्रासा पास ॥२॥ प
रसक दे हरि दीनदयाल । भूल गली तब छूटी डाल ॥३॥ गावै
रे मन रांम नांम । आदि अंति हरि आवे कांम ॥३॥ साध जन की से
वा करे । रांम रसांई णि कोठा भरो ॥४॥ रांम नांम हिड मोटा छै जिनत
ष चौरासी षड न उद तिरि ॥५॥ प्रसमकदे रिण मोटो टल्यो ॥ जम
दांणि री का ग दब ल्यो ॥६॥३॥ आज नांव बी सब ले तो नां देज
[illegible] हरि नांव ॥टेक॥ जो दिन सुदिन ई सो दिन
होई । पछि निहार तपाया सोई ॥१॥ मंगल कोटि करे द्वारि
रांम लम तीरू चिमां नै घाणि ॥२॥ मन के मनोरथ पूरवे घणां
कहै प्रसमिले हरि के जनां ॥३॥६॥ राग गौड़ी ॥२॥ मन तूं रां
म न ताणि रे रांम न ताणि । नां पांत न ले कोई । जो गज जरत पतीर
थ नां तु ले हरि नांई ॥टेक॥ अनेक अरधम रामक हंतो

संगि लीन्हां अमर कीन्हां पुरिब अथवा नारि ॥१॥ वसु
कास्यानी पारि । संगि लीन्हां अमर कीन्हां । रीछ बांदर अमर कीन्हो । अैसा मैं
घायाकु देत तारे । पूतना पारि जोई । बिष पावे
घूघसोई ॥२॥ सम्भक हलांति रि गानिका । अजामेल गयंद । विषपाव
तन्य अमर कीन्हो । अैसा रांम नरसंद ॥२॥ परस प्रणवै साधस गति
बीनती अधतारि । कत्ती का लदास तेरा । सरणै राखि मुरारी ॥३॥
आव गोपाल जीच्या तुरतोरी । तीष मां तपति बुझाई नहीं मोरी
बेद नीबा हर खोगीप धारिया । मारि संखासुर नै बेद उधारिया
सीधा नीबा हर बेगीपु धारिया । मारि असुर नै संत उधारिया ॥२॥ परस
नीबा हर बेगीप धारिया । जगतवछल नौ बिड़द पालिया ॥३॥ अ
मारे लोन्ही बणिजारा । हरि जी रामै वणिज करी ज्यौरे । हरि कौ क
घा साध की संगति । नित चरणांमृत पीज्यौरे ॥टेक॥ नायक ... खब
णि ज्यन सी जांणपू । श्रीसार रंगि रात तौरे । हाकत बैल त्यौ तनधीरौ
कां मच्छै धिम दिमातौरे ॥१॥ पांच बैल हरि कीरति लादा प्रन
छेचे तहरे चालोरे । मांह गअ्रांणि मिलया साधू जंन । जो मांगै सोई
आलोहर ॥२॥ उनटा घाट उबाह मारग सो मारग पर हरि ज्यौरे
संगी ही चोरखी छिवर घाजा । जमकी करस्यूं हरि ज्यौरे ॥३॥ बैकूंठ
टा मैं मारग च्या त्यौ सब लाधांणि रोटा डौरे । परस कहै सवदा
णि पै त्या । हरि की जगाति डिनिषां डौरे
रै चित च्यंत्य सिंदी नंदपाल हरि । हरि बिन अव
र न कोई । जो पावै बूत्स हपंड लो । करता करै सु होई ॥टेक॥ जि
नि जन नौ के उदर उदि क थ्यौ । पांडकी यौ देस हुस । दीयौ अधर अग
नि मुखि राखे । अैसा षस मह मारा ॥१॥ कुरमी अंड धरे जल अंतरि
छीरपै कलहंस नां ही । पूरन परमांनंद पयौ हरा । च्यंति च्यंति
तिहि होई ॥२॥ पांन गांम कीट गण पि सब ही लक्षै । मारग कत हूं
नाहीं । कहै धनौ ताकौ हरि करता । तूं काई जीव डरांई ॥३॥
मन मधुकर तन मांन सरोवर ।

उदै पद्म पतंग माही ॥ ऐकै हलाहल ऐकै अमीरस दोई सुनांव नजं
दीसै अमी कंवल परि जे आइ बैठै ॥ तौ सहज सुमाधि मेंका कमल
यह मन विष संपूरन तौ दीपग पतंग का लेखा ॥ सहज कंवल विषि मादल
जाकै सैतोष तास आधरणी ॥ आनंद प्रकास नाल गुण माफिक मा त
दा अस्थित करि जाणी ॥२॥ जहां जुरा मरण व्याधि कछू नाही ॥ प्रय
सुन्न अस्थिर ता फलैक सब तौ सोमन घट व्यापक ॥ विरलै कोई जा २८७
ना ॥३॥१॥ राग गौरी ॥ तौ गुण के दोजग तमे गुरु ॥ जो प्रेरा के
रम न नासै ॥ यों घसर णक तजाई पे ॥ जो पैज अबू क गासै ॥ [illegible]
त प्या घात पाघत लौ उलल ॥ कहूं पारन पा ऊ ॥ बूडि मुवा लो का
मिलै नब काहि च दोउ ॥१॥ घातिब दकैकारणे ॥ चारट गादु षपा
वै ॥ प्राण तर्ज्यों सालि ता मिलै ॥ तबकांहि पिवावै ॥२॥ नृपकन्या
कै कारणे ॥ नयौ नेष धारी ॥ कामलतां अधिपाप डर चयौ ॥ ताकीये
उमंकारी ॥३॥ मैं बहु कर भीतु मसें ॥ श्रीगुरु सब मेरा कू डैक
पट है को सवे ॥ सध नाउ न तारा ॥३॥२॥ [illegible]
दूतेरा को म मेरी को ॥ संसार सार बहु ज्यों ॥ [illegible] ऐकलाम्या ई
को ऐकल उर्इबो ॥ ऐकल संकिस डल मैं रहिबो ॥१॥ मात पित
तै हि पुत्र उपाया ॥ नहीं सो पुत नहीं सो माया ॥२॥ कहै ति ताचा
बसुनि ते नारी हरि विन मुकति न होई गवारी ॥३॥ [illegible]
[illegible] तामिया ला विद्या लो मतौ साचौ रे ॥ लोभियो आवै ताडी करं
तै ताषि बोल पिरा तौ रे ॥ कहां तेरी पगडी कहां तेरा पाया
कहां तैसु रति बिसारी रे ॥ कै तेरा काप लेगाक ऊवा ॥ कै घरि कू
ठी नारी रे ॥१॥ दोई जीवन नै जीवता आ पौ ॥ दोई जीव दौ मारी रे
चारि कापनू नै आख्या आपू ॥ घाट हीसु सादी नारी रे ॥२॥ मात
बूत पकड़ि तातपियो पका लोपा ॥ लोडि यो पर पकौ नाईं रे ॥ सरचच
के गदा पद म आवध ॥ सो साव जदे सा ही रे ॥३॥

तो दिसे पुत्रा गौ ॥ तो दिरे देव न ताधै ॥ कापका ढिग
रंग गो पूब तां तो दिसे पुत्रा गौ ॥ बागै ते दिसै
है सारी बाला गौ ॥ ता है करन वाचा वति बाधै रे ॥ आगै ते दिसै
तारे नां सालता ताथियां पांनि पद तारे ॥ तिलो चन नौ स्वामी सरण
धरा बैठ बरा बरि कीधरे ॥ [illegible] ॥ राग रामकली ॥ ३ ॥ सुणि हे
ग आधुत पूछे वाले ॥ नगुर नूपम लागि ॥ दूमुण नारी स्पू नेह करे
तो कुबके राणि विलसी ॥ [illegible] पांणि मा हो [illegible] बिल्ली रूणि ॥ पलतम
ख्याती बाई ॥ कूं वा कोठे एकादि राणि बाई ॥ तिनि पांच ना हरि मा जु
या ॥ [illegible] दूंगर होती पा जुं ॥ दिराणि ची तो मारयो ॥ सुसे सुन
दो ने नारि मनाई ॥ गाई लाघ बिहारयो ॥ एक गाई ने बछ पाजा
या त्रे जण दूसा बैठा ॥ तिणि ज्यो बिहि लालि बैसंता ॥ बिनै चदि
कीर्ति माँदी ठा ॥ ३ ॥ ३ ॥ जैदेवजी कै पद ॥ राग रामगरी ॥ नाजी
रामनाम मनोरथे ॥ बदि आपि लतन मर्यं ॥ नितनो तेज प्रपत्ये सु
जुहा नमर ताज ये ॥ हरि सगति उदि निद्रि केवलं रिदे कमन
वचसार ॥ तो गरन कां जेबे हका दोने न कच्चत पसार ॥ परम
दि पुरि सत्रु तो पम ॥ सत्याधि राव रत ॥ परकीरते परम दजुनं ॥ ह
रि चिंतते पावे गतं ॥ तो जादि चरम प्रसाकंते ॥ जनविलचीस क
ते सकल करेंता बाई दुरमति ॥ गादि चक्र परसरणं ॥ हरिपं
क्लिते पारीतरपे ॥ कसु नगति कीतं ॥ नाव नगति न मद नूबा ॥ पर
स नपर मगतं ॥ दूसर वातक रं सपर तजुपं ॥ श्री दुसि नावरतं ॥ त
दूर समाविक मम दुकीत ॥ रकुकु कस्व चरणा रतं ॥ गोव्यं देगा बं
द जापि ॥ र सकल सिधि निधि ॥ जै देवया दीत पठवी संसार तु
तामूलं ॥ ४ ॥ ५ ॥ [illegible] जै देव जी को पद ॥ राग रामगरी ॥ तहां सोदै
जोगी सरसर सजोगी ॥ जोगादि दुर जाणि रे ॥ चंद सूरज चदै सं
हल ते किम ही उपुराणि रे ॥ नादपुनि तहां निरति गाजे ॥ दी
प मूलाल हाथा ज्ञौ सरसस ताच्चौ ॥ हंस मो दूम दसभे ने ॥

निरति नैणां उतरो ॥१॥ अरसदल उपडै मैलकू सताल रू है चंद
रे षत लो बिचि तेमैं कबस्त नास्ति पूसोधि सदरि ॥ एमन मनष क
रत हारि मैं ॥२॥ गंगा तजम नांसुर सुती मरजाद छाडि नरदेव दती
टवे तीतटि न्हाईये जनम नीता तीर्थ मेंगा ती पारि उतरि जाईये ॥३॥
रतन समीपि किं प्रभेद नागे ॥ मचे तस दरि सदा जागै त्रिसल ती
रप षालि रो नांसौ बीकल पुकातीर्थ पांगोद्रि कामिरि टालिये ॥४॥
॥१॥ स्यो श्रम मदास का पद ॥ रागरामगरी ॥ श्रीपै जा निवेडु गातिक २२५
रि सेडै बीछि बाधि परि नघुत पकरि क छाडि मागदे चोर नौके
धन जे ॥ एक की नाउ नजे ॥ न्त्रगुणा राम नामद्रि दरदे ॥ जेसो
पेपि तदार पावक ॥ जूं द्रुप नाविं जेसे ॥ प्रगट रहे ॥ तूं घटविच
दिव्याल मांपू मातमा ॥ गुरके गम नबि नकोई नलदे ॥१॥ जूं तिल
तेल पव नजे सैगग नादि ॥ पहुप मध्य जैसे गंधबसे ॥ जूं ज
ल मध्य छ्यो मसु तनि मह्न दिदि चुंपि उत मै सतद्र मे
आनंद सहत पुछा कीरंतन ॥ तहां लल गंगा नीसजे नकरे
नाणत स्यो श्रमदास ॥ अंन तेहोई प्रकास ॥ सदजु सुनाई
जनम कतिफिरे ॥३॥ रोकि नदेव द्वार ॥ मनदीपक ता विचो
रा ॥ त्रिम तलघो नधरि ॥ जीम लकाया ॥ समिसूर जहां सिटे
पे के जां टी सुरच लै तिहूं थांन्ये दीसे त्रिलोकराया ॥ छा
डिरे जीव उंजाल ॥ बांचि तेन्द्रो घट काल ॥ मनपवन परचा
जांणि ॥ चेति नचेताम चित ॥ जीति लेमन की प्रीति ॥ उचरसि
रांम नामन्त्र मूल बांणि ॥१॥ त्रिकुटी कसंग वाट ॥ तहां लगग
नवाट ॥ चंद सूरिजु एक जोति तहां बिगसे ॥ सबद अ
तीत ताई करतार आपे नपाई ॥ जहां उठे वोउंकार तहां
बिलसै ॥२॥

षगासंग मन जाई । तहां जोरहै समाई ॥ षगसंगि मन मिटै तब पू
न करे ॥ तहां वो ले चारि बेद । पंच मां बेद का भेद ॥ म
सराचि इरकरै ॥३॥ कासूं पै के पाषान ॥ ब्रहमचोरी सब कमसी न
सूषिम सरीर एक ही देषो ॥ नाांतस्यो अमदास ॥ बहुरगपं नका पु
कामा ॥ आतमा के संगि पुमातमा पेषो ॥४॥ २ बंदि ले देव द्वार मन
पवन दीप सार ॥ टवे ॥ संगम गुरी ॥ अमृत बाणी ॥ ररंकार राम
नो मैं करि ले अजपा जाप पुनि आतमा के संगि पुमातमा जाणी ॥१॥
कवल अमृत पाषुरी लागी ॥ गगन बाई पंगुल जागी ॥ अगम
निगम जाई ॥ सहज न गवन अमृत ह्वादस दहि रंग ला मां ॥ उरा मर
ण तो सम जागा ॥ अर चै उर घै ई दूलहो जोगा लाया ॥१॥ सहंस दल
कोस दम का है ॥ पुहुप पुडी गंग जमुना है ॥ षग का बिलास
या मूल पाया ॥ तीनि देव अस्थान न जाणी ॥ अनाथ पग लाम सुषमन
आणी ॥ ध्यान धारि दषि षट चक्र आया ॥२॥ दसप्रकास मा लंकन
ती ॥ असंषि कला जोति झलकी ॥ तब तोर जाया ॥ दसवै सिवगाया
तार वहतरि नव नाडी ॥ कांम क्रोध अहं प्रजारी ॥ अस्रर सुरेस
र अमृत पाया ॥३॥ जल में चोको मपेषा ॥ हुपनम घं आप
देषा ॥ रसि ला सं मराया मन जै ही पाया ॥ नांांतस्यो अमदास
परचै होई प्रकास नधीरै सुंई से धार रसपूरि रिद्धि सिद्धि आप पा
॥४॥३॥ टेवे ॥ अवधू सब दसि रंत रे गहिये ॥ तहां दिवस
न रैणी कहिये ॥ टेक ॥ तहां माई न बाप जाति कुल नाहीं ॥ सुषमन न
ही अस्थूल ॥ उतपाति परले नाद ब्यंद नहीं ॥ छि [illegible] या नहीं मू
ल ॥१॥ तहां चंद न सूर पवन नहीं पांणी ॥ हीं दन मुसलमान नो म
हे मद काल मां राम नाम नहीं ॥ सिस्यि वो जग नहीं सिमरनो ॥१॥ ही
द स्वेवल कहे सोई ॥ न तहें सु निदी सु नि पया नो ॥ पाली में
लू ॥ लूं ॥ मे पांणी ॥ ततहित तसमरनो ॥ ॥३॥१॥ को हैई को
पद ॥ राग रांम गिरी ॥

परिसत प्रांणि मेरे। धोई कामा काप डे कुसम लमै लउ तारि। लगि लगि
सबद मी कदे ऊ ठी। सत्य राम नै नां ही निवारि।२४। सुकित सौं द
गी करि वास नां चेतनि च्यूं नूं मांति। छिमा पारा नूं मल मांति लौ तौ
सौ दगी सद जैसू नाई। निवरति नदी संतोष सरोवर सुपरिसि
लास तिपालि। साबू सतगुर ग्यां नां निंम लजल। पांचू वस्त्र पखा २८६
लिरे।२। जपल पस जमी तापरि नाई च्यावो। अति जासा निज धुव
घडी। घूट सौ पै श्री गोपाल।३। धम धां नथ रिषे तू धोवी मकरि
सिकू डाकां म। च्यारि पदार थ चत्र नू जद्भ पै। कबिर कहै ईया स्वा
म।४। गूदडि यौ मसि वाल्तौ अवधू। रंग लगरि रमतो दीठो।५। काया
की गुदरि ग्यांन तूं बडा। नाते तारा वितो ये। नाद अनाहद नाम मांगो
छिबा बचन बैरागी भयो।६। करे बिभूति नैन्न गि लागा है। मन
बांछित मुद्रा धारी। काया कंथा उसाणि जोग टौ। दया अपूट त्रधारी
।७। रहत रिकू पा मद नां नरिया। पाया जो गणि मांणि। पंच पुरिष
रती तै बैठा। डेल्है जुगति जउ जई जोगी।८। विमिया नौ षपरकन्था
रे सुस बदसी गी वाडी। कांन्ह ईमा नौ स्वामी जगपती। बोते संकले
बोलणी तीं।१५।९। जोगी रे जोगी ते कोडी जो मौ। जोगणी पाछे
आपब सीवी।। जल जल नी तरि च्या है चेदा देह दुरी मांडि
मुकंदा।१। कहै को हईये गव लसत गुर तूठा। षडेव इड वी
दूलदीठा।।२।३।। जोगी का पद।। राग रांम ग्री।। जोगी जीव निमा
हरा तू पै अलष निरंजन। जोगी जोग पद महा जती। ते लौ मनरं
जन।१। आसा पूरी अनल गहौ। नव द्वार निरोधी षट दल कंव
ल नै बीच रहौ। जोंदे भग पति ऐ जी।२। जोगी सकति ले मकु उल

वाणिपाछिम वाली ईत्तायें गुत्ता सुखमनो संगमिलाजीछे तोनी ॥
अरव दंव पघर ऐकठा चा त्या उबसआरे ॥ जोवोसावां लगेउ
ता पीछे ॥ मित्यो मेर मण्यारे ॥ अगुणत प्रागमदह गता ॥ तितगुदि
रोगां जो उरवासी मेंत्रा ॥ ॥ दो मधुरोवे नवाजो ॥ ॥ ध्रुव बिधि य
रसपरदरै ॥ आक्रितत्र्य तोगी आविनासी अवधूत है ॥ जातालजो
गी ॥ ४॥ चेतनात्र्य उरअमृत चवे ॥ मन नी गणे तागी मेवम
त्वां मीरे कथ या आपेरे तोगी ॥ ५॥ अमृत नदे उन काई मर
अचते म च … नगा तत्ल फ … आपेआप उबके ॥
॥ ६॥ जोगां नदे आने धोरे अवधू जाई ए जो गावे चारि उउत्र
जोगचत्तावे कोचे तंनी नरआपवे के नारी ॥ ७॥ प मचाने जोति
आकार न थी तत्तव न थी का माया बांद चराचर रूप बंधाय
कतपी नें नी व धरा या ॥ ८॥ जीव रुतो तिवा जाई नेबु त्ल उतापि
जोगी न जीवे काई ॥ उद म नी आतमराम जाई ॥ हद अबानिरत
सिमोई ॥ ९॥ सुखनेदुख पेले जेह पर मरुष ॥ तिहिंसुखिये तोगा समाधि
पापनथा धर्म काल नची तत्ता परम अनदसु पाया ॥ ३॥ २॥ न
… ॥ राग गोडी ॥ ॥ ॥ माहरे घरि कोन्ह जी से न आवे पाय
ला मैरे दयाल घरि में न आवे ॥ बलिबलि जाउं जो कोई को
हसें न आवे ॥ ॥ आरति मा ही प्रीति अपार ॥ तुम मैं कीध तो सब
सिणगार ॥ ॥ क्रिपा करि घरि आवी ता कों … ॥ नरसिया नो स्वा
मी मुकति तिथो न ॥ २॥ ३॥ राग सामेरी ॥ कोई कहु माहरै घरि
ना घर न आवे ॥ मांस्यो छि नाथ न जोबन नि … जाई रे माई ॥ तितनि
ती पल पल उ दीधा दीये ॥ थोडे थोरे रडी पाई रे माई ॥ जे कोस्ति
अ मोलि रहे … ॥ जुरू वे छि दो … बिहरे मायु ॥ जे रसपद
ती आग नर नारे ॥ ते रसपवो न पाये रे माई ॥ हरी विधाता रेस्यू

सिर ज्यूं अमर नमि रखी बदे हरे माही। नरसी आखा मीस्यूं रमतां पु
नरापि जनन मि नथायरे माई ॥२॥ जगति न आपूरे जगति न आप
आपि तच्चव दीचौ राज आपे। मात रा अंगची श्री आपे आपस्री
षो करी नै थापे ॥३॥ आगा नासुष सिधि रिधि आले। लोक आपे जे
षरुं खालूं। जीवनां जन्म नां बिघन टालूं ॥४॥ जब संसार मांहि न
ही नांषू। अमर आ बिच तक रू अटल राषू। ते दनीकी रति आ २२७
प नाषूं ॥५॥ मूढ ते मांनई कोई बांधै। आगि नां नते बापुरा मुकति
जाचै। नरसि नागरो प्रभु जगति राचै ॥आ॥३॥ श्रीराम कौ पद ॥ राग
रांमगरी ॥ अम्ह नै तबे स्नव कोई दाषै रे रूडो रांम रिदा मैं रा
षै रे। अंनदिन आषिर आंनन नाषै। सब घटि दीठ तब पे
कां मन कलप नां मनि तामके। रागदोष नहीं आणैं रे। आतम
ग्यांनी पूरा तीषैणै आंणीं बिस्तब पाणैं रे ॥१॥ जगति आरि अंत
रि छा हरि बक न जाणै रे। ऐक रूप की अपावा स्रत स गति। हरि की
रति बिस्तारै रे ॥२॥ तन धन साज न चित्ति न आवे। नारी नंद
न भावे रे। बीसरे कहे तबे स्नव नै दरसन तां दुक्रित कोटि बहा
वे रे ॥आ॥१॥ रांम नाम केसरी तेतु म अघ पडे दसडु परे स्यो परे से
रा रबि नैं मंडलि अस्त न दीसै। ग्यांन मन दहे रो रे ॥५॥ कोदूं तणां
कूकस ने साटै। रत्न अमोल न आपो रे। कैणै कुठार लांप नी
स्नल। मन स्यूं कोई न का पोरे ॥६॥ कीडी ऊपरे सैं नस नो दल
साके सी परि कीजे रे। बीसो ताणो अस्तब पडपरि। रांम रषा स्यूं दीजे
रे ॥७॥२॥ रिषी केल जी को पद ॥ राग मारू डो ॥ हरि चरणां
चित तन लाडिये। व्याधि नी परि राषि रे। बैकुंठ मैं सासो नहीं
जाकी साध बोलै साषि रे ॥१॥ कपट मति मनेषा ॥

जिंदे मायारूपिमसाचिरे ॥ इकवीसनचोगुण ॥ ताम घरकिरि ॥ दिढचै माला ॥ तेथ्रं जनबुधिरे ॥ प्र
छूटि रिसाचिरे ॥ ॥ जटा मुंद्रा सोत ॥ धवई ठां सिधिरे ॥ २ ॥ स्मस्म
नसु धकेव तकरि सिप्रोणि ॥ गृहम ॥ नारुफिरंतरे ॥ रिषिकेस प्रभुजग रा
मा गम किमति रिसि ॥ नवनिद्र ॥ ॥ सोमजीकोपद ॥ राग तोण म
प्र तैला ॥ उतरे सब सतरे ॥ ३ ॥ १ ॥ कौणसूर जेसा मोरदे ॥ लोचनत्र
नैणबो णसापो अ्रपछरा ॥ इंदत्र मारावे तांबदे ॥ हंसुप देव केन्हैव
णितणै रपाडे ॥ ध्यान मंदा मो ल सिऋषि
सि नश्रांऊ रंता नूरतवैतिहा आदु ॥ कुंकू चंदन नै मोती मह
अ्रतरि ॥ तचकासितोक रोपरठाइ ॥ ॥ नौ हधंणाक कापकरि छेडे
वदै ॥ सिमधीसंदूर ॥ मिरिटोप कसी ॥ रांमरंगावत्ति हरिहाचोटो जीवर
सरगथकीसुष माणि धसी ॥ २ ॥ टांकी नलागै
षी जगपति जाणि ॥ त्रिकमटोप नै मुकद मकुटै ॥ कुंडलच नौजी
ताहरै बांणि ॥ ४ ॥ दोणि इंडकनक मनि मधुकर ॥ परचप डोजोणीत
तं कोडि ॥ अहंकार सब देत्र्य नेकउ धेउगा ॥ तपपेडी काछकु
पको ढि ॥ ५ ॥ सिसियापइगल्लावकारि ता तो ॥ रंगा
रसोणा ॥ धीर जुधणाक नै बुधि बाणावती ॥ रंता दत्ति पाइं
ण ॥ ६ ॥ कैकेण चूडि नै कटि मेषला ॥ मादरै सिषिलाजे पंचतर
अ्रथ अ्रमृत नावा ह्ला ॥ रिणसगुणमपां जूब हुसूर ॥ ७ ॥ चौरासीत्रा
सणाव सिकीधा ॥ ईताधंगड तासंथमना जेद ॥ सतिल डल
नोवा जामभिल ॥ अ्रोर पुराणकिस्योस नै हा ॥ ८ ॥ ठकसकस
त्रंगनोवा मन ॥ त्रिहोणि नाषित्र न्हसूत्रपटो ॥ चोली चीर तेमे
त्कारंतो ॥ त्रमस्योजी तैकोणाकहो ॥ ९ ॥ कामक्रोध मोह मद म
छर ॥ मंघरतोणि जी त्यो अहंकार ॥ पुध त्रिषा नैन्पेद्र निवारी

यांचौरीई द्रीकीपंच दार ॥१०॥ ईंद्रादिक ब्रह्मादिक मोह्या ब्रह्मकीदि
यां किस्न री पाय ॥ मंचकंदापारा सरमो ह्या ओरबीजा नीके दीमा
ग ॥११॥ पेट चीरी नैं परिम त दरषियो ब्रास्या जेह नत्ती पो बास
में मतरांति स्यां मी सपरतांणी जाईनै रत्ना वीयो नाम ॥१२॥
राजा राम नगरी ॥ छाडुहुरे जीय आपर दारा सदा ही तजिये रत
रा ॥ कं तामिषा सांणी ढूं पेकसारी पापबहुत नउतांपर नारी
मेगा म सरीर तांणी बलनाए कोजांणी तो कालि बिगडवाये ॥ गुन
गा ले तो हत्याधाये जीवतां जीव नो आरपुछाये पुंमबीतांणी
बूधि हुपंन्दी ऐ कोवात ननरायेछां नी ॥१३॥ सरस्वांसां मे जाई
ए का आर नेत्र नेक बिगांणा ॥१४॥ जो जांणा तो राजाडंडो जैणी सिर
ज्यासो ततखिणा छडे घरि हांणि नैवा दरिद्रासो ॥ पं नवतकोई
नवा ते पासो ॥१५॥ मातपिता सहोदरताडे बुरिवैबत्त नैबसी
गाडे ॥ परकत हटि कतहट बोलासि नांन्हो पाडुपडे मांणी
देसी तां न्हो ॥१६॥ तैजां न्यो कमकी न्हो छां नै ॥ चित्र बिचित्र मडा
सीपां नै ॥ त्रष्णा त्रिषे जु पीवे पांणी नाठो नहीं छूटे दिवांणी
दिवस करै तो दारुदेहा च छोक तंक नउतरे ऐहा महुत्रप
घातकरी व्यू छूटे ॥ [illegible]
पे डे कूटे बलदद षको घडुपाडा छूटे ॥ छैल षको हुदे रांदेये कांमी ॥ तुरीणकोर
ता कारांणी तांडसा पचौ स्यांमी ॥१७॥ [illegible]
ठटू कडे रा ॥ दुस्ट तांणी मानदृरि ॥ [illegible] हे कं
षां न कहिए मारि ॥ चोरी चित्तां निवारिये ॥ [illegible] झूठ नबोलीये रे मु

परदारि पेस्रव नारि ॥१॥ जिनिलिषि रज्या ते स्त्रैस्वी पे वी जे परउप
गार ॥ संगति कीजे साध नी ॥ तो ढुक उंघे पार ॥२॥ सूघ पै मरागि
चालिये ॥ कूडम की जे मति ॥ नर नारी बे ऊप्रा मिसीरो सो भ
लौ मदगति ॥३॥२॥३॥ राग टोडी ॥ देषौ रे अत्तपकी करणी
कौण कौण श्या द्रमीपहि गोपे षा रे म बासेक सीक सीपह्नते और
दुनी के मोहदेषो ॥ दस रथ के दोई पुगडे होते ॥ और तलेब नचाले
लंका ती नरपि पुडी हुड़ाई ॥ रांवणा के परघाले ॥१॥ सो हदसदे
सत्राठ पद्वरोणी ॥ पैही का नद हिश्चेरोणी ॥ बडाव उप डूपापट
णमै तिसकी धरम लूटाणी ॥२॥ हरिचंद च स्थाहेर म बेचण
पु गड़ैगण्या षायाब्या पैसौ ॥ उसकी च्यांणा जात णण हां गी ॥ जातण
नदीधावापै ॥३॥ बकाल विचारा श्रुना उबेचला तिसकाप
तमरायत ॥ सीसकाटिषो डुणीणपड़डाया ॥ तो नी धंणा न पाया
॥४॥ पांच पाडुवा षणी द्रुरोपती ॥ षरा बिगोणां कीता ॥ हाड
गाड़ी हिवालै गाले ॥ सो तलगे उस्ती ता ॥५॥१॥ रागबथन
श्री ॥ श्री कृस्न जी पूछे सुणी बगदा तम कातहवातु में केता
अतेतर सय राम सांतत्मा ॥ ऐक श्याचिर उक हैं केता ॥ टेक ॥
चारि श्राठ नै सोलबतीसा ॥ चौस्ठि मुष मैं देष्या ॥ सातसदस
मुषब्रह्मा न देष्या ॥ ऐक पारब्रह्म नहीं पेष्या ॥१॥ अत्तपत्रा
षच्या ध्रमसर्म कीजै ॥ बैकुंठ ना षत्र्युव धारौ ॥ अनेक दिन दि
नै माकलयंता ॥ अत्तप जसमारै म्हारौ ॥२॥ अंग ऐक लोक्याधु
ष स्रकरंत ॥ तसर नै सरसुंद्रू पु स्ताणौ ॥ सो म न पाऐ ऐक ना
थपसायंणा ॥ अरजन मणा सुकांणौ ॥३॥१॥५॥ सेन लु
[illegible]

नमों न लै न करै परतांनी। सांमद्रि दे राषै दिनराति। ईंद्री निग्रहै पंच
वसि करै। करै सिष्पा जो गुर कहै। आपापर नआं नई नेंम
पीड़ा षमै नषा ड़े ध्रम। चित न चत्र नुं जु कहै ते साध। तिंहि दीठां
दहै कोटि अपराध। वैस्नव नी मंदिमा वषांनों। मत्यमा दरी जे
ह्वै जांनौ। वैस्नव नी ईहै परष्या। मन बांणि क्रम सरष्या। नंदया २८०
अस्तुति तो लै आं नैं। मांन मान हुरै ताहरौ नजांनै। सारी षेमरति
मांने तो बहरा। सिसु रपेक ठेज़ा हरा। सत्रा मित्र नहीं कोई अं
तरा। धरांणी धर ध्यांनां निरंतरा। सब जीव सबै मानि समाभिता। भ
व भ्रम छिर मोहन समभिता। रिदै रागदोष रहंता। वृत्तगयां ते दव
दहंता। नेज निगुण रूप जु निरषे। हरिगुण सां रततौ हरिषे
तांमें नावसतै गुण गावै। षड पुलक रोमावली पावै। केसौ
देन रिदय बिसारै। प्रेम प्रबाह विचारै। ध्रम दीन दया पृति
पाली मावडी सब परनारी। वसि राखै पांचौ ईंद्री। नहीं जांचै
जाईं नरूं द्री ईंद्रीद्रि ढ मन वैरागी। फल कूं मसुरा सु जय
गी। वैस्नव नी संगति बालै। रिध मध्दि रिआवे चालै। सत्य
वे लै बचन संतोषा। संसार प्रकौ निरदोषा। कबहूं ध्रम न छै
वे काहू परि कदे न कोपै। नहीं वाकै बलिक वैरै। षएर दे पांह
णां नी पैरै। वैस्नव नाई के अधकारा। बितवा जंन करौ विचार
वैस्नव नाई दै लषिणा। बरि जो गौ देह विचषिणा। मंदिमा निम
त नुं जु बोलै। ते वैस्नव जीक मतो लै। मां नलौ वैस्नव नी मंदि मां
वदै सुर असुर बृह्मा। सांमितीरथ रूप जु साध। दीठां दहै कोटि अ
प्राध। तीरथ सबै फल आपे। साध सुमित्रां सकल अघ कापै।

बैस्नव पूज्यां हरि पूज्या । तामैं रिदा मैं रीझ्या । बैस्नव नूं हांदरि तूठा मैं
करि सी श्यांति जं म रूठा । बैस्नव नैं दीजै साई । बिचि श्रांघ भित्तै
राम राई । बैस्नव स की जै बाता । चारौं मुकति लगाति दस्यूं दास्या
बैस्नव स की जै बाता । तेगा दीपा श्री जग नाथा । बैस्नव को दे
जो जीमिये । जं म च्यास्यू पातिन न जीमिये । अघ लाकी जै उलघ्यां नैं
अठ सठि तीरथ अस्नांनां । साध संगति सुलप मन देवा । पुन्न गधियौं
नदेवा । साध सा मझा तरि छे पुत्र मां । हो ईश्वर स पेद को धुमां साध
समागम बेला । जे रदि छै बैस्नव रेला । जी कै मन तुम चरणां नितला
गूं साध संगति नैं नै मांगूं । साध चरणां । चतुर्भुज चाकर बै
स्नव जन म्हा । रो ठाकुर । गाई सिस्यां । लक्ति तर नारी । बांद दे
स्री देव मुरारी । बैस्नव जन की रति बेली । चतुर्भुज सब बेलन है
ली । चतुर्भुज कहै दिन च्यारि । स्यार पीढी हरि सेविबे सदेस
रि ब संसार जीवै । हरि भगति बिनां बादि ॥१॥ [illegible] दास जी के
पद ॥ कैसे करूं भगति राम तेव नैं काथा । का तरु मीधाई सागै
मोह नी मासा । मन मकरंद [illegible] उदि च मधे जांनि सब नै
सब तू आतम मांरव नैं । अंतरि आत्मा । जांनि च मकै चंद ज्योति
कोटि मधे दीप मात्रा । जोति ज्योति हो दीपर चै पर म आत्मा
[illegible] रम चै सुष मनां बैराग [illegible] पंच नृत्य [illegible] राखै
सुई के छिद्र । मितयूं [illegible] । उदि मतसमा लगया नौ कोटि मधे
एक पावे उनम नी मुद्रा ॥२॥ [illegible] नबाटी दिरा ते [illegible]
घाटी [illegible] निरखसी काया । [illegible] आकास गाजै
पच्रसा एक जागै । देषि रे देषि तहां चंदा बिन लायां ॥३॥ [illegible] तपां
ढस ने [illegible] सा । [illegible] बांद दे जै सा । [illegible] बांद जे [illegible]

ततातिनिमायरा। म नपव नहि जोति तावै। अनादद जे स्वदवजै
बाणिदासनिवासस्मराणौं त्रिभुवनराया। ५। १। तहांनिरंजनरांम
रैसे तौ। गुरगमिबूकै बिरला कोई। टेक। ईला प्यंगुला औरसुषम
ना तीनि बिसै ये कठांई। बेणी संगम प्राग तहां है मन मंजन क
रै त्प थांई। १। दसवांद्वारा अपरंपारा परमपुरिसकी घाटी। तामै
हाटिबाट मैं आली। आले तीतारि धीती। २। गुणप स्वसावाबि २६०
चारि। अपाणे जन मन [illegible] सुदीकावांधे [illegible]
मफेरि चढावै सूर। ३। बीज मंत्र लेउ हिरदै रहै। मनवां उलटि
सुंनिसै गहै। अजर जरै तहां नीझरझरै। तहांश्री जगनाथस्यूं गो
ष्टि करै। ४। देवस्थानये कम नी सांणी। जहां चंदनसरपवन न नीपा
णी। उपजीसाषी गुर मुषि आंणी। मजै स्वद अनाहदबांणी।
५। औसी कला का जाणै भेव। रटै नासपर मगुरदेव। मस्तकि
पद माहि वासे माणी। तहांनिरंजन त्रिभुवन धणी। ६। उदै भ
षि दीवा जोतिदिवाल। पलै अनंत अनंत मूं बीचिकाल। श्रवकार
लै आपेर सै। मनमांणि करत नासूं गहै। ७। जागति रहै नत्र [illegible]
साधे पांचौं ई द्रीदिढ करिराषै। गुरकी साषीराषोचीति। काया
देवै रामपरीति। ८। सातसबद निसा ईला वाजै। फूलेकवल
अनंत धुनिगाजै। देता मरदन गुरमुषि गया न। बांणी उचरे हरिका
नाम। ९। ऐसा जोग धा वै बाला मुकति है दासी। करमके
सब बंध नष्ट है। अगम अविनासी। १०। सहजकी पांषुडी उ
गी। अरधउरधै कला लागी। चंदसरि जसं भिषेपे। ब्रह्म तेहापी
११। तहां सबदगाजै मोहनाजै। सारसेति सारबाजै चादतीच
हती सबणि नागी। १२। तहां तीन्य बाजै तीन्य गाजै।

तीनि मिटैये कष्ट जौ मीन ज्यौं द्रिष्टि राखै । उनमनी मांही ॥ १२ ॥
जहां सुंनि सेती मन मान्यौ आप सेती आपजान्यौ । गुरु सबदै न
पापरचानै दे तत हां नां ही ॥ १३ ॥ तहां बिषम काया सहाजि जोडी जु
रा म्रिति उपाधि षांडी स्थिर सई धा चरागि लागै तज आदि रंग दी
॥ १४ ॥ तहां आदि सबदै सुरति षाई बोदको तत्त चढी बाई का स
का नै तहां लागा सेष ली ग्रांडी ॥ १५ ॥ सकति सेती सकति राता ॥
आप सेती आप जाता । आपचीन्है नया परचा । षंडतलां मुक
ता ॥ तहां षेचरी नां ही ब धां नी सहज भयो केला जांनी जामी है
गा षं ड सा धा तए हिन्नां गी ॥ १६ ॥ चेति रे आत्मा चेत आपसे
ती आप रहत जंत्र मंत्र मांहि मरहा कैरा साधै प्रत गया नय
हुग बांधी लै नेत सकति के दुरहत रामचंद्र या कीन्ही छूटे
रसद जे संकेत ॥ १७ ॥ करि अजपा की जप माली त्रिकुटी माधि
प्रजाली सुषमनां अंगराषे जोग नी दमारी मूलचक्र केडि
गांली बाई ले अनाहद वांणी अनूपम जोति ने दिसाई
ले ताली ॥ १८ ॥ मायामूं ष प्रीति लाटर जीति ले मन कपाटा मा
या रूपमें टि करिले गयां नजोगमटा जाली प्रकीरति भिन्न
ति गोटा ताली लागी गुरु ने टा हरि पारमिष्टि षिण मांगी मैं द्वारे
लाल टाटा ॥ १९ ॥ सुषि अंमित रहे गयां नगासे रहैत बुधि बांणा
से सुरुवै उरधै तौ रेत ते बाईसबदै जासद्रिदे बहट वा बुधि
हुलास लोषदी सद जै प्रकास आसरा सम माधि लागी ज्यां
ना ष पास ॥ २० ॥ मुद्रा षेचरी मन प्रांणा उटाजटै ष्षई प्रांण
गोरषजंजाली पेलै नाथ सषप सादि सुंनरहस्सै रहै ध्यांन मा
है बेली ऐ कै गयांन अनाहद सी गीबाणी अकल नीसांणा ॥ २१ ॥
॥ २२ ॥ अैसा रे आतमा रांम लषणा न जाई पिंडी आप

जहां देष तहां पतंग ढेल
तेज बाई अकल र हांस माई ॥६॥ कनक भालत्रिभ
रि जोडे मा हेग तं नम दे वा ई बे द नदरे ॥ कनक भाल त्रिभ
ल उठा ॥ तागी कि माल तिन चारि ति मर नाडो ॥ दीपक जलैरे
॥१॥ कं म्र की जब उ देहा ई ॥ मूल भ चै नषे माई ॥ वाई के घारि ते
उची है ॥ यहू गुरु की दया ॥ मन पवन ने ऐक बाट ॥ बजु की षूंटे के २२१
पाट तहां के आचि दं नन्ची नां लागी से लाया ॥२॥ जैसी रे षांडु
की पोली ॥ षीर षांडु घृत माहि वोली ॥ दोता छोती मन मुष दे
मन की डे ॥ गावै किल बे ॥ ॥ दास ॥ आेष दी सह डे पूकास
चं मृत पीयां छै विष न पीडे ॥ ॥३॥५॥ राग जैतश्री ॥ मो ददं
सा उं का वरी ॥ सब द अनाह द बाजे तरी ॥ आस गावे स्याउं र
अनंग व्याप क बात क है अबंग ॥ जो ब्रह्म ॥ दो ई सब भौ अ
ई कर म गलित जीव क हांस माई ॥१॥ अर्ध कवल पै उर्ध धरे
पर मतत्त्व षोपादि त रे ॥ मोह हंस ए देव क ॥ सब द अनाह द
बाई लै ढं क ॥ २॥ ईक वीस सहंस तल दरिया बास ॥ मूल ग हो
गर जै आकास ॥ सुन्य मंडल दीपक परजलै ॥ तहां मन देव
ता कौ ति ग कै रै ॥ ३॥ द्वादस तल हरि अग जारि रहे ॥ सूर चंद्र
ल तबै धि ति जाई ॥ बेणी नगौ रां मस हूके त ॥ निबिम नाया
गयास के त ॥४॥ ॥ रां म नाम मैं आरि गंज नां ॥ अनंत मूरति नं
रांय णां ॥ ॥६॥ अबंड मंडल भांठि भिरची लौ ॥ तहां नां नं र तन
जाउं तको रुजी ॥ द्वादस द्वारा माहि निरंतर ॥ अचंत मूरति र
ति हरि ॥ पंद्र ध नंक सा ढ्रिसि आकार ॥ तहां बिजु लीच
मतकार ॥ षंबाल मोर गीवां मह पीबरन ॥

हरि चांबिग्यां म ॥१॥ अरक प्यंद दीप संकास ॥ जत्त म ध्यौं जे
मैं रवि प्रकास ॥ अनूप सौप हुप कोट सांबरां ॥ हरि
चाबिभ्रौं म ॥२॥ तहां अनूप मध्यां न ॥ कीर्त्ती करे अंत मां
गां म [illegible] त्यौं तहां प्रीति सार ॥ अनंत मूरति हरि गुण ह
॥ ३ ॥ ३ ॥ [illegible] जी ॥ अब चित्त चेत्यो राबरां मां ॥ सत जे अंत
रख्यां ते हरी री पायो प हाली वां नें ॥ [illegible] जैसी त गति करी
गरीब अेतरि ध्यान सज त्यों ताई सूछि म अनूप त मांहिड
हैसं न्य ॥ निजु चारि र त्या स माई ॥१॥ तहां चेदन सूर हो दीप
रकास उदे अस्त की नांहीं बात ॥ तहां जाई नास तं अप की नो
चो लेब उकपाट ॥२॥ प्रानपियां न उत्सां नांभि ध्यान ॥ वैन
आर्ड सं न मां नो पूरक कुंभक रे चिन रेचक गुर मुष बिदे गर्प
नो ॥ त्रिकुटी कर मन सुखं गंम साठी बिन चन्नाटिका बिन ने
ती बिन न्यास ना बिन ध्यान न धार नां ॥ मन आपैं लिया हरि
मैंनी ॥३॥ विभूत बिन बाति अगति बिन तेज न ॥ सह जै दीप
द जाल्या सत गुर उगुनत म गुण ती न्यूं होई म सम्य
करि जाल्या ॥४॥ तहां पुगट्या उगिपुरिष करू णा मै ॥ हि र
कार निजु ध्यान नो ॥ देष्या बिस्वरूप तब जाग ॥ हिरदैबे रलप्र
नो ॥५॥ सदा सदा चित रूप अनूप ता चिरकाल तिज बेवा ना
व जगति करि न लौद या ला ॥ जो मध्यान करि सेवा ॥६॥ जंम
ग्र मरण कें छिद्र मैं ॥ पूमा तना सम्मां नो ॥ बेणी दास कौ दा
तच्रया है ॥ निजु ग्यांन तत निबांनो ॥ ७ ॥ १ ॥ रागं मगरी
तत वेलरी सींची रघुपति राया हो ॥ सकल त कला मांहि मा
धौ षेलै ॥ चौहूं दस्त सम राया हो ॥ १ ॥ वो ऊंकार दल बंद

त्रबरिषै बीज तालिसांचै मकारा हो। सो सहंसा तापिरे पुरातो घ
ट द्वादस का बिचारा हो॥४॥ नो नाडी मिली किंगुरी माजी पव
न लगायो तारा हो। रविचन्द्र रूसा सि दोउ ताल्ता बनाये दीनो न
घ्र बजांत्र ए हारा हो॥२॥ अरघे कुवा उरघे माली सहजे सहजि
न लन्त रता सींच तहां अमृत फल लागे। पाचों हरिरस पुरता हो
॥३॥ त्रिजै पुरिष त्रीतो दिरंज नां। अ सादे पूरन माली हो बीज
वि नासि तषे तीवावै बिन मूल लगावैड़ाली हो॥४॥ सहज सु
न्य मैं दीपक बलिया। चंद्र सा लउ डियाला हो। जोगी दास तत
मन लीनो। देव्या केवल बाला हो॥५॥ देवा तिंहि ठांई मन ला २५७
गो रहणी न जाई। अकथ कथतां नीका दिषै काही कैंनु पातिया
ई लोचन नपट लषूटे। त्रिवेणी बंध न षूटे। अजतेज मधे
कर्षु अनन्ते कीनो। कोटि कनाद उपाथि सहजै दीला गी समा
धि। देव सत गुर अजं नदीनां॥१॥ मन मेरो तिही ठांई। जहां अ
तमाराई पवन षै त्रिसरे चरन न लीनां। अमका के पंचौ नृत्य
डै ऐक ठांई सूत। अषंड मंड लमांहि सहजकीनो॥२॥ मुस कीये
होई सुष ईतचीन्है गुर लष। आतमाके तेमध्ये आतमांसू रूपै। जोगि
पूजै पत्रीधूपा कि पाकरहु निरंजन रूप॥ सहज सेवतां सुषडप
जै॥३॥१०॥ नराइण दास को पद॥ राग गोमपरी॥ मूलबि
ध निवैलडी पांच कवं लते मापपा बिनितवरडो। तमैछै तिरम
ल डोरी डोरी जोमि जोतिगजांणी। रुतिविदिरा मि डोसी चै षे
बिनिपाणी॥१॥ पहलाकमलमा गज सागोठाणी। पांचेपां
षुडि ऐबाधो छेबंधाणी॥२॥ बीजा कवलमामिघमषपेठां पे
बतां पंषीडा नै पासनैठा॥२॥ तीजा कवलमा हंस नासर। अं
प

नदिन अंबो बिनाकरे फेन्य नीयासा ॥३॥ चौथा कवल माव सै लंद्रा ऐं
तै सुंदा रै सदा सकरस मांती ॥४॥ पांच मा कवल मा ब्रह्म देवा सु
र नरमुनि जन करै छै तैकी सेवा ॥५॥ नाौ नरांई ॥ दास कल्व
ला बिचारौ सुतादिषा ई तेगुरू भ्रमारौ ॥६॥१॥ [illegible] को पद
रा गा [illegible] ॥ जोगी जोगीं धारी मठ मैं जपे सुं ड पा जाप ॥ पंडे पं
डेर मैरा वल्ल सकल व्यापी आप ॥१॥ जाके काया के यम नदी
मुद्रा सद जन्य गिरिबि नूति सिमांडु श्रनाद दसैं गोैसे सा
हे अवधूत ॥२॥ जाके चतुर षट दल दस दल्ला द्वादस दल सोई
देई दल रूप रिब्रह्म अस्थल तहां करे इस किलोल ॥३॥ गग
न मंडल मांहि शोध बैठा आसण वासि त्रिबेणी तटि धरे ता
ली निगम नेति मिनि वासि ॥४॥ ब्रह्म चेतानि सचराचर सेई ते
श्रीराम कहैं ता ड ॥ पिंड ब्रह्मंड नमो निकलंक नाम ॥५॥
[illegible] ॥ राग केदारो ॥ मेरे लाई हो मोहि बिषम
सर लागे ॥ माया मोहि मगन सोव तहं गुरकै सबद सुणी जा
गे ॥ पंचसंगी मिलि परपंच करते तिनहूं को संगत जि ता ज्ञे
तो [illegible] ॥ नाकी त
जयो अतीत गुनन पै न्यारौ तब गगन चढि गाज्यो
न नाहीं मन नांहीं आपा पर हूं काको को मेरा कर मछन्द पूत
म गलित तयो बहुरि न कर नौ फेरौ ॥२॥१॥ [illegible] जी का पद
[illegible] ॥ कहैरै मेरे जीय राम न तन्तु त्योडोलै त्रिकुटी
के मदलि पर मांन दष्पै लै काया मेरी के ध्या त्र्या सारं मजोगी
मतिमेरी सुदरि रामई धाराई जोगी गुरी ऐक ग्या न बतायो पदा
र थ च्यारि पाया रिधि नौ सिधि नौ हारता तदारे रमई योगाई ॥२॥ म
करसिसि नौ प्रकार बिचारि लै ऐक नाव सो फईया नौ स्वामी फ
लै फूलै रे जग पतिराई ॥३॥ सूरिज चंद दरो दरिबलो ईंद्र

लोककुं तिरो पंच तत्त आरो तीन [illegible] सो कीन [illegible] समीर
॥३॥ काया मध्ये तीनि लोक राची सप्त दीप [illegible] तीर [illegible] व तिथि
ति उई उई संन्यस माई रे ॥ बुरडा [illegible] [illegible] रतन
जाहि तरे हुदस पोति पेक जाहि सतार [illegible] द [illegible] पूरी
दिवाण रह्यो परमेस्वर देवण नाहि [illegible] प्रगै [illegible] २०१
रि बहु नाईक बालिपषाव उरे ॥ [illegible] उ भवी
देपर द्रक्षिणारे तीरथ को टि कोटि उजि मिस [illegible] संतो [illegible]
॥२॥ मित्यो रेच्या हीये तास पूं ब्रह्म मिति [illegible] दिया कवी [illegible] उर
रिदि तूंत कारिपे ॥ काया मेरी मदकी उभ [illegible] अ [illegible]
मावि तो ईरस लो राम नाम को दि [illegible] अ [illegible] दर कदि प
मध्य नकरत पूरब उन मको दि पे ॥ [illegible] लीक लीदि
बि नासा सो [illegible] संगति आवागवन को नास [illegible] ॥३॥ हरि
आराधी तैरे पायो जू मता [illegible] बालक [illegible] उ परक [illegible]
ताको हरि ष न सोग ॥ पांच [illegible] पे बडी [illegible] ती पू मम
ई कू उस ने लीक पाटिया बिष्णु तबार न ल ई ॥ [illegible]
धग देलडी असी कहि नव कोटि हृद्य बिन [illegible] तूं कारउ अप
णो कारीगर कू षोजि ॥२॥ मैं तूं के ता बरालियो [illegible] पराये उाई उ
घर राषे आपणो नांउ दागे उ मकी लाई ॥ दिल [illegible] दसषो [illegible]
ते सोध न परीत जुई सो मा साउ न मो कत्या [illegible] तो ते मक र [illegible]
डाई ॥४॥२॥ गुणा की बेलडी दे त्रिगुण सदे लडी [illegible] कूण पेक सं
मम ऊ उाणि रं म निरंजन निराकार मैं तू पाई [illegible] द निबास [illegible]
काया बन मैं बहु सापन मैं तहां मेरा मन [illegible] बाहरि उ [illegible]
लीत रि आंणपो पेक उाणो करि दिला ॥२॥

ninety six

DMV 12

p 293

तोल्कफु फिरे पंच तत उ आरे तिनि मूरि सा सो किनि चीन्ह मिरे
॥२॥ काया मध्ये तीनि लोक राचि सपत दीप रे तीरथि कवलधि
ति जुई जुई संन्यस माई रे ॥४॥ बुरुज बहुत रि माधि मेर गढ रतन
जडि तरे छुदस पौलि पेक जडित ताला जीतरि तेदीले ॥ पूरि
दिवाणा रह्यो परमेस्वर देपणा नाहीरे तहां गाई ॥ चारी चार ॥२०१॥
रि बहु नाई कु बाजि पखावजरे ॥६॥ निमष सेवकरे निज मंत्री
दे परदाणि रे तीरथ कोटि कोटि जल निमसे सोक संगति ॥
॥१२॥ मित्या रे चारा हीये तासपूं खवाभितिवादि ये करमकी लाज
रिबि तृतिकरिये ॥ काया मेरी मढ कीजे मजल छुई ये आतम
माबि तोई रस नाराम नां मकादिये ॥ असगुन बेसदर कांहिये
मधन करत पूरव जनम कौ दहिये ॥ कागद कै दली फु लीहि
बि नासा सो किआ संगति आवागवन कौ नासा ॥३॥ ॥ हरि
आराधी लै रे पायो नृ मता र्इ मत संजोग बालक तेउ घरक
ता कौ दरिप्र न सोग ॥ पांच मस पीव पै बडी रहती पूरस मा
ई कूड सनेदीक पाटि या बिछुरत बार न लाई ॥ रकुमु कु सुग
धग है लडी औसी कलि जव दोदि हूआ बिनासी तु करई आप
णा कारीगर कू बोडि ॥२॥ मैतू कै ता बर लियो जिनि रूप साई जाई उ
घर रापै आपणौं नांउ दाम जे मकी लाई ॥ दिन दस पेलि र ढक
ते साध न पर्गे लदुहाई सो क साजु न मोकल्या इक ला न नकराणा
जाई ॥४॥२॥ गुणाकी बेलडी है त्रिगुणा स बेलडी है कछु पेक सउ
ममं कजाणि रामनिरंजन निराकार मै तू पाई सिपदनिबाण
काया बन मैं वह सार्धन मै तह मेरा मन लुला बाहरि अं
ती तरि आपा ऐक जाणो करि दिला ॥२॥

पूजी सबै पराई बीती जे पइ दा [illegible] मा है ता यह तौ कोरिच
त्यौं ते गर आ जे मके गढ तौ फू ता [illegible] रे के ज गी है [illegible]
लागा दूजौ मारग सा गा दुह जगी आई ग मो ब ह मेरा कादि
तागी से म काया पद संसार मोद तजि प्रागी आ रे सा चे त स
घर सु [illegible] तो के फू [illegible] म्है आस परम मन्सा प गी पावा तदा रे
गीग नादि व सपपूर जे दी पुन्य घर काया कर मन हेवा तदा रूप
अनूपत नव कुह पूरि का स [illegible] भा सां नदा तदा स्वामी ज्ञ
नूप मकल सुपद्दा ता दरियासी ब करेंदा सो मन्दरी ज्ञ लोग
गा नी जागीसे रूद मैं बूदा [illegible] अरेदी ने देद पायौ उप
रियालोई रे आकारे नाटिक मठ स तु देगा सोई रे [illegible] नामे
ति तीरथि हावै आतमा सबुन पावै प ठ [illegible] खाधू प्रीति
पु प्ता न सोवै लाई ते अनतेसा धान तिवे णी कीरे तेस्नान
राम जी को नाव लेत उपू पावे रूप मोतिखान [illegible] विण लीदी गोरू
प ध्याई सु न्यसन समाधि लाई बिण दीपे डी चंद्र रिपु गी भग
नचे हाई पूपध्या हदी गागपा न सबद जी घंटा बाई कारिहे
र आ आप जा नतोर ही मगध कांई बिण दीप चौदे मीण ई
तुरे नद्द रहाई जगी तो चतै वैराग चौ गिरि अहेला उंजा ल जीव
कोकारते सुका ताकर [illegible] ने सो ही परम भेद कारि ते किते
तिके ते [illegible] तेत मत गूढ जांगी मूल मा ड पड नाथि ता न सिंघ र
कैच नता मैरती नदीवाणी सोरी कियाराम प्रसाद नदी रे आन
संवाद करारतवै ठ गा का र कदी रे भिसा गा नाद ॥ ६॥ ६॥ रा
ग बि लावल॥ ब्रह्म उसी सपा लात पादुका उत्तर दषिन रूप धर
सपत दीप पेट पर स्रोत म ई दुनी पे च दे व दर [illegible] धरती रूप
चन्द्री न वा सो चंद सूर दीवता प्रकासा पर बन तअत्ते र मेन

सया [illegible] श्रवदे सास ॥ पित्र बिन्न द्वारे तीथे ॥ मुनि
ताजा ब्रह्म [illegible] पुरुष लागि [illegible] परउ ॥ ताये सोती तं
डि ॥ रिविठा हिसा वरे वह कीरती ठेद जिसांणा पुरे चेद ईसर
श्रापा सति कवरे ब्रह्म छंदा मेरदह के नाथि दंउ ॥ पूजा श्रा न
ब्रह्म न जी लोच न श्रम्युत उतिव हे धारा पुरुष व्यापी रे सौ चं
ती आत्म पूरिक नरे नीर ॥ तीनि लोक मुष मांति अधारिया
ज्यो बालिक वश आपस्या माई ॥ आप पाउ पुरुष छौ तीतरि
पाले पूरु सो कराई ॥ आपन ताप न देही म नग पत्रा सि वरतन जो
एक परि ॥ साधिक सिध ब्रह्मचारि जहांता ते तीसीं धा मुन्द सुमरि
॥ जे मप ड्यो गोत्ति तब रोम न जाती नाव नती यो एक घड़ी हैरि
उन आप कदे उनसा को दरिद्रता मांहि दाघि चडी ॥ देवत
ह्वार दसरा चेयां ॥ एक ताि ता पे दो ई पंत ॥ रच्यो बिना नी वेपी
सप तत [illegible] ॥ जिनि गगनं चक्र किये [illegible]
तार सै वंदी दिसा एक गंव ॥ वस्ता बिरोची [illegible] कदली वंना सघ न बन
जहां रा म राई ॥ तीतरि नदी निधान सरोवर ॥ नगर की [illegible]
रि जत रूप नारी इंद्र अरकमै विगसंत ॥ मन बुधि तु कित कीत
कंवल ॥ तदा आतम देह मे दी यो वास [illegible] ॥ तेती सौ धूं स्वांदि वा
णा तदि कृपा टलाई ॥ आप पाताली आव धर चेप च बांण ॥
तब मन पूता निधि करै बिबाधि पारि ॥ पवन सु ना नकि धूप
न दीपक गण गरसता चूटा ॥ परम पुरि ष पूजा सम [illegible] ॥
पार ब्रह्म पुरुष सचराचर ॥ तीनि लोक अरु [illegible] मत नैण अ
पे आप पुरुष परमेश्वर ॥ आपै दाता नारियण ॥ रांम नो
मगुण पार न पाउ ॥ सौरौ तन कंपे तू अडोल ॥ सो ना सहज गु
जा न्त तू तो ॥ नाउ सर नरि तदे मोत ॥ सब आतमा आप
पंदो सो ॥

प्राणपतिसो मन जोड़ि पूजा देव तत्व जावे॥ [illegible] उजनकी
प्रीतासप पूजा॥ परम पुरिस नमस्कार नपाय [illegible] जो कोपावे
अनेक अस्पेक राम आपो मै सकल तत्वा सना बासदेव [illegible]
२ सिआ कास दैन पीति पूरिक॥ पतर उपूत्तरियो मतक अनाद न
धूरी त्यपा ते पर सो तन सो दाता कोदे कम मूकि॥ [illegible] बिष संसारमो
हत नह जारी॥ त्रिस्नो पजद हड़ब दे पार॥ तोबूड़ता याम्रो हेलो बा
मनो मसे सारीसार॥ बिषवे राग मुकतिय हर दे ते अमृत
आधा रिसाकेठि॥ करतोड़ियांकोमि नदी आवे॥ रिदको सिआधिया
गंठि॥ राचि माचि करियमी बिषपाको॥ फल मुंडिया मेलेस
तत सदा गहित आनंद सई तुमै॥ तूं तरवर त्रिय लोक नाथ
काया मंदिर पूरियापर नाथ॥ परसाधु जेवर हीर राम सा
धोपरी प्यानसई लसुख पायो॥ गहि आ तम राधिपेगई॥ त्रि
कमतपो सरीर संदियो॥ जूसोहै वांची मेलत॥ हुवाप केहला
व नो हो तो॥ तहांत सांके सो तहां बसत॥ जहां जहां जीव को
लत होय आपे॥ अजपा जाप जपतिस सतगुरु सगी परम पद
पाईसि॥ ज्यूं केतो संगी मेलेवस॥ बीरतिहां न पुन्य न पाप
वे पाप नरक नागवे तामे॥ पद निजो आनंद फिर पुरणी जो मन
लागि सिवांस लो म॥ सेवा सार किस संम पायो॥ बिना सेवा
फल [illegible] लुहि [illegible] पाणी कं [illegible] पायस
उतर॥ लोहकाठ संगि तिरै॥ नीरनाथ॥ [illegible] चले मत पंथ
संग॥ लट है नवर नव रलेता रै॥ यूं जोतिरि [illegible] संग॥
चादि बिन मांहि पचंद बिनर नी॥ बिनसुदरी मंदिरते
कांम॥ बिना तुना आनपाक अधासो॥ यूं बिषा जंन मा बिन
नगति रांम॥ जन्म अनेक फिरो चाहं तो॥ ज्यूं नौ सा
तरत पो थो नाजुरा मरणा तो न जैसे मन जारी दीयापा॥

योनि थां नाके सूरनर पसू पंनि गण पेरू करता तूं हं सोदमरि
आपु नांनेरां कौरव्यू अधिक ले छू हां ई पजरो लीयो केरि १६ ना
मेजम राई अदो नसि ज्ञाट आठ पहरां आगलो आरि दया
दीणा देष तो नाजो सरणाय छू ठां से मूष धरि १७ तूं अगमत्र
देव अलष अपरंपर तेरी गति जांणी नजाई पुरषे न अन तत
नतीदि नी तरि दह निवांण पांणी समाई १८ तीर घवृत कारि
जुगवादीयो आप रहो अनेक रूप त्रिगुणा गुण में लमनदोई
डूसि त्यो हरि पायो निज सरूप १९ में पीया बेद पुराण सोधि
या कांणा थापिकीयो छवड इस्यो तां म निरजीव निबद करा छिकजो
पीवे सर जीव दीपदसम तांम २० सपनवे न संसार विमरा सो
बहु गेलो च्ये तिया दरि श्री रंग सा जिकी यो नागव तां अरहून
रंग सद नाणकरि २१ तार नमत्यो ते तारिया नीकम सास णमध्य
ते मुषां नलाई रस्या नदी पूरि तो सागर तरंग धारते लीधा
तुडाई २२ बूडै नर लोक सांदेव हू गोता पार न पावे तेणि ठ
ई उबरिया तके दरि नाव सादीयो नदिया जांदिव कांठ राई २३
थोडे कर त फिरे सब घीयो कूक सपट करिकलेस वोपदि नो
सागर पाई परमेसुर हरि च्यंता मणी च टीकारि २४ मोह्यो नर
चित्र मांडियो नाटिक मंड नमंडाण सम्रूप्य मंडाणहार सेई
आधि नासी कारूणमय त्रिय लोक करि २५ सांवा रिसार ता
ली विषकू दे सापनी विष तो या छिया ता गुरु गारडी यठायो
गोविंद ते उधारिया हरिदयाल २६ तूं मकरठ पूजा लीयरचे
पाप पुन्य दोड़ जगति लाई अंधकरा नागे आतम राई २७
प्रगट जोति स्वरूप सारपाई २८ सोध तफट कपाई यो पारस
लोदलगायो कनक गुण घारी नाग तक दै उनसो जो तो सारी

सामद्रिमनदेपा ॥२०॥ तरवरपेडसीचिथनप्राणी ॥ ज्यूंसबसाधाम
नैअनंद पारब्रह्मपूजानिधिणदवो ॥ ज्यूंसरतेतीसुप्राणिनवे
दा ॥२१॥ वेदपुराणसारत्रनहीसुमिरू सबघटकेस्रोतूंनिधान
घटिघटिप्राणपूरिपरसोतमा ॥ ज्यूंनरगयंदचींटीसमानन ॥२२॥
रतनकाचकंचनमोत्याहल ॥ ऐकहिडोरीपोईईहार ॥ काच
ईकाचमणाणप्राणिमाणिक ॥ ज्यौंतनजुकाज्यातमासार ॥२३॥ ग्र
वननैननासिकारसनाईद्रीपंच ॥ तपेहसंत ॥ सुषिमुषिस्वीद
द्रीनिद्रज्यूंप्राणिपुरिषऐकपूजाचुनत ॥२४॥ सर्वरीकिरततघडै
ग्रवतिमेंडघडिजातिकादेसमाई ॥ पेजलबुदबुदागतयमाटमें
हो ॥ ज्यूंपारब्रह्मसेउदकरबाई ॥२५॥ सबमोतल्पानमावेसागरिनु
णसंमपछेडादिकमाई ॥ विद्यासुसति उदसमावे ॥ ज्यूंजोतिसमावे
जुगतिराई ॥२६॥ ज्यूंपसुबनुचारिसतनपाणी ॥ कसहमेतुयाव
हिकसिपेनवषियाचरेईलउपरे ॥ ज्यूंत्रितुबनाविकमतुग
बसि ॥२७॥ ज्यूंजगजोगजेगबूतसडम ॥ सबपूजोबतत्तूंनिवास ॥
तूंहीगुणापसपपुनपदिनमंदिर ॥ तूंहीनपानितूंदया ॥ नतो ॥२८॥ तूंही
जुगजुगादिकालतूंनादिका ॥ जरामरण ॥ गूहितूंदयातनतोनच
हैसंवार ॥ तूंहीसातेरचियामदीपाल ॥२९॥ आपेरकेआपदीराजा ॥ आ
पेबुत्याविस्तईस्चआपेकबिआपेबषाणै ॥ तूंचपरंपारजगदै
स ॥३०॥ ज्यूंबिषसंसारअमृतगुणगोबांदा ॥ पीवेतागिवेतासाज
सुमतिपापनलागेरामतणांता ॥ ज्यूंमुषजीतारिमणिफुनगग
॥३१॥ ज्यूंविणातुंपणाअक्रितगुणगोब्यंदा ॥ फिरतबांछीप्राणतजे
महेअचेतनचिंतामणिकेस्व ॥ तूंकतपत्रजुकामघो ॥ न ॥३२॥
तूंस्वधिकपथआधिकारआधिकनर ॥ ऐगघांनपटलचाधिक्षमाच
मापूताधिउजातोहवोसरणा ॥ जवदीपकजोपारामनाम ॥ ॥५॥
॥४॥ रागधनाश्री ॥ अहामेरेआनदकीनिधिकेसवा ॥ आगा

तागा त्रवकेरारोरहेगा जाकोघरपांतिहर नदीईक संगमा आपणा
पकूजाई नेणीकू उधांणिमें दोहा पेचितराघेठाई ॥ ...निवलतातें
गढ़ सीतेस ... तपहत ताच्याई घरत्र्याणीन्हे नेतोमे ... पारको
बूलेवणाजाई ॥ बादरि जाई चितवे मेरो पूणांणि घरको रहे नसे
धनीतएमनत्त ढूंदराणाजे परेकहवे ताघ ... कूननस्वाजे ...नकी
वेडी कीजे घणा नषेद ...केनगतिकलूबणा साचरकूठिविराध ॥
॥३॥ पहरिपटा लोचन ताटे फाड कौवाहिसांचे नाई ॥ नाघअमिन
रस छाडिकरि पीवे विषरस जाई मे गणासी नाफिरे ऊजलमांही
धूमे कसके चाई कहे सौ जाते जनमल जाको रामरमत दिनजाई
॥३॥४॥ सीवारि ...पद ॥ रागगूड ॥१॥ जोबा नयौ नी जोरी ताहि
जोपातो नसीधायोरे आडीका हीकरे ताघटजाउरियो बेताघरे
बाहोरे ... साजे धारिमें धीन हीं कीधी धाम्रपिथू नसिलतागेरा पेड
रमे पावकपर जलियो तारे कूपथ ले बालागेरे सा मैसरावरे
जुतेवाथैरे बिछियापार न पावेरे बूडे नापूणालिवाछि तांणा तारे
तिरेहा नेनूवडीखावेरे संसार प्राणी रामिरमिन्नूथो आसमा अडे न
जागोरे सीतरि घात ... प्राणि पाथसियो ... गौमागेरे प
णीपदहलीपातीनबांची हरिसध देत नलाथोरे कहे समकिन्हे ते
मिसुलायौ ... रामे नआधार ॥ ...
मे एकत्र नेकपरे दीठो दीठो साई न देखै कोई आणो नीत्र नी चेत
रित चावे उण नीलणा घांटेंस्वा मीदेई ... बापीकूपसमत्रे मनिरांह
नीरजनां मौ उनजवाल्य नेक...पोणीवाब पूस्तारांमर दीतलिगवेस्वा
मीहवे पेक ॥ ... नाम नगोद रहास्तरामा करसाज्ञा नरा... नेक
गततागांठे वं धांगीरांना तीतीगरहीसा पीहवे पैक ॥ ... पाहणा
कोसस सुबिरांमा अन्नगोनदीकि देखेरे ष उंरं नसे रतोजगतो
गंमो ॥ नेहोधातवके जातपेक

ऐसैं सतीहि मंवरांमा नम मातगङा जोतो पेको मायामेदे जजर
रागंम नषसघ जीव तापेका ७ जांगी नेआरे गार पकोदि रे तुरुच
कदै अमे थावेकेअ तेपहैदुवदे हसरांम नां॥जे सांवलियाचे
खोरीपक ॥१४॥ चेतिमचौतंका मरासिवालो जीवनड़ोदिन चा॥
रै तिम रड़ अतिमभरा॥ सघातै घड़ीघड़ीदिन जाई रे ॥ असंपि
आवनड़ा नो घटियो वारदईद माको नरतौ पंचपांडव नारा
छोड़ नागारमा ईकसौ तेरा नगायो ॥ मातवारतुमकाते मेदि
दिर्द्ध मसरमिरघो पुरिष कीयो नवकारमुरारहीआद्हे ता हेतमात्रमो
आडीगयो ॥१॥ अनेकरमचात्रापणा चा तेजल्यो ऐस अस्पदेदौ
हदांन नाणैसो बलियो नख नरांई॥ अतरीषवोलतषो आतमा
राम ॥२॥ कोनतड नादितनुदं वामभी॥ आतमपासित्रनत गंध
सहो॥ वनिर्वाहि तवै पापरि नांति देमंत ॥१॥ केतरजीकेपद
॥राग भैर ठौ॥१॥ नाईरिरामजनहूवषमतैतौ एदा॥मतिसादिर स
ब्रमन्यव रेकजरा॥ हैनदीमनमतंदिरे धरा॥ सोधीरोघयो जो
ईपेहरि नोदासरे नौमिस्यो तरिषवं कोईवारे कदनी असर कैस
सुवनसम्भ मारिषे जाको गयो कोमर क्रोधरे मही नागगुणागूहीगया
ताईसोहि जपरमोधरे ॥ अनतनी मतिजोई जीयरा नहीनेड़ो
नहीदुरिरा प्रिथी नापुड अंबरे नाराई॥ रहयो नरधरेरे आधिकोत
आधिक अकासड चौ वि नाथ नरहतरे अनतनी मतिजोई जीयजा
जनकेमतित्र नरे ॥ बाईबाजेसमईलषा जो सवलएकंकारा को
ईमरधमन पके नंदी नकूंउतिमनो चाधिकार बाईबिवरो ना
वरो बिबरी निरकाररे ईसो हरिजनजोईये जे न्हेसगो सब सम
जउ ॥ पद नीमतिजोई जीयरा जसतो नहीवा॥रे तिसोरन
म तिसो वनमो तिसोनदी तिवा॥रे तिसोमंदृति तिसोमा तोन
होकपूरी जा॥रे नुयामारिषेहोई लषपा॥ सोई जगतबषा॥रे

॥ सरसौ सारी सो नपै कूतर के नाई गुणा वासु कोटि जाकी किरं
ति सरै सबद सबसौ ज्याई तो जतपारि जरै कमी तपित तरो नाही
जाई दे तो तहाँ द्रु तिषा नदी नरच को सरै ज्याई ॥ चंद्रु नी माही
मदा स्वामी कैकसी तत त्रकु संतर ॥ सीसमो सेन्य लपो से सकल
सीच सैसरो स्यां नचमर लनचक मुको कालकरै नेकामरो ॥ साम २१०
रसुत सुवेन्द्र मी षेसुभी रिजेरो मर ॥ षडदरसण नै लोक लोक
रिप जाकारि नरतरस पदलौ पोणी गुरकारि पवन गुरकारि ॥ ऐ मगु
रजाकोसमरे धरणी गुरकारि सूरगुरकारि चंद गुर नी ताब उनकी तै
चारि ये लाणी रांम सुमरत ही ई सादोई पेन्त्राप ॥ १॥ १॥ देई दास जी
का पद ॥ रागु रांमगरी ॥ किमतारि ए गोविंद विषमनदी जैसे लो
हकी नाव पाथर खोली ॥ टेक ॥ धं नजोव नदेषि पट लन्दं ईद्री ईश
फलव पूल ॥ प्राँ नगदे जम पारि चढि नगती कूल बिसादेत नल
॥ कप टकुटि लमति नेमदी च पत्त चित रांम नामजी के चित
नही परतुसनी द कायर नारी स्य लो तमेघ नम बुक तही ॥ २॥ जु
स जोक रिवा लतर रत चारि ति बिकिम गहर तुख न चति तउ बदे
सात जोउ न बिस्तीर नारहै ॥ धूं गरु डुपां गोव्यंक दे ॥ ३॥ त उस्ब
मेवरूय नेक उ न्मजुग नरक जोनि बहु नारबदे संत तीरे पापीहु
बड ॥ षेब्रह्मानन्द देई दासक दे ॥ ४॥ नर जादु जनम जाई ॥ थ्रल
त रस परमानंद नपे तहूपाणि तहि स्थ्रं कितातितहिस लागे
॥ १॥ बिषा बिलौ कि सर गच्रांति बिपा सुषी करतु घा दिम हट परतवर
पाल वचदे मुलगा ये ये काटे ये देष तमुरे पन्त्राप परे ॥ २॥ बीस
ती सतीस पचीस चल चढि गावा गाहु टावो बिडरे ॥ ग्रामगज म
उसके उको है वेष गपाव मैसद नकरे ॥ ३॥ देई दास पहुत नदे नी
मत्त सुलदा के हरि नित नाजे कमर ध्यान चूं गाउब धाके लब
कूरच दे नषा जे ॥ ४॥ २॥ सीता जी की पदु ॥

॥ अब थूराग ॥ तबकालत्रा गो छूटिहै नहीं कोई
बारबार बिचारि है जो ग्याता जुग जोई ॥ पढ नरका थेई दृष्टी
पै कि ब्यार सपीके ॥ त्रिके बारी ॥ तत नकरै आतित इ नजीवै
सिव सनकादिक ब्रह्मादिक तीनहु नरायेकाया जेथा जंगम
जटा वधारी आतित इस माहा ॥ २ ॥ जोहित दिदोई बिना सभी दा ॥
साचि साच न कीलिये छिना छि नमे वार बारसा मसमोई ॥ जीजिये ॥
॥ ३ ॥ १ ॥ अंगदजी को पद ॥ राग सोरठी ॥ मनरे नपेत्रा तोती
नाता थैसहदा हि निरंजनची न कौ ॥ सुनपउ नमनी जगावै
तत हिकौ ॥ गांखियो ॥ कपतस छेती कर तद झ्यती अैसे मनको
मानै ॥ १ ॥ सकल निरंतर दृष्टि अगोचर इंद्री विषै निरात सबही
नमें सौ सबै निरंतर पूरण ब्रह्म सोपियारे ॥ भेद अभेद अरूप दवि
चारे ॥ सुन्य थूल थिपि सोई ॥ तामे छिपि छिपि रहत निरंतर अंगद
हरि पद सोई ॥ २ ॥ कतपणच तई पारी फेर जाके चथ नाही पयर
हता अनंद पार पूर ॥ चित बिवार्जितची तेकाहे ॥ अैसाबदे
चेवे देन्त्रा छौ अैसी बद पुकारे जो बदे तो बद नाही तबकहि
काहि बिचारै ॥ ३ ॥ अैसी याके छिपै नाही जोलवादि उकासे अंगद
अकल निरंजन तत सोई सदा तिसत पप्रकासै ॥ ४ ॥ २ ॥ राग गौडी ॥
हरि बिन कौ साउ बार मना आवत जात सबै जुग तेमे आपापर न
समा नो ॥ जिह लोक को मसराति दु काहू नहीं सुप लेसा ॥ ना
म ॥ नरा ॥ पूवा केपरसा दे तामे बहुतक लेसा ॥ १ ॥ अपमत्र नाहि
कल नरना बरी बिना ति जई पिन नाही पुत्र कलित्र देह धे नमाया
सबे कालत बासि ताही ॥ २ ॥ बुल्ला न रुई हादि अमुर सुर सत गुण न
मा जांही छूटे दद जगतत्रा धियारो ति । हकी साचि नाही ॥ ३ ॥ सोपि न
पाई ब्रह्म उरके परब्रह्म थै स्पै से अंगद ऐक अविगत अ ब्रिन
सी आपैआप प्रकासै ॥ ४ ॥ ३ ॥ राग गौडी ॥ संमके नई द्रस्या मनमे

रा॥ मागि लीष जन द्वै है तेरा टेक एक लष दस्ती नै लाष के को॥
नेवांपस छोघोर मस्सांसां॥१॥ चतुराई न चतुर न तु ज पई ए॥ अद्वै कोइ
छौ न कि सिधई रे॥२॥ पढरि चिरं जड़ाहरि गुण गावै अंगद कहै
सो परम पद पावै॥३॥ ऐसा गया न गोपाल हि न्हावै मितक सभी
न दोई ते आवै॥४॥ दुष अरु सुष दोउ समि करि जानें संपति बिप २०८
ति नहीं हिरदै आनें॥५॥ अस्तुति न्यंदा आसा छाडे ईं नपा चन
स्प कगरा मा जै॥६॥ काम क्रोध की बात न चाले अहि निसि जग
ति नै म प्रति पाले॥७॥ सब घटि राम एक करि लेषै अंगद कहै सो
परम पद हि देषै॥८॥१॥ मन मन धेम न रहौ लुको नां तन मन मे
धैम न पहिचानां टव तां मन ही मनमति स्वादि मारा मन पाया मन न
पादि नारा अंगद ते बा रांमपि मारा॥१॥३॥ राग आसा करै
पद निरषत कि न जाई रे मनां आप छिपा नौ रे मनां॥ पद त
रि लै कदि कचराई ऐसे तू निम ल हाई॥१॥ जे तू नइ रासि न कर
सिधाई तो तू निस सि ठां ई को ठां ई रे मनां॥२॥ अंगद कहै सु
ष अंगे नाहीं सो सुष तो माहीं रे मनां॥३॥ कहै दे ष्यौरि अनं
तअ नूपमा॥ अकल अ भेद मुरारी॥ अजर अमर अब गति अबि
नासी॥ जामुरति कीव लीहारी॥ जिसि मिलाई चक मक सो दीसै
जैसे जल मैं चं बा॥ गहेणा मतो पाली गा हो न जाई ऐसे सपूरां है
बा॥१॥ जैसे तु म कहियत तैसे तुम नाहीं सब घटि रह्यो स माई
रूप न रेष बरन बप नाहीं अंगद बलि जाई॥२॥२॥ सुआ
नंद जी का पद॥ राग गोडी॥ है कोई रसिक राम रस पीवैगा पी
वैगा सुषि जीवैगा टेक॥ निरामर रस ले आरि क लता गा॥ ता माहि
ती नि नस्स मए [illegible] दूरि चाले सब कोई॥ उत न [illegible] नकरि सो
पाया॥१॥ रसि [illegible] है बीज न बकुल॥ सुष [illegible] सो रस पावै

परी नंद दत्त्रं गरस न्ती नां । वास नवर ऊंसेग चावा । २ । उउ मधु
प स्वग ईव संत त्रुति वहुरि नतर कै तेर आवा । सुषानंद स्त्री
ची गुस मगरा मग न जेष रसमीति संग्रावा । ३ । ११ । है देखा नंद न
माधो । तेरे चरणा कव लरु चित लोई । मेत्र नाथ प्र नू आस तुम्ह स्त
री मेरे और नंद जावो ई । [illegible] वारि मै उमै तुनि को माधो आन
व ध्ये उन जानै अस त्तयो कृपमोर मनदा दुर घेरै ही उत्ति रू
चि मानै । १ । जा चिग क ला वह्नता दे प्र तावै । किपा के मनि न
ही मानै आगे गढै तादि नस कै । अस उनि करौ निदानै । २ ।
सुषानंद त्यो त्तार्ड रहै है । पुरवौ मेरी आसा । तुम्ह उल सर मै चा
तृग न त्यो मेरि बेगि नद रौ पियासा । ३ । २ । राग मारू । कवल
नैन आप नगु न मन दमा राखा चो माई । तेसो विधि जि न्मा चा
दि बिष मबाणा सा चो [illegible] तीष म तीर वेधि मरिर दुरि गए माई
लागत ताद म जानयू नाही अब नर होत जाई । १ । नंत मतवो ष्दि
करु । त कुधीर न जाई है कोई उपगार कै दे आधि कपी उमा
ई । २ । निकटि होतु मद्रि नाही वे मिमितो चाई । सुषानंदस्व
मी दयाल तन को तापल ऊई । ३ । ३ । किस्नो नंद जी का
पद । राग बिलावल । इद नवताओ री नाट अबि गत दरस
पियास बिरसे नितो बिचित्रो घट घाट [illegible] कोई तपा कोई प
ट के मघ री । तिनम् ब नाय घाट । पेम सरां की चोंबि ना कां
ष टे बूज क प [illegible] तुम्ह पट राती । मै वैरागी । नंद बिरद
की साट । किस्नो नंद प्रतुप्र मपाई ह्यो अनत पदारथ ता
घ । २ । पी के रस नराम नाम रस मीठा पंच मधु पर नी
ति गाल्लि त न तप पुर रस लई मीठा [illegible] कित को रस रद
स्र त [illegible] मेरे हुआ सग नी का । ते [illegible] त कुसमद

तखरिमे चा टगस्रुष मबईम ॥ गे गातुंम नसुरमुरी कोषा
री॥ उ लटिच लेपंघ मीठा॥ जे नाकिस्रा नंद सुरमकुरतिमाहीं जे
लम सोठ॥ रा॥ रा॥ रा॥ केदारी॥ चोटचठी जुदमामे तोडिच ले
तपु लजे दे॥ सनमुय रहते माम ॥ मन्त्रवांगमादि थाकचदोपे
रोकेकोमकटकद लरांमे॥ सुमिथ ननिष्ठुरतालीबागी॥ मीषांमुग २९५
लगहैगांमे॥ मेरतेरमै उ लटिबस्योहै॥ तहांसुखसागरनिहिकों
मे किस्नां नंददासस्तुम्बैठे दोई मच्छ लहकलांमे॥ रा॥ १॥ राग
टोडी॥ २॥ जिनहाटडियांरां मामि तै॥ सो हेबूमे सबीसिमा नीदो वो
नसचर नकेव लपंथिचालिबो जांरा नहीसुदिवांनी हो रैलत्रिविधि
सखीसरेग स्रुषष्ठ लतस लटीस्रुगतिजता नीदो उलटी मलक
लाबि नबोरी चलेप्रसामिगेबो नीके॥ घटचमथ्रमकरसहिबो
री कोन्त्रापीकोको मीदो॥ किस्नां नंदप्रजुजीं निदिगिले तुलपस्वा
सुषरांतीहे॥ रा॥ १॥ ४॥ रवनजीको पद॥ राग गोडी॥ जीय
रा श्रपुपाजपिसोई जाधुनिहरिहोई॥ जांनै गाज नगगनसिमगधि
पांना मग नकिपांनांमग नमति मग नहिलागावेंप उलटा
पीवोत्र्प्रकासमै॥ घिरश्र जरवरकेप॥ चलिरेमनतहां जाईये जहां
बि नकर बाजेबेना श्रापापरजब चीन्हिये तबोमनगोबंदलीन
॥२॥ रिजी षजलो ... सौ तकय ... कीजेपेतकू चु
पेतराषे कोई॥ रे जीव चातियकुवलमदे॥ अरु रडरकाउप देसी रूपदे
सहजसत पहे रूपदीदेसबदेस॥ कदे नबन नेनीतकेरे संसा
रोताकालत उलटि सोईलया गया नीमजीयराकासात॥
॥१॥ रागआसावरी॥ हरिकेसंगिश्रदेर फिरिहु॥ गुरकी सबदसु
निसुणि निसतरिह॥ ननकरिधनकमन नकीपकरनां रामबोलणा
साजिकूथरनां॥ श्रा पिव ज नथेरिचदेरी ... नां पतजुलरवुधि
करिकीन्हां॥ २॥ मैतेतदेमाहिं तांलयाने ... पंथीभीवेसीस

हारे मेरा ॥४॥ मधे चै राई सो मनकू घरो ता मै मेरु फिर तत्र देरौ ॥५॥ ॥६॥१॥
कूपे जल ले परत कैसे दाढे कोढे नव नको अर पदिकाढे
॥ राग धनासी ॥ बुधि बाणी जार ही दै दाडे उठ तद्रोपै तै पार आवै
बिचि ही नाई कपे लियो टांडे नाई अवार ॥१॥ रामराई की चो की मै
टग्र नागोदू णी दा णी जमराई के आइ पड़ते च्यव के हाने जा णी
पाचो सा तो दसां पचीसौ सब बाणी जारी साध ॥२॥ बाल दिस्य के
रि उनदे ना ई कारे ती हाथ ॥२॥ का दू बाणी ज्यो कोसै ता को काढ़
नव ना कंच नबाणी ती धुर सांवा ढूवा नीठ ॥३॥ २
मे ॥ मजी ॥ ८ अब बेचाणी न जाए राम ना पाट णी ना पार
वणी मन दी रो नयो मै जाणायो मन ह्ली हरी गह
गूताको मो ल नूं घट दास मारपराम ॥१॥ बिमा तके ना वक
गली दिय लायो सतगुर मी ल सामि ता नयो कबहू न आदरदी न्हो काच
डायो राम ॥१॥ मैं जाणायो मन पोति सो यामन को करू
पलटि के च न नयो कपूबिचा ता की न्हो राम ॥२॥ जतन जु
कंदु ली रतं न पवा ले पायो कामणि कर मकी आगली तन जाणी
तन कारि जोयो राम ॥३॥ तब णी मन कू मन मिल्या मिलत
कोडी जे जाणा जाणी जोहरी जाके प्रीत्य निरंतर रिहाई राम ॥४॥२
॥ हासतदा सजी को पद ॥ राग रामगरी ॥ चैन नाई है बैनरसी
तैसाध नो जीयरो नरहाई हो साध संगति मन हारि लीयो सुन्यम
इ लमै जाई हो ॥१॥ मन मनसा मन नहीं मिल्या सहज मगन रस
नी नाहे हो चित नहूं दिसि निर्मल नयो सब अगम निगम गामि
कौ न्हो हो ॥१॥ जंन ममरं णी सामि तान्ह नयो संसार बिकार नसाया
हो ॥ प्राणा पुरिस परचै नयो तब अगम नरोसै सो आयो ॥२॥ साध
गावे सुपाडे नी तहो सदा रद तत्र नरागी हो ॥ बिब धन त्रिहं ॥
तेथ मनो सत गुरि [illegible] आदि निवाजे हो ॥३॥ मन षोजे मन नहीं रह्यो ॥

निज निर्मल दरसायो है। आगे आप दरि ख्यो रिपो तब अतरिति मरन
आयो है॥ ३॥ पंच तत्त मिल्यो पंच तत्त रहो। आब नासी पद पायो है॥ ए
कमेक ह्वै मिलि रहे तब पर पंच रे बहायो है॥ ४॥ तन मन प्रांण बिलै
गए। अमी संमद सं मोनं रहो। सतदास निर्गुण मिले तब अक्रम
क्रम नसांणो है॥ ६॥ १॥ नृसिंघ चार थीका पद॥ राग रामगरी॥ १४०
सो जोगी अैसा जो भवे। पच प्रसु न्यस्म दरि जोगवे॥ टेक॥ पछि म दिसा
पश्चात लै अंगमा। पूरब जाता नामि लि है संग। दिछि न दिसा देखु मत उ
नो। थिर करि मन वांदोदा नृबांण॥ १॥ सकति संग लै साधन करो
धीरे धीरे सब परहरो। बिन लोप न बेषो त्रीय लोक। बुद्धि जोति
अैमा बिलोके॥ २॥ दूर्घ पृत पहुप बास। कास मे जैसे अगनि निवा
स। कासं कहु न कोप छिपाई। कनक मे बुद्धि इस माई॥ ३॥ धरती अं
बर एकत रहो रहाई। बिणा पांणी निर्मल करि थाई। नरसिंघ चार थीक
है बिचारि। एकत तत महे सम उतर पारि॥ ४॥ ३॥ घर बाजिर दरता नां मर
लि तां गुड दसा गरीवा। हम न ह्वै गीर गुर्लीम॥ टेक॥ दरियाहु मीदि संदरद
दांई मबेके सांरी जीव। बद कारये तां किकार नृते। फहम की यान पै
नां॥ १॥ नाई लहवा सब से बाधिरतां। अब करद प्रसाद जालिम द्रिव
नप राबष्यातिरी राषिराषिदि हद॥ २॥ स्याही सपेदी आपिर द हंद
सो जग प्यादि। नृसिंघ देवू दी दार से ज। दरद वंद दाहिरादि॥ ३॥ ४॥ म
धौ गुसांई का पद॥ राग रामगरी॥ नंदी रे अब र गति छाडि कुदित्त म
ति। करहु चरन रति गाव कहु गुनां। तप जु अन्य कत पे। करे जु बहु हो बिबषु
न ष्युदि सि नष्युटि सिरां सहि बि नां॥ १॥ पढ सि बहु पुरांण। कथसि न
सांग पांन ष्यां नेधरी जीतै जौ मन पवनां। आका सां करै ग… र
तिरे मरंणा। बिणा सरणा हरी॥ २॥ न करि पाप संच नां सुन… बि
चे नां रांम नी रह नसांड॥ ३॥ गरब दाबात॥

रस तोर स तरीबदत सुरसुरी ॥ माधौदासकेत कुपषोल ॥२॥ ऐ
अपराधहरौ हरी तेरो दासकहे ॥ बिषै बिकार नमतेत जो अ
नेग्यो नासिधावै ॥३॥ कंचनगिरकोजतकेरो ॥ दछिनकौ चले जे
गकेरी सरकरा कोसिकोहि हुनाय ॥४॥ श्रीकुचंदनबनितादिको
नीडतजोपडै तोकाहेसुवामदेवकी बगतिगई ॥ रांमव
सांईं ॥ रसिकहे ॥ तिनके पकवाही तिलकातत तोनीना जो
तोधितनपोहौ ॥५॥ कोहौन्यो नननस्याचरतो अंनन्य नेकहि सम
ऊ माधोदास समी पनोसो ॥ कहिकसे पाउं ॥६॥ जैसे परमपद
पाईं तो जुकुलत्र्यो तमो नलोधा रहत दूजे नाईं ॥१॥ ऐके कहूं
तोनाव नो दूसरो नदी स्याहि ॥ कदे जेमरहतसे ॥ जानिकोहिबीत
दि ॥ सुनत्र्प्रसुतकी सेकमृगनधा रहे परपंच माहि ॥ त्राछते अंत
त्रिषाबापे ॥ निकटपीवतनाहि ॥२॥ केहा त्रिगुण अगाधकथे जो
तोनषछूटे त्रास ॥ सबे नुसको दीपको एवहे माधोदास ॥३॥ पर
सरि नां देव पदरि नां ॥ असरनसरन नमुरारि केसवे ॥४॥ मेरे दुरतदू
रेत त्रिपारा ताथे बहुतकरो उपचार ॥ चाहो तो चरनानिवास ॥५॥ पोहौ
अब ठिनिकरहुनिरास ॥ संसारसमुद्रविसाल ॥ तामें नीमत ग
ऐव हुंकाल ॥ मेरो कर मज्ञाधीनसरीर ॥ तुम जानिदुखजादोवीर
॥२॥ तुमबड दयाल मे दीन ॥ तुमदीनबंधु मैं छीन ॥ संजोग तो
बन्यो आई ॥ अबसोदेषै ही पतियाई ॥३॥ जगतगुरु जगनाथ सी
सुष्रिति पुरांननिके साष ॥ गतिग्रौरन माधोदास ॥ जैसे पंगकरै
पालत्रास ॥ ॥४॥ मैतुमसरीसरणागत ॥ साधिगतिसुबनना थ
माया तिलकरे नदी मुद मनमाय ॥५॥ मैं चकेत जंनदुबतो ॥
के [illegible] तिलत ॥ किपाकरैके हृहा ॥ प्रभु जगवंत अनंत ॥६॥ कोम
नो [illegible] दसंघरस ॥ अतिसमानसतईं ॥ अनेकरेककौ पीडवे ॥ दु

बसमदै [illegible] जाई॥ बावरिसंतनसबैचलै। अंतहकरणविकार क
ठिनव्याधिबासिदेसभा कालीवकंपूकारा३॥ जलजनरवास
रागैमोहितुमसीचुास। जगनाथजिदिपरदहो कदेमाधोदास
॥४॥ कोन्हमोदिपारकरो वाविजावूं। कातोद्धुनोदित सपानक
संकटदेणि उरावूं टेक॥ जाउरिनावडुलाईपवनलासि। विस्नांसद
रिफकोरे। अबकीबेरकानिदार होहप्रभु हरि। मोअबरावाधिवेरै
॥१॥ तटनदीनिकटघाटनदीश्रोपव। कोलाद्रिबललारि। माधोदास
सकुसल छीनकेपूद। जिनकेषेवनहारमुरारी॥२॥३॥ नजिम
नेनदुदंदनपरसावीजै पंउंपोतपद नौव संप तासनतिरन
॥ सदाचारविचारऐहि। पतितपावै नकरन। अधमउधारन
दीनबंधु। विरदअसरनसरन॥१॥ जिनतजेतिनअटतप्पद
दु मिदेउं म्रताभरन। मापिसूतिसुमितबतावै। कोटिकलि
मलदरन॥२॥ श्रीजगनाथअनाथसमर्थ। विसुपोषनत
रना दासमाधोहरिचरननसै। सुधअंतहकरन॥३॥५॥ रा
मतअनंतसासिरेनरा। परअपवाद बदतरुचिमानासि। तजिअ
म्रित विषयासिरेनर॥टेक॥ सुषकारनबहु जतनकरतहै। पाई
रसि दुषकीवासिरेनर। श्रीपतिगतिबिप्रीतीनजानासि। मगहम
रसितजिकासिरेनर॥२॥ साधसंगतितजिकरतकुसंगति। विपति
तीरासिकूटेकि। महासंपदहरिनांवतजिनैकुं। तजिपदपरअ
बमेकीरेनर॥२॥ जबलगतीतनहीतापबिआपै। तबतलू करिहरि
सेवा॥ जबपरउरेअरकुपपनिसिचरसी। उदि मदसेनतीकेवारे
म्हरा॥३॥

नै नहिं निरखि निरत गीर सदेनोंत्रद नसुन जिगुन [illegible] माधौ
प्रभु जैसे नतु नगवू की नै भी नग ना धानाई माधौरे न
कैसे प्रीति करत नरि हं मस्प दंम माया के बांधे हरि दे च
तुम सुजा न सु निर्मल हैं नजवर कहित मनि सांधे ॥ जौ कैधौ
न धावत स्यौ मुनि जन परहरि छिपे विकारा ॥ ऐसु तामित्र वर्ती
त नहे मै दया सिंन विसारा ॥ मामा मो दच्याव स्तपरे दै हरि
घसोग नहीं लागे ॥ छूवत नदी दगांध दुरास्या पेई दाग होई
लागे ॥ वेद पुरान सुमृत सुनि मत लीत ॥ त उन उपजत गयान
चारि मास उलवरिषो सिता पीर ॥ त उन दिप जत थान ॥ नै
[illegible] जी के नस्यूं [illegible] लागे माधौ दास
प्रसव धूटे जुरा मरण तें नी डे ॥ [illegible] ॥ रागु [illegible] ॥
हरि हरि तरन विष म विषाद देवन [illegible] दुर बदारन प्रवन
मन इन समाल ॥ दीन बंधु दया सिंधु [illegible] दतलिसधीर कौ
धकार ना लोन धरि गया ॥ मोह तजन नीर ॥ हु मदिकारन
[illegible] विपति तारन नाम पाप [illegible] प्रीति मइया न
कै जे न विषय म ॥ [illegible] किया को मन [illegible]
[illegible] माधौ [illegible] तुम्हारी ॥ हरी बिन कौन
[illegible] काई कोमदत मन ना बिषै [illegible]
हूं ॥ सुने बेद पुरानस्मृति [illegible] कैसो सार ॥ लोनमेह तैंद
प्रविर्त ॥ आसा पाश मित दारा थिपार ॥ [illegible]
मापै नावै [illegible] कैं बीधि जे [illegible] चरंन सरोज पांकूं
सरन ॥ [illegible] सुर सुरे प्रमानंद [illegible] माधौ
दास [illegible] प्रगटि [illegible] हरि बिन कौन हरै ॥

बेक ॥ रई हित मगन बचन नी नी प्रबल पाप अनेक ॥ प्र
प्रदीप रोन रोन सुनियें परउपकार बिरोध ॥ बोनी बनत नमा नपायो ॥ त
पै में कोध ॥ ४ ॥ जिनको सुष दुकत लपत तू जे नर जात नान बिचार
त्रिगात्र फी नवरूप श्रवद पुमसु लौ प्रतिकरत न बार ॥ आगम नपनजु
मतौ पुज नी ॥ अप्र मास माधो दास ॥ जगनाथ त्रिथात्र लोकनि ॥ जो
उदै की आस ॥ ७ ॥ हरि बिनको नल गो गुनहारी ॥ हरि चोर नारा बिके
मोनिक वरत है प्रचारि ॥ मद लोभ कंदप त को समै ॥ घरफोरि करी
नव द्वार ॥ कुकृष्ण वतो बिगपान धन सो तैपल बटपार ॥ मद मोह तो
लिपचत ले चपल चडार ॥ नव बंध मोचन तु बिना पैरै आंनको
रषवार जगनाथ समरथ माधोदास मनाय तुमार ॥ आप तेंरा
मद्धिका है नगा ऊं ॥ तापै परम पद पाऊं ॥ कहत गादको है तुमै क
दाकी पैंव नु प्रीती जे नर जात दैतो समआदि ॥ तमारि न र नरी
ती ॥ ? ॥ के ताके बिगीत सो लके धुरंदरी जीक दावा करि रहो ॥ जो
सागर ऋषि चाहि पंग जप्र ॥ मन चरन गादि रहिदौ ॥ धंन मेवा सुक
करमा बिचारत ॥ मन न मानि कौ आवे ॥ माधोदास बरतु जावं रामर
स चाष तत्र और न तावै ॥ रसना सं मगरा मकादे तीजे तन मनध
न दरि हैत अपजयो ॥ मकत समरपन कीजे ॥ सुरति सु मीति वाक
राग बिवाधि बिधि कोदेकौ पाढि पाढि मारिये ॥ धन जोबन अबि मानतो
तयो जौ मन सुध न करिये ॥ ? ॥ जीवात्मा विरती उदैके ताकुं जो बिदा
गुणगहिये ॥ सो पंडित सम मांन सकत बिधि ॥ आधिकारी
कूकहिये

[illegible] नकपट मन [illegible] चतुरता अतिआनंद बढौ । सकल साम्रत के
सार तत्त सो माधौ दास पढौ ॥
॥ [illegible] ॥ राग [illegible] ॥ कबदेखिबौ पद मदन मोहन मनमोहन
न नैनातापहरन । कब लालरवन । कब दोऊ देखरि नउन
फाटिबो सोकाप उंन । तहिबादे [illegible] जंन । गालित मन एम
गन । मनपुलि कापुलकतंन । हरिको [illegible] उसकब सुनिबो सि
वन ॥ कब गाईबो गुनबाद पाईबो परमस्वाद । जगति अ
स आनंद सुंदर । श्रीजगनाथ नवनभवन । कब माधौ दास
[illegible] उदून [illegible] मनकी विधिविलास । ताथे जोगी
जन न तो [illegible] करै दास ॥ [illegible] बदीन
दीनको [illegible] जगनाथ [illegible] करी तुरं माधौदा
सार [illegible] धीर नीरकर [illegible] चरै [illegible] चील [illegible]
दाहं [illegible] चपल सरीर । माधौदास हसत तहां [illegible] सत जहां नप
का सनीर [illegible] हरिहरि [illegible] हरि हरता [illegible] विधी नाव
पद [illegible] नैनौ परसत नासिपाप [illegible] लंनकिरनि अंधका
र पावक [illegible] जैसे । अघ उघलीजात है । रामनाम ऐसे
तब लग अघ महा पातिग । गज [illegible] जततेन माहि । [illegible] लग द
रिसन नहि [illegible] की धुनि नाहि [illegible] पर उपबाद बिसर मानें
[illegible] दन नाहि । माधौदास [illegible] नाम । ताहेत रसना चंच
पे [illegible] पायपाव है मुरारि [illegible] जतन जतन करि । अब जिनी
तजे [illegible] नागवारि [illegible] ॥ [illegible] पति कुप उजस गुरगंजना वरि
[illegible] सब लोक की गारि । [illegible] नउ चीति [illegible] सजनी
उपै [illegible] चारहै । हरि ॥ ४ ॥ औ नर [illegible] रि

सब्बदक्ष्यांनकरतक्रोतत्तै दोगोब्यंदा कारिसपटसकटअरि
भोग्येयातह्यमधुपतदंत सारिबंदा॥२॥ मनबासिकरिहरिप्री
तिनिरंतरि॥ साध्वनमेकतजैकिनपासा॥ बेदपुरांनासिषांवांनि
सबताजि॥ श्रीजगनाथतजिमाधोदास॥३॥४॥२१॥ अथ तारतै
केपद॥ रागधनाश्री॥ सुषपैसो निरगुनकेज्ञानै॥ अदकमतु
गुणादोषविसारिहो व्यापकब्रह्मपिषां नै॥ ज्योतित्ततेल्त
दारमैदुतनु कैउघोआपुनमैदेषो॥ किस्तूरीकोमृघकीधू
ई अनतकहूं जीनिपेषो॥ [illegible] घाउपदेसस्याममसुंदरको॥ ब्रि
जबनितो उरधारो॥ अ[illegible]स्यामीपूरनप्रमांनंद॥ बिषुरतन
रमन्निवारो॥२॥१॥ जीवदकोपद॥ रागसामगुरी॥ जोमनिकव
तरांमापिछन्या॥ अविगतपुरिस अकतन्अविनासी सदहि
निरंतरिजान्या॥ [illegible] करमकामकतत्तूटा॥ मामिताका मंदिरफूटा॥
दुबिध्याकी दिसिजात्ती॥ बिस्नाकी प्रीत्यप्र जात्ती॥ जोतखब
कीसीरनहोती॥ तोकैबार नरेचुगिमोती॥ जौतखरकीसीरापिषा
नी॥ फ[illegible] अंबितचूगिपूंनी॥ [illegible] रजतमसब्योदारी॥ प्रनूरईनषै
जीबसैदिनतारी॥ रिधिसिधिकंपूनधारी॥ अपगीगतिकूक्त्रा
पै॥ जोमदसमाकेघनकाटे॥ तदापापपुन्यदोकपाके॥ सामि
ताकीदृष्टिप्रकासी॥ कहुजीवदन्तरैविसवासी॥४॥१॥
डुंगरसीकेपद॥ रागआसावरी॥ चेततासबस्ततरि तनपूर्न
रोजागे[illegible] बैमदात्तिजाई पद्मुक[illegible]

प्रा सुख मन उंडा । पांचूं संगी ल्ले पेले नव षंडा ॥ गंगा जमुना बिचि
आसण वासो । उप जो अनाहद रै कोल्ल त्व दासो ॥ ज्ञान गुरु
र दास गुर उपदेसा । मिल्यो रे नाथ तब नयो आदेसा ॥ ३ ॥ पावन
व कूंठ को पद ॥ राग रामगरी ॥ अब पूरां मन नाम एक सांचूं ॥
उरमी आप तेज अरूप वना । गगन नगर सी पांचूं ॥ नदी को इ
मरै नदी को इ जीवै । नाजीतै नाहारै । जस्त लगपुग दी जस्त दी
म कोण तिर कोण तारै ॥१॥ नयो अयाह याह नदी आवे हरि
दरिया सु रातिस मानी । धीवर जल सारिका करि दे । जब नयो मीन
हो पानी ॥ २ ॥ मराद्रिन ध्यान राम बिन ज्ञानी । सिष्य मो तउ पावै
कं न बैकूंठ से नगर एकी । गंगो दास इ सुपावै ॥ ३ ॥ १ ॥ अब धाम को र
से ॥ अब नैसि दरिपर ब्रह्म उपि और मन पि सिंगवारा । जे आम
दिअ नत ब्रह्म डांन पाया । तेद उ नाम तवतार ॥ प्राण निमिष
कअ नेद अ छेद सरूप जेह नाल तेद तद । अजर अमर अकेत
कस्त । जे आ सिर ज्या चौरासी लापि त्रुप ॥१॥ अनेक लव तू अवतस्यौ क
रस्स आवडु आति दुष । दिवडे अर चता आ माधि वी सरयो । वस्ते
सद सिअ संप ॥२॥ तागे नदी दिलपे । आ तडु कोटि ब्र[illegible] उपिया
ता नंघ उ ॥ जांहां भाटा स्व पछे ॥ अ लग रहे बेहु नाटि दकारे
॥३॥ कोटि ब्रह्म उपर जे रहै । वै स्नो बि नाते हक पातल है ॥ तेत
नी एक अपूरब जुगति । सामिस्यो नीतादि हरि मुकति ॥ सांव
ती जीव का एक गुरु । हमाद रोत नेकारि अब रु पारब्रह्म ना
पपहै कोरि । आपपे गि परतेउ हुरु बाम ॥४॥ आदि अनाद तूं
[illegible] भान [illegible] [illegible] द्वारी [illegible] उ ॥

[illegible]ते तोहरो नाम सेवै संत जपै हरिनाम [illegible] ॥ अनेक [illegible] संत
संसार [illegible] हरिगुणबिन भ्रबबिध नीकाल [illegible] नाहरिगुण भ्रम [illegible]
को [illegible] सां सोष्कटाते [illegible] हरिगुणासुमितन होइ प्रमान जमलन
आवै भ्रथ तन ध्यान सुर जोगी बिनसै कतपता हरिरस [illegible]
सो भ्रपु संत [illegible] निंत चे जेदी जे बिणा सतो [illegible] हैस पूंबि [illegible]
सकलीमायाकीधुंभ्रथ गुरबच नेतोच न भ्रजंनस [illegible] तो ३०१
धूते लागसांपि प [illegible] जोम [illegible] दाबि [illegible] सुषि [illegible] पद [illegible]
जीव जोणा लागो [illegible] भ्रकारिसेवदइब [illegible] सेवगर्ई [illegible] ला
न तेनपूर [illegible] जोन ते थी भ्रापकरि रहो [illegible] धी
[illegible] सेव नतुला गोपृथिमीदा [illegible] रबू [illegible] ण
दि [illegible] मांन [illegible] तोगवी संकुलिप ज्ञा [illegible] भ्रन
रहन ज्ञा [illegible] बेदपुराणपही [illegible] पार [illegible] जग [illegible] ना ते
[illegible] सोगवीसंकुलिप ज्ञा भ्रषे पदाबिनातेर इव [illegible] भ्राच र
तप [illegible] तं नबहु का [illegible] र [illegible] माया जाल [illegible] कीभ्र
कुलिप ज्ञा भ्रषे पद बिना तेर हव ज्ञा [illegible] मतिसु [illegible] गवीसं
र ध्यान साहितसरप जाकरे [illegible] तोगवीसंकु [illegible] भ्राप
पदबिनातेरइव ज्ञा [illegible] सेव माईबाप गुरचरणा [illegible] भ्रज
रता भ्रा चरणा [illegible] सोगवीसंकुलिप ज्ञा [illegible] भ्रा
व ज्ञा [illegible] पर [illegible] भ्राप [illegible] भ्रषेप [illegible] तेरइ
द [illegible] तोगवी संकु लिप ज्ञा भ्रापन [illegible]
सत्यरूप ईद्री [illegible] तं पा ॥ [illegible] भ्रषे पद बिनातेरइव ज्ञा

सीतलतलप ऊड्रसदै भरब सरगवी सकासिपड्या अपे मदा ... र
उद छुर चौरि आगि नीम ड्र तगान्हूप धरम अपार ऊज मांं
रागासुख पारख्न त नाम स्ागी नव आविचत्त मितियां दत्ती सखा
ब ... ताजिस्मापुणं मागुरुसमरगा जी तगा तन्म उदसा तो मरगा
रगति आगा सरो मूर नाचरगा रस लागो तिज गुरनावें गा
गति दिवस गुणा प्रायो ताव और मस्ता सब ताबेंचु ताव सतस
गति दरिप्र ऊलटे कदापर वलाधिगना विमघटे पाड्ब्वह्य
टाविचारीजाडी ऊजमल मा होनहीं दोई रूपाविहणां माहेव्याप
रमुगा दल रिसकरवाप दुरना मायापिर ताकत सुमिरगा छै
सकलीधाई द्व अब नसुर सुपजो हुवे काज तो नग नसिव पुरु
हिराज धूर विसन्मिरविसु मीरगार ह्या आगे तिदि नो मे
कुचनसी उपिकन नरनर हिल्वार्ति तया नामद ऋसुव नमुकत
छस नामुज द्दो अ जा मलेलतहो नाम गगीका ज नम उग
पायो नामदे सो उद नो समथ फा कटकपवित्त गो अ नच
स्वामी एकवीन तो अव धारि ताहरा बोलतरह संसारी बिमल
कीरति आपणां माधि एकज़ प्रड्र वहूत्तु कनाम स्वामी एकवी
नती अवधारि मोहसो जीवरत संसारि ताहरी अमजपेतु फना
म ऊपासचरचिर प्रेहजकाम एक मनाडे गावे रास तेष्ट
नो संकुटपास ब्रह्मादिक हुलतजे पसावके रास्वामी प्रबुधते
राति दिवस पेहोजाणि आमसरो कदी संसार घरदो बिगास
तो सहु आगा बिगास तो अबे एक निरंजना ऊनमरगा जोगा सिराजि
यारे ३० ज्ञानवज नम धक मविछटा तेजनमत्र नेर वे
हे भ्रू हिसप

नगीरवं तउहारे नू ध्यानमच्च कौ अदनिमिषरव्रह्म आसरो ए
[illegible] मिथ्याविलथो नेघर धपेला तो चद ता अतर [illegible] कौ [illegible]
चतुरध्यानि नो नाहि नरूपम। आदि अरूपतु म मछो ए [illegible] पाप
पुन्य उ [illegible] सिर ज्यासंसार मो करमधरमजु [illegible] ता [illegible] दम
नव अविर जोम मो तेकर मति बाडुं नाही ए [illegible] वैसव सवानरउ
न्हो जिमि सिर ज्या। ते नौ उ न्हा प ग को ऊसादिसके ए। देमदे मा च
लठाठा जिमि सिरा जिया। सिपुत्तगाए कल्पाधमा ए [illegible] आदिपल्न १०५
जे नो सिर ज्यासंसार मा। तेस तारीव तत्त्व अति चरा ए। [illegible]
दी धूं जे न्हे देवमद सुर। न्याति सवाक्ना तत्त्व ए। [illegible] धरम अ
सरे सद्रुवे सत उपरि। आधिकवो ल्या प्रे परब्रह्म ना मे ए। वेदपु
रा [illegible] मबोलेष वली वली मानूं तो ते नही अवरफ हुए
मनको ताको परब्रह्म ध्याने। रतीतकिर मपरब्रह्म दाय ए। आपामत
अधा [illegible] मे ता बै। नगातिवह्म आ मरो ए। मास्त्र नवो [illegible]
चो व्याधिने। कोसाधे सुमेल पाविया ए। एगीबोल्या ने निद्दे चो
आगिने वो फ्वाछाडि। ने अधिको लीयो ए। नामनिग्रंथ जेन्हे
चिती नआवे। तेकिम पामे पावर्ब्ला पद ए। ओरसद्रु चेवा ब कहि
बिलगाद्या। नामअ ज्योति जगत ने ए। नाम महिमा फल
अतनताने प्रतीत्य समा फलप्रामिये ए। ते न्ही ते मछूटा बि
ना प्रतीतिनउपजे। प्रतीत्य पाबे वली वली अवतरे ए। जन्म
कोटि बूतम च ध्याने। तेत्तीया प्रतीत अग्रे ए। [illegible] तोको [illegible]
नै आपणो लेषवे सयत्त निरंजन पेषवे ए। हुंने [illegible] न
दीतूं नैता हरो आछे नोतक मपूर्णब्रह्म दाय ए

आराद्धियास तो थ्योकत निरंजन । अवर कुठी धरदे तो जी ने पे ॥ आ
पनो अगत बीन नीके रे स्वामी ने । चरणां प्रणम्यो श्री गुरदेव पे ॥
पेथवत जकोप दे वि मार । तद मिल्यो प्रब्रह्म ने पे ॥ अमेन
लिवारो रेवारो । दुनें मरो वाणी तुहीं जानि रंजन स्वामी हि रदेव
नो पे ॥ अमे मानिवारो रेवारो । कुछ कुन थिवारो सब्रु भि आपो
हि नृत नथाणो पे ॥ अमे मदे वारे रेवारो । मन पर अस्तो जावा
रो नाम राच पब्रह्म तादर पे ॥ अमे मनि वारो रेवारो । लिषे ना
म्हाद बारो । नाम आपो जपो तादरो पे ॥ अमे मनिवारो रेवारो
वे सीनि द्रवारो । नाम नजनकर तादरो पे ॥ अमे मानि आपे
रे आपेरे जगाति नो सावआपो । राव करु स्वामी तुम्हसु पे ॥ अ
मे मानि आपारे आपो अनाथ विसवास आपो । आस पूरो स्वामी अ
मेत तो पे ॥ अमे मनि आपा रे आपो संतनी सम गति आपो । वि
गति कीदे स्वामी तुम्हसु पे ॥ अमे मनि वीनवे रहरि तलो दास
अमे मगत ता दरो चरण नो पे ॥ पेजोगग्रथ धात सार । वेदन
रे नरपार ॥ [illegible] सिप न ब्रह्मा न । [illegible] विस्राम ॥ हरि
अमे रति धाई ये आसलिपे प्रब्रह्म निरंजन पद चा लीपे सुदेतार
जिहो नहो जेनम ॥ कोडि जंन मदण पूरती उपनो परमानंद ॥ मु
क्ति पदस्य पोलि तारि यो हि जेतारि तदि मोच्यदि मकद ॥ विा
मता सुख फाटि ये वडसगत तारस जोग निरंजन सुख रे षिप
दाताम आतम ब्रह्म रस जोग ॥ सुरमुन्पे सुर उ तकिया स्वामी नदी
या दुस पाते वैस्नव सद जे आस सस्मा दि जे तारदमन तरो नदीजे
जपन दान्य सपन बुते मुकट लत्य जे अवतारा । तुस्म म पदि वे
[illegible] [illegible] दुःला र [illegible] सति स्नार ॥ [illegible] जनो बंधात केदिय
[illegible] चास्रो पादि अनंत सुमरगत्ला पिया दि जे तारे प्रब्रह्म जग

- सुवर्णरेखा

hundred three

DMV 12

ctd p 306

pages - pieces

sticking together!

दिपुरा [illegible] नतो रामा कीयो ॥ ७ ॥ जब लग ब्रह्म दीदिक्रं म
न भिरे [illegible] री ची चे दी चौ ऊ दंभ वारब्रह्म ॥ ५ ॥ प्रतली ध म
रती जगा धड़ो ॥ बी जिड़ी पाली बिस्ह ॥ ती ज्ञपेंचि नुवं न लै मरै ॥ चौथिये
नहीं सिद्धि ॥ ६ ॥ ब्रह्म विसवद की नवै ॥ परब्रह्म रा ई अब धारि ॥ तु अ
गालिको जांगी नहीं [illegible] आत्मा [illegible] ओं कारे ॥ ६ ॥ मुकंद जी [illegible]
[illegible] ॥ तदा वा रामास बसतदोई ॥ ताकोपरमारथ बूझै संत कोई ॥
[illegible] जल बरसे आगाति [illegible] धार ॥ [illegible] देई अठारा भार ॥ पां [illegible]
म देई न कोई ॥ पवन गगन [illegible] न धोई ॥ १ ॥ तदां वि न फू [illegible] न फू
ल्यो अकास ॥ ब्रह्मादिक सिव [illegible] निवास ॥ सनकादिक रहे लव
ल्लाई ॥ तहां लष चौरासी जीव जोई ॥ २ ॥ तदां सा तौ साई [illegible] पथ
रि आति जुर तेतीस कोरी ॥ अमर लोक [illegible] हे जाई ॥ कहे
मुकंद जांनै सो भाई ॥ ३ ॥ ता सूं वकं कहिये गुरदेव आया ॥ जाकी चो
दह तब नर दीतरि माया ॥ ४ ॥ आदि अन्ति उत्तपत्ति रहे पूरी ॥ निगु
णा [illegible] जीवनि सरी ॥ वो सबदी नमैं वाम न कोई ॥ दीन [illegible] ग
ति जानै सोई ॥ ५ ॥ स्यो विरंचि नारद जस गावे ॥ हरते सी [illegible] न पावै ॥
॥ ६ ॥ जनमैं न मरै जाई नहीं आवे ॥ जनमुकंद जाको जस गावे ॥ ७ ॥
[illegible] ॥ रैत पति [illegible] ब्रह्म गियांनी ॥ पढ़ [illegible]
णी ॥ चारि चारि निसबा सुरि बस्स्यो ॥ चये [illegible] दे प्राणी ॥ ८ ॥ जीटी
के पगाद सदा [illegible] छो ॥ [illegible] ती वि गुरु [illegible] यो ॥ उदेक मा [illegible] वि
सिमा [illegible] ली ॥ स के गुरु करायो ॥ १ ॥ भौ ड का पर [illegible] ड व
न बिलाई [illegible] ई ॥ नित उठि स्या ल [illegible] जु [illegible]
घ्या न जाई ॥ २ ॥

... अकासै
... तिरछी अब ... ... तमीसी
कसै मुकंद नारधीके प्रभु ॥ [illegible] ॥ के ...
कुसारोगपदिचांनै ॥ [illegible] ॥ दीपीरो ... देहै तो छित्र
री सारदको लासरद ... सत जां नन ... तीरा तुम बिनकोन्दकलीजु
कासी ... कहियनकसां ... तेनीरो ॥ ... तमी नमरतपांनीरी ... पा
मिलंनी देनय ... तमदेई धोरा ॥ ... मुकंदनारधी ज्यों ... धार के च
नीकुल नीनकी नीरा ... मुकंद नार धी ... ॥ चेत तमी
नमं गहीरो ॥२॥१॥ ६॥ ... को पद ॥ राग गोडी ॥ चे ... तमी
यारद्दो नावे जाव गोब्यंदो जिनि बीसरोरे ... माया ... की बेलडीरी
कुसम बिषबिकार घरी चितजनि जाके चितिरदे ताको ... दुख बा
... बार ॥१॥ एकक नकअरुकाम नीस करे अधिकोपियास ... कुब
हूं न रहरित जे ताके दरसानि परउपगार ॥२॥ अस ... धिनवीनाधिस
दर हरि जगतके आधीन कहे मति ... दरस ... आतमा जाको चित
चन्न तु जनीन ॥३॥१॥ नायक को पद ॥ राग के दारो ॥ अवधि को
नहीं लागुजानं पतियां नांहि संदेसो नाहीं दरस ॥ नस को ... ॥ रहि ॥
इंद किरीटी ... गतपावक ... सीतपव नसाधी नांन ... गमंद मलितसी
न लिबिय नबिष परसनदहत उपान ॥ तन ... नमोदनभ
धु उपवत एक पलवारि ... नौ ... कैकेपू ... ज वर मिलीगे देही
जीव नदांन ॥३॥१॥ नारी को पद ॥ राग बिलावल ॥ रामबिसाखो
... तमाज ... नकाम नीस दीरे दोबिदेबिमनमान ॥ ... को पेती
को ... दि परपंच तुला नकोकरे ॥ जगतिकोसुनैनागवत ॥ ...
मारेकागादिवांन ॥१॥ नीकेकरिकरि ... नावत ॥ लागे ... पान
सारी क पूनर बिन अति बिमचानि ... कोलदिवांनि ॥२॥१॥
... को पद ॥ राग गोडी ॥ नलीरे मन गोबिंदा चरणां ... दृ ऐती
मारग ... गोब्यंदा नाम बिपति बिनासा ... पुंनां पुंनां जन

मोदें ना ॥ ॥ पीना नवें योगु नां गमागती नानजीतूं हरी ॥ ॥ बंधनेंच
नेवन आ ॥ प्राणापयान नांका ॥ नेमस्त जनेंजने ॥ २ ॥ ना सावी
नां नावीं अवै गयादूर ॥ जीव नम दोगारवोसले ते लाचूर ॥ ३ ॥ पदी
नांगा लिंबकदे ॥ सु गोसा धूजना ॥ ईह लोकें पर लोकेंव धू नाराई ॥ ४ ॥
॥ ६ ॥ १ ॥ वेलियानें देका पद ॥ राग मगारी ॥ तेकुरुदाई पाचरंगा
तेन मनसरणां देव ॥ मुरु पेसंटचपालो ना ॥ मेंनतेलावलें मांजे गापद
मना नाता जीव ननजो ॥ अनकीयाका आ ॥ तूं जीवचा नगा दातार ॥ १ ॥ ३०७
यासंसारपरपंचाघोरासि ॥ निंतुमा दातारा ॥ तुमनूं नसंदलमिला ॥ तुम
या नांमचाआसिक लें नकरी ॥ कामादी नां नाथ ॥ समघरागां तुकसारी
या क्रिसवासा ॥ निकलवा लाहिकीयें अंद्री ॥ मन नवाथा ॥ लागलो तुकीपे
सोडी ॥ नानिनालिमननदनिक लवालाहि बीनलवेंवलोया नंद ॥ ४ ॥ २ ॥
॥ राग टोडी ॥ देषोदेरच्यके सा जोगी ॥ जिंहि मांई जन मीला ॥ तिहि ठायलें
गीदेव आपाचा दृष्ट धरावे लानेगो ॥ माया चा स्वरूप रोगा वईयालणे
॥ १ ॥ सांडी लोकि रिआ जालाहिस ॥ माव रिये संगे लावीलापादारा ॥ तांडे
सोडे लेकीपालीलीपादे ॥ तीपले ये उनूं रहिलाआदे ॥ ३ ॥ नोगं नत्यागीत्य
गंनें नोगी ॥ वेलियानंदतें घेसहजें जोगी ॥ ४ ॥ ३ ॥ स्वरिये दासरूप
राग टोडी ॥ जोगी जागतीत जागे नींदसले ॥ कितकरं माचा दें मडावी
सरे देव निजसरूप पां कुन ठेला नीरे ते ॥ तरेम नवि नीपा ले जाला गे
जते ॥ १ ॥ येथ्यातताध्या नै नासडमिरे ॥ बारावाल तोकाई ऐकलीसे ॥ २ ॥
सुय सरूपसाच्चारवीकरे ॥ जोगी सरिय दासतुरिकार से उनमने ॥ ३ ॥
निजसरूपगे मांही विरधारतां ॥ मनकोदसरोदीसतकांही ॥ दुसरे देषतां
द्रिसिदे मिथ्या ॥ लाचितांऐके नांही ॥ ४ ॥ तों [illegible] मंदी
अरपी वाचा नीमाली जेथें [illegible]
वाईसा तेथें [illegible] नंदावें
सांसा ॥

नदिये गी स्वरीये दास तेरे

उद्धरीलतो देउ अस्तु बापू तजपे नदिये गीं वेधउ नमस्त्रा [illegible]

हेथे देव कदीचा नगत कदीचा ॥ आपणापेनेणो [illegible] बांचीले तेरू [illegible] ॥ बिाप

[illegible] नीमांडी लगडा ॥ आपुलो आपुणा [illegible] ॥२॥ आतां [illegible] अनन्त वर्तु

रव केवीनिलीपू [illegible] आपु नीजा ताद्जा ॥ [illegible] उपचारे [illegible] लेम

कि लब रवे [illegible] पवां पीलेकरमे ॥४॥ [illegible] दास [illegible] नाथी हे देव [illegible]

नै आपुणा आपु [illegible] ॥४॥ [illegible] पद ॥ [illegible]

मति नदीतेथे तावकदीचा ॥१॥ [illegible] गगनीचे पुढे [illegible] तु [illegible]

नाथी [illegible] परपंच [illegible] मिकी तीगगनीचे पुढे [illegible]

[illegible] कांहीं [illegible] पाल तासवाया केंचावारे ॥ कांहीं तीनेसी नरी

या [illegible] मूध उत्तचं [illegible] पाद ताजल उत्तचरे ॥ केंचे जलते चींमकरे

॥२॥ सप नेचाओ नांक तरकाई ॥ परईसीचा उाईयावो हे मुकताई ॥२॥

[illegible] देवदीचतुरा [illegible] ॥३॥ तुकयाच [illegible] आ

सार [illegible] संसारा ॥ सरीरपसंपत्ति तुफाणी केलेरे ॥ अैसी माया

चा तुलावणी हतु कयाचेगात [illegible] आचे त्यासी [illegible] ॥१॥ उत

सतगाईचारी [illegible] दूसरी ॥ रहीतुसुख [illegible] जारी ॥ अ

रमन आनंद तूकरी ॥ सरीरसंपतीकीरती [illegible] रुणी [illegible] री ॥ मासी

[illegible] ॥२॥ श्रीरामाप

[illegible] ईसी का सिया आ पसीब दासी ॥

गात्ता गेले [illegible] सरीरले ईवाणा उपलीयाके मया [illegible]

पद तूं धाई लेवदसो ॥३॥ [illegible] करीती सीत [illegible] रवद्रत

[illegible] ॥ दूचेताकासिया [illegible] सी जीवती ॥ आसा मनसोरे

[illegible] समस्त [illegible] ॥ अति नेतिलवा घुणी बुवती चाग

ईशा ॥ ३ ॥ १३ ॥ [illegible] पद ॥ [illegible] आसावरी ॥ पेहा दूटीफिरि

[illegible] [illegible] हूहूं परघर [illegible] ॥ फिरीफि

[illegible] तपमकस

जीस नउसी॥ सेष सेषव दु धामारे जपतपस जमसबै बनाई
देरस कि बंद नतलामारो ३॥ नवपावबतकुं देखाबिन्ने गतन दिरवि
धीरज नती आयारो॥ गुपताद्रि गदिको दनतन धरे॥ फरनानांव
रायारो २॥ नौसै नवासी जोदि गुरदरिया॥ तामधे आप भिलाया
रे परसहत बिनची देसोई॥ सबाभिसी दसकदायारे ३॥ पविम
सिगपा नवतबिना पाई न॥ पवनपिरतरकु लायारे॥ तारन २०१
पूलुची मादिमांकोधूं जानें घटघाट बिसदसमायारे॥ ४॥
गपां नत्रिती कजीकी बावनी॥ गपासदेरे॥ ककीप्रथमिकवल
कप्तां उं॥ तीर्थ ठांई भिहाग रुक्का गांउं॥ तिहिंगाव मध्ये कोमादि तत्र
ही पूरी तिदासकेतीपद्धतादि ॥ [illegible] तीर्थहिं नांव॥ मदितं
अउ रबसै तिहिं ठांव॥ सो कहत स सबद एक है॥ प्रीति लहत रत हां अज
पारहै॥ [illegible] गाव नकी [illegible] कास॥ त्रिबेणी संगमसाई पा
साई साधि सुरति जोरहो॥ अमरलोईनदी कबहु मरे॥ २॥ घघ
घरही ववन अवास॥ तिहिं ठां सासतबद्धकाबास॥ सासबद्ध [illegible] मे
ला [illegible]॥ ससुरना पुरतक कागया ३॥ ननानर [illegible] पाते
पारसपरसे कंचन होई॥ कंचन [illegible] माजाई॥ [illegible]
त्रिबेणी न्हाई॥ [illegible] मन लगा॥ [illegible]
बैरागया॥ ४॥ चचा चित चढ़ं टोतहां बराग अबराग त्रिगुण देत
बरसा [illegible] तपबात॥ नतीतहां दिवस नहीं तहां रात॥ ५॥ छ
छापछद रस नकी बोट॥ [illegible] अदमेबकीपेट॥ तपुदीर धरंभित
अर्थीन पेतावादक रैत्र पदि [illegible] नायांवापिम [illegible]
तिवो जांनि॥ नबतलगयादीजे द चतुसै अवस्था च पकरमिमा
रहे तबदेक [illegible] अदबीत कलपनां बीसदीत प्रदनु [illegible] ते
बतदिसूनै वारप

सतगुरसबदकेची ज्ञदेई बस्तऊघारिकाढजकरितेदी ॥ ॥ ... ते
कठि... सो ... साव रकपूर्वानं ताऊ तकासे ठमेयाकरै सोमर
पाणीमरुठमरै ॥१०॥ ददा न्राहीन दीई बिचारि तीदिठाव नटे दमरा भि
नमुगरि नमालकोई सामान जाके गुरदेई ॥११॥ ठठाठकुरजोराबास
...तिय बाका तहां निवास पातिपपीका आ निभन नाव रामिता ताणाबि
...गुणमाव ॥१२॥ डडाडरडाढाषपरसा धुमयाईको त्रास नकरो का
...किकासदहनतेदीठ ॥ रामराईकेमरं णिमयईठ ॥१३॥ ढढाढढसकारि
धारिरद सतगुरसबदा आगमदत आगम कहत मणाछी जाई जोई
कहैसोस्वबतिहोई ॥१४॥ णणाताबिलवणिरऊनम नी णाणाधूपडहामा
त्रेगुनी बेमारथपापावउरंग ...कर थाजै सद तडपंग ॥१५॥ थथाथी
... बिणाबादल जलगरडेगगान गरजेमगानहरिप्रेमह
द मणिकेदेश्राधिकास नद ॥१६॥ ददादरसाघदसंसार सतगुराबिनद
... पारकहतपरमसमरदहरि बलमारसोई तरपरि ॥१७॥ धधाध
रणीतणि श्रवास धरणी आई तीत्यो अकास अबरहससेदेपे ॥ तोई
धरणी... बिर ...कोई ॥१८॥ पपापरमपाइ... उतपतिपरह
बीर जसोई उतपातिप तकाली नजाई ऐतालादीत णाकुपाई ॥१९॥ फ
फफात्रम तहरिलहि मराणाजीवणाचे पूर्णाहिरह साफलत्रेसोभ
ठ आदिसयोबिरचिक त्रजहनचाही ॥२०॥ बबाबराणाकहोनहीजाई
... दूवोधनदरन्ग्रादि धनलसतोई ... जाई ॥२१॥ हरिअविनासी
... ॥२२॥ नबानरंम ... जो मद कदलीब नसंग
... लीबनका दादस नाव नास्यापुरी ... ॥२३॥ ममामु
सास नमुणतरी तबसमासाम्रपसद जिहमरै समसप्रमन ...
... केहरि ... मिलका नी ॥२४॥ ररसबलहाई ... पडुदषि
... पेसमसा... हरिकीवाद सतगुरिसाणि ... करिषद
॥२५॥ ललालोलच... करै बुधिश्रपाणि तिहिंवउधरै पूबलबु
तहां होई समाना पुरि आंडितकेवलपान ॥२६॥ ववावाकीयातिकु
न जान सनकादिक देव पूवान अनसपरसहहेसै सैरहे अरे

गारै ॥ कहं म कौसै त्तहे ॥ २५ ॥ ऊपर जसे त्यागी मन रहै ॥ सो परलौक तब दोसा
तवै ॥ साम लोक कोई है रसु ताव ॥ जंर संखी आ नंद न खेनाव ॥ मसा
लरहि जेरा धरै मैा ॥ किलामिलि किलामिलि दिवसारे ॥ मिली मोल
ह मरि तब नकोई ॥ जोर लगै सो ब्रिदृ वादो की बूड़ि सुवा कहत कोाा ॥ दरि
च आपै ही आरि आपै ही बंध ॥ २२ ॥ ऐसा तु उदहन तास महंस आजुरको
घतदा उरे नकोस [illegible] पुर फल नाह ॥ सिखि बिरंचि नै सोतिद घ
ह तीनि लोक घट म चे तोई ॥ सोई साधि सतगुर थै होई ॥ घट म धे जो
कहि ए आपि ॥ बिन घट नहीं कहीं अनाथि ॥ घट अघट आपि रहै निवा
स सत गुर सब्द दसै न वतास ॥ [illegible] मोटी मोरा ॥ हे अरु
तीनि पच अरु मेरा ॥ तोर कहत सासिस्सारि ज नोहो ॥ जनात्रिलोक रहई
सितहा रहीन आदि पारि सतगुर जांणौ ॥ आप [illegible] कोई प्रवाणौ ॥ २७ ॥
॥१॥ राग मारू ॥१॥ रे मेरा मन [illegible] मन न साथ ॥
हां म न जगाति फुनि कीर ॥ कहत है ॥ मैं फूनि नु गति न कारिहा ॥ ए प्रा ॥ प
धराा कहत है ॥ मैं ब [illegible] नचारि है ॥ जैसा ता पजपै नर प्राणी ॥ ते
सामै सप्रवांणी ॥ [illegible] नकरांणी ॥ होई जाप सो उ
मां ॥२॥ ऐ करवम सबद सघटमैका ॥ होई जापन आाकोठा ॥ यां नत्रि लोक
[illegible] गामि लीया सीथमैं ॥ बिघ न टल्या तब जीया ॥ ३ ॥ [illegible] कही
कौ पद ॥ राग मारू ॥१॥ अब्द न बेद न प्रकार ॥ धरणि गुर नन हुवा न स
पास ना तदि रा ॥ नचंद न सूरज [illegible] गाई ॥ [illegible] नवाणि
[illegible] उतपति प्रपाति नहीं आंवा ॥ जांणि [illegible] सपत नहीं स
मर तदि सो [illegible] ईदा ॥ नातदि स्वर्ग नरक पताला ॥ दोमु गर्
न [illegible] नरक स्वर्ग नहीं जामण मरणा ॥ नाको आई न जाई दा
ब्रह्मा बिस्न महेस नकोई ॥ और नहीं सेये केसे सोई ॥ नारी पुरिष नहीं कुल
जनम्यो ॥ नासुख दुष कोपाई दा ॥ [illegible] तादि जती सती सन्यासी ॥ नात
दिसि न साधक बन बासी ॥ जोगी जंगम सेप न कोई ॥ नाको नाथ क
हाई दा ॥ १ ॥

अपतपस उन नचु तनु जा नाको आपिबपासोंदू जा आप आप आदि
मन कि आपि को गोपा है सुचिम उंस तुलसी माला मा ति
मके कहे त मत प्राप त नकोई नाको व सब जांईदा करम
ना कगुपा सनह आपित उनम नदी से आपे मामिता जा तकाल नंदी
रम नदी माया माणी आपित उनम नदी से आपे मामिता जात काल
मरंगे नाको किस है धांईदा नादन नदनंद नदी जीय उदू ईदू गोपाप
नामा चांदू नात द्रिगपांन थ्यो नयो कोता नाको गामिदिगिगा ईदी
बरा तोप नहीं चु ल्ला पत्री देव नदेव राग उन गावत्री होमड इस
दीतीरम मणा नाको पू आता ईदा नाको मुला नाको काजी नाके
सिधमसाइ कहा जी रहे सराव नदो ती दुनिया नाकोपां नकदा ईदा
नावन तगति नवे सिद्ध सन्ती माजनमी तम द नहीर ती आपि सदिक आपे
बाणि ज्ञरा साचे ईदे धांईदा केक तब नाम भित पुरां ता पदेत्र तन
दी आये णा जांगा कहत तस राता आप आगोचर आपे अत पत पांईदा
जातिस सोयां जुगत उपायां आरकता आ दुबर छाया बहुती किसन मदेस
दु जाया मायरे दब पांईदा कीरत कोगुर सबिदस पाया कीरत
रीचे मेकुत मससया धुँ उ बुद्ध कपता तता आपर ते गुपत पगट दंदेदा
नाको अतर नजाती कोकी पूरगुर फोसा ची दोई नादिकदास तन
बिसमाथे बिसे तया गुण माय दा ॥ ॥ गगर बिन बहुतीरा तुगत
बीन सुगे जुगी तीन्हे परमतत में जोगी अमित नाव निरंजन पाया
विआन नकापारस जोगी गुरकास बद सनदा नमुद्रा यायां
साच दावा देव कुवर नता करि माने सहज जो गति पावो सिवन
पुसि आसोरासा सत्रु अबावत पतिया गोबादा सीगीसुर दीस्ह दास
निसा के अही नाम पूर नादा पंच आदि चार गयां नमत्य पड़ड़स का
तांतिम नरा विदुता हरि की रति रसोगा समती गुर सबि कणा अति
ता सर जीजे पति हुमा री स्वामी नाना बहुतीरा आप न कर वडू नाले
जसुगा सर धर जोगी करबहुत सत्य समद पेका नाको मन न रतिवला

रागा सपीवे सदा रंग रंग पिरदिका ॥ चवदा नानक नी प्रेम त्मो लागी स
बद रस्म गादगा दिया ॥ गुरु कारि गम नान नक कहि पावे कस जाणी
को सपाइ प ॥ सो मी नक हु प्रेम का पात ॥ इतबिधि अमै कवाइ ए ॥ पुरा
सच्चु पिया सारा ॥ विलिपी या नेक दर करे ॥ अमृत का व्यापारी होवे
वं नाम खावे नावे चर ॥ गुरु की साखी अमृत चाखी पीवत दापखा
ही नयर ॥ हरि रस नक पूरा मन होवे ॥ मुकति बैकुंठ हक रे दे स ॥ सिपरी
रता सद जवे रागी ॥ जवे उनम न दारी ॥ कहि नानक रस जी ॥ तरथर जोगी
पीवत सादित भारी ॥ ॥ राग गुरु गजड़ी ॥ तु मति जागा ॥ तीपा
माता का माणी या स्वर की सोना ॥ इतविधि जन्म गवाया ॥ अमृत कारि
धरवी की उकलि कालमा सकी आब देवनि तपाणी ॥ होइ त्रिसा गाइम
नउ मई तल तिस दो जग मढ़ा इव जाणी ॥ अमृत नकी च उग वकु
मन मी उक का वस्त की सार नहीं मुक्ति पाई ॥ जर उस्सादनित ताप्पावे
ने कबू नव केहु हाई ॥ तस कर साथी प उर साखी ॥ नामु सेत न कोट
जाई ॥ नानक राखे रा दहप चलाणा ॥ मा तवन का किस कोस चाई ॥ ३ ॥ दिन
छार दुख केवै ॥ रंग माणी ते दारि उस जाणी ॥ मै डी अंदु उखा ॥ वस
पुरा णा मै सचो त्ता चे साणावे ॥ ४ ॥ धन जो अन नना हसगो पादाल
दिन चारि वे ॥ पहणा कै रपत उपू ॥ मै डी अमाव ताणी ॥ तरी तुरिया एच
ता दरवे ॥ जे जाण नित हल दण ॥ मै डी अमावाणी ॥ सांवणी मोह तर
हुवे ॥ जे जाण जगु कहु णा ॥ मै डी अमावाणी ॥ इतत निधो दायो दासा
ण करे हुवे ॥ नदलिए पेक सी धस्णा ॥ सास केरी सोई वे ॥ मै नीव उ
सा हुरे ॥ मै डी अमावाणी ॥ नित न पेई माई होइ वे ॥ ७ ॥ मरुणा भै उरंग
जाई लबसी त्ता ता वे ॥ मै ती अंगु पादु हाणी ॥ मै डी अमावाणी ॥ द्रकीस
मन्नारे गावे ॥ ८ ॥ नदि वस तीपे ईया ॥ देखि बर ती साचे वे ता णा देग
वाई मंद डी ॥ मै डी अमावाणी ॥ अंगु णा चली पले बांधि वे ॥ ९ ॥
मरे ताणा गेवा तच रेणा ॥ तजि पवारा मंदी सर णा ॥ ... जो रीम द

बीदी दे चौतागै पहरो

है पसी ... पहरा ... मत ... बीदी दे चौतागै ... पचासा वे ... त

श्रा म ... कहि बीस ... तीजी बेतीस ... तो जी बा जी ... पचासा वे

... कहि बीस ... तीस

... जी ... पचासा के ... दूत ... जी ...

... षा टो कोडि पचासा के ... बहु दूत रा ... मा

... किसदो ... किसदे ... मा

... नालिकक दे ... जंगलि ... वी ... कवी

... उसदि ... की ... किरे ... पचडे ... सै

... कांचो मांटी का चा तांडा फूट ... ...

... नालिक ... पूरा

... पहले पहर ... दे बाणि जारिया ... रुका

... तया ... ज दरि ... बाणि जारिया ... सेती

श्र ... सेती ... दा ... नत्यो लग न

... सेंदरि ... जा ... त

... कि ... नालिक पूरोणि पहले पहरे ... का

... दूजे पहरे ... दे बाणि जारिया ... सारि ग

... जारिया ... सव धरि

को ... ली माणी ... मत ... राव चेत ... चेतु

म ... दरि ... कुछ ... रावे ... जिसा ... च

ते ... दरि कीरि ... कहु नालिक पूरोणि दूजै पहरै ... विसारि

गइ ... नवे ... तीजै पहरै ... दे बाणि जारिया तेरा ... जो

... चितवे ... दे बाणि जारिया ... जि

वे ... नाव न चेते प्राणी ... मरि ... साता जी

... नामु ... तीजै ... वेला ... तेरा

कीता ... कहु नालिक पूराणी तीजै पहरै तेरा ... चि

तवे ... चौथै पहरै ... दे बाणि जारिया तेरा ...

जंभि ... बाणि जारिया ... किसदै ... तेतु ...

दितो के पास करदियां
...ारतीं नीयां उनदी ... दे तिसतीते होद ॥ सु
कुदी को तीयां ... तपदे ... होदी देदी ...
... बिकराल ॥ ... साचे ... रे जाणा दिल
... बलिबिस नौकर रे सालानी
घाटी ... ॥ ... दे नानिकाचारस
...दियां दरस ... उपरिस ... तीसु ... हिए ना
रो चो ॥ पादी ... लम तीनु
... का दू नकाहे को ॥ नानिकाबदस मालदा ... तीतस्त्रि...
... साहिब दे दीदार ... ॥ ... यां ... पुतितो मीड का
... सिखां दूधाधारी पुन्पते ... कीयां उतियां बुदतां पुन्पतव
तदं ... सीयां मंड में डंगांपुन ... सास्त्रियां सेवा सदा मिरगासार
सदा बिगासीयां नानिक रते ... साचियां ॥ २०॥ अंन छाडि करित
पिकदावे ... सकसनदा सब ... पावे सकर तवादाम ... नपा
... गेन दुतेदाम ... पावे गिरीछुहारे कोट ...
नपिंड ... ॥ कंद मूल ... लागि ... रातिदिवस ... उपेचरु
हि ... पिंड ... प्रेट ... असे तपे नपावे ... तिन ... दे ...
... लोग ... एक ... करे अदार तिनको कोई न धरे पियार
घर में ... उपाव ... बाहरि करे बिनाति सेव असे ... सैकलि
... ठेहां ... नदी पांदि नानिक पाया ... नाउ सचे साहिब
की मैक ... ॥ २१॥ ... जी के ... ॥ ... जउ
... ईतो ... तन पार ... निस तो नीसार
... जो ... बार ... हे सबाई सिप ... जा ... पिर ...
... है ॥ २२॥ ... किके नप ... सोडि ... को बि
... जाई ... ॥ २३॥

पदरापद्द विद्या को हीस्सकुराणां ॥ तपे लोक नरसंमो यो प्राण [illegible]
रिपराणा ॥ तंत्रमी तद्दिपछियां तेपु खेत्र दसाणां ॥ नार तो लदि मा नस्य
[illegible] हारकुराणां ॥ जेधु [illegible] नकी [illegible] साई ते दीदार को सांपे प
[illegible] केती [illegible] ॥ अलफ अगोही पादे कारे ॥ अणिर ही यां
विसारे सो तु डोब्राबारि ॥ [illegible] एकाहिदी ॥ [illegible]
सै [illegible] जी गं मादिय डोपारिआ नसे ॥ [illegible] तीयं
[illegible] केरीय ॥ [illegible] दीकरफंद अ साई स नाचाय ॥ [illegible]
सिरंलिया ॥ सतावि नोकहि यो ॥ दीदोयो दोर्द ॥ असातसां तीतात
दी मैदाडिमोडि दोई ॥ उपायां डोपखो वु आ [illegible] भीदि
प्र ओतासु किधो सुपीयांस गई ॥ मुंसाई मिव डाणीं [illegible]
प्रामजा विय डोहेउ पे भकर नाकदिकिवे [illegible] ॥ [illegible]
नामिरे ना उरवार लपार [illegible] तेति तीके सोमनम [illegible]
दिलच्यदरिदरियाव पूंके [illegible] डुके ल मणीक [illegible] छाव
चंडी चोधरना लिधी ॥ फिरियांस तथा इयो मो मनमं केई देउ बाटुह
[illegible] पाई ॥ कायो मु लसई पिठा उदरियावमें पसंदसे
[illegible] नसे ॥ दरि पूर गु रसम गुरा दकीके यो द [illegible]
[illegible]
[illegible] चीतमे दाकर मा लीरबपरतिया ॥ [illegible] सदाल कउ
[illegible] मा हीरबाचंतिया जोफलं [illegible] ॥ सरदेव डव सं
उरस डोयनगलीयो [illegible] सांप्रकुवलपु लाविये को
जेसातल [illegible] कोवनां [illegible] तांपीयेप तांतलमें [illegible]
दीयकी ॥ कवगोई इरि [illegible] हदेड उसालीरि [illegible]
नीकेवरसकर ॥ अर्पा [illegible] सांव फोजोकरे [illegible] मा डी म
[illegible] सोजाफीर ल दद्विय ॥ [illegible] सांपि [illegible]
[illegible] ॥ जिन्होंजा न उवर [illegible]
पा

[illegible] मं दसि नदे [illegible] तंतांडे नल तंनिसे अकेपदरअरस ॥ [illegible]
[illegible] वादिदसदे दाईरी दकालिओपेई ॥ डिन्ही जो मड
अकोत्र [illegible] ॥२॥ वादिदसदे दाईरी दकालिओपेई ॥ [illegible]
दा किये पसदासेडी ॥३॥ हकीकी मसे गावंसानि मदरसकीआ
चव तिदकीकोवे न ॥ गा [illegible] चवं निकीकीयो ॥४॥ मफकी मिसे न
वसनिसहरसफाफाइ ॥ चवं नमफाफावे ना ॥ गा [illegible] चवं निमफफीये
॥५॥ तिन्ही मधमराडी अखोरु तथिआषिर ॥ तिन्ही जो गा [illegible] ईमांदा ३१३
डेसा जो पीघरे ॥६॥ गा [illegible] जो हियां ॥ मदां मुंदसाचा कां न
वक्रूपसारि घां ॥ मूपेपोलिचा ॥७॥ कूती डेई फिरे [illegible] डि न्ही दर
सावा ॥ ती न्ही सदे तुरदडी ॥ मुहारे सुवाव ॥८॥ फेसकसीपिरियंनिके
केदे पोक पीडें ॥ [illegible] नपरि ॥ अंदरिवतुडेगी ये ॥९॥ से नाथ
पनलोड़ियां डे तांदियां तो ताबु ॥ मतांवीदी नुष ॥ जांडे [illegible] किन
पीविसे ॥ [illegible] दलदा अ [illegible] चाटेरा ॥ नेडी सांगसोव
ता ॥ अंवता [illegible] ॥ अलांद डी नी मेतिमुरु ॥ वेदी नी [illegible]
रघुपेका दी ली [illegible] मिलया ॥ जोगीलियालबु ॥१०॥ वेडी नी [illegible]
कलां ॥ डी नीडी फारयांद ॥ [illegible] जीवंदियां ॥ कापवेमड्वांव ॥११॥
घर जूपसससदि ॥ जोगोई मवतडियां ॥ मेईसनकि जांदि ॥ आडिव
व नडूसतां ॥१२॥ मूचवसफकारे मे मदो ॥ तेता मनि नावे [illegible]
दि परडे साधरकीयें ॥ मत डीयतिरांन ॥१३॥ कोजीसदेसा [illegible]
कियां चे नकसदरलष ॥ तांडेसजगसांमदो ॥ जांडिकयीपेर
॥१४॥ पदसीपांगा पसाडि ॥ तरपिरेपरबाग सघर ॥ दरनी [illegible] जि
चेपकरनालदे ॥१५॥ पदसीपांगावं जांडी ॥ पांगाव डांडी [illegible] लदे
तनअंदरि मुदपाई ॥ तांडी अंदरिसुधीरी ॥१६॥ जोगीसोजोजग
मे ॥ तुं वीरोडि वीर ॥ सोपीरिये सरीरमें ॥ तेअसादं जो पीर ॥१७॥
जोगी जगिघाले ॥ तिन्हां नराचीमनखां ॥ राचीर ताडियां जेरतर
हिंगां नसं ॥१८॥

सतोह्रतोसुदिमें जोगी जगावे मैं [illegible] रिवे उच [illegible] निन तिते [illegible]

ग [illegible] मि [illegible] नपेरे पेराकिही तथै [illegible] तीयां तोहिनूवे संदा तेवा के

टी मं ऊ कोलदे [illegible] ते हरिरां गामयाकरे तो [illegible] मारस म द न स द त्यो

तिरियांस्ही गा ह ही रहे न [illegible] दारे दि [illegible] सि द को [illegible]

[illegible] दि [illegible] तिनहीं उ नारि [illegible] पे [illegible] ह [illegible] था

[illegible] कागद कालन आगिरे मत [illegible] सो [illegible] गिरि [illegible] उ का [illegible]

या सिमद नो [illegible] कागद कालन आगुरे म वा चवे [illegible] ति [illegible] स

गा [illegible] आपिरे मै तो डां दाल थोई [illegible] तोल [illegible] पकियाही [illegible]

[illegible] मि [illegible] खेला [illegible] नथा मि मन म ग [illegible] हरी [illegible] गई मकरि [illegible]

रु ठ म हई जाति जा [illegible] पियां ना मिड न नकोठी जैवा [illegible] पिरिय

सदीन [illegible] ही मरम उ के हो [illegible] [illegible] के [illegible] काउसारी

बिचारा [illegible] ठ [illegible] नो कत्ता बाहरी निकलैकी आसादउोदठ पामे [illegible]

म गिरिय [illegible] उ [illegible] हरि माद बाहरि [illegible] नपधरा वेदक वे [illegible]

[illegible] प [illegible] बटोरि या [illegible] तारे करि मारि मडनां केवर मंकि [illegible]

[illegible] कामना निकर जोगा [illegible] मदे व [illegible] दीपु उस [illegible]

वीसउं नो तकू आ वेन्याहि धुराह्न चीसया [illegible] कउ विवी वा

कडीय न [illegible] कउ रा कडी पिरीयां पर कडी मिका मडिके [illegible]

रांयां [illegible] स न्ह उ जा न नकेयां न तीय न [illegible] आ [illegible] उ पनन पिरीय

आ दालीय [illegible] ग उम ह म र दीक ड सत रि [illegible] क [illegible] पानै सना [illegible] उ

[illegible] जमु किपिरी मिलेन [illegible] हेत ला [illegible] चिमा चि ते [illegible] पि [illegible]

[illegible] ला [illegible] उ [illegible] र वा [illegible] ही दधि पारि कां गा [illegible] पीरीयां आडी [illegible] हु स

कित सद उडे रावकी नाही पिरीयां पसगा उगीया आ वी तो नां [illegible]

आविगा [illegible] नन के चौरी म कि [illegible] रपा [illegible] पीवता [illegible]

[illegible] पंच टनि [illegible] तो उहा न विचाब सेर दस म [illegible] से [illegible]

[illegible] मताव जिन्होई नमापिरी [illegible] नाडी [illegible] हिवा [illegible]

घणो सलाई टारि कि त्तार [illegible] लेसो खूदी वूआगराई ॥१९॥ तिणो तेडाई

वले जे समुद मकि संगा ॥ री दस [illegible] ठी दिक जो फिरे न लघो सीपां ॥

॥२०॥ दांगो वेई विसरी ॥ माव मसा ता हि र ॥ मांघे सज ॥ गादि या ॥ ईद क

पेडे केरा ॥२०॥ जीयां कि फुडु भात म ॥ ईपरा जाडी नीवा ज ॥ चजांत्रा दव

ईवी त्रात्ताद दी सज ॥२१॥ पितांकि धोकेट रि [illegible] गा मातु ह दू जीदि

सीध दिम [illegible] रवाव ॥२२॥ का जीकधिम पत री ॥ माता कि त्ताई प

रू पत्ताणी दापा हसी ॥ म [illegible] कीदो के रू ॥२३॥ ममणाम करी नके ॥ मुला

टीसिदि नि पीधिक टदीति त्तको ॥ त्रहजार वूधुरदि ॥२४॥ दीदीपाणा

वथाण के ॥ जी नतु दा जी वतु ॥ बंदाधाणि कि न धुरो करो विडा नी तफि

॥२५॥ करे दीवित्ताकरे संदाधीयो विधंनि सोई पीयां न धुरे जामी

धांमी चलि ॥२६॥ ति तासुंच संसार रू सुजमाई सेंदोडी तोप चरिदी

वेदा तिर ॥ उंचे नीरा निकोई ॥२७॥ तोडेव जीरूम ॥ वांदि नसी वेत्र

गरेर सोई मा नीघूम ॥ जेत्तिपीत्तो वके त्तमम ॥२८॥ [illegible]

ज ॥ ऊदत्तपास सु पडै ॥ त्र गा [illegible] रंतप जा पुकारे पातसा वेडोम

परवा तु ॥ रत्ताडि मसम वे बिकधाणियां सतो दीतू जगु ॥ पीरि लिसारं

॥ मक्करी ॥ म धोपसो नगु ॥२॥ पिरीबिसा रंगा ॥ बिधरवा ॥ कबु ॥ रिकारे

नै कंच नसस्सिगवाईकारि वुके धूरिपवेन ॥३॥ सुफर मधे सओरी

त्र ता तार त्तबंदिन ॥ कूता ॥ जपू कत्तूचवे ॥ गुरुत्रगा त्ती कंनि ॥४॥ सूडी

वे बस्हाईदयां ॥ जेजग तोज गु ॥ त्रोर त त्रगो पिछियां ॥ मराल त्रगा

त्रग ॥५॥ हु त्रांव दा व जितूं ॥ मे ॥ वे ॥ मक धि ॥ पई मोडे कण कर

दा ॥ तूंषूंट मूसधि ॥६॥ जांवेदा जेगां ॥ मे नीपणार नाथि ती प्रासा

क ॥ तारिसां सीधां ॥ मिटी नते लित्त ॥७॥ सूनीटटी जबंबचवि सोसज

नकि त्तीगप ॥ जी तीवा त्तसरीर मे कितं छिन तएप ॥ ॥ पीडा सबेदुस

त्तीयां ॥ रहापीड नकाई ॥ जीवब जंदा जेपीयें ॥ जाणो दिक पदाई

॥८॥ वीयां नकू कारो क त्राप नकेंतू राई ॥ वाधि सबतु धीसाय

सा ॥

[illegible] कति जंद डी न [illegible] तुके

[illegible] सिसी केई [illegible] ११ [illegible] सतो [illegible] सांई तो मं [illegible] पंड

[illegible] सी तू [illegible] नाहि ११ [illegible] सतो मंडी रात मु

[illegible] जीत [illegible] १२ सतो मंडी [illegible]

[illegible] ताके [illegible]

[illegible] सती मं [illegible] ताके [illegible]

[illegible] ११ [illegible] सतो [illegible] १५ [illegible]

[illegible] सतो पास [illegible] प [illegible] पाल [illegible]

[illegible] तिरवा [illegible] पाणी [illegible] नवा [illegible]

[illegible] इ नो [illegible] दुरि [illegible] द्दो के

[illegible] सांई [illegible] रु [illegible] देवो हि या

[illegible] १७ [illegible] पाणी [illegible]

[illegible] नाम १८ [illegible] पाणी [illegible]

[illegible] ताजि [illegible] १९ [illegible] पाणी [illegible]

[illegible] वजे कपर [illegible] २० [illegible]

[illegible] पसाए [illegible] पहु [illegible] सचे म दीवा [illegible]

[illegible] जडो [illegible]

[illegible] सांई सचा म चा पियारा [illegible]

[illegible] २१ [illegible]

[illegible] सचे सांई म चा पियारा [illegible]

[illegible] २३ जे [illegible] दीये [illegible]

[illegible] दीवा न [illegible] २४ [illegible]

[illegible] सचे सांई [illegible] मसुरी [illegible]

[illegible] पंच [illegible] ता किये [illegible] पिया नये

[illegible] तिर [illegible] मसुरी [illegible]

[illegible] जग [illegible] तो [illegible]

[illegible] २६ [illegible] पासरि [illegible]

[illegible] जु [illegible]

[illegible] बोडिब [illegible]

[illegible] बूडणा नाहि तो २८ जे सांई [illegible]

॥श्रीपरमात्मनेनमः॥ प्रथममंगलाचरण॥ छप्पयछंद॥ ॥

प्रथम...

जिह...

बचक...

रिसुंद...

रिमां...

प्रणम...

ब्रह्म...

बंदन...

कौं॥...

समुद्र...

मनम...

पहिं...

गंजी...

धर्मध...

जई...

तसौं...

द्विं जा...

हीं॥...

जगतसा... कौज्ञा॥ वैयत्रासउदासरहत...

SIX

VBLSI 113 p1—

ज्ञानसमुद्र

1685 AD

॥ श्रीपरमात्मनेनमः॥ प्रथममंगलाचरण॥ छप्पयछंद॥ ॥
प्रथमबंदिपरब्रह्मपरमआनंदस्वरूपं॥ दुतियबंदिगुरुदेवदियै
जिहज्ञानअनूपं॥ त्रितियबंदिसबसंतजोरिकरतिनकेआगय॥ मन
बचकायप्रणामकरतजयचत्रमसबजागय॥ इहिंभांतिमंगलाचरणक
रिसुंदरग्रंथबषांनियें॥ तहंबिघ्ननकोऊउप्पजय॥ यहनिश्चयक
रिमांनियें॥ १॥ उदाहरण॥ दोहाछंद॥ ब्रह्मप्रणम्यप्रणम्यगुरु॥ पुनि
प्रणम्यसबसंत॥ करतमंगलाचारइम॥ नाशतबिघ्नअनंत॥ २॥ उहै
ब्रह्मगुरुसंतउह॥ वस्तुबिराजतयेक॥ बचनबिलासबिभागत्रय
बंदनभावबिबेक॥ ३॥ अथग्रंथबर्ननइच्छा॥ बरन्योचाहतग्रंथ
कौं॥ कहाबुद्धिममक्षुद्र॥ अतिअगाधमुनिकहततहैं॥ सुंदरज्ञान
समुद्र॥ ४॥ चौपईछंद॥ ज्ञानसमुद्रग्रंथअबभाषौं॥ बहुतभांति
मनमहिंअभिलाषौं॥ यथाशक्तिहौंबरनिसुनाऊं॥ जौसद्गुरु
पहिंआज्ञापाऊं॥ ५॥ अथग्रंथबर्नन॥ सोरठाछंद॥ हैयहुअति
गंभीर॥ उठतलहरिआनंदकी॥ मिष्टसुयाकोनीर॥ सकलपदा
र्थमध्यहैं॥ ६॥ इंदवछंद॥ जातिजितीसबछंदनिकीबहुसोप
भईइहिंसागरमाहीं॥ हैतिनमैमुक्ताफलअर्थलहैंउनकोंहि
तसौंअवगाहीं॥ सुंदरपैठिसकैनहिंजीवतदेडुबकीमरजीव
हिंजांहीं॥ जेनरजांनकहावतहैंअतिगर्बभरेतिनकीगमिनां
हीं॥ ७॥ अथशिष्यलक्षण॥ सवइयाछंद॥ जेगुरुभक्तबिरक्त
जगतसोंहैंजिनकेसंतनिकोभाव॥ बेयज्ञासउदासरहतहैं

गनतनकोऊरंकनराव॥ बादबिवादकरतनहिंकबहूंबस्तु
जांनिबेकौअतिचाव॥ सुंदरजिनकीमतिहैऐसीतेपैगहिंगेया
दरियाव॥ ८॥ छप्पयछंद॥ सुतकलत्रनिजदेहआपुकौंबंधन
जानत॥ छूटौंकौंनउपायइहैउरअंतरआनत॥ जन्ममरनकी
शंकरहैनिशदिनमनमांहीं॥ चवुरासीकेदुःखनहींकछुव
रनेजांहीं॥ इहिंभांतिरहैसोचतसदासंतनिकौंपूछतफिरै॥
कोहैऐसौसद्गुरुकहींजोमेरौकारयकरै॥ ९॥ अथगुरुदेव
कीउल्लेनता॥ चौपइयाछंद॥ गुरुदेवबिनानहिंमारगसरू
पगुरुबिनभक्तिनजानै॥ गुरुदेवबिनानहिंसंशयजागय॥ गु
रुबिनलहैनज्ञानै॥ गुरुदेवबिनानहिंकारयहोई॥ लोकवे
दयौंगावै॥ गुरुदेवबिनानहिंसदगतिकोई॥ गुरुगोविंद
बतावै॥ १०॥ त्रोटकछंद॥ गुरुदेवबिनानहिंजागपजगे॥ गु
रुदेवबिनानहिंप्रीतिलगै॥ गुरुदेवबिनानहिंभ्रमछूटै॥
गुरुदेवबिनानहिंमोक्षपदं॥ ११॥ मनहरछंद॥ गुरुकेप्रसा
दबुद्धिउत्तमदसाकौंग्रहैगुरुकेप्रसादभवदुःखबिस
राइये॥ गुरुकेप्रसादप्रेमप्रीतिहूअधिकबाढैगुरुकेप्र
सादरामनामगुनगाइये॥ गुरुकेप्रसादसबयोगकीयु
गतिजानैगुरुकेप्रसादशून्यमेंसमाधिलाइये॥ सुंदरक
तगुरुदेवजौकृपालहौंहिंतिनकेप्रसादतत्वज्ञानपुनिपा

इये॥१३॥दोहाछंद॥गुरुकेसरनैआइहै॥तबदीपजैज्ञान॥
तिमिरकहौकैसैंरहै॥प्रगटहोइजबज्ञान॥अथगुरुलक्षन
॥रोडाछंद॥चित्तब्रह्मलयलीननित्यशीतलहिसुहृदय॥क्रोध
रहितसबसाधिसाधुपदनाहिंनिर्दय॥अहंकारनहिंलेश
महानरसबनिसुखदिज्जय॥शिष्यपरष्पबिचारिजगतमहिं
सोगुरुकिज्जय॥१४॥छप्पयछंद॥सदाप्रसन्नसुभावप्रगटस
बेंपरिराजय॥तसज्ञानबिज्ञानअचलकूटस्थबिराजय॥सु
खनिधानसर्बज्ञमानअपमाननजानै॥सारासारबिबेकस
कलमिथ्याभ्रमभानै॥पुनिछिद्यंतेहृदिग्रंथिकौं॥छिद्यंतेस
बसंशयं॥कहिसुंदरसोसद्गुरुसही॥चिदानंदघनचिन्म
यं॥१५॥पमंगमछंद॥शब्दब्रह्मपरब्रह्मभलीबिधिजानई
पंचतत्वगुनतीनमृषाकरिमानई॥बुद्धिमंतसबसंतकहैंगुरु
सोइरे॥औरगैरशिषजाइभ्रमेजिनिकोइरे॥१६॥नंदाछंद॥
ब्रह्मस्थीभूतअवस्थाजामहिंहोइ॥सुंदरसोईसद्गुरुजानेको
इ॥१७॥सोरठाछंद॥ऐसेगुरुपहिंआइ॥प्रणकरैकेरजोरि
कैं॥शिष्यमुक्तिह्वैजाइ॥संशयकोऊनारहै॥१८॥अथगुरु
कीप्राप्ति॥चौपईछंद॥खोजतखोजतसद्गुरुपाया॥भूरिभागउप
जाग्यौशिषआया॥देषतदृष्टिजग्यौआनंदा॥यहतौहमपा
रीगोबिंदा॥१९॥दोहाछंद॥गुरुकौदरसनदेषतें॥शिषपा

यौसंतोष॥ कारयमेरौअबजयौ॥ मनमदिंमान्यौमोष॥२०॥अ
थशिष्यकीप्रार्थना॥ सोरगछंद॥ सीसनाइकरजोरि॥ शिष्यसु
प्रार्थनाकरी॥ देषचुलीजयछोरि॥ अभयदानगुरुदिजिये
॥२१॥ अर्धभुजंगीछंद॥ अहोदेवस्वामी॥ अहंअज्ञकामी॥ कृपा
मोहिकीजे॥ अभैदानदीजे॥१॥ बडेभाग्यमेरे॥ लहेअंघ्रितेरे
तुम्हेदेषिजीजे॥ अभेदानदीजे॥२॥ प्रभुहौंअनाथा॥ गहौमोर
हाथा॥ दयाक्यौंनकीजे॥ अभैदानदीजे॥३॥ दुखीदीनप्रा
णी॥ कहोब्रह्मबाणी॥ हदोप्रेमभीजे॥ अभेदानदीजे॥४॥ यती
जैनदेषे॥ सबैभेषपेषे॥ तुम्हेचित्तधीजे॥ अभेदानदीजे॥५॥ फि
र्योदेशदेशा॥ कियेदूरिकेशा॥ नहीपौंपतीजे॥ अभैदानदी
जे॥६॥ जप्योश्रीप्रुसारे॥ नयोसोचधारे॥ वृथादेहछीजे॥ अ
भैदानदीजे॥७॥ कहौमोउअैसी॥ रहैबुद्धिवैसी॥ सुधानि
त्यपीजे॥ अभैदानदीजे॥८॥ इतिप्रार्थनाष्टक॥ अथगुरुकीप्र
सन्नता॥ सोरगछंद॥ मुदितभयेगुरुदेव॥ देषिदीनताशिष्य
की॥ सर्बबताऊंभेव॥ जोईजोतूंपूछिहै॥ अथशिष्यकीप्र
श्न॥ पद्धडीछंद॥ करजोरिभयशिषकरिप्रणाम॥ तबप्र
श्नकरीमनधरिबिराम॥ हौंकौनकौनयहजगतआहि॥
पुनिजन्ममरणप्रभुकहहुकाहि॥२१॥ श्रीगुरुरुवाच॥
उत्तरबोधकछंद॥ हैचिदानंदघनब्रह्मतूंसोई॥ देहसंयो

गजीवत्व भ्रम होई॥ जगतहू सकल यह भ्रम छतौ जानौ॥ जनम भ्र
रू मरण सब स्वप्न करि मानौ॥ २२॥ शिष्य उवाच॥ गीतकछंद॥ जो चि
दानंद स्वरूप स्वामी ताहि भ्रम कहि क्यौं भयौ॥ तिहिं देह कें संयोग
कै जीवत्व मानि रक्यौं लयौ॥ यह भ्रम छतौ संसार कैसें जो प्रतक्ष
प्रमानियें॥ पुनि जन्म मरण प्रवाह कब कौ॥ स्वप्न करि क्यौं जानि
यें॥ २३॥ श्रीगुरुरुवाच॥ दोहाछंद॥ भ्रम ही कौं भ्रम उपज्यौ॥ चि
दानंद रस येक॥ मृगजल प्रत्यक्ष देषियें॥ तैसें जगत विवेक॥
२४॥ चौपईछंद॥ निद्रा महिं सूतौ है जौलौं॥ जन्म मरण कौ अंत
न तौलौं॥ जागि परें तें स्वप्न समाना॥ तब मिटि जाइ सकल अ
ज्ञाना॥ २५॥ ३॥ शिष्य उवाच॥ सोरठाछंद॥ स्वामिन यह संदेह॥
जागै सोवै कौन सो॥ येतौ जड मन देह॥ भ्रम कौं भ्रम कैसें भयौ॥
२६॥ श्रीगुरुरुवाच॥ कुंडलियाछंद॥ शिष्य कहांलौं पूछि है मै
तौ उत्तर दीन॥ तब लग चित्त न आइ है॥ जब लग हृदय मलीन॥
जब लग हृदय मलीन॥ यथार्थ कैसें जानै॥ भ्रमै त्रिगुनमय बु
द्धि आपु नाहिं न पहिचानै॥ कहिबौ सुनिबौ करै ज्ञान उपजै न ज
हांलौं॥ मै तौ उत्तर दियौ शिष्य पूछि है कहांलौं॥ २७॥ इति श्री
सुंदरदासेन विरचितः ज्ञानसमुद्रे गुरु शिष्य लक्षण निरूपणं नाम
प्रथमोल्लासः॥ १॥ शिष्य उवाच॥ दोहाछंद॥ स्वामी हृदय म

लीनमम॥गुरुकवनबिधिहोइ॥सोईकहौउपाइअब॥संशयरहै
नकोइ॥१॥श्रीगुरुरुवाच॥चौपईछंद॥सुनहिंशिष्यएतीनिउ
पाई॥भक्तियोगहठयोगकराई॥पुनिसांख्यसुयोगहिमन
लावै॥तबतूंगुरुस्वरूपहिपावै॥२॥शिष्यउवाच॥पद्धरीछंद
अबभक्तिकहौगुरुकेप्रकार॥हठयोगअंगपाऊंबिचार॥पुनिसां
ख्यसुयोगबतावनाथ॥भवसागरबूडतगहहुहाथ॥३॥श्री
गुरुरुवाच॥सवइयाछंद॥प्रथमहिंनवधाभक्तिकहतहौंन
वप्रकारहैंताकेभेद॥दशमीप्रेमलक्षणाकहिये॥सोपावैजो
कैनिर्बेद॥पराभक्तिहैताकेआगेंसेवकसेव्यनहोइबिछेद
उत्तममध्यकनिष्टतीनबिधिसुंदरइनितेंमिटिहैंभेद॥४॥शि
ष्यउवाच॥छप्पयछंद॥नवधाभक्तिबषांनिकहौगुरुभिन्नभि
न्नकरि॥प्रेमलक्षणाकौंनसुनावहुसीसहाथधरि॥पराभ
क्तिकौभेदकहौपुनिकौंनप्रकारा॥कोउत्तमकोमध्यकवनक
निष्टनिर्द्धार॥यहदयासिंधुमोसौंकहहु॥तुमसमाननहिंको
इहै॥जबकृपाकटाक्षहिदेखिहौ॥तबममकारयहोइहै॥
॥५॥श्रीगुरुरुवाच॥चौपईछंद॥सुनिशिषनवधाभक्तिबि
धानं॥श्रवणकीर्तनसमरणजांनं॥पादसेवनअर्चनबंदन॥
दासभावसख्यत्वसमर्प्पन॥६॥सोरठाछंद॥इनिनवअंग

निजांनि॥ सहित अनुक्रम कीजियै॥ सबही कौं सुखदांनि॥ भक्तिकनि
ष्टा यह कही॥ ७॥ शिष्य उवाच॥ मालती छंद॥ श्रवन प्रभु कौं न सो
कहियै॥ कीरतन कौं न विधि लहियै॥ जु समरन कौं न कहि दीजै
चरन सेवा सु क्यों कीजै॥ ८॥ अर्चना कौं न विधि होई॥ बंदना कहु
है गुरु सोई॥ दास्य सख्य तत्व पहिचानो॥ निवेदन आतमा जानो॥
॥ ९॥ सोरठा छंद॥ येक येक कौ भेव॥ मोहि अनुक्रम सौं कहो तु
म कृपाल गुरुदेव॥ पूछत बिलजन मांनियै॥ १०॥ श्रीगुरु उवा
च॥ चंपक छंद॥ शिष्य तो इहि कहौं श्रुति बांनी॥ सब संतनि साखि ब
षांनी॥ द्वै रूप ब्रह्म के जानै॥ निर्गुन अरु सगुन पिछानै॥ ११॥ निर्गु
न निज रूप नियारा॥ पुनि सगुन संत अवतारा॥ निर्गुण की भ
क्ति सु मन सौं॥ संतनि की मन अरु तन सौं॥ १२॥ येकाग्र हि चि
त्त जु राषै॥ हरिगुन सु निसुनि रस चाषै॥ पुनि सुनै संत के बैंना
यह श्रवण भक्ति मन चैंना॥ १३॥ इति श्रवन॥ हरिगुन रसना मु
ख गावै॥ अति सैं करि प्रेम बढावै॥ यह भक्ति कीरतन कहियै॥ पु
नि गुरु प्रसाद तें लहियै॥ १४॥ इति कीरतन॥ अब समरन दोइ
प्रकारा॥ इक रसना नाम उचारा॥ इक हृदय नाम ठहरावै॥ यह
समरन भक्ति कहावै॥ १५॥ इति समरन॥ नित चरन कमल म
हि लोटै॥ मनसा करि पाव पलोटै॥ यह भक्ति चरन की सेवा॥ सं

मुक्ताव तहै गुरु देवा ॥ १६ ॥ इति पाद सेवनं ॥ चामरछंद ॥ अब अ
र्चना कौ भेद सुनि विशेष देउं तो दिखलाइ ॥ आरोपि कैं तहं भाव अ
पनौं ॥ सेइ प्रेम नलाइ ॥ रचि भाव कौ मंदिर अनूपम ॥ अकल मू
रति माहिं ॥ पुनि भाव सिंघासन बिराजै ॥ भाव बिनु कछु नाहिं
॥ १७ ॥ निज भाव की तहां करै पूजा ॥ बै बिसन मुख दास ॥ निज
भाव की सब सौं जआनै ॥ नित्य स्वामी पास ॥ पुनि भाव ही कौ
कलश आन रि धरि ॥ भाव नीर न्हवाइ ॥ करि भाव ही के बसन
बहु बिधि अंग अंग बनाइ ॥ २ ॥ तहं भाव चंदन भाव केशरि
भाव करि घसि लेऊ ॥ पुनि भाव ही करि चरचि स्वामी तिलक
मस्तक देऊ ॥ लै भाव ही के पुष्प उत्तम गुहै माल अनूप ॥ पहि
राइ प्रभु कौं निरखि नख शिष ॥ भाव खेवै धूप ॥ ३ ॥ तहं भाव ही
लै धरै भोजन भाव लावै भोग ॥ पुनि भाव ही करि कैं समर्प्पै स
कल प्रभु कैं योग ॥ तहं भाव ही कौ जोइ दीपक ॥ भाव घृत क
रि सींचि ॥ तहां भाव ही की करै प्याली ॥ धरै ता के बीचि ॥ ४ ॥ त
हां भाव ही की घंट झालरि ॥ संख ताल मृदंग ॥ तहं भाव ही के बा
दनाना ॥ रहै अति सै रंग ॥ यह भाव ही की आरती करि करै बहु
त प्रनाम ॥ तब स्तुति बहु बिधि उच्चरै धुनि सहित लै लै नाम ॥
५ ॥ २१ ॥ अथ स्तुति ॥ मोतीदाम छंद ॥ अहो हरि देव न जांनत

सेद्र ॥ अहो हरि राइ परौं तव पाइ ॥ सुनौ यह गाथ गहौ मम हाथ ॥ अ
नाथ अनाथ अनाथ अनाथ ॥ १ ॥ अहो प्रभु नित्य ॥ अहो प्रभु सत्य
अहो अविनाश ॥ अहो अविगत्य ॥ अहो प्रभु नित्रक सै जु प्रकत्य
निहत्य निहत्य निहत्य निहत्य ॥ २ ॥ अहो प्रभु पावन नाम तुम्हार
न जैं तिनके सब जांहि बिकार ॥ करी तुम संतनि की जु सहाइ ॥
अहो हरि हो हरि हो हरि राइ ॥ ३ ॥ अहो प्रभु हौ सब जांन सयांन
दियौ तुम जर्ज थकैं पय पांन ॥ सु तौ अब कौंन करै प्रतिपाल ॥ अ
हो हरि हो हरि हो हरि लाल ॥ ४ ॥ न जैं प्रभु ब्रह्म पुरिंद्र महेस ॥
न जैं सनकादिक नारद सेस ॥ न जैं पुनि और अनेक हि साध ॥ अ
गाध अगाध अगाध अगाध ॥ ५ ॥ अहो सुखधाम ॥ कहैं मुनि नाम
अहो सुखदैंन ॥ कहैं मुनि बैंन ॥ अहो सुखरूप कहैं मुनि रूप ॥ अ
रूप अरूप अरूप अरूप ॥ ६ ॥ अहो जगदादि अहो जगदंत ॥ अ
हो जग मध्य कहै सब संत ॥ अहो जगजीव अहो जगतंत ॥ अनं
त अनंत अनंत अनंत ॥ ७ ॥ अहो प्रभु बोलि सकै कहि कौंन ॥ रहे
सिध साध कहूं मुखमौंन ॥ गिरा मन बुद्धि न होइ बिचार ॥ अपा
र अपार अपार अपार ॥ ८ ॥ २९ ॥ इति स्तुत्यष्टक ॥ दोहा छंद ॥ बहु
त प्रसंसा करि कहै ॥ हौं प्रभु अति अज्ञान ॥ पूजा बिधि [illegible]न त
नहीं ॥ सरन राखि भगवांन ॥ ३० ॥ इति पूजा ॥ अथ बंदन [illegible]ली
लीछंद ॥ बंदन दोइ प्रकार कहौं शिष्य संन लियं [illegible]मानक

रैतनसौंतनदंडदियं॥ त्यौंमनसौंतनमध्यप्रभुकरपाइपरै॥ या
बिधिदोइप्रकारसुबंदनभक्तिकरै॥ ३१॥ अथदास्यत्व॥ हंसाल
छंद॥ नित्यनयसौंरहै॥ हस्तजोरेंकहै॥ कहाप्रभुमोहिआज्ञा
सुहोई॥ पलकपतिब्रतापतिबचनखंडैनहीं॥ भक्तिदास्यत्व
शिषजानिसोई॥ ३२॥ इतिदास्यत्व॥ अथशाख्यत्व॥ दुमिलाछं
द॥ सुनिशिष्यशाषापनतोहिकहौंहरिआत्मकैनित्तसंगरहै॥ प
लुछाडतनाहिंसमीपसदाजितहीजितकौंयहजीवबहै॥ अब
तूंफिरिकैंहरिसौंहितराषहिहोइशाषादृढजावगहै॥ इमसुं
दरमित्रनमित्रतजैयहभक्तिशाषापनबेदकहै॥ ३३॥ इतिशाष्य
त्व॥ अथआत्मनिबेदन॥ कुंडलीछंद॥ प्रथमसमर्पनमनकरै॥
द्वितियसमर्पनदेह॥ तृतीयसमर्पनधनकरै॥ चतुःसमर्पनगेह
गेहदाराधनं॥ दासदासीजनं॥ बाजहाथीगनं॥ सर्बदैयौं
भनं॥ औरजेमेमनं॥ हैप्रभुतेतनं॥ शिष्यबानीसुनं॥ आत्मा
अर्पनं॥ ३४॥ दोहाछंद॥ नवधाभक्तिसुयहकही॥ भिन्नभिन्नसं
मुझाइ॥ याकौनामकनिष्टहै॥ शिष्यसुनहिंचितलाइ॥ ३५॥
इतिनवधाभक्ति॥ शिष्यउबाच॥ रासाछंद॥ हेप्रभुमोहिकहीतु
मनौबिधिभक्तिसह॥ केरिकहौसंमुझाइसुजानिकनिष्टय
ह॥ मध्यउभक्तिसुनाइकृपाकरिकौंनअब॥ जानतहौगु
रूदेवजुऔसरहोइकब॥ ३६॥ श्रीगुरूरुवाच॥ सोरठाछंद

शिष्य सुनाऊं तोहि ॥ प्रेमलक्षण भक्ति कौं ॥ सावधान अब होहि ॥ जो
तेरैं सिर भाग्य है ॥ ३७ ॥ इंदव छंद ॥ प्रेम लग्यो परमेश्वर सौं तब भूलि ग
यौ सबही घरबारा ॥ ज्यौं उनमत्त फिरै जितहीं तित नैकु रही न शरी
र संभारा ॥ स्वास उस्वास उठैं सब रोम चलै दृग नीर अखंडित धारा ॥
सुंदर कौंन करै नवधा विधि छाकि पर्‍यो रस पी मतवारा ॥ ३८ ॥ नराच
छंद ॥ न लाज कांनि लोक की न वेद कौ कह्यौ करै ॥ न शंक भूत प्रेत
की न देव यक्ष तें डरै ॥ सुनै न कांन और की द्रसै न और इक्षणा ॥ कहै
न मुक्ख और बात भक्ति प्रेम लक्षणा ॥ ३९ ॥ रंगिका छंद ॥ निश दिन
हरि सौं चित्त आसक्ति सदा रह्यो सोइ रहिये ॥ कोउ न जांनि सकै यह
भक्ति प्रेम लक्षण कहिये ॥ ४० ॥ विज्जुमाला छंद ॥ प्रेमाधीनो छा
क्यो डोलै ॥ क्यौंका क्यौंही बांनी बोलै ॥ जैसैं गोपी भूली देहा ॥ ताकौं चा
है जासौं नेहा ॥ ४१ ॥ छप्पय छंद ॥ कबहूं कै हसि उठै नृत्य करि रो
वैन लागय ॥ कबहूं गदगद कंठ शब्द निकसै नहिं आगय ॥ कबहूं
हृदय उमंगि बहुत ऊंचै सुर गावै ॥ कबहूं कै मुख मौंन मगन ऐसैं
रहि जावै ॥ चित्त वृत्ति हरि सौं लगी सावधान कैसैं रहै ॥ यह प्रेमल
क्षण भक्ति है शिष्य सुनहि सद्गुरु कहै ॥ ४२ ॥ मनहर छंद ॥ नीर वि
नु मीन दुखी क्षीर बिनु शिशु जैसैं पीर जाकैं औषध बिनु कैसैं
रह्यौ जात है ॥ चातक ज्यौं स्वांति बुंद चंद कौं चकोर जैसैं चंदन की चा
हि करि सर्प अकुलात है ॥ निर्धन ज्यौं धन चाहै कांमिनी कौं कंत चा

हि ऐसी जाकैं चाहि ताकौं कछून सुहात है ॥ प्रेम कौ प्रभाव ऐसो प्रेमत
हां नेमकै सो सुंदर कहत यह प्रेमही की बात है ॥ ५३॥ चौपइया छंद
॥ यह प्रेमभक्ति जाकैं घट होई ताहि कछून सुहावै ॥ पुनि भूष तृषा
न हिं लागै ताकौं निद्रा दिन नींद न आवै ॥ मुख ऊपर पीरी स्वासा
सीरी नैन झंनी झरलायो ॥ ये प्रगट चिन्ह दीसत हैं ताके प्रेमन
डुरै डरायो ॥ ५४॥ दोहा छंद ॥ प्रेमभक्ति यह मैं कही जानै बिरला
कोइ ॥ हृदय कलुषता क्यौं रहै ॥ जा घट ऐसी होइ ॥ ५५॥ शिष्य उ
वाच ॥ चौपई छंद ॥ स्वांमी प्रेमभक्ति यह गाई ॥ सो तौ तुम मध्य स्थ सु
नाई ॥ उत्तम भक्ति परा प्रभु कैसी ॥ करहु अनुग्रह कहियै तैसी ॥
५६॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ दोहा छंद ॥ शिष्य तेरै अघ बहे ॥ सुनिबेकी
अतिप्यास ॥ पराभक्ति तोसौं कहौं ॥ जातैं होइ प्रकाश ॥ ५७॥ गीत
क छंद ॥ विक्षेप कबहुं न होइ हरि सौं निकट वर्त्ती नित्य हीं ॥ तहं
सदा सनमुख रहै आगें हाथ जोरें भृत्य हीं ॥ पल एक कबहूं न
होइ अंतर टगटगी लागी रहै ॥ यह परा भक्ति प्रकाश परिचय
शिष्य सुनि सद्गुरु कहै ॥ ५८॥ इंदव छंद ॥ सेवक सेव्य मिल्यौ रस
पीवत भिन्न नहीं अरु भिन्न सदा हीं ॥ ज्यौं जल बीचि धस्यौ जल पिं
डसु पिंड रु नीर जुदे कछु नांहीं ॥ ज्यौं दृग मैं पुतरी दृग येक नहीं
कछु भिन्न सुभिन्न दिषां हीं ॥ सुंदर सेवक भाव सदा यह भक्ति प
रापर मातम मांहीं ॥ ५९॥ छप्पय छंद ॥ श्रवन विना धुनि सुनय नैन

बिनरूपनिहारय॥ रसनबिना उच्चरय प्रशंसा॥ बकुबिस्तारय॥ नत्यच
रनबिनुकरय हस्तबिन ताल बजावै॥ अंगबिना मिलि संग बहु
तआनंद बढावै॥ बिनसीसनवैतहं सेव्यकौं सेवकनावलियेरहै
मिलिपरमात्मसौं आतमा परा भक्तिसुंदर कहै॥५०॥ चंद्राणा छंद
॥ सेव्यकौं जाइकैं दासयौं ऐसें मिलै॥ येकसो होइ पैं येकफैना निलै॥
आपनौं भावदास त्वछाडैनहीं॥ सापराभक्ति है नाउंपपावै कहीं॥
॥५१॥ हरंसपाणा छंद॥ मिलैयेक संगा॥ नहीं भिन्न अंगा॥ करै यौं
बिलासा॥ धरैभाव दासा॥५२॥ चौपई छंद॥ ज्यौं मृगजल स्याधूपमं
झारी॥ येकमेक अरुदीसतन्यारी॥ त्यौं हीं स्वांमीसेवकयेका॥ सुख
बिलसै यह भिन्न बिबेका॥५३॥ त्रोटक छंद॥ हरिमैं हरिदास बिल
सकरै हरिसौं कबहूंन बिछोहपरै॥ हरि अरु यह त्यौं हरिदास सदा
रसपीवनकौं यह भाव जुदा॥५४॥ मनहर छंद॥ तेजोमय स्वांमी
तहं सेवक रूप तेजोमय तेजोमय चरनकौं तेज सिरनावई॥ तेजो
मय सब अंग तेजो मैं मुखारबिंद तेजोमय नैननि निरषि तेजना
वई॥ तेजोमय ब्रह्मकी प्रशंसा करै तेज मुख तेजहीकी रसना
गुनानबाद गावई॥ तेजोमय सुंदर स्वभाव पुनि तेजोमय ते
जोमय भक्तिकौं तेजोमय पावई॥५५॥ दोहा छंद॥ त्रिबिधिभ
क्ति लक्षणकहे॥ उत्तम मध्यक निष्ट॥ सुनहिं शिष्य सिद्धांत यह
उत्तम भक्ति गरिष्ट॥५६॥ इतिश्री सुंदरदासेन बिरचितः ज्ञान

समुद्रे उत्तमा मध्यमा कनिष्टा लक्षि योगसिद्धांते निरूपणं नाम द्वि
तीयो उल्लास ॥२॥ शिष्य उवाच ॥ चोपई छंद ॥ हे प्रभु नवधा कही क
निष्टा ॥ प्रेमलछनां मध्य सपष्टा ॥ परा ना कै उत्तमा बषांनी ॥ ये ती
नौ मैं नीकैं जांनी ॥१॥ अब प्रभु योगसिद्धांत सुनावऊं ॥ ताके अंग
मोहि समुझावऊं ॥ तुम सर्बज्ञ जगतगुरु स्वांमी ॥ कहहु कृपा क
रि अंतर्यामी ॥२॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ दोहा छंद ॥ तैं शिष्य पूछ्यौ चा
हि करि ॥ योगसिद्धांत प्रसंग ॥ तोहि सुनाऊं हेत सौं ॥ अष्ट योग
के अंग ॥३॥ तिनके अंतर्भूत हैं ॥ मुद्रा बंध समस्त ॥ नाडी चक्र न
ली सब ॥ आवहि तेरैं हस्त ॥४॥ छप्पय छंद ॥ प्रथम अंग यम क
हौं हंस सौं नियम बताऊं ॥ त्रितीय सु आसन भेद सु तौ सब तोहि
सुनाऊं ॥ चतुर्थ प्राणायाम पंचमं प्रत्याहारं ॥ षष्ट सु सुनि धार
णा ध्यान सप्तम बिस्तारं ॥ पुनि अष्टम अंग समाधि हैं ते नि
त्र समुझाइ हौं ॥ अब सावधान ह्वै शिष्य सुनि ते सब तोहि बता
इ हौं ॥५॥ दोहा छंद ॥ दश प्रकार के यम कहौं ॥ दश प्रकार के नि
म ॥ उत्तम अंग पहिलै सधहिं ॥ तब पीछे ह्वै छेम ॥६॥ प्रथम नीव
दृढ कीजियै ॥ तब ऊपर बिस्तार ॥ महला इत्ति जु डिगै नहीं ॥
त्यौं यम नियम बिचार ॥७॥ अथ यम नियमाः ॥ छप्पय छंद ॥
प्रथम अहिंसा १ सत्य २ हि जानि स्वप्न सु त्यागै ३ ब्रह्मचर्य दृ
ढ ग्रहै ४ छमा ५ धृति ६ सौं अनुरागै ॥ दया बडौ गुन होइ ७ आ

ईश्वर ह्रदय सु आनै ८ मिताहार पुनि करै ९ शौचनी की विधि
जानै १० ये दश प्रकार के यम कहे ॥ हठप्रदीपिका ग्रंथ माहिं ॥
सो पहिलै हीं इनकौं ग्रहै। चलत योग के पंथ माहिं ॥ ८ ॥ अथ य
मकौ निर्णय ॥ प्रथम अहिंसा कौ लक्षण ॥ दोहा छंद ॥ मन करि
दोषन कीजिये ॥ बचन न लावै कर्म ॥ घात न करिये देह सौं ॥ इहै अ
हिंसा धर्म ॥ ९ ॥ अथ सत्य कौ लक्षण ॥ सोरठा छंद ॥ सत्य सु दो
इ प्रकार ॥ येक सत्य जो बोलिये ॥ मिथ्या सब संसार ॥ दूसर स
त्य सु ब्रह्म है ॥ १० ॥ अथ अस्तेय कौ लक्षण ॥ चौपई छंद ॥ सुनि
ये शिष्य अब हिं अस्तेयं ॥ चोरी द्वै प्रकार की हेयं ॥ तनु की चोरी सब
हिं बषानै ॥ मन की चोरी मन ही जानै ॥ ११ ॥ अथ ब्रह्मचर्य कौ लक्ष
ण ॥ पमंगम छंद ॥ ब्रह्मचर्य इहि भांति नली विधि पालिये ॥ काम
अष्ट प्रकार सही करि टालिये ॥ बांधि काछ दृढ बीर जती नहिं
होइ रे ॥ और बात अब नाहिं जितेंद्रिय कोइ रे ॥ १२ ॥ अथ अष्ट प्र
कार मैथुन कौ लक्षण ॥ दोहा छंद ॥ नारी समरन श्रवन पुनि ॥
दृष्टि जाषणं होइ ॥ गुह्य बार्त्ता हास्य रति ॥ बजरि स्पर्श ये कोइ
॥ १३ ॥ सोरठा छंद ॥ शिष्य सु नहिं यह भेद ॥ मैथुन अष्ट प्रकार त
जि ॥ कहैं मुनीश्वर बेद ॥ ब्रह्मचर्य तब जांनिये ॥ १४ ॥ क्षमा
कौ लक्षण ॥ मालती छंद ॥ क्षमा अब सुनहिं शिष्य मो सौं ॥ स
हन ता कहौं सब तो सौं ॥ दुष्ट दुख दें हिं जो नारी ॥ उसह मुख

बचन पुनि जारी ॥१५॥ कदे नहिं छोभ कौं पावै ॥ उदधि महिं अग्नि
बुझि जावै ॥ बकुरि तन त्रास दे कोउ । छमा करि सहै पुनि सोउ
॥१६॥ अथ धृति कौ लछण ॥ इंद्रव छंद ॥ धीरज धारि रहै अति अं
तर जौ दुख देह हि आइ परै जू ॥ बैठत ऊठत बोलत चालत धी
रज सौं धर पाव धरै जू ॥ जागत सोवत जीमत पीवत धीरज
ही धरि योग करै जू ॥ देव दयंत हिं भूत हि प्रेत हि काल हु सौं
कबहूं न डरै जू ॥१७॥ अथ दया कौ लछण ॥ त्रोटक छंद ॥ सब
जीवनि कै हित की जु कहै ॥ मन बाचक काय दया लु रहै ॥ सुख
दायक हू समता वलियें ॥ शिष जां निदया निर बैर हियें ॥
१८॥ अथ आर्जव कौ लछण ॥ चौपईया छंद ॥ यह कोमल हृद
य रहै निशि बासर बोलै कोमल बांनी ॥ पुनि कोमल दृष्टि निर
रै सबकौं कोमलता सुखदांनी ॥ ज्यौं कोमल भूमि करैनी
की बिधि बीज बृछ फल आवै ॥ त्यौं इह है आर्जव लछण सुनि
शिष योग सिद्धि कौं पावै ॥१९॥ अथ मिताहार कौ लछण ॥
पद्धडी छंद ॥ जो सात्विक अन्न सु करै भछ ॥ अति मधुर सचिक्कण
निरविष अछ ॥ तजि भाग चतुर्थ य ग्रहै सार ॥ सुनि शिष्य कह्यौ
यह मिताहार ॥२०॥ अथ शौच कौ लछण ॥ चर्पट छंद ॥ बा
साभ्यंतर मज्जन करियें । मृतिका जल करि बपु मल हरियें ॥
रागादिक त्यागें हृदि शुद्धं ॥ शौच उभय बिधि जानि प्रबुद्धं ॥२१

दोहाछंद॥ दशप्रकारयेयमकहे॥ प्रथमयोगकौअंग॥ दशप्रकारअ
वनियमसुनि॥ जिन्नहिंजिन्नप्रसंग॥ २२॥ अथनियमा॥ छप्पयछंद॥
तपसंतोषहियहै बुद्धिआस्तिक्यसुआंनय॥ दांनसंमुझिकरिदेइ॥
मानसीपूजागनय॥ बचनसिद्धांतसुसुनयलाज मतिदृढकरि
राखय॥ जापकरयमुखमौंनतहांलग बचननभाषय॥ पुनिहोम
करैइहिंबिधितहां जैसीबिधिसगुरुकहै॥ येदशप्रकारकेनियम
हैंजोगपबिनाकैसैंलहै॥ २३॥ प्रथमतपकौलक्षण॥ पायकाछंद॥
शीतस्पर्शरूपंसजलं॥ त्यौंरसगंधनाहीजजलं॥ इंद्रियस्वादनै
सैंहरणं॥ सोतपजानकूंनिसंमरणं॥ २४॥ अथसंतोषकौलक्षण॥
हंसालछंद॥ देहकौप्रारब्धआइआपैरहैकल्पनाछाडिनिश्चिंत
होई॥ पुनियप्यालाभकौंबेदमुनिकहतहैंपरमसंतोषशिषजांनि
सोई॥ २५॥ अथआस्तिक्यकौलक्षण॥ सवईयाछंद॥ शास्त्रबेदपु
रानकहतहैंशब्दब्रह्मकौनिश्चयधारि॥ पुनिगुरुसंतसुनावतसोई
बारबारशिषताहिबिचारि॥ होइकिनहींशोचमतिआंनहिंअप्रत
तिहृदयेतेंटारि॥ करिबिस्वासप्रतीतिआंनिउरयहआस्तिक्यबुद्धि
निरधारि॥ २६॥ अथदानकौलक्षण॥ कुंडलियाछंद॥ दांनकहत
हैंजनयविधिसुनिशिषकरहिंप्रवेश॥ येकदांनकरदीजिये॥ येक
दांनउपदेश॥ येकदांनउपदेशसुतौपरमारथहोई॥ दूसरजल
अरुअन्नबसनकरिपोषैकोई॥ पात्रकुपात्रबिशेषजलौजुनिप

जपध्यानं। सुंदरदेखिविचारिकैं जपविधि कहियेदानं॥२७॥ अथपूजा
कौलक्षण॥त्रिभंगीछंद॥ तौस्वांमीसंगा देवअभंगा निर्मलअंगा
सेवैजू॥ करिन्हावणअनूपं पातीपुष्पं गंधधूपंखेवैजू॥ नहिंकोईआ
साकाटैपासा इहिंविधिदासानिःकामं। शिवअैसैंजानप निश्चय
आनपपूजागानपदिनजांमं॥२८॥ अथसिद्धांतश्रवणकौल
क्षण॥कुंडलियाछंद॥ बांनीबहुतप्रकारहैता कौनांहिनअंत
जोईअपनेकांमकी सोईसुनपसिद्धंत॥ सोईसुनपसिद्धंत सं
तसबभाषतवोई। चित्तआंनिकैंगैरसुनपनितप्रतिजेकोई॥
यथाहंसपयपिवैरहैज्यौंकौत्यौंपांनी॥ अैसैंलेहुबिचारिशि
ष्यबहुबिधिहैबानी॥२९॥ अथलज्जाकौलक्षण॥चामरछंद॥ ल
ज्जाकरैगुरुसंतजनकी तौसरैसबकाज॥ तनमनदुलावैनाहिं
अपनौकरैलोकहुलाज॥ लज्जाकरैकुलकुटंबकीलंछण
लगावैनाहिं॥ इहिंलाजतैंसबकाजहोईलाजगहिमनमा
हिं॥३०॥ अथमतिकौलक्षण॥सवईयाछंद॥ नानासुखसंसा
रजानितजेतिनहिंदेखिलोलपनहिंहोइ॥ स्वर्गादिककीकर
पनइछाइहामूत्रत्यागैसुखदोइ॥ पूजामानबडाईआदर
निंदाकरैआइकैंकोइ॥ याप्रकारमतिनिश्चलजाकीसुंदरदृ
ढमतिकहियेसोइ॥३१॥ अथजापकौलक्षण॥पमंगमछंद॥
जापनिसब्रतधारिकैमुखमौंनसौं॥ येकदोइघटिकाजुग

हैमनपौनसौं॥ जौअधिकयकछुहोइबडौअतिजागहै॥ शिष्यतोहिक
हिदीहेजलौयहमागहैं॥ अथहोमकौलक्षण॥ चामरछंद॥ अब
होमतनयप्रकारसुनिशिषकहौंतोहिबषांनि॥ इकअग्निमहिंसा ३२॥
कल्पिहोमैसोअष्टत्रीजांनि॥ जोनिद्वैत्रीयसहोईताहिओरन
होम॥ सोज्ञानअग्निपजालिनीकैंकरैइंद्रियहोम॥ २३॥ इतिनिय
मा:॥ दोहाछंद॥ दशप्रकारवैयमकहे दशप्रकारयेनेम॥ योग
ग्रंथमाहैंलिषे मैंसमुझायेतेम॥ २४॥ सोरठाछंद॥ शिष्यसुन
येतोहि॥ उनयअंगयेयोगके॥ सावधांनअतिहोहि॥ अबहिंषडं
गबषांनिहौं॥ २५॥ चौपईछंद॥ प्रथमकहौंशिषआसनभेदा॥ जा
तेंरोगमिटहिंबहुषेदा॥ ऋषिमुनियोगीब्रह्माराधे॥ तिनसबप
हलीआसनसाधे॥ २६॥ त्रोटकछंद॥ शिवजानतहैंसबयोगक
ला॥ नितसंगशिवापुनिहैअचला॥ दृढआसनतेंनहिंबिंदषि
सै॥ दृगदेषतदंपतिलोकहसै॥ २७॥ कुंडलियाछंद॥ चतुराशी
लषजीवकीजातिकहतुहैवेद॥ तितनेईआसनसबैजानतहैं
शिवभेद॥ जांनतहैंशिवभेदओरजानयनहिंकोई॥ आपुद
यातिनकरीसुगमकरिदीन्हेंसोई॥ लक्षलक्षमहिंयेकयेकक
हेउरनाशी॥ सुलभसबनिकोंकियेप्रगटआसनचतुराशी
॥ २८॥ दोहाछंद॥ चतुराशीआसननिमैंसारभूतद्वैजांनि॥ सि
द्धासनपद्मासनहिंनीकैंकहौंबषांनि॥ २९॥ तत्रसिद्धासनं॥
मनहरछंद॥ येडीबामपायकीलगायेसीवनिकैंबीचवारीजो

निगैर तादिनी कैं करि जांनियें ॥ तैसैं ही युगति करि विधि सों जं
लैं प्रकार मेढ़ू के ऊपर दछन पाव आनियें ॥ शरल शरीर दृ
ढ इंद्रिय संयम्य करि अचल ऊर्ध्व दृष्टि भ्रू के मध्य गांनियें ॥
मोक्ष के कपाट कौं उघारत अव रूप मेव सुंदर कहत सिद्ध आ
सन बषांनियें ॥ ४० ॥ अथ पद्मासन ॥ छप्पय छंद ॥ दछन उरू
उप्पर धरय प्रथम बांम हिं पग आनय ॥ बांम हिं उरू उप्पर धरय तबहिं
दछन पग गानय ॥ दोऊ कर पुनि फेरि पृष्टि पीछे करि आनय
दृढ कैं ग्रहैं अंगुष्ट चिबुक बक्ष स्थल लावय ॥ इहिं भांति दृष्टि
उन्मेष करि अग्र नासिका राषिये ॥ सब व्याधि हरण योगीन
की पद्मासन यह भाषिये ॥ ४१ ॥ पद्धड़ी छंद ॥ शिष और जु आस
न हरहिं रोग ॥ परिहरि निदइ आसन सधय योग ॥ तातें तूं पे अब्ब
नय साधि ॥ जब लग पङ्कं चै निर्जय समाधि ॥ ४२ ॥ अथ प्राणाया
म ॥ विद्युन्माला छंद ॥ आगै की जै प्राणायामं ॥ नाडी चक्रं पावै
गामं ॥ पूरै राबै रेचै कोई ॥ द्वै निःपापं योगी सोई ॥ ४३ ॥ दोहा छं
द ॥ नाडी कही अनेक विधि हैं दश मुख विचार ॥ इडा पिंगला
सुषमणा ॥ सब महिं ये त्रय सार ॥ ४४ ॥ छप्पय छंद ॥ बांम इडा
स्वर जानि चंद्र पुनि कहिय तवा कौं ॥ दछन स्वर पिंगला सूरम
य जानहुं ता कौं ॥ मध्य सुषुम्ना बहै ताहि जानत नहिं कोई है
यह अग्नि स्वरूप काल या ही तें होई ॥ जब इडा पिंगला जाति
य के ॥ प्राणायाम प्रभाव तें ॥ तब चले सुषुमना उलटि कें सुखउ

खउपजैघरआवतें॥ ४५॥ दोहाछंद॥ दशप्रकारकोपवनहै ताषौंति
न्हकेनाम॥ कहेंबिनानहिंजांनियेंकौंनठोरबिश्रांम॥ ४६॥ चौपई
छंद॥ प्राणपांनसमानहिंजानैं॥ ब्यांनोदांनपंचमनमानैं॥ नाग
ऊकूर्मकृकलसुकहियें॥ देवदत्तसुधनंजयलहियें॥ ४७॥ कुं
डलियाछंद॥ प्राणहृदयमहिंबस्तहै॥ गुदमंडलेअपांन॥ नाभि
समानहिंजांनियेंकंठहिंबसैउदांन॥ कंठहिंबसैउदांन॥ ब्या
नव्यापकघटसारैं॥ नागकरयउद्गार कूर्मसोपलकउघा
रै॥ कृकलसुउपजैछुधादेवदत्तहिजंभाणं॥ मुयेंधनंजय
रहैपंचदूरबसोप्राणं॥ ४८॥ दोहाछंद॥ चक्रअनुक्रमकहतहौं
सुनिशिषतिनकेनाम॥ पीछेतोहिसुनाइहौं॥ बिधिसौंप्राणा
याम॥ ४९॥ अथचक्रअनुक्रम॥ पद्धडीछंद॥ शिषप्रथमचक्र
आधारजांनि॥ तहंअक्षरचारिचतुर्दलांनि॥ पुनिवशषसबरण
बिचारिलेऊ॥ हैसबशरीरआधारयेऊ॥ १॥ पुनिस्वाधिष्टानसु
द्वितियचक्र॥ तहषट्दलषट्अक्षरअबक्र॥ गनिबभमयरल
येबरणमध्य॥ सोब्रह्मचक्रकहियेंप्रसिद्धि॥ २॥ मणिपूरचक्रदश
दलप्रभाव॥ पुनिअक्षरदशातेऊसुनाव॥ तहडढणतथदधन
पफप्रमान॥ इनिबर्णसहितत्रितियेबषांन॥ ३॥ अनुहातच
क्रैहैहृदयमाहिं॥ दलअक्षरद्वादशअधिकनाहिं॥ कखगघङ
चछजझञटठसमेत॥ शिषचक्रचतुर्थयसंमुझिहेत॥ ४॥ सुनि

पंचमचक्र बिशुद्ध आहि । दल अक्षर षोडश लगे ताहि । तहं आ
दि अकार अकार अंत । शुभ षोडश स्वर ताके गनंत ॥ ५ ॥ अब आ
ज्ञाचक्र सुभ्रुव मंझार ॥ लखि द्वै दल द्वै अक्षर बिचार । तद हं क्षं ब
र्ण सु अति अनूप । यह षष्ट सुचक्र कह्यौ स्वरूप ॥ ६ ॥ जब इनि षटचक्र
हि भेदि जाइ । तब रहै सुषमना सुखसमाइ ॥ ताही तें प्राणायाम
सार । सुनि शिष्य कहौं ताकौ बिचार ॥ ७ ॥ ५६ ॥ ५६ ॥ अथ प्राणायां
मकी क्रिया ॥ दोहा छंद ॥ इडा नाडि पूरक करै । कुंभक राखै मांहि ।
रेचक करिये पिंगला । सब पातक कटि जांहि ॥ ५७ ॥ सोरठा छं
द ॥ बीज मंत्र संयुक्त । षोडश पूरक पूरिये । चव सठि कुंभक उक्त ।
द्वात्रिंशति करि रेचना ॥ ५८ ॥ चौपई छंद ॥ बहुरि बिपर्यय ऐसैं
धारै । पूरि पिंगला इडा निकारै । कुंभक या बिधि प्राण कौं जीतै । च
तुर्बार अभ्यास व्यतीतै ॥ ५९ ॥ चामर छंद ॥ यह रूप नित्य कसु
नाद्योइहिं जोति प्राणायाम । सद्गुरु रूपा तें पाइये मन हो स्व
ति बिश्राम ॥ अब मत मतांतर कहत हौं सुनि शिष्य अन्य प्रभाव ॥
जोर रहत उक्त बषांनि दौं तिहिं सुनत उपजय चाव ॥ ६० ॥ अथ गो
रक्ष उक्त ॥ चर्पट छंद ॥ सोहं सोहं सोहं हंसो । सोहं सोहं सोहं अं
सो । स्वासोस्वासं सोहं जापं । सोहं सोहं आपै आपं ॥ १ ॥ द्वादशमा
त्रा पूरक करणं । द्वादश मात्रा कुंभक धरणं । द्वादश मात्रा रेचक
ज्ञाणं । पूर्ववत सु बिपर्यय गांणं ॥ २ ॥ अधमे द्वादश मात्रा उक्तं । म
ध्यम मात्रा द्विगुण प्रयुक्तं । उत्तम मात्रा त्रिगुण कहिये । प्राणाया

॥ अथनादवर्णनं ॥

मसुनिर्णयलहिये॥८३॥सोरठाछंद॥कुंभकअष्टसुविधि॥मुद्रादश
हिप्रकारकी॥बंधतीनतिनिमधि॥उत्तमसाधनयोगके॥८४॥अथ
कुंभकनाम॥छप्पयछंद॥सूरयभेदनप्रथमद्वितीयउज्जाईकहिये॥
शीतकारपुनित्रितियशीतलीचतुर्थग्रहिये॥पंचमहैभस्त्रिकाभ्र
मरीषष्टसुजांनकुं॥मूर्छनासप्तमंअष्टमंकेवलमानकुं॥येकुंभकअ
ष्टप्रकारकेहोइपवनइमसोधनें॥तबमुद्राबंधलगाइयहिंप्रथमकरै
घटसोधनें॥८५॥दोहाछंद॥जबहिंअष्टकुंभकसधहिंवामैअनह
दनादाद्दशप्रकारकीधुनिसुनहिंछूटहिंसकलविषाद॥८६॥छप्प
यछंद॥प्रथमभ्रमरगुंजारसंखधुनिदुतियकहिज्जै॥त्रितियेबज
हिंमृदंगचतुर्थैतालसुनिज्जै॥पंचमघंटानादषष्टबीनाधुनिहोई॥स
प्तमबजुहिंभेरिअष्टमंदुंदभिजिदोई॥अबनवमैगर्जैसमुद्रकीदशम
मेघघोषद्दिगुनै॥कहिसुंदरअनहदनादकौंदशप्रकारयोगीसु
नै॥८७॥अथमुद्रानाम॥गीतकछंद॥सुनिमहामुद्रामहाबंधःम
हावेधचखेचरी॥उडियानबंधसुमूलबंधहिंबंधजालंधरकरी॥
विपरीतिकरणीपुनिबज्रोलीशक्तिचालनकीजिये॥इमहोइयो
गीअमरकायाशशिकलानितपीजिये॥८८॥अथप्रत्याहार॥
कुंडलियाछंद॥श्रवनशब्दकौंग्रहतहैं॥नयनग्रहतहैंरूप॥गंध
ग्रहतहैंनाशिकारसनारसकीचूप॥रसनारसकीचूप॥तुचासुस्प
र्शहिचाहै॥इनिपंचनिकौंफेरिआत्मानिसाराहै॥कूर्मअंगगहिग्रहै
प्रत्याहारविकर्षयइवणं॥इमकरिप्रत्याहारविषयशब्दादिकश्रवणं॥८९॥

अथ पंचतत्वकीधारणा ॥ चौपईयाछंद ॥ यह चारे कोण लकार सहित
हूं ज्ञान कूं पृथ्वी रूपं ॥ पुनि पीत बर्ण कृद मिंडल कहिये बिधि अं
कित सु अनूपं ॥ तह घटिका पंच प्राण करि लीनं चित्त स्तंभन होई ॥
सुनि शिष्य अवनि जय करै नित्य ही भूमि धारणा सोई ॥ ७० ॥ अ
थ जलतत्वकीधारणा ॥ अर्द्धचंद्र बकार संजुक्त जानि जल चंद्र
खंड निहारं ॥ पुनि रूपी केश अंकित अति सोभित कंवपार दाकारं
तह घटिका पंच प्राण करि लीनं चित्त धारि कैं रहिये ॥ बिषकालकू
ट व्यापै नहिं कबहूं बारि धारणा कहिये ॥ ७१ ॥ अथ तेजतत्वकी
धारणा ॥ यह अग्नि त्रिकोण रेफ संयुक्तं पद्मराग आभासं ॥ पुनि इं
द्रगोप द्युति मध्य तालु का कहिये तरुन दिवासं ॥ तह घटिका पंच प्रा
ण करि लीनं ग्रंथ्यहि उक्त बषानं ॥ सुनि शिष्य अग्नि नप हुंता कहि
ये तेज धारणा ज्ञानं ॥ ७२ ॥ अथ बायुतत्वकी धारणा ॥ भ्रुवमध्य य
कार सहित षट्कोणं अैसी लक्ष विचारं ॥ पुनि मेघ बर्ण ईश्वर करि
अंकित बारंबार निहारं ॥ तह घटिका पंच प्राण करि लीनं खेचरसि
द्धि हि पावै ॥ सुनि शिष्य धारणा बायुतत्व की ज्ञानी कैं करि आवै ॥
७३ ॥ अथ आकाशतत्वकी धारणा ॥ अब ब्रह्मरंध्र आकाश तत्व है
सु अब वर्तुलाकारं ॥ जह निश्चय जानि सदाशिव तिष्ठति अक्षर सहि
त हकारं ॥ तह घटिका पंच प्राण करि लीनं परम मुक्ति की दाता ॥ सुनि
शिष्य धारणा व्योम तत्व की योग ग्रंथ बिख्याता ॥ ७४ ॥ यह ये कथं
भिनी येक द्राविणी येक सुदहनी कहिये ॥ पुनि येक भ्रामिणी येक

सोषणीसद्गुरुबिनानलहिये। येपंचतत्वकीपंचधारणातिनकेभेद
सुनाये। अबआगेध्यानकहौंबहुविधिकरि जोग्रंथनिमैंहिगाये
॥७५॥ अथध्यानबर्नन॥ दोहाछंद॥ प्रथमहिंध्यानपदस्थहै दुति
येपिंडअधीत त्रितियध्यानरूपस्थपुनि चतुर्थरूपातीत॥७६॥ प्र
थमपदस्थध्यानबर्नन॥ इंद्रवज्रछंद॥ जेपदचित्रबिचत्ररचेअतिगू
ढमहापरमारथजामै॥ तेअवलोकिबिचारकरैपुनिचित्तधरैनिहचै
करितामै। कैकरिकुंभककैमंत्रजपैउरअक्षरतेपुनिजांनिअनामै सुं
दरध्यानपदस्थइहैमननिश्चलहोइलहैजुबिरामै॥७७॥ अथपिं
डस्थध्यानबर्नन॥ चौपईछंद॥ सुनिशिष्यकहौंध्यानपिंडस्थं॥ पिंड
सोधनंकरियेस्वस्थं॥ षट्चक्रनिकोधरियेध्यानं॥ पुनिसद्गुरुकोध्या
नप्रमानं॥७८॥ अथरूपस्थध्यानबर्नन॥ नराचछंद॥ निहारियै
त्रिकूटमाहिंविस्फुल्लिंगदेषिहै॥ पुनःप्रकाशदीपज्योतिदीपमा
लदेषिहै॥ नक्षत्रमालबिज्जुलीप्रभाप्रत्यक्षहोइहै॥ अनंतकोटिस
र्वंद्रध्यानमध्यजोइहै॥१॥ मरीचिकासमानसुत्रऔरलक्षजांनि
यें॥ करामलंसमस्तबिस्वतेजमैबषांनियें॥ समुद्रमध्यडुबिकैं
उघारिनैनदीजिये॥ दशौंदिशाजलामईप्रत्यक्षध्यानकीजिये
॥८०॥ अथरूपातीतध्यानबर्नन॥ पद्धडीछंद॥ यहरूपातीत
जुशून्यध्यान॥ कछुरूपनरेषनदैनिदान॥ तहांअपपहरलौंचि
तलीन॥ पुनिसाधलक्षैअतिप्रबीन॥१॥ जिमपक्षीकीगतिग
गनमाहिं। कहुंजाततजाततदिषिपरयनाहिं॥ पुनिआइदिषाईदे

तसोइ ॥ वायोगीकीगतिइहैहोइ ॥ ८३ ॥ इहिंशून्यध्यानसमऔरनां
हिं उत्कृष्टध्यानसबध्यानमाहिं ॥ है शून्याकार जुब्रह्मआपुद
शा हूदिशापूरणअतिअमापु ३ ॥ योकरयध्यानसायोज्यहोइ ॥
तबलगैसमाधिअखंडसोइ ॥ पुनिउहैयोगनिद्राकहाइ ॥
सुनिशिष्यदैंउंतोकौंबताइ ॥ ४ ॥ ८४ ॥ अथसमाधिबर्नन ॥ गी
तकछंद ॥ सुनिशिष्यअबहिंसमाधिलक्षणमुक्तयोगीबर्त्तते
तहसाध्यसाधकयेकहोईक्रियाकर्मनिवर्त्तते ॥ निरुपाधिनिस
उपाधिरहितंइहैनिश्चयआंनियें ॥ कछुभिन्नभावरहैनकोऊ
सासमाधिबषांनियें ॥ ८५ ॥ नहिंशीतउष्णक्षुधातृषानहिंमूर्छा
आलसरहै ॥ नहिंजागरंनहिंसुप्नसुषुपतितत्पदंयोगीलहै ॥
यिमनीरमहिंगरिजाइलवनंयेकमेकहिबांनियें ॥ कछुभिन्न
भावरहैनकोऊसासमाधिबषांनियें ॥ ८६ ॥ नहिंहर्षशोकनसु
खंदुःखंनहिंमानअमानयो ॥ पुनिमनोइंद्रियछूटसनछंगतंश
नअज्ञानयो ॥ नहिंजातिकुलनहिंबर्णआश्रमजीवब्रह्मनजां
नियें ॥ कछुभिन्नभावरहैनकोऊसासमाधिबषांनियें ॥ ८७ ॥ न
हिंशब्दशपरशरूपरसनहिंगंधजानयरंचहूं ॥ नहिंकाल
कर्मस्वभावहैनहिंउदयअस्तप्रपंचहूं ॥ यिमक्षीरक्षीरहिआउप
आउपेजलेजलहिंमिलानियें ॥ कछुभिन्नभावरहैनकोऊसास
माधिबषांनियें ॥ ८८ ॥ नहिंदेवदैत्यपिशाचराक्षसभूतप्रेतनसं
चरै ॥ नहिंपवनपांनीअग्निजयपुनिसर्पसिंघहिंनाडरै ॥ नहिंयं

अमंत्र नशास्त्र लागहिं यह अवस्था गानियें ॥ कछु भिन्न नाव र है न को
ऊ सा समाधि बखांनियें ॥ ८९ ॥ दोहा छंद ॥ योग सिद्धांत सुनाइयौ
अष्ट अंग संयुक्त ॥ सा साधन बल हि मिले ॥ तेऊ कहियें मुक्त ॥ ९० ॥
इति श्री सुंदरदासेन विरचितः ज्ञानसमुद्रे अष्टांग योग सिद्धांत
निरूपणं नाम त्रितियोल्हास ॥ ३ ॥ शिष्य उवाच ॥ चौपई छंद
॥ हे प्रभु बहुत कृपा तुम कीन्हीं ॥ ऐसी बुद्धि दया करि दीन्हीं ॥ मो
कौं योग सिद्धांत सुनायौ ॥ जो पूछ्यौ सो उत्तर पायौ ॥ १ ॥ अब प्रभु
सांख्य सु मोहि सुनावहु ॥ मेरे सब संदेह मिटावहु ॥ यह गुरुदेव
कृपा करि कहियें ॥ तुम बिन और कहां कत लहियें ॥ २ ॥ श्री गु
रुरुवाच ॥ सोरठा छंद ॥ शिष्य कहौं समुझाइ ॥ जो तैं पूछ्यौ प्रीति
सौं ॥ सांख्य सु दैउं बताइ ॥ तूं सुनि वे कौं योग्य है ॥ ३ ॥ अथ सां
ख्य योग बर्नन ॥ दुमिला छंद ॥ सुनि शिष्य इहै मत सांख्य हिं कौ
जु अनात्म आत्म भिन्न करै ॥ अन आत्म है जड रूप लियें नित आ
त्म चेतनता व धरै ॥ अन आत्म सूक्ष्म थूल सदा पुनि आत्म सूक्ष्
म थूल परै ॥ तिनकौ निरनै अब तोहि कहौं जिनि जानत संशय
शोक हरै ॥ ४ ॥ कुंडलिया छंद ॥ पुरुष प्रकृति मय जगत है ब्र
ह्मा कीट पर्यंत ॥ चतुर्खानि लौं सृष्टि सब शिव शक्ती बर्तंत ॥ शिव श
क्ती बर्तंत अंत दहुंवनि कौ नांहीं ॥ येक आहि चिद्रूप येक ज
ड दीसत छांहीं ॥ चेतनि सदा अलिप्त रहै जड सौं नित पुरुष
शिष्य समझियह भेद भिन्न करि जानहु पुरुष ॥ ५ ॥ शिष्य उवा

च॥हंसालछंद॥हेप्रभुकह्योतुमपुरुषचेतन्यमयसुखकरिऐसैं
कह्यौभिन्नजानौं॥संमझिकैंप्रकृतिजडरूपकरिकैंकहीजग
तकैसैंनयौसोबषानौं॥६॥श्रीगुरूरुवाच॥छप्पयछंद॥पुरु
षप्रकृतिसंयोगजगतउपजतहैंऐसैं।रविदर्प्पणदृष्टांतअ
ग्निउपजतहैतैसैं॥सुईहोंहिंचेतन्ययथाचंबककैसंगा॥यथा
पवनसंयोगउदधिमहिंउठहिंतरंगा॥अरुयथासूरसंयो
गपुनिचक्षुरूपकौंग्रहतहैं।योंजडचेतनसंयोगतेंसृष्टिउ
पजतीकहतहैं॥७॥शिष्यउवाच॥सवईयाछंद॥हेप्रभुपुरु
षप्रकृतितेंप्रथमहिंकौंनतत्वउपज्यौसमुझाइ॥विधिकरित
त्वअनुक्रमसौंसबज्यौंउपजेसौंदेऊबताइ॥सूक्ष्मथूल
भयेकैसैंकरिकारणकारयमोहिसुनाइ॥तुमगुरुदेवस
कलविधिजानतअनआत्मआत्मादिषाइ॥८॥श्रीगुरुरु
वाच॥दोहाछंद॥पुरुषप्रकृतिसंयोगतेंप्रथमभयौमहतत्व।
अहंकारतातेंप्रगट॥त्रिबिधिसुतमरजसत्व॥९॥चामरछंद।
तिहिंतामसाहंकारतेंदशतत्वउपजेआइ॥तेपंचविषयरुपंच
भूतनिकहौंशिष्यसुनाइ॥येशब्दसपरसरूपरसअरुगंध
विषयसुजांनि॥पुनिव्योममारुततेजजलक्षितिमहाभूतब
षांनि॥१०॥चौपईछंद॥येदशतमगुणतेंतुमजानऊं॥द्रव्य
शक्तियाकौंपहिचानऊं॥अबइनिकेलक्षणसमुझाऊं॥भिन्न
भिन्नकरितोहिसुनाऊं॥११॥छप्पयछंद॥शब्दगुणेआका

शायेकगुणकहियतजांमहिं॥शब्दस्पर्शजुवायुउभयगुणल
हियहिंतामहिं॥शब्दस्पर्शजुरूपतीनगुणपावकमांहीं॥शब्द
स्पर्शजुरूपरसंजलचऊंगुणआंहीं॥पुनिशब्दस्पर्शजुरूप
रसगंधपंचगुणअवनिहै॥शिषइहैअनुक्रमजानितूंसांख्यसु
मतऐसैंकहै॥१२॥अथपंचस्वभाव॥चौपईया छंद॥यहकठिन
स्वभावअवनिकौकहियेपावकउदकहिजानऊं॥पुनिचलसु
भावअजिमहिंवर्हयचलनपवनपहिचानऊं॥आकाशसुभाव
सुथिरकहियतहैपुनिअवकाशलषावै॥येपंचतत्वकेपंचसुभा
वहिसगुरुबिनानपावै॥१३॥इतितामसाहंकारसर्ग॥अथराज
साहंकारसर्ग॥चौपइयाछंद॥अथराजसअहंकारतेंउपजीद
शइंद्रियसुबताऊं॥पुनिपंचबायुतिनकैंसमीपहीयहब्यौरौसं
मुझाऊं॥अरुभिन्नभिन्नहैंक्रियासुतिनकीभिन्नभिन्नहैंनामं॥
सुनिशिष्यकहौंतिनीकैंकरितोसौंज्यौंपावैबिश्रामं॥१४॥छप्पय
छंद॥श्रवणत्वचादृगघ्राणरसनपुनितिनिकैंसंगा॥ज्ञानसु
इंद्रियपंचनइऔपअपनेरंगा॥बाकपानिअरुपादउपस्थ
गुदाहूकहिये॥कर्मसुइंद्रियपंचभलीबिधिजानेरहिये॥
सुनिप्रानापानसमानहूंव्यानौदानसुबायुहैं॥दशपंचरजो
गुणतेभयेक्रियाशक्तिकौपायुहैं॥१५॥इतिराजसाहंकारस
र्ग॥अथसात्विकाहंकारसर्ग॥गीतकछंद॥अथसात्विकहंक

चा॥हंसालछंद॥ हे प्रभु कह्यौ तुम पुरुष चेतन्यमय बहुरि अैसैं
कह्यौ भिन्न जानौं॥ समझि कैं प्रकृति जडरूप करिकैं कही जग
तकैसैं न पैसो बषानौं॥६॥ श्रीगुरुरुवाच॥ छप्पयछंद॥ पुरु
षप्रकृतिसंयोग जगत उपजत हैं अैसैं॥ रविदर्प्पण दृष्टांत अ
ग्नि उपजत है तैसैं॥ सुई होंहि चेतन्य यथा चंबक के संगा॥ यथा
पवन संयोग उदधि महिं उमहिं तरंगा॥ अरु यथा सूर संयो
ग पुनि चंद्र रूपकौं ग्रहत हैं॥ यौं जड चेतन संयोग तें सृष्टि उ
पजती कहत हैं॥७॥ शिष्य उवाच॥ सवईयाछंद॥ हे प्रभु पुरु
षप्रकृति तें प्रथम महिं कौंन तत्व उपज्यौ समुझाइ॥ बिधिकरि त
त्व अनुक्रम सौं सब ज्यौं उपजे त्यौं देहु बताइ॥ सूक्ष्म थूल
भये कैसैं करि कारण कारय मोहि सुनाइ॥ तुम गुरुदेव स
कल बिधि जानत अनआतम आतमा दिषाइ॥८॥ श्रीगुरु
वाच॥ दोहाछंद॥ पुरुषप्रकृतिसंयोग तें प्रथम भयौ महतत्व
अहंकार तातें प्रगट॥ त्रिबिधि सु तम रज सत्व॥९॥ चामरछंद॥
तिहिं तामसाहंकार तें दशा तत्व उपजे आइ॥ ते पंच बिषय रूप पंच
भूतनि कहौं शिष्य सुनाइ॥ ये शब्द सपरस रूप रस अरु गंध
बिषय सु जांनि॥ पुनि ब्योम मारुत तेज जल क्षिति महाभूत ब
षांनि॥१०॥ चौपईछंद॥ ये दश तामस गुण तें तुम जानऊं॥ द्रव्य
शक्तिया कौं पहिचानऊं॥ अब इनिके लक्षण समुझाऊं॥ भिन्न
भिन्न करि तोहि सुनाऊं॥११॥ छप्पयछंद॥ शब्द गुण आका

रतें द॥ मन बुद्धि चित्त अहं नये॥ उनि इंद्रियन के अधिष्टाता देव तात्र
ऊ बिधि ठये॥ दिग्पाल मारुत अर्क अस्विनि बरुण ज्ञान सु इंद्रियं
पुनि अग्नि इंद्र उपेंद्र मित्र जु प्रजापति कर्मेंद्रियं॥१६॥ दोहाछं
द॥ ससि बिधि अरु क्षेत्रज्ञ पुनि॥ रुद्र सहित पहिचांनि॥ नये चत
ई सा देवता ज्ञान सक्ति यह जांनि॥१७॥ इति सात्विक अहंकार स
र्ग॥ दोहाछंद॥ त्रिबिधि सक्ति है त्रिगुणमय॥ तमरज सत्व सुभे
द॥ इनि कृत पिंड स्थूल है॥ इनि करि सूक्ष्म देह॥१८॥ कारण
देह सु तीसरौ॥ सबकौ कारणमूल॥ ताही तें दोऊ नये॥ सूक्ष्म
देह स्थूल॥२॥२९॥ अथ स्थूल देह बर्नन॥ चौपई छंद॥ व्योम बायु
पावक जल धरणी॥ स्थूल देह इनही की बरणी॥ ये कतत्व महिं पं
च बताऊं॥ पंच पंच पच्चीस सुनाऊं॥१॥ अस्थि अवनि त्वक उदक
हि जानऊं॥ मांस अग्नि नीकैं पहिचानऊं॥ नाडी बायु रोम आ
कासूं॥ पंच अंस पृथ्वी जु प्रकासूं॥२॥ मेद सु अवनि मूत्र जल क
हिये॥ रक्त अग्नि यह जानें रहिये॥ शुक्र सु बायु श्लेषम व्योमं॥
पंच अंस ये उदक समोमं॥३॥ क्षुत तृष्णा तूं जल कौ अंसा॥ आल
स अग्नि नआंनऊं संसा॥ संगम बायु नीद नज जानं॥ पंच अंस ये
अग्नि प्रमानं॥४॥ रोध अवनि भ्रमणं जल माहीं॥ ऊर्ध्व गमन अ
ग्नि महिं आंहीं॥ अति निर्गम न बायु पहिचानऊं॥ उच्च स्थिति आ
कासहि जानऊं॥५॥ नय पृथ्वी मोहादिक नीरं॥ क्रोध अग्नि पुनि

कांमसमीरं॥ लोभाकाशांकहिसंमझाये॥ पंचअंसयोनभकेपाये॥ ६॥२५॥ इति
पंचतत्वपंचविंशतिप्रश्नः॥ अथअन्यभेद॥ दोहाछंद॥ गुदाकर्मइंद्रियनि
महिं॥ नाशाइंद्रियज्ञान॥ येदोऊभूतेप्रगट॥ शिष्यलेऊपहिचान॥१॥ उप
स्थकर्मेंद्रियनिमहिं॥ रसनाइंद्रियज्ञान॥ येदोऊजलतेंप्रगट॥ शिष्यलेऊ
पहिचान॥२॥ चरनकर्मइंद्रियनिमहिं॥ लोचनइंद्रियज्ञान॥ येदोऊवसुतेंप्र
गट शिष्यलेऊपहिचान॥३॥ पानिकर्मइंद्रियनिमहिं॥ त्वकइंद्रियपुनि
ज्ञान॥ येदोऊपवनहिंप्रगट शिष्यलेऊपहिचान॥४॥ बचनकर्मेंद्रिय
निमहिं॥ श्रोत्रसुइंद्रियज्ञान॥ येदोऊनभतेंप्रगट॥ शिष्यलेऊपहि
चांन॥५॥३०॥ अथत्रिपुटीभेद॥ दोहाछंद॥ श्रोत्रसुअध्यात्मप्रगट॥ श्रो
तव्यंअधिभूत॥ दिशातत्रहैदेवता॥ यहत्रिपुटीइहिंसूत॥१॥ त्वकअध्या
त्मजांनियेऊ॥ स्पर्शहैअधिभूत॥ वायुतत्रपुनिदेवता॥ यहत्रिपुटी
इहिंसूत॥२॥ चक्षुअध्यात्मजानियेऊ॥ दृष्टव्यंअधिभूत॥ सूरतत्र
हैदेवता॥ यहत्रिपुटीइहिंसूत॥३॥ रसनाअध्यात्मप्रगट॥ रसग्रह
णंअधिभूत॥ वरुणतत्रहैदेवता॥ यहत्रिपुटीइहिंसूत॥४॥ घ्राण
सुअध्यात्मप्रगट॥ घ्रातव्यंअधिभूत॥ अश्विनौहैदेवता॥ यहत्रिपु
टीइहिंसूत॥५॥३५॥ इतिपंचज्ञानइंद्रियत्रिपुटी॥ बचनसुअध्या
त्मप्रगट॥ वक्तव्यंअधिभूत॥ अग्नितत्रहैदेवता॥ यहत्रिपुटीइहिं
सूत॥१॥ हस्तसुअध्यात्मप्रगट॥ आदानंअधिभूत॥ इंद्रतत्रहैदेवता॥
यहत्रिपुटीइहिंसूत॥२॥ चरणसुअध्यात्मप्रगट॥ गंतव्यंअधिभू
त॥ विष्णुतत्रहैदेवता॥ यहत्रिपुटीइहिंसूत॥३॥ उपस्थअध्या

त्मप्रगट। आनंदं अधिभूत॥ प्रजापतिहितहदेवता यहत्रिपुटी इ
हिंसूत॥४॥ गुदासुअध्यात्मप्रगट। मलत्याग अधिभूत। मित्रतत्र
हैदेवता। यहत्रिपुटीइहिंसूत॥५॥५०॥ इतिकर्मेंद्रियत्रिपुटी॥
मनअध्यात्मजानियहु॥ संकल्पंअधिभूत। चंद्रतत्र हैदेवता॥ य
हत्रिपुटीइहिंसूत॥१॥ बुद्धिसुअध्यात्मप्रगट॥ बोधव्यंअधिभूत
ब्रह्मातत्रसुदेवता॥ यहत्रिपुटीइहिंसूत॥२॥ चित्तसुअध्यात्मप्र
गट चितवनहैअधिभूत॥ बासुदेवतहंदेवता॥ यहत्रिपुटीइ
हिंसूत॥३॥ अहंकार अध्यात्मं॥ अहंकृत्यंअधिभूत॥ रुद्रतत्रहै
देवता॥ यहत्रिपुटीइहिंसूत॥४॥५४॥ इतिअंतःकरणत्रिपुटी॥
इतिस्थूलदेहबर्नन॥ अथलिंगशरीरकथ्यते॥ चौपईछंद॥
शब्दस्पर्शरूपरसगंधा॥ मनअरु
बुद्धिचित्तअहंकारा॥ येनवतत्वकियेनिर्धारा॥५५॥ दोहाछंद॥
नवतत्वनिकौलिंगप्रबंधा॥
पंद्रहतत्वस्थूलवपु॥ नवतत्वनिकौलिंग॥ इनचौबीसहुतत्व
कौ॥ बहुबिधिकह्यौप्रसंग॥५६॥ चौपईछंद॥ शिषयेचौबी
सतत्वजडज्ञानहु॥ तिनकौदेवसुकहिये॥ पुनिचेतनयेकअो
रपच्चीसहिंसांख्यहिंमतसौंलहिये॥ सोदैदेवहसर्वकौप्रे
रकपुनिसाक्षीवहुजांनहु॥ यहप्रकृतिपुरुषकौकीयेनि
र्णयसहुरुकहैसुमानहु॥५७॥ अथजाग्रदवस्थाकथ्यते॥ चं
पकछंद॥ यहदेहस्थूलबिराटा॥ हैपंचतत्वकौगटा॥ नजबा

युतेज जल धरणी॥ पीछै बहु बिधि करि बरणी॥ १॥ जे शब्द स्पर्श
हि रूपा॥ रस गंध मिले तिनि जूपा॥ इनि तन्मात्रिका सहेता॥ ये पंच
विषय कौं देता॥ २॥ पुनि पंचेंद्रिय ज्ञाना॥ श्रवणादि मिली बिधि ना
ना॥ अरु कर्मसु इंद्रिय पंचा॥ वचनादि मिली जु प्रपंचा॥ ३॥ मन बुद्धि
चित्त अहंकारा॥ यह अंतहकरण बिचारा॥ पुनि देव चतुर्दश ज्ञान
कुं॥ दश वायु मिली यह मानकुं॥ ४॥ है सत रज तम गुण माही॥
ये भिन्न भिन्न बर्त्ताहीं॥ तहं काल जु कर्म स्वभावा॥ पुनि जीव स्वरू
प दिखावा॥ ५॥ अरु काल उपाइ बपावै॥ यह कर्मसु आनि मिला
वै॥ पुनि सूत्र सु सुख दुख मानै॥ सो पाप पुन्य कौं गनै॥ ६॥ है जीव
सु चेतन कर्त्ता॥ जड सर्ब पदार्थ धरता॥ मिलि सब हिं निको संघा
ता॥ यह जाग्रदवस्था ताता॥ ७॥ सा आहि बिश्व अभिमानी॥ तहं
ब्रह्मा देव प्रमानी॥ है राजस गुण अधिकारा॥ पुनि जो गस्थूल प
सारा॥ सो कहिये नयन स्थानं॥ बाणी वैखरी जानं॥ यह जाग्र
दवस्था निर्णय॥ सुनि शिष्य सु प्रश्न बर्णय॥ ८॥ इति जाग्रदव
स्या निर्णय॥ अथ स्वप्नावस्था कथ्यते॥ चौपइ सा छंद॥ दश वायु
प्राण नागादिक कहिये हिं पंच सु इंद्रिय ज्ञानं॥ पुनि पंच कर्मे इं
द्रिय जे आहीं॥ तिनि की रस बषानं॥ अरु पंच विषय शब्दादि
क जानकुं अंतहकरण चतुष्टय॥ पुनि देव चतुर्दश हैं तिन मां
हीं सब इंद्रिय संतुष्टय॥ १॥ यह काल कु कर्म स्वभाव सकल मि
लि लिंग शरीर कहावै॥ लिंग शरीर नाम हिरण्यगर्भ पुनि ताकौं ते

जोमयतनुपारै ॥ अबस्वप्नवस्थाया कौंकहियेसातैजसअभि
मांनी ॥ तहसतगुणबिष्णुदेवताजानऊं जोगबासनागं
नी ॥ ५ ॥ पुनिकंठस्थानमध्यमाबाचाजीवात्मासमेतं ॥ शि
षसुप्नवस्थाकीयोनिर्णयसंमझिदेषियहहेतं ॥ ३ ॥ इतिस्व
प्नावस्थानिर्णय ॥ अथसुषुप्तिअवस्थाकथ्यते ॥ छप्पयछंद ॥ सु
षुप्तिकारणदेहतत्वसबहोतहंलीनं ॥ लिंगशरीरनरहैघोरनिद्र
बसिकीनं ॥ प्राज्ञाअभिमानीजुअब्याकृततमगुणरूपा ॥ ईश्व
रतहंदेवताजोगआनंदस्वरूपा ॥ पुनिपश्यंतीबाणीगुप्तहृद
यस्थानकजांनियें ॥ यहकहतजुसुषुप्तिअवस्थाशिष्यसत्य
करिमांनियें ॥ ६० ॥ इतिसुषुप्तिअवस्थानिर्णय ॥ अथतुर्यावस्था
कथ्यते ॥ चर्पटछंद ॥ तुर्यावस्थाचेतनतत्वं ॥ स्वस्वरूपअभिमा
नीयत्वं ॥ परमानंदंजोगंकहियं ॥ सोहंदेवसदातहंलहियं ॥
१ ॥ सर्बोपाधिबिबर्जितमुक्तं ॥ त्रिगुणातीतंसाक्षीउक्तं ॥ मूर्द्धनि
स्थितिपरापुनिबांणीं ॥ तुर्यावस्थानिश्चयजांणीं ॥ २ ॥ इंदव
छंद ॥ जाग्रतरूपलियेंसबतत्वनिइंद्रियद्वारकरैव्यवहा
रो ॥ स्वप्नशरीरचत्रमैनवतत्वकौमानतहैसुखदुःखअपारौ ॥
लीनसबैगुनहोतसुखोपतिजानैंनहींकछुघोरअंधारौ ॥
तीनकौसाक्षीरहैतुरियातत सुंदरसोइस्वरूपहमारौ ॥
॥ ६३ ॥ सोरठाछंद ॥ शिषतूंऐसैजांनि ॥ होंअसंगसाक्षीस
दा ॥ आपुहिचेतनमांनि ॥ अवरपदार्थजडसबै ॥ ६४ ॥ दोह

छंद ॥ यह शिष मैं तोसौं कह्यौ ॥ सांख्य कौ सिद्धांत ॥ जो तेरै शंकार
ही ॥ सो अब पूछि इतांत ॥ ८४ ॥ इति श्री सुंदरदासेन विरचितः ज्ञान
समुद्रे सांख्य सिद्धांत निरूपणं नाम चतुर्थोल्हासः ॥ ४ ॥ शिष्य उवा
च ॥ चौपई छंद ॥ हे स्वामिन तुम ब्रह्म अनूपं ॥ मैं करि जाने देह स्वरू
पं ॥ यह मोतें जु भयौ अपराधा ॥ छमा करहु मम मेटहु बाधा ॥ १ ॥ दौं
तौ भयौ कृतारथ तब ही ॥ तुम से सद्गुरु भेटे जब ही ॥ बचन सुना
इ कृपा उघारे ॥ मेरे संशय सकल निवारे ॥ २ ॥ किंचित मात्र रही
आशंका ॥ वह अब तुम तें जैहै बंका ॥ जे तुम तीनि सिद्धांत बषांने
ते पचु मैं नीकैं करि जांने ॥ ३ ॥ अब तुम तुरियातीत बतावहु ॥ ता
पीछे अद्वैत सुनावहु ॥ तुम बिन अवर कहै नहिं कोई ॥ तुम ही तें
तुम ही सा होई ॥ ४ ॥ श्री गुरुरुवाच ॥ दोहा छंद ॥ साधु साधु शिष
धन्य तूं ॥ भली प्रश्न तैं कीन ॥ याकौ उत्तर अब कहौं ॥ द्वैत मिटै भ्रम
लीन ॥ ५ ॥ चौपई छंद ॥ श्रवन मनन कीयौ तैं नीकैं ॥ निदध्यास पुनि
जान्यौ टीकैं ॥ अब साक्षात्कार तें होई ॥ तब संदेह रहै नहिं कोई ॥
६ ॥ दोहा छंद ॥ तुरिया साधन ब्रह्म कौ ॥ अहं ब्रह्म यौं होइ ॥ तुरि
यातीत हि अनुभवै ॥ द्वंद रहै न कोइ ॥ ७ ॥ इंदव छंद ॥ जाग्रत तौ न
हिं मेरैं बिषै कछु स्वप्न सु तौ नहिं मेरैं बिषै है ॥ नाहिं सुषोपति मेरैं बि
षै पुनि बिश्व रु तैजस प्राज्ञ पषै है ॥ मेरैं बिषै तुरिया नहिं दीसत
याही तें मेरौ स्वरूप अषै है ॥ दूर तें दूर परै तें परै अति सुंदर कोउ
न मो हि लषै है ॥ ८ ॥ शिष्य उवाच ॥ दोहा छंद ॥ हे प्रभु दूरि परै कह्यौ

उरैंकहाअबओर। यहतोभ्रमजारीजयौ॥ गुरुसुबतावहुगौर॥९॥
॥श्रीगुरुरुवाच॥ उरैपरैकछुवैनहीं॥ वस्तुरहीभरपूर॥ चतुरभावतै
सौंकहौं॥ तबभ्रमह्वैहैदूर॥१०॥ शिष्यउवाच॥ चौपईछंद॥ हेप्रभु
चतुरभावसंमझावहु॥ भिन्नभिन्नकरिअर्थबतावहु॥ द्वैतमिटैस
बहीभ्रमछीजै॥ निःसंदेहमोहिअबकीजै॥११॥ श्रीगुरुरुवाच
॥चौपईयाछंद॥ शिषप्रागभावसोप्रथमहिंकहियेताकीबिधि
संमुझाऊं॥ पुनिअन्योन्याभावदूसरो सोऊतोहिसुनाऊं अरु
सुनिप्रध्वंसाभावतीसरोताकौकहौंबिचारा॥ जबचतुरभावअ
त्यंतहिजानहिंतबछूटैभ्रमसारा॥१२॥ अथचतुरभावकीसरचि
नका॥ सवईयाछंद॥ मृतिकामाहिंअभावघटनिकौप्रागभावय
हजानिरहाय॥ तामृतिकाकेभाजनबहुबिधिअन्योअन्याभा
वगहाय॥ मृतिकामध्यलीनतासबकीयहप्रध्वंसाभावलहाय॥
नकछूभयोनअबनहिंह्वैहैयहअत्यंताभावकहाय॥१३॥ अथप्र
गभावबर्ननं॥ मनहरछंद॥ पहिलैंजबकछुवनहोतौप्रपंचयहप्र
कहीअखंडब्रह्मबिम्बकौअभावहै॥ जैसैंकाठपांहनसुलप
अतिदेखियततिनिमैतौनहींकछुमूरतरीबनावहै॥ जैसैंकंच
नकीरासिकंचनबिसेखियततामध्यनहींकछुभूषनप्रभाव
है॥ जैसैंनभमाहिपुनिबादरनजानियतसुंदरकहतशिषप्र
हैप्रागभावहै॥१४॥ अन्योन्याभाव॥ सवईयाछंद॥ एकभूमितें
भाजनबहुबिधिकूंडाकरवाहंडियामाटचपनीढकनसरा

वगजरिया कलशा कहा लीनाना घाट ॥ नामरूप गुन जूवा जूवा
पुनि व्यवहार भिन्न ही गट ॥ सुंदर कहत शिष्य सुनि ऐसैं अन्यो
अन्या भाव बिराट ॥ १५ ॥ मनहर छंद ॥ येक भूमि कौ बिकार कंचन क
हावत है ताहू के बिबिध भांति भूषन अनंत हैं ॥ मुद्रिका कंकनकं
ठमाला सीसफूल पुनि कुंडल बलय छुद्रघंटिका गनंत हैं ॥ ना
मरूप गुन व्यवहार सब भिन्न भिन्न अंग अंग आ पुनी ही मेरले
गनंत हैं ॥ ऐसी भांति शिष्य सुनि सुंदर कहत तोहि बिडषरूं अ
न्यो अन्या भाव यौं अनंत हैं ॥ १६ ॥ चौपईया छंद ॥ शिष्य येक भूमि
कौ ताम्र बिकारा ताके पात्र कहावहिं ॥ पुनि चरवा चरई तष्टी तब
लाझारी लोटा जावहिं ॥ हैं नामरूप गुन भिन्न भिन्न ही दीसहिं
बिबिधि प्रकारा ॥ यह अन्यो अन्या भाव सु कहिये बहुत भांति बि
स्तारा ॥ १७ ॥ कुंडलिया छंद ॥ लोहा प्रगट सु देषिये सो भूमि बि
कार ॥ बिबिध भांति ताके भये जगत मांहिं हथियार ॥ जगत मां
हिं हथियार ॥ गुरज समसेर कटारी ॥ बरछी बुगदा भालि कत
रनी छुरी संवारी ॥ नामरूप गुन भिन्न जहां जैसो तहं सो हा ॥ अ
न्यो अन्या भाव शिष्य सुनि ये कहि लोहा ॥ १५ ॥ छप्पय छंद ॥ भू
मि विकार कपास भयौ नाना विधि दरसै ॥ बासा मलमल सह
न सिताबानि पजाहिं सरसै ॥ सिरीसाफ बाफता अधोतर भैर
व कहिये ॥ परकाला अरु गजी गनत कहुं वोरन लहिये ॥ सु
नि शिष्य कहां लौं बरनिये हिं अंत नहीं मित्रा दिन के है ॥ इहिं अ

न्योअन्याभावतें कारण कारय सुथिल है ॥१९॥ गीतकछंद ॥ पु
नि ये कभूमि बिकार तरु बिस्तार बहु बिधि देषिये ॥ जरमूल
शाषापत्र पुष्पंफल अनेक निपेषिये ॥ तिहिं नामरूप रु गुन सु
भिन्न हिं बहुत भांति बषांनिये ॥ सो भाव अन्योअन्य कहिये
शिष्य निश्चय मांनिये ॥२०॥ छप्पय छंद ॥ जलबिकार अब
सुन फेन बुद्बुदा तरंगा ॥ वोला पाला जांनि सु तौ जलही
कौ अंगा ॥ अग्नि बिकार मसाल चिराक रु दीपक जोये ॥ बा
यु बिकार हि जानि बघूरा आंधी होये ॥ आकाश बिकार सु
अभ्र हैं ते नाना बिधि देषियाहिं ॥ यह अन्योअन्याभाव शिष
पंचतत्वमय पेषियाहिं ॥२१॥ दोहा छंद ॥ येक ब्रह्म कारण जग
त कारय है बहु भांति ॥ चारि षांनि बिस्तार यह चौरासी लष
जाति ॥२२॥ अथ प्रध्वंसाभाव ॥ चौपई छंद ॥ यह भूमि बिका
र भूमि महिं लीनं जल बिकार जल मांहीं ॥ पुनि तेज बिकार
तेज महिं मिलि है बायु बायु मिलि जांहीं ॥ आकाश बिका
र मिलै आकाश हिं कारण रहै निदांनं ॥ शिष यह प्रध्वंसाभा
व सु कहिये जो है सो वह रानं ॥२३॥ दोहा छंद ॥ जे जातें कार
य भये सो ता ही मैं छीन ॥ ऐसैं ही यह जगत सब होइ ब्रह्म म
हिं लीन ॥२४॥ इति प्रध्वंसाभाव ॥ अथ अत्यंताभाव ॥ न[illegible]
द ॥ इच्छा हीन प्रकृति नि महतत्व अहंकार त्रिगुनन शब्दादि ब्यो
म आदि कोइ है ॥ श्रवणादि वचनादि देवता न मन आदि सहु

मनथूलपुनियेकहीनदोइहै ॥ स्वेदजनअंडजजरायुजनउदभि
जपसुहीनपक्षीहीपुरुषहीनजोइहै ॥ सुंदरकहतब्रह्मज्यौंको
त्यौंहीदेषियततनतौकछुनयौअबहैनकछुहोइहै ॥२५॥ छप्पय
छंद ॥ कहतशशाकेशृंगआंबिकिनसुंनहिंदेषे ॥ बकरिकुशाम
ग्रीकाशासुतौकारुनहिंपेषे ॥ त्यौंहीबंध्यापुत्रपिंघूरैकूलतकहि
ये ॥ मृगजलमाहेंनीरकहूंढूंढतनहिंलहिये ॥ रजुमांहिंसर्पनहिं
कालत्रयसुक्तिरजतसीलगतहै ॥ शिषयहअसंतताजावसुनि ॥
जैसैंहीसबजगतहै ॥२६॥ पद्धडीछंद ॥ शिषयहअसंतताजावहे
इ ॥ नहिंउतपतिस्थितिप्रलयनकोइ ॥ नहिंआदिनअंतनमध्यजा
त ॥ नहिंस्रष्टासृष्टिनकोउपाव ॥ १ ॥ नहिंकारणकारयदेउपाधि
नहिंईश्वरजीवपरैससाक्षि ॥ नहिंतत्वअतत्वबिनागजिन्न ॥
नहिंजोतिअजोतिकछुनचिन्ह ॥ २ ॥ नहिंकालनकर्मस्वभाव
आहि ॥ नहिंबिद्याविद्यालगीकाहि ॥ नहिंराजबिरागनबंधमु
क्त ॥ नहिंरूपअरूपअयुक्तयुक्त ॥ ३ ॥ नहिंआहिप्रमातकोप्रमा
ण ॥ नहिंहैप्रमेयनहिंप्रमाजाण ॥ नहिंलयविक्षेपननिकटदूर
नहिंदिवशानरजनीचंदसूर ॥ ४ ॥ नहिंसुक्षमनस्थूलनरूपी
त ॥ नहिंह्रस्वनदीर्घघांमसीत ॥ नहिंअर्थनधर्मनकाममोक्ष
नहिंपापपुन्यअत्रलोकपरलोक ॥ ५ ॥ नहिंस्वर्गादिकनहिंनर
कवास ॥ नहिंवासककोउनहोइत्रास ॥ नहिंबेदनशास्त्रन
शब्दजाल ॥ नहिंवर्णाश्रमनहिंस्मृतिचाल ॥ ६ ॥ नहिंसंध्य

मनफूलफुनियेकहीनहोइहै॥ स्वेदजनअंडजजरायुजजनउद्भि
जपशुहीनपक्षीहीपुरुषहीनजोइहै। सुंदरकहतब्रह्मज्यौंकौ
त्यौंहीदेखियतनतोकछुभयोअबहैनकछुहोइहै॥२५॥छप्पय
॥ कहतशशाकेश्रृंगआंखिकिनहूंनहिंदेषे॥ बझरिकुशाम
आकाशसुतोकाहूनहिंपेषे॥ सौंहीबंध्यापुत्रपिंघूरैफूलतकहि
ये॥ मृगजलमाहेंनीरकहूंढूंढतनहिंलहिये॥ रजुमांहिंसर्पनहिं
कालत्रयशुक्तिरजतसीलगतहै॥ शिषपहहअस्यंतानावसुनि॥
कैसेंहीसबजगतहै॥२६॥पद्धडीछंद॥ शिषपहहअत्यंताभावहै
॥ नहिंउतपतिस्थितिप्रलयनकोइ॥ नहिंआदिनअंतनमध्यभा
व॥ नहिंस्रष्टासृष्टिनकोउपाव॥१॥ नहिंकारणकारयद्वैउपाधि
नहिंईश्वरजीवपरैसमाधि॥ नहिंतत्वअतत्वबिनागजिन्न
नहिंजोतिअजोतिकछूनचिह्न॥२॥ नहिंकालनकर्मस्वभाव
आहि॥ नहिंबिद्याविद्यालगीकाहि॥ नहिंराजबिराजनबंधमु
क्त॥ नहिंरूपअरूपअयुक्तयुक्त॥३॥ नहिंआदिप्रमाताकोप्रमा
ण॥ नहिंहैप्रमेयनहिंप्रमाजाण॥ नहिंलयविक्षेपननिकटदूर
नहिंदिवशनरजनीचंदसूर॥४॥ नहिंशुक्लनकृष्णनरक्तपी
त॥ नहिंकृस्वनदीर्घघांमसीत॥ नहिंअर्थनधर्मनकाममोक्ष
नहिंपापनपुन्यअप्रोक्षप्रोक्ष॥५॥ नहिंस्वर्गादिकनहिंनर
कबास॥ नहिंजासकोउनहोइत्रास॥ नहिंबेदनशास्त्रन
शब्दजाल॥ नहिंबर्णाश्रमनहिंस्मृतिचाल॥६॥ नहिंसंध्या

स्नान न करन्यास ॥ नहिं होम न यज्ञ न ब्रत उपास ॥ नहिं इष्ट उपासन
हार कोइ ॥ नहिं निर्गुण सगुण न भेद होइ ॥ ७ ॥ नहिं सेब्य न सेव
क सेव कीन ॥ नहिं हेत न प्रीति न प्रेम लीन ॥ नहिं नवधा दशधा प
रा भक्ति ॥ नहिं सालोकादिक चारि मुक्ति ॥ ८ ॥ नहिं साधक साध
न साध्य सार ॥ नहिं सिद्धि न सिद्ध न निर्बिकार ॥ नहिं कर्त्ता कर्म
क्रिया न कोइ ॥ नहिं द्रष्टा दर्शन दृश्य होइ ॥ ९ ॥ नहिं व्यक्त अव्य
क्त अशुद्ध शुद्ध ॥ नहिं रक्त बिरक्त अबुद्ध बुद्ध ॥ नहिं तर्क बितर्क
अधीर धीर ॥ नहिं शून्य अशून्य अपीर पीर ॥ १० ॥ नहिं चित अ
चित अडोल डोल ॥ नहिं माप अमाप अतोल तोल ॥ नहिं कृश
स्थूल नहिं युवा बाल ॥ नहिं जरा मृत्यु न अकाल काल ॥ ११ ॥ न
हिं जाग्रत सुप्न न सुषुपति स्थ ॥ नहिं तुरिया त्रय साक्षी मतिस्थ ॥ न
हिं ज्ञेय ज्ञाता न हि ज्ञान गम्य ॥ नहिं ध्येय ध्याता न हिं ध्यान रम्य ॥ १२ ॥
॥ ३० ॥ दोहा छंद ॥ जो कछु सुनिये देषिये ॥ बुद्धि बिचारै जाहि
सो सब बाग्बिलास है भ्रम करि जानऊं ताहि ॥ १ ॥ यह असंता
भाव है ॥ यह ई तुरियातीत ॥ यह अनुभव साक्षात यह ॥ यह नि
श्चय अद्वैत ॥ २ ॥ नाहीं नाहीं करि कै सो है है कै दोउ बांनि ॥ नाही
है कै मध्य है ॥ सो अनुभव करि जांनि ॥ ३ ॥ यह ई है पर यह नहीं
नाही हैं है नाहिं ॥ यह ई यह ई जांनि तूं ॥ यह अनुभव या माहिं
॥ ४ ॥ अब कछु कहिबे कौं नहीं ॥ कहैं कहां लौं बैन ॥ अनुभव ही क
रि जांनिये ॥ यह गूंगे की सैंन ॥ ५ ॥ जो तेरैं संदेह कछु ॥ र सोरं

तौ॥ग्रषश्र जहूंपलक रि॥ फिरिसमुझाऊं तोहि॥६॥
प उवाच॥ चौपई छंद॥ हे स्वामिन् संशय सब नाश्यो॥ बच

Seven

BhSJ 113, p. 29

सात समुद्र

1685 AD

चहूं होइ ॥ तौ शिष्य जहूं वस करि ॥ फिरि संमुझाऊं तोहि ॥ ६ ॥
॥ ४३ ॥ शिष्य उवाच ॥ चौपई छंद ॥ हे स्वामिन् संशय सब नाश्यो ॥ वच
न तुम्हारै सो वृत्त जाग्यो ॥ अब तौ सर्व स्वप्न करि जान्यो ॥ निश्चय भ्र
म संदेह बिलान्यो ॥ ४४ ॥ चौपई छंद ॥ क्वाहं क्व त्वं क्व च संसारः ॥ क्व
च परमार्थः क्व च व्यवहारः ॥ क्व च मे जन्म क्व च मे मरणं ॥ क्व च मे दे
हः क्व च मे करणं ॥ ४५ ॥ क्व च मे अद्वय क्व च मे द्वैतं ॥ क्व च मे निर्न्नय
क्व च मे नीतं ॥ क्व च माया क्व च वस्तु विचारः ॥ क्व च मे प्रवृत्ति निवृ
त्ति विकारः ॥ ४६ ॥ क्व च मे ज्ञानं क्व च विज्ञानं ॥ क्व च मे मन निर्विषय वि
षज्ञानं ॥ क्व च मे नश्वर क्वै विनश्वरत्वं ॥ क्व च मे तत्त्वं क्व च द्वित्व अतत्त्वं ॥
४७ ॥ क्व च मे शास्त्रं क्व च मे दक्षः ॥ क्व च मे अस्ति हिं नास्ति पक्षः ॥
क्व च मे कालः क्व च मे देशः ॥ क्व च गुरु शिष्यः क्व च उपदेशः ॥ ४८
क्व च मे ग्रहणं क्व च मे त्यागः ॥ क्व च मे विरतिः क्व च मे रागः ॥ क्व च मे
चपले क्व च निस्पंदं ॥ क्व च मे द्वंद्वं क्व च निर्द्वंद्वं ॥ ४९ ॥ क्व च मे वाह्याभ्यं
तर नासं ॥ क्व च अधः ऊर्द्ध तिर्यक्प्रकाशं ॥ क्व च मे नाडी साधन योगं ॥
क्व च मे लक्ष विलक्ष वियोगं ॥ ५० ॥ क्व च नानात्वं क्व च येकत्वं ॥ क्व च मे
शून्याशून्य समत्वं ॥ योऽवशेष सो मम रूपं ॥ बहुना किं उक्तं च
अनूपं ॥ ७ ॥ ५१ ॥ दोहा छंद ॥ यह मै श्री गुरुदेव कौं ॥ अनुभव कहे
सुनाइ ॥ जो प्रभु कौं परिश्रम कियौ ॥ सो फल प्रगट्यौ आइ ॥ ५२ ॥
श्री गुरु उवाच ॥ चौपई छंद ॥ हे शिष जो इच्छा करि सोई ॥ तोहि
न कतहू बाधा होई ॥ तूं निर्भ्रम नच्यौ निर्दोषा ॥ तैं अब पायौ जी

वनमोष ॥ १ ॥ जो भैक लौ सुद्ध दपै आन्यौ ॥ ताही क्रमतें ब्रह्म हिं जा
न्यौ ॥ आपु ब्रह्म सत जन्मेद मिटायौ ॥ ज्यौं है त्यौं ही निश्चय आयौ
॥ २ ॥ देषै सुनै स्पर्श पबोलै ॥ संघप क्रिया करै कछू डोलै ॥ षान
पांन बस्त्रादिक जोई ॥ यह प्रारब्ध देह कौ होई ॥ ३ ॥ ५५ ॥ दोहा
छंद ॥ निरालंब निर्वासना ॥ इच्छाचारी येह ॥ संस्कार पवनहिं
फिरै ॥ शुष्क पर्ण ज्यौं देह ॥ ४ ॥ जीवन्मुक्त सदेह तं ॥ लिप्त न कब
हूं होइ ॥ ताकौं सोई जानि है ॥ तव समान जे कोइ ॥ ५ ॥ जो या ज्ञा
न समुद्र महिं ॥ डुबकी मारै आइ ॥ सोई मुक्ता फल लहै ॥ दुख
दरिद्र सब जाइ ॥ ६ ॥ सुंदर ज्ञानसमुद्र की ॥ महिमा कहिये
कौंन ॥ अमृत ही रस सौं है नस्यौ ॥ तुम जिनि जानहु लौंन
॥ ७ ॥ सुंदर ज्ञानसमुद्र महिं ॥ बहुत रतन अमोल ॥ मृतक होइ
सो पैठि है ॥ पैठि न सकई लोल ॥ ८ ॥ सुंदर ज्ञानसमुद्र कौ ॥ वा
रापार न अंत ॥ विषई जागे ऊऊ कि कैं ॥ पैठै कोई संत ॥ ९ ॥ सुं
दर ज्ञानसमुद्र की ॥ जो चलि आवै तीर ॥ देषत ही सुख ऊपजै ॥ निर्मल जल गंभीर ॥ १० ॥ यह ई ज्ञानसमुद्र है ॥ यह गुरु
शिष संबाद ॥ सुंदर याहि कहै सुनै ॥ ताके मिटहि बिषाद ॥
१० ॥ संबत सत्रह सै गये ॥ वर्ष दसोत्तर और ॥ भाद्रव सुदि एका
दशी ॥ गुरबासुर सिरमौर ॥ १५ ॥ ता दिन संपूरण भयौ ॥ ज्ञान
समुद्र सु ग्रंथ ॥ सुंदर औगाहन करै ॥ लहै मुक्ति कौ पंथ ॥
१२ ॥ ६५ ॥ इति श्री सुंदरदासेन विरचितं ज्ञानसमुद्र ग्रंथ

सिद्धांतनिरूपणं नाम पंचमोल्लासः ॥५॥ इति गुरुशिष्यसंवादसंपू
र्ण ॥ समाप्त ॥ १ ॥ प्रथमोल्लास माहि जाति १७ छंद ३७ द्वितीयउ
ल्लास माहि जाति २५ छंद ८५ ॥ तृतीयोल्लास माहि जाति २१
छंद ५० चतुर्थोल्लास माहिं जाति १४ छंद ६५ ॥ पंचमउल्लास
माहि जाति ११ छंद ६३ ॥ समस्त छंद ३०६ समस्त श्लोक ६००

॥ ग्रंथ सर्वांगयोग ॥

॥ दोहा छंद ॥ बंदत हौं गुरुदेव के ॥ नित चरणांबुज दोइ ॥ आत्म
ज्ञान प्रगट भयौ ॥ संशय रह्यौ न कोइ ॥ १ ॥ भक्तियोग हठयोग पु
नि ॥ सांख्य सुयोग विचार ॥ भिन्न भिन्न करि कहत हौं ॥ तीनहुं कौ
विस्तार ॥ २ ॥ सनकादिक नारद मुनि ॥ शुक अरु ध्रुव प्रहिलाद ॥ भ
क्तियोग सो इन कियौ ॥ सद्गुरु कैं जु प्रसाद ॥ ३ ॥ आदिनाथ अरु
मत्स्येंद्र ॥ गोरख चर्पट मीन ॥ कणेरी चौरंग पुनि ॥ हठ सु योग इ
नि कीन ॥ ४ ॥ कपिल देव अरु कपिल मुनि ॥ दत्तात्रेय वशिष्ठ ॥ अ
ष्टावक्र रु जडभरत ॥ इनकै सांख्य सुदृष्टि ॥ ५ ॥ महापुरुष जे इन
मतै ॥ तिनकी मैं बलि जाउं ॥ मारग आये द्वादशा ॥ पक्रचेद्वे
द्विगांउं ॥ ६ ॥ भक्तियोग है चारि विधि ॥ बहुविधि हठहू जांनि ॥
चतुर्अंति आचार्यनि ॥ सांख्य सु कह्यौ बखांनि ॥ ७ ॥ प्रथम भक्ति अ
रु मंत्र लय ॥ चर्चा सहित सुनाइ ॥ भिन्न भिन्न प्रकार करि ॥ आगै क

गोमूत्रिका॥ दोहाछंद॥

माया दुखकौ मूल है काया सुख नहि लेश॥
या या विष मा मूर है आया नरवत हि केश॥१॥

जो जी जो जी नरि निपं
विं दु ालर हरा म

चतुर बिबेकी पाइ है चतुर करूर बिश्राम॥२॥

॥ ॥संवत् १७४२ वर्षे आषाढ सुदि षष्ठी शनिवासरे पो
थी लिषाइतं स्वामी सुंदरदासजी॥ लिषतं रूपादास म
हाजन॥ फतेपुर मध्ये॥ पोथी स्वामी सुंदरदासजी कौ ग्रंथ
संपूर्ण॥ चौप ई मध्याक्षरा॥ पोवैक हा स्त्र कै माहि॥ नाद सुनत
चाले को नाहि॥ सी शाक वन कै अंकुस गंजन॥ को बिदे ह मजि नयो नि
रंजन॥१॥ कौन नगर जहां उपजे लौन॥ नदीनाथ कहिये सो कौ
न॥ को ऊपर असवार चढंत॥ कहा कटे भजतें भगवंत॥२॥ दुषदाइक
सो कहिये कौन॥ जिरकैला शाक वन कौ जौ न॥ पंथी कों कादी जें ने
व॥ कौन त्यागि चाले शुकदेव॥३॥ को बन मै गहि बैठे मौन॥ हस्ती कै
सिर सोना कौन॥ काके कीये कनक अवास॥ त्यागी कौन सु दादू दास
॥४॥

मोनिका	सांमरि	असुर	उदास
? रंग	सागर	संकुर	सिंदूर
ऊंजैर	पवेज	संदेस	सुदामा
जनक	पातक	जोबन	बासना